DOCUMENT RESUME

ED 024 038 48 AL 001 597

By- Vatuk, Ved Prakash
Advanced Hindi Reader in the Social Sciences.
California State Coll., Hayward. Auxillary Foundation.
Spons Agency- Office of Education (DHEW), Washington, D.C. Bureau of Research.
Bureau No- BR-7-0023
Pub Date 68
Contract- OEC-4-7-070023-2663
Note- 381p.
EDRS Price MF-$1.50 HC-$19.15
Descriptors- Culture, English, Glossaries, *Hindi, Literature, *Reading Materials, *Social Sciences, Vocabulary
Identifiers- Devanagari Script, *Indian Culture

This reader contains 25 selections in standard Hindi by recognized authorities in the major fields of social science: namely sociology, anthropology, folklore, economics, and political science. The writings, evenly divided both in content and style, are intended to give the reader a broad perspective of Indian culture. A 128-page Hindi-English glossary of technical vocabulary concludes the volume. With the exception of the English glosses, all material appears in Devanagari script. A knowledge of the vocabulary used in a two-year Hindi course is assumed on the part of the student. (AMM)

ED0 24038

U.S. DEPARTMENT OF HEALTH, EDUCATION & WELFARE
OFFICE OF EDUCATION

THIS DOCUMENT HAS BEEN REPRODUCED EXACTLY AS RECEIVED FROM THE PERSON OR ORGANIZATION ORIGINATING IT. POINTS OF VIEW OR OPINIONS STATED DO NOT NECESSARILY REPRESENT OFFICIAL OFFICE OF EDUCATION POSITION OR POLICY.

Title VI Sec. 602
PA-48
OEC-4-7-070023-
2663
BR-70023

Ved Prakash Vatuk

ADVANCED HINDI READER

AL 001 597

ADVANCE HINDI READER
IN THE
SOCIAL SCIENCES

Ved Prakash Vatuk

California State College
Auxillary Foundation
Hayward, California
1968

This Reader was prepared pursuant
to Contract No. OE 4-7-070023-2663
of the United States Office of Education
Department of Health, Education and Welfare

Introduction

With increasing interest in all academic fields in the study of India, it is becoming more and more evident that to prepare students properly for economic, sociological, political and anthropological research in India, it is necessary that they be able to read the appropriate Indian language at a higher degree of proficiency than that usually acquired in a two-year conversational course which includes some introduction to simple literary style. Most advanced Hindi courses at the present time stress Hindi literature, which is most suitable for those students with literary interests, but less so for students who hope to use Hindi as a reasearch tool in other fields. Part of the reason for the neglect of these other fields in advanced Hindi teaching is undoubtedly the lack of appropriate teaching material at this level. It is hoped that the present Reader will provide such materials adapted to classroom needs and suitable also for the independent graduate student with a background of two years of Hindi language who desires to prepare for his language examinations in his own and related fields.

The Reader contains twenty-five selections in standard Hindi by recognized authorities in the major fields of social scienc; namely sociology, anthropology, folklore, economics and political science. These writings are evenly divided both from the point of view of content and style. It is hoped that these articles give the reader a broad perspective of Indian culture from different points of view, as well as expose him to a variety of the styles and vocabulary used in modern times. Much of this technical vocabulary is not found in a dictionary like Bhargava's Standard Illustrated of the Hindi Language, while much of it is used with different meanings than found there. Therefore the Vocabulary provided is not just a duplication of the printed Hindi-English dictionaries, but a supplement to them. Of course, it is hoped that the student will have a knowledge of the words used in a two-year Hindi course.

I am grateful, first of all to the authors whose articles make up this book. I am grateful to Onkar Dat 'Nirmal' and Purushottam Pandey for their help. I express my gratitude to the Office of Education as well as to Chester George of the Auxiliary Foundation of California State College at Hayward for their valuable co-operation. But above all I have no words to express my gratefulness to Linda Gruenebaum, whose patience and hard work have made this Reader possible. Needless to say, the Reader belongs to her as much as to me.

Ved Prakash Vatuk

अनुक्रम

१ हम भारत के लोग और समाजशास्त्र गौरीशंकर भट्ट १

२ हिन्दी भाषा की शब्दावली में
संस्कृत का अंश केशवराम पाल १२

३ प्रागितिहास की विषय वस्तु धीरेन्द्र नाथ मजूमदार गोपालशरण १९

४ सांस्कृतिक मर्यादा और उपकरण : आदिम
समाज रांगेय राघव गोविन्द शर्मा २४

५ परिवार शा० ना० व्यास ३५

६ संस्कारों का प्रयोजन राजबली पांडेय ४४

७ कन्यादान और हिन्दू विवाह में उसका महत्व सम्पूर्णानन्द ५५

८ हिन्दू धर्म और दर्शन नर्मदेश्वर प्रसाद ६२

९ लोकसाहित्य का अध्ययन हजारीप्रसाद द्विवेदी ७२

१० राजस्थानी लोक कथाओं का एक मूल
अभिप्राय : लखीणो दूहो कन्हैया लाल सहल ८३

११ संस्कृत काव्य में शकुन और उनका वर्गीकरण दीपचन्द्र शर्मा ९१

१२ भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन शशिशेखर तिवारी १००

१३ भोजपुरी लोकगीतों में सन् ५७ की क्रान्ति
की झलक कृष्णदेव उपाध्याय १०८

१४ कृष्ण कथापरक लोकगीत और हिन्दी कृष्ण
भक्ति साहित्य का पारस्परिक सम्बन्ध शालिग्राम गुप्त ११८

१५ लोक संगीत और परम्परा इन्दु प्रकाश पांडेय १२८

१६ हिन्दू शासन प्रणालियों के स्वरूप काशीप्रसाद जायसवाल १३८

१७ राज्यों के पारस्परिक सम्बन्ध और व्यवहार सत्यकेतु विद्यालंकार १४७

१८ भारतीय समाजवाद के मौलिक आधार सम्पूर्णानन्द १५६

१९ तटस्थता और विश्वशान्ति	श्रीमन्नारायण	१६४
२० समाजवाद से सर्वोदय की ओर	जयप्रकाश नारायण	१७३
२१ भारत में अतीत में औद्योगीकरण	बी० एन० गुप्ता	१८८
२२ गाय और राष्ट्र निर्माण	परमेश्वरी गुप्त	१९७
२३ ग्राम वलीदपुर में आर्थिक प्रगति	पूरनचन्द्र जोशी	२०५
२४ ग्रामीण समुदाय में शिक्षा	सीताराम जायसवाल	२१३
२५ अस्पृश्यता और हरिजनकल्याण		२२६

हम भारत के लोग और समाजशास्त्र

भारत : एक भौगोलिक संस्कृतिक संतति

इण्डिया अथवा भारत नाम है एक बड़े भूभाग का वह बड़ा भूभाग जिसकी ऐतिहासिक सीमायें बदलती रही हैं । एक समय था जबलंका बर्मा और पाकिस्तान भी इसी भूभाग में सम्मिलित थे किन्तु आज वे अलग अलग राजनैतिक इकाइयों का रूप ले चुके हैं । आज का राजनैतिक भारत इक्यासी करोड़ एकड़ भूमि पर फैला हुआ है । इसी इक्यासी करोड़ एकड़ भूमि पर पांच लाख अट्ठावन हजार नवासी गांव और तीन हजार अट्ठारह नगर बसे हैं । इसके उत्तर में उत्तर पश्चिम से लेकर दक्षिण पूर्व तक हिमालय की गगनचुम्बी बर्फीली चोटियां हैं वे चोटियां जिनमें से बहुत सी बीस हजार फीट से भी अधिक ऊंची हैं जिनका अभी नामकरण भी नहीं हुआ है और जिन पर अभी भी मनुष्य का पैर नहीं पड़ा है । भारत कहे जाने वाले भूभाग के पश्चिम में अरब सागर है पूर्व में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में लहराता हुआ विशाल हिन्दमहासागर । संसार के मानचित्र पर भारत एक पतंग के समान लगता है या उस त्रिभुज के समान जिसके सिरे को नीचे करके आधार को ऊपर कर दिया गया हो । इसमें कोई सन्देह नहीं कि सर्वप्रथम भारत एक भौगोलिक धारणा है ।

भारत एशिया महाद्वीप का एक अंग है । सोलह सौ मील लम्बे हिमालय का पहाड़ी सिलसिला भी भारत को एशिया से पूर्णत: अलग न रख सका । हिमालय की पर्वत श्रेणियों में पाये जाने वाले दर्रों ने यातायात के वे प्राकृतिक साधन प्रदान किये जिनके द्वारा भारत का सम्बन्ध एशिया क्या योरोप से बना रहा । भारत के तीन ओर लहराते हुये विशाल समुद्र ने जहां एक ओर भारत को संसार से अलग सा रक्खा वहां दूसरी ओर भारत तथा अन्य देशों के साहसी नाविकों को आकर्षित भी किया यातायात के अवसर प्रदान किये और पारस्परिक आदान प्रदान को प्रोत्साहित किया । भारत की भौगोलिक परिस्थिति और सीमाओं ने

भारत को संसार के सम्पर्क में रखते हुये भी उसे संसार से अलग सा रक्खा । भौगोलिक पृथकता भारत की एक अपनी विशेषता है । इसी विशेषता के कारण भारत उस गहरे और घने जाल के समान रहा है जिसमें एशिया की अनेक प्रजातियां और संस्कृतियां फंसती रही हैं । भौगोलिक परिस्थितियों ने ही भारतीयों को सांस्कृतिक एकता प्रदान की और भारतीयों के विभिन्न उद्गमों ने विविधता । ओमैले ने ठीक ही कहा है कि भारत एक भौगोलिक सांस्कृतिक संतति हैं ।

करोड़ों वर्ष पूर्व भारत का मानचित्र कुछ और ही था । जहां आज हिमालय है वहां समुद्र था । दो बड़े महाद्वीपों के दबाव के कारण समुद्र की सतह ऊंची उठ गई और हिमालय अस्तित्व में आया । कभी हिमालय समुद्र का धरातल था । इसके प्रमाण हैं समुद्रीय जानवरों के वे अस्थिपंजर जो आज भी हिमालय के दर्रों और ढालों में पाये जाते हैं । संसार के सभी पर्वतों में हिमालय की आयु सबसे कम है लेकिन फिर भी हिमालय के जन्म के समय तक इस पृथ्वी पर मनुष्य का अवतरण नहीं हुआ था । सबसे विचित्र बात यह है कि हिमालय आज भी बढ़ रहा है । हिमालय के नीचे की पृथ्वी के अन्दर विचित्र दबाव वाली शक्तियां कार्य कर रही हैं जिनके कारण उत्तरी भारत में बहुधा भूचाल आया करते हैं । इसके विपरीत दक्षिण की चट्टानें अत्यन्त प्राचीन हैं वहां भूचाल कभी कभी आते हैं । उत्तरी भारत आज भी स्थायी भौगोलिक परिस्थितियों में नहीं आया है ।

भारत को चार साधारण भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है । इनमें से एक है उत्तर का पहाड़ी क्षेत्र जिसकी जनसंख्या छुटपुट है जहां पर्वतचोटियां हिमाच्छादित रहती हैं और जहां गगनचुम्बी पर्वतों के निचले ढाल सघन वनों से आच्छादित हैं । इसके बाद आता है गंगा सिन्ध का मैदान जहां भारत के लगभग सभी महत्वपूर्ण नगर आबाद हैं जहां जनसंख्या काफी घनी है और जो सम्पूर्ण उत्तरी भारत के ओर पार फैला हुआ पूर्व में आसाम के जंगलों तथा दलदलों और पश्चिम में सिन्ध और बलूचिस्तान के रेगिस्तान में लीन हो जाता है । दक्षिण का पठार तीसरा भौगोलिक क्षेत्र है जो उत्तर में विन्ध्याचल की घाटियों में समाया हुआ है और पश्चिम तथा पूर्वी और पश्चिमी घाटों की उन पर्वत श्रेणियों में जो समुद्र के किनारों पर फैलती हुई सुदूर दक्षिण में नीलगिरि का रूप ले लेती हैं । चौथा है नारियल और खजूर के वृक्षों की सघनता लिये हुए संकीर्ण समुद्र का किनारा जिसमें विशेषत: जिसके पूर्व में अनेक नदियों के दहाने हैं ।

भारत की अनेक नदियां हिमालय की बर्फीली गुफाओं में से निकलती हैं। गंगा और सिंध अपनी सहायक नदियों के साथ हिमालय से निकल कर विभिन्न दिशाओं में बहने लगती हैं सिन्ध बहती है अरब सागर की ओर और गंगा बंगाल की खाड़ी की ओर। दोनों लगभग पन्द्रहसौ मील लम्बी हैं। गंगा के दहाने पर ब्रह्मपुत्र का गंगा से मिलन होता है वह ब्रह्मपुत्र जिसका उद्गम उसी क्षेत्र में है जहां से सिन्ध नदी निकलती है जो अधिकतर दक्षिणी तिब्बत में पूर्व की ओर बहती हुई सहसा भारत में प्रवेश करती है और गां को अपनी पीत धारायें अर्पित करती है। दक्षिण की नदियां सुन्दर हैं उनमें एक विशेष प्रकार का रूमानीपन है किन्तु वे उतनी प्रभावोत्पादक नहीं हैं जितनी की उत्तर की नदियां। कुछ भी हो भारत के जन जीवन और इतिहास पर यहां की नदियों का प्रभाव रहा है। इन्हीं के किनारों पर भारतीय सभ्यता के प्रथम चरण पड़े हैं और इन्हीं की घाटियों में आज सैंकड़ों वर्षों से भारतीय जीवनदायक वस्तुएं उत्पन्न करते आ रहे हैं। किन्धु सिन्ध के आधार पर ही भारतीयों को हिन्दु हिन्दू और भारत को हिन्दुस्थान क की संज्ञायें मिलीं। यही कारण है कि भारतीयों के लिये नदियां पवित्र हैं और इहलौकिक तथा पारलौकिक मुक्ति का एक माध्यम।

भारत की भौगोलिक संतति में विविधता समायी हुई है। विषुवत रेखा के उत्तर में भारत उन्हीं अक्षांशों में है जिनमें उत्तरी अफ्रीका और मध्य अमरीका आते हैं। फिर भी यहां की जलवायु में एक विशिष्ट विविधता है। वर्ष भर दक्षिणी भारत ऊष्ण जलवायु के प्रभाव में रहता है किन्तु मध्य और उत्तरी भारत में जाड़ों की रातें ठंडी रहती हैं। उत्तरी भारत में बर्फ नहीं पड़ती। दिन सूर्य की किरणों से आलोकित रहते हैं। फिर भी जाड़ों में रात को पाला पड़ता है और हिमालय की ओर से आने वाली बर्फीली हवायें दिसम्बर और जनवरी के वातावरण को काफी ठंडा बना देती हैं। उधर इन्हीं दिनों में हिमालय की उपत्यकाओं में पांच हजार फीट से ऊंचे स्थान बर्फ के शिकार हुआ करते हैं। सम्पूर्ण भारत में वर्षा का औसत भी समान नहीं है। एक ओर हैं राजस्थान के रेगिस्तान जहां वर्षा का सालाना औसत पांव इंच या उससे कम होता है और दूसरी ओर हैं आसाम और मालावार के क्षेत्र जहां का वार्षिक औसत दस फीट या उससे अधिक होता है। भारत में केवल तीन ही महीने वर्षा होती है और उसका श्रेय है दक्षिणी पश्चिमी मानसूनी हवाओं और हिमालय को। हवायें कभी रुक कर कभी देरी से और कभी प्रचण्ड वेग से आती हैं। इनके कम या रुक रुक कर आने का मतलब है वर्षा का कम या

एक रुक कर होना देर से आने का मतलब है वर्षा का देरी से आना और एकदम प्रचंड वेग से आ जाने का मतलब है प्रलयकारी बाढ़। कोई आश्चर्य नहीं यदि भारतीय प्रकृति को निरीह प्रकृति न मान कर उसमें देवत्व के दर्शन करते रहे हैं।

भारत की भौगोलिक विशेषताओं की भारतीय समाज संस्कृति और इतिहास पर स्पष्ट और अमिट छाप है। यह हिमालय की सुरक्षाकारी दीवार ही है जिसने भारतीय संस्कृति और संरचना को तारतम्य और स्थायित्व प्रदान किया है। महाभारत में वर्णित समाज वर्तमान भारतीय समाज से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं है। वह जीवन जिसे महात्मा बुद्ध ने ढ़ाई हजार वर्ष पहले देखा था आज भी बिना किन्हीं आधारभूत परिवर्तनों के चल रहा है आज भी लोग कर्म और माया के उन्हीं प्राचीन प्रश्नों पर तर्क करते हैं उन्हीं सिद्धान्तों में विश्वास करते हैं और उसी जीवन को व्यतीत कोते हैं। विवाह के नियमों दाह संस्कारों और सामाजिक सम्बन्धों के संगठन में आज भी कोई आमूल परिवर्तन नहीं आया है। दीवार की सी प्राकृतिक सीमाओं से घिरे हुए और संसार से अलग रहने वाले देश के लिये अपनी निजी विशिष्टताओं को विकसित करना स्वाभाविक था। भारतीय संस्कृति की ऐतिहासिक विशिष्टता इसी स्वाभाविकता का परिणाम है। जलवायु मिट्टी और भौगोलिक परिस्थितियों की विविधता तथा विभिन्न प्रजातियों के प्रभाव के कारण एक ओर भारत वृद्धिरोध से बचा रहा तो दूसरी ओर इन्हीं विशेषताओं के कारण उसे एक महाद्वीप का रूप मिला। भारत की महाद्वीपीय विशेषताओं ने उसे वह क्षमता प्रदान की जिसके कारण उसमें सभ्यता निर्मात्री क्रियायें और प्रतिक्रियायें संचारित होती रहीं। भारत की महाद्वीपीय विशेषता उसके इतिहास संस्कृति और सामाजिक संगठन में एक आवश्यक तत्व रही है। उत्तरी और दक्षिणी भारत को विभाजित से करनेवाले विन्ध्याचल के होते हुये भी भारत को हिमवत् सेतु पर्यन्तम् माना गया है। भारत की सांस्कृतिक संतति भौगोलिक संतति की ही देन है। सम्भवत: जैसा कि हटन ने लिखा है भौगोलिक नैरंतर्य की आवश्यकताओं के कारण ही अनेक उद्गमों के लोग जाति प्रथा के माध्यम से एक स्थायी समाज में संगठित हो गये हैं।

भारत : अविभक्तं विभक्तेषु

एक भौगोलिक सांस्कृतिक संतति के अतिरिक्त भारत कुछ और भी है। भारत वास्तव में समाया

हुआ है उन तैंतालीस करोड़ व्यक्तियों स्त्री और पुरुषों में जो पूर्वी पंजाब और राजस्थान से लेकर बंगाल और आसाम तक फैले हुए हैं। यही तैंतालीस करोड़ व्यक्ति इनके द्वारा निर्मित समाज संस्कृति और इतिहास इनकी भाषा और इनकी दैहिक रचना में ही हम भारत के लोग समाये हुए हैं। हम भारत के लोग समान हैं एक हैं पर विविध। दैहिक रचना की विविधता हम भारत के लोगों की एक आधारभूत विशेषता है। एक ओर हैं पंजाब और काश्मीर के निवासी जो श्वेत वर्ण लम्बे कद लहरदार बाल लम्बे सिर और लम्बी नाक वाले हैं। दूसरी ओर हिमालय की तलहटी में रहने वाले लोगों ने मंगोलियनों की अनेक दैहिक विशेषताओं को आत्मसात कर लिया है। बंगाल और आसाम के निवासियों का सिर चौड़ा है कद मध्यम है और यहां वहां उनमें मंगोलियनों की विशेषताओं के भी दर्शन होते हैं। अधिकतर भारत में वे दैहिक विशेषतायें मिलती हैं जो पाकिस्तान से लेकर भूमध्यसागर तक पायी जाती हैं। किन्तु साथ ही साथ यहां के आदिवासियों की दैहिक विशेषतायें उन्हें अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के आदिबासियों के समीप ला बिठाती हैं। हम भारत के लोगों की विविध दैहिक विशेषतायें हमारे अनेक उद्गमों की परिचायक हैं। भारतीयों की दैहिक रचना की विशेषताओं ने भारतीयों के अन्य पहलुओं को प्रभावित किया है। रिस्ले के अनुसार जाति प्रथा के आधार और कारक निहित हैं भारत में पाये जाने वाले प्रजातीय तत्वों और उनके समिश्रण में।

भाषा विविधता हम भारत के लोगों की एक अन्य विशेषता है। भारत की भाषाओं को सुनीतिकुमार चटर्जी ने चार भाषा क्षेत्रों में रखा है। किन्तु इरावती कर्वे ने तीन भाषा क्षेत्रों पर ही जोर दिया है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में गोदावरी तक और पश्चिम में कराची से लेकर पूर्व में गौहाटी तक एक भाषा क्षेत्र फैला हुआ है जिसमें भारोपीय परिवार की भाषायें बोली जाती हैं। भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी इसी परिवार की भाषा है और इस परिवार का क्षेत्र सभी क्षेत्रों से बड़ा है। दूसरा क्षेत्र है द्राविड़ परिवार की भाषाओं का जो वस्तुत: गोदावरी के दक्षिण में फैला हुआ है यद्यपि इस परिवार की भाषाएं उत्तर में भारोपीय क्षेत्र में भी पायी जाती हैं। तीसरे क्षेत्र के लिये इरावती कर्वे ने आस्ट्रोएशियाटिक की संज्ञा दी है किन्तु सुनीतिकुमार चटर्जी ने इस क्षेत्र को दो परिवारों में बांटा है प्रथम आस्ट्रिक कोल अथवा मुंडा भाषा परिवार और द्वितीय तिब्बती चीनी। इस परिवार या इन परिवारों की भाषाओं का अन्य परिवारों की भांति एक लगातार और भौगोलिक क्षेत्र नहीं है क्योंकि

भारोपीय तथा द्राविड़ परिवार की भाषाओं के प्रसार ने इसकी संस्पर्शिता को समाप्त कर दिया है। आसाम बंगाल बिहार उड़ीसा और मध्य प्रदेश के जंगली इलाकों तथा हिमालय के मध्य भाग के निचले हिस्सों में इस परिवार की भाषा सीमित है। प्रत्येक भाषा क्षेत्र उपक्षेत्रों में बंट गया है और प्रत्येक उपक्षेत्र स्थानीय बोलियों के क्षेत्रों में। एक क्षेत्र में एक परिवार की भाषायें हैं किन्तु एक उपक्षेत्र में एक ही भाषा।

इस भाषा विविधता के परिणाम एक ओर मनोरंजक हैं तो दूसरी ओर महत्वपूर्ण। एक बार एक शाम को अलग अलग क्षेत्रों के निवासी सात सेमा नागा एक सड़क के किनारे मिले। प्रत्येक ने एक दूसरे से पूछा कि चावल के साथ खाने के लिये वह क्या लाया है। प्रत्येक ने एक अलग नाम लिया किन्तु जब सबने अपना अपना खाना खोला तो प्रत्येक के पास चावल के अतिरिक्त लाल मिर्चें मिलीं। वर्तमान भारत के भाषावार प्रान्त भी इसी भाषा विविधता की उपज हैं। इस भाषा विविधता ने यदि एक ओर भाषा वैमनस्य तथा संघर्ष को जन्म दिया तो दूसरी ओर अनेक भाषायें विभिन्न संस्कृतियों के प्रवाह और संगम का कारण भी बनीं। सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार भारतीय संस्कृति कई भाषा संस्कृतियों के गत्यात्मक सम्पर्क और संगम का परिणाम है। भारत में किसी भी सामाजिक समूह की संस्कृति पर भाषा उपक्षेत्र का मुख्य प्रभाव रहा है क्योंकि समान भाषा भाषी क्षेत्र में सांस्कृतिक सन्देशवाहकता अधिक होती है। एक भाषा क्षेत्र भाषा उपक्षेत्र वह बड़े से बड़ा क्षेत्र है जिसमें एक भाषा बोली जाती है वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये जाते हैं और किसमें समान मौखिक साहित्य प्रसारित हुआ करता है। किन्तु साथ ही साथ बहुत सा मौखिक साहित्य सभी क्षेत्रों में या एक से अधिक क्षेत्रों में समान रूप से पाया जाता है। इरावती कर्वे के अनुसार जब वही लोकगीत लोककथायें और कहावतें एक उस बड़े क्षेत्र में पायी जाती हैं जिसमें कई भाषा क्षेत्र आते हैं तो यह प्रश्न पैदा होता है कि कई भाषा क्षेत्रों में पाया जाने वाला मौखिक साहित्य किसी एक समान उद्गम से लिया गया है या विभिन्न भाषा क्षेत्रों में कोई ऐसे सन्देशवाहक माध्यम हैं जिनके द्वारा समान सांस्कृतिक तत्व एक भाषा क्षेत्र से दूसरे भाषा क्षेत्र में प्रसारित हुआ करते हैं। वास्तव में भारतीय संस्कृति के निर्माण में ये दोनों कारक प्रक्रियायें कार्य करती रहीं हैं। इन्हीं दोनों प्रक्रियाओं के कारण भारत के विभिन्न भाषा क्षेत्रों में वे समान अन्त:सम्बन्ध स्थापित हुये जिनसे भारतीय जीवन की वह समान आधारभूमि बनी जिसे सांस्कृतिक सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति की संज्ञा दी जाती है।

ओमेले के अनुसार भारत नाम है एक संस्कृति का न कि एक प्रजाति का । मानव इतिहास के प्रारम्भ में ही भारत ने अपनी विशिष्ट सभ्यता को जन्म दिया था जिसको संसार की सभ्यताओं में मुख्य स्थान मिला है । किन्तु भारत की वर्तमान धारणा हिन्दू समाज के विकास के साथ साथ अस्तित्व में आती है । आर्य और द्राविड़ संस्कृतियों के संगम के पश्चात् हिन्दुत्व ने ही भारत को सांस्कृतिक इकाई का रूप प्रदान किया । इसका तात्पर्य यह नहीं कि उसके पूर्व न तो भारत का इतिहास था और न यहां सभ्यता के चिन्ह ही थे । सिन्धु नदी की सभ्यता पंचनद और गंगा की घाटियों की आर्य सभ्यतायें और दक्षिण की अनेक समयतायें हिन्दुत्व के विकास के पूर्व अस्तित्व में आ चुकी थीं किन्तु इन विमिन्न सभ्यताओं से एक सभ्यता और समाज का निर्माण और सम्पूर्ण भारत पर उसको स्थापित करने का श्रेय आदि हिन्दुओं को ही है । भारत के नदी और पहाड़ मानव के आवागमन और विचारों के प्रसरण में बाधक न हो सके प्राकृतिक रुकावटों के होते हुये भी भारत उपमहाद्वीप पर हिन्दुत्व का विकास और प्रसरण होता रहा और भारत को सांस्कृतिक एकता का रूप मिलता रहा । सस्कृति प्रसरण की यह प्रक्रिया आज भी चल रही है और जो सांस्कृतिक समूह अभी तक हिन्दू संस्कृति के क्षेत्र के बाहर रहे हैं वे इसके प्रभाव में आ रहे हैं । हिन्दुत्व ने वस्तुत: उन लोगों को सांस्कृतिक एकता प्रदान की जिनकी एक भाषा न थी जिनमें एक राजनैतिक संगठन न था और जिनके सामाजिक आधार असंगठित थे किन्तु जिनमें समान धर्म और संस्थाओं पर आधारित समान सहानुभूतियां और जिज्ञासायें थीं । अत: भौगोलिक संहति के समान भारत एक सांस्कृतिक संहति है । भारतीय संस्कृति की आधारभूत एकता बहुत कुछ भारत भूमि की संस्पर्शिता का परिणाम है ।

भारतीय संस्कृति एक है पर विविध । अविश्लेष्य अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की आत्मा है क्योंकि भारतीय संस्कृति अनेक संस्कृतियों के संगम का परिणाम है । हम भारत के लोग हिन्दू हैं किन्तु साथ ही साथ मुसलमान ईसाई पारसी और आदिवासी भी । धार्मिक दृष्टिकोण से स्वयं हिन्दू ही एक नहीं अनेक हैं । आर्य समाजी ब्रह्मसमाजी बौद्ध सिक्ख और लिंगायत हिन्दू के अनेक रूप हैं । मुसलमान ईसाई और आदिवासी भी उसी प्रकार से एक होते हुये भी अनेक हैं ।

भारतीय सांस्कृतिक विविधता के तीन मुख्य आधार हैं भाषा धर्म और सामाजिक संगठन । इन्हीं आधारों के कारण विविध उपसंस्कृतियां देखने को मिलती हैं । प्रत्येक भाषा क्षेत्र में अनेक

भाषा उपक्षेत्र मिलते हैं जैसे आर्यभाषा क्षेत्र में पंजाबी सिन्धी हिन्दी बिहारी बंगाली आसामी राजस्थानी गुजराती मराठी कोंकणी और उड़िया द्राविड़ क्षेत्र में तेलुगू आन्ध्र कन्नड़ तामिल मलयालम तुलु कोडगू टोडी गोंडी कोलामी और कुरुख तथा आस्ट्रो एशियाटिक परिवार में मुंडारी संथाली और खासी इत्यादि । प्रत्येक भाषा उपक्षेत्र की अपनी सांस्कृतिक विशिष्टतायें हैं । पंजाब और बंगाल की सांस्कृतिक भिन्नतायें इसका उदाहरण हैं । धर्म पर आधारित उप संस्कृतियां भाषा उपक्षेत्रों की भौगोलिक सीमाओं की अवहेलना करती हुयी सम्पूर्ण भारत में फैली हुयी हैं । मुसलमान और आदिवासी इसका उदाहरण हैं । हिन्दू मुसलमान और ईसाई एक दूसरे से भिन्न हैं मुख्यत: धर्म के आधार पर किन्तु आदिवास हिन्दुओं से भिन्न हैं सामाजिक संगठन के आधार पर । भाषा धर्म और सामाजिक संगठन परस्पर समानान्तर नहीं हैं वे एक दूसरे की सीमाओं का उलंघन करते हुये विविधता में एकता और एकता में विविधता स्थापित करते हैं ।

एकता अनेकता के आधार : हिन्दू मुसलमान और आदिवासी

यह पहले ही कहा जा चुका है कि भारत की संस्कृति को एकता मिली यहां की भौगोलिक संस्पर्शिता से समान सहानुभूतियों और बौद्धिक जिज्ञासाओं से तथा विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक तत्वों का एकीकरण करने वाली हिन्दू सामाजिक सांस्कृतिक संगठन की गत्यात्मक और ऊर्ध्वगामी पृष्ठभूमि से । हिन्दू और आदिवासी भारतीय समाज तथा संस्कृति के ऊर्ध्वगामी गत्यात्मक वृद्धि के दो आधार हैं । इस्लाम के प्रवेश ने इस विकास को प्रेरणा भी दी है और उसमें विविधता का पुट भी दिया है । योरोपीय सभ्यता के माध्यम से इसाइयत ने भी इस विकास और वृद्धि को प्रभावित किया है किन्तु उसका प्रभाव केवल मजहबी रहा है । सामाजिक संस्कृतिक आधार को जितना इस्लाम ने प्रभावित किया है उतना इसाइयत ने नहीं । इस्लामी राष्ट्रवादिता ने एक अलग सामाजिक सांस्कृतिक आधार को जन्म दिया जब कि इसाइयत न तो किसी अलग सामाजिक आधार को जन्म दे सकी और न किसी सांस्कृतिक आधार को । यही हाल पारसियों का रहा । पारसी भारत में एक अन्तर्विवाही धार्मिक सामाजिक समूह बन कर रहे और उन्होंने भारतीय समाज तथा संस्कृति की प्रधान ऊर्ध्वगामी गत्यात्मक धारा को उतने प्रभावपूर्ण ढंग से प्रभावित नहीं किया जितना कि द्राविड़ आर्य और मुसलमानों ने किया है ।

अत: भारतीय समाज और संस्कृति में समायी हुई एकता और अनेकता के तीन मुख्य आधार हैं और वे हैं हिन्दू आदिवासी और मुसलमान। इन तीनों का परिचयात्मक वर्णन यहां अपेक्षित है।

हिन्दू शब्द की व्युत्पत्ति और प्रयोग की ऐतिहासिक विवेचना करते हुए रामदास गौड़ ने लिखा है कि संस्कृतभाषा के जाने हुए प्राचीन ग्रन्थों में भरतखंड के रहने वालों के लिए हिन्दू शब्द का प्रयोग मेरुतन्त्र के अलावा और कहीं नहीं मिलता है। किन्तु जिस श्लोक में हिन्दू शब्द का प्रयोग किया गया है उसी में अंग्रेज और लंड्रज शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। इस आधार पर यह कहा जाता है कि यह श्लोक अप्राचीन है। संस्कृत भाषा के कोषों में भी हिन्दू शब्द नहीं मिलता है। इन तथ्यों के आधार पर दो निकाले जाते हैं एक सम्भवत: हिन्दू शब्द की उत्पति भारत और संस्कृत भाषा के बाहर हुई और दूसरे भरतखंड के रहने वालों के लिये हिन्दू संज्ञा का प्रयोग उसी प्रकार के विदेशियों की देन है जिस प्रकार से भारत निवासियों ने इंगलैण्ड के रहने वालों के लिये अंग्रेज और फिरंगी की संज्ञायें गढ़ीं। वास्तव में जिसे हम इंगलैण्ड निवासी उसे ग्रेट ब्रिटेन कहते हैं। प्रत्येक देश के निवासी अपना नामकरण विरला ही करते हैं वैसे ही जैसे विरला ही कोई व्यक्ति अपना नामकरण करता है।

फारसी भाषा में हिन्दू और उससे निकले हुये अनेक शब्द मिलते हैं। भारतीय इतिहास इस बात का प्रमाण है कि भारतवासियों ने अफगानिस्तान तक फैले हुये प्रदेश को सौवीर सिन्धु और गान्धार इत्यादि प्रदेशों में विभक्त किया किन्तु पारसियों ने इसका नाम रक्खा हिन्द। रामदास गौड़ के शब्दों में ऐसा जान पड़ता है कि पारसी धर्म के प्रचार के समय वहां इस प्रदेश का नाम हप्तहेन्दु से हेन्दु और हिन्द हो गया और यहां के रहने वालों का नाम हैन्दव से हेन्दू या हिन्दू हो गया। हेन्दु शब्द सिन्धु का फारसी रूपान्तरण समझा जाता है क्योंकि फारसी भाषा में स ह में बदल जाता है। यूनानी में हकार का लोप होने के कारण फारसी के हेन्दू के स्थान पर इन्द और इन्दू शब्द प्रचलित हुए और यूनानी शब्दों से अंग्रजी भाषा में इंड इंडो और इंडियन शब्द बने। रामदास गौड़ के मत में इस प्रकार हिन्दू शब्द का मूलरूप सैन्धव शब्द है जो सिन्धु शब्द से निकला है। अत: फारसी में हिन्दू शब्द की उत्पत्ति स्थानवाचक शब्द के रूप में हुयी। फारसी भाषा में हिन्दू शब्द के अर्थ डाकू सेवक दास नास्तिक और पहरेदार भी लिये

जाते हैं किन्तु ये अर्थ उसी प्रकार से बाद के हैं हिन्दू शब्द का काफिर अर्थ।

भारत में हिन्दू शब्द प्रतीक है उस धर्मोन्मुख संस्कृति का जिसका सामाजिक पक्ष जाति प्रथा में समाया हुआ है। हिन्दू वह है जो हिन्दुत्व का पालन करे। किन्तु हिन्दुत्व का विकास और संगठन एक ऊर्ध्वगामी वृद्धि प्रक्रिया रही है जिसमें अनेक विजातीय तत्वों को एक सामाजिक सांस्कृतिक और धार्मिक कलाप में लाने का प्रयास किया गया है। हिन्दुत्व की आत्मा है अपरिग्रही सामाजिक जीवन और इसी कारण हिन्दुत्व के संगठन में एक ओर एकता उत्पन्न हुई है और दूसरी ओर अनेकता। हिन्दुत्व अपने धार्मिक सामाजिक पक्ष में उस प्रकार शष्ट्रवादी नहीं रहा है जिस प्रकार इस्लाम रहा है। यही कारण है कि हिन्दुत्व में एक नहीं अनेक स्तर हैं। हिन्दुत्व एक ओर समाया है आर्यों के बौद्धिक दर्शन में और दूसरी ओर उन विश्वास और प्रथाओं में जिनके उद्गम स्त्रोत भारत के आदिवासी समाजों में हैं। हिन्दुत्व निगमात्मक वैदिक भी है और आगमात्मक अवैदिक भी। सम्भवत: इसी कारण विद्वानों ने हिन्दू और हिन्दुत्व को अनेक रूपों में देखा है। एक ओर उसकी प्रशंसा हुई है और दूसरी ओर एक तीव्र आलोचना।

रामदास गौड़ के अनुसार हिन्दू वह है जो आर्यों के अनुकूल धर्म को माने। आर्य धर्म मूलत: वैदिक है और जिन्हें हिन्दू कहा जाता है वे वैदिक बिश्वासों और प्रथाओं को ही नहीं मानते हैं एक अन्य मत के अनुसार हिन्दू वह है जो हिमालय औरसिन्ध नदी से लेकर समुद्र तक फैले हुये प्रदेश का निवासी है। यह परिभाषा आवश्यकता से अधिक व्यापक है अत: अस्पष्ट है। एक अन्य सर्वसाधारण में प्रचलित मत के अनुसार हिन्दू वह है जिसके कुछ विशिष्ट धार्मिक विश्वास हैं और जो हिन्दुत्व से सम्बधित कुछ सामाजिक प्रथावों का पालन करता। किन्तु वे कुछ विशिष्ट धार्मिक विश्वास और हिन्दुत्व से सम्बन्धित कुछ सामाजिक प्रथायें क्या हैं। हिन्दुत्व को लोगों ने अनेक रूपों में देखा है। किसी के लिये हिन्दुत्व केवल एक लेबेल मात्र है और जिस पर यह लेबेल लगा है उसमें तत्व कुछ भी नहीं हैं और यदि हैं भी तो उनके वास्तविक स्वरूप का पता लगना कठिन है। किसी के लिये हिन्दुत्व केवल एक भौगोलिक कल्पना मात्र है और किसी के लिये हिन्दुत्व प्रतीक है विश्वासों और रूढ़ियों के एक अजायबघर का। हिन्दुत्व की व्यापकता और विविधता के कारण ही बहुधा लोग हिन्दुत्व की आत्मा को पहचानने में असफल रहे हैं और इस असफलता का परिणाम है हिन्दुत्व के प्रति आधारहीन दृष्टिकोण। हिन्दुत्व में अनेक लोगों के आदर्श प्रथायें और रूढ़ियां समाई हुयी हैं और इसी कारण हिन्दुत्व के दार्शनिक

तथा व्यावहारिक आधार एक नहीं अनेक हैं। हिन्दू समाज और धर्म के एक नहीं अनेक स्तर हैं। हिन्दुओं की विविधता एक अस्पष्ट पर निश्चित चेतना में समाई हुयी है।

डाक्टर ताराचन्द के अनुसार कर्म की भावना योरोपीय चेतना का प्रमुख आधार है किन्तु भारतीय चेतना का मुख्य आधार है जिज्ञासा की भावना। इसी जिज्ञासा की भावना ने हिन्दू संस्कृति और सभ्यता को प्रभावित किया है। धर्म दर्शन कला रूढ़ियां और संस्थायें इसी जिज्ञासा की भावना से ही ओतप्रोत हैं। इसी के फलस्वरूप हिन्दू संस्कृति की उस विशेषता का जन्म होता है जिसे रहस्यात्मक अन्तरानुभूति कहा गया है। इसी कारण हिन्दू संस्कृति धर्म और धार्मिक तत्वों से ओतप्रोत रही है। विधि प्रणाली साहित्य और कला धर्मसापेक्ष माने गये हैं। हिन्दू संस्कृति के मुख्य सामाजिक आधार संयुक्त परिवार जाति और ग्रामीण सहवासी समुदाय को देवकृत कहा गया है। जीवन और संसार के प्रति हिन्दू दृष्टिकोण धर्मसापेक्ष पवित्रतामय और रहस्यात्मक है और यही दृष्टिकोण हिन्दुत्व की आत्मा है।

हिन्दी भाषा की शब्दावली में संस्कृत का अंश

डा० केशवराम पाल

हिन्दी भाषा की शब्दावली में संस्कृत शब्दों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है ॥ हिन्दी में ये शब्द दो रूपों में पाये जाते हैं तत्सम रूप में और तद्भव रूप में । अधिकतर तत्सम शब्द संस्कृत से सीधे ग्रहण किये गये हैं यद्यपि ऐसे भी बहुत से त्तसम शब्द हैं जो प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं के माध्यम से आये हैं और हिन्दी के विमिन्न कालों में अपने तत्सम रूप में ही बने रहे हैं परन्तु ऐसे शब्दों की संख्या बहुत कम है । प्राकृत तथा अपभ्रंश युग की यह प्रवृत्ति रही है कि उस काल में संस्कृत के संयुक्ताक्षरों में उच्चारण सौकर्य की दृष्टि से वर्ण परिवर्तन आवश्यकरूपेण हुआ है । परन्तु जो शब्द बोलने में बहुत सरल थे उनमें वर्ण परिवर्तन नहीं हुआ और वे शब्द प्राकृत और अपभ्रंश के माध्यम से आने पर भी तत्सम रूप में ही बने रहे ॥ तद्भव शब्दों का विकास हिन्दी में या तो संस्कृत से अथवा प्रथम स्तर की प्राकृतों से द्वितीय स्तर की प्राकृतों के माध्यम से हुआ है । इस प्रकार के तद्भव शब्दों की संख्या बहुत है । जो शब्द हिन्दी में मुण्डा भाषाओं तथा द्रविड़ भाषाओं से आये हैं उनमें भी ऐसे शब्द प्रचुर संख्या में हैं जो अत्यन्त प्राचीन काल में ही संस्कृत में मुण्डा और द्रविड़ भाषाओं से ग्रहण किये गये थे और तदनन्तर संस्कृत अथवा संस्कृत और प्राकृत भाषाओं के माध्यम से हिन्दी में आये हैं । इस प्रकार हिन्दी भाषा की शब्दावली का अधिकांश भाग संस्कृत भाषा की आधार शिला पर अधिष्ठित है । विद्वानों ने हिन्दी की शब्दावली में संस्कृत के अंश को समस्त शब्दावली का लगभग नव दशमांश माना है ॥ अन्य भारतीय आर्य भाषाओं में भी संस्कृत शब्द प्रचुर संख्या में पाये जाते हैं ॥ डा० सुनीतिकुमार चटर्जी का अनुमान है कि आज की किसी भी आधुनिक आर्य भाषा में संस्कृत शब्दों का परिमाण लगभग पचास प्रतिशत कहा जो सकता है ॥ दक्षिण भारत की तमिल तेलुगु कन्नड़ मलयालम आदि द्रविड़ भाषाओं तथा ब्रह्मदेश स्याम इण्डोनेशिया मलयद्वीप सुमात्रा यवद्वीप बाली तथा बोर्नियो द्वीपों की भाषाओं पर भी संस्कृत भाषा का पर्याप्त प्रभाव पाया जाता है ।

हिन्दी तथा अन्य आधुनिक आर्य भाषाओं का जन्म संस्कृत के वातावरण में होने के कारण उनमें संस्कृत शब्दों का प्रवेश उनके प्रारम्भिक काल से ही आरम्भ हो गया था। अपने विकास की विभिन्न अवस्थाओं में आधुनिक आर्य भाषायें संस्कृत सं सुसमृद्ध शब्द भण्डार से शब्द ग्रहण करती रहीं। इन भाषाओं के लेखक जिस मात्रा में संस्कृत के ज्ञाता थे उसी मात्रा में इन भाषाओं में संस्कृत के शब्द आये। यह धारणा कि हिन्दी में संस्कृत शब्दों का प्रयोग गत शताब्दी में ही प्रारम्भ हुआ ठीक नहीं है। कुछ लोगों का यह कथन कि १९वीं शताब्दी के पंडितवर्ग ने अंग्रेज़ी से टक्कर दिलाने के लिये बंगला आदि आधुनिक आर्य भाषाओं को संस्कृत शब्दावली से लादना प्रारम्भ किया सर्वथा भ्रमपूर्ण है। हिन्दी मराठी बंगला आदि भाषाओं के बहुत से प्राचीन ग्रन्थों में भी संस्कृत शब्दों का काफ़ी प्रयोग पाया जाता है। सूर तुलसी केशव आदि के ग्रन्थों में संस्कृत शब्द प्रचुर संख्या में पाये जाते हैं। मराठी भाषा की ज्ञानेश्वरी तथा बंगला के चैतन्यचरितामृत आदि ग्रन्थों में संस्कृत शब्द प्रचुर संख्या में हैं। यह ठीक है कि गत शताब्दी में जबकि देश में राजनैतिक चेतना के साथ स्वदेशप्रेम की लहर उठी और सांस्कृतिक चेतना भी उत्पन्न हुई अधिकतर सभी भारतीय भाषाओं ने अपनी निजी अभिव्यक्तियों के लिये संस्कृत के सुसमृद्ध शब्द भण्डार से शब्द ग्रहण किये। किन्तु यह स्वाभाविक था। जिस प्रकार फ्रेंच इटैलियन स्पैनिश आदि भाषाओं ने अपनी शब्दावली को लैटिन भाषा से शब्द ग्रहण करके समृद्ध किया उसी प्रकार भारतीय भाषाओं के लिये भी यह स्वाभाविक ही था कि वे अपनी समृद्धि के लिये भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की स्त्रोत संस्कृत भाषा से शब्द ग्रहण करें। इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ी भाषा के सम्पर्क में आने पर आधुनिक काल में जो नवीन भाव आये उनकी अभिव्यक्ति के लिये भारतीय भाषाओं में संस्कृत शब्दों को ग्रहण करना ही अधिक उचित एवं उपादेय समझा गया। भारतीय संघ के संविधान में यह स्पष्ट घोषित किया गया है कि जहां तक आवश्यक और वांछनीय हो हिन्दी के शब्द भण्डार के लिये मुख्यतया संस्कृत से और गौणतया अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुये उसकी समृद्धि करना संघ का कर्तव्य होगा। आजकल भारत सरकार द्वारा जो वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली बनवाई जा रही है उसके निर्माण में संस्कृत की ओर झुकाव आवश्यक समझा गया है क्योंकि शब्दावली के समस्त देश के लिये होने के कारण अहिन्दी भाषी लोगों के लिये संस्कृत के आधार पर निर्मित शब्दावली अधिक ग्राह होगी। देश के सभी प्रदेशों की भाषाओं में संस्कृत शब्दों का काफ़ी प्रचलन होने के कारण अधिकतर प्रदेशों

के लोगों के लिये ऐसी शब्दावली का समझना अधिक सरल होगा जो संस्कृत के आधार पर बनी हो । इसी कारण अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली को ग्रहण करते हुये भी अधिकतर सामान्य पारिभाषिक शब्दावली और परिकल्पनात्मक वैज्ञानिक शब्दावली का अखिल भारतीय रूप संस्कृत के आधार पर ही बनाया जाना उचित समझा गया है । इस प्रकार आधुनिक काल में संस्कृत से लिये जाने वाले शब्द दो प्रकार के हैं एक तो वे जो पहिले से संस्कृत में पाये जाते हैं कुछ मिलते जुलते अर्थ के कारण आधुनिक भावों के लिये प्रयुक्त किये जाने लगे हैं जैसे विज्ञान नागरिक सचिव संसद् आदि दूसरे वे जो विशिष्ट भावों के लिये संस्कृत की धातु प्रत्यय उपसर्ग आदि लगाकर बनाये जा रहे हैं जैसे के लिये अभिलेख के लिये अभ्युद्देश । इस प्रकार के कारण तथा आधुनिक काल में नवीन भावों के लिये अपनाये जाने के कारण आधुनिक हिन्दी में संस्कृत शब्द प्रचुर संख्या में प्रचलित हो गये हैं और उनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है ।

अनेक संस्कृत शब्दों के हिन्दी के विमित्र कालों में विभिन्न परिस्थितिया में प्रयुक्त होते हुये आने के कारण तथा आधुनिक काल में नवीन भावों के लिये अपनाये जाने के कारण उनके अर्थ संस्कृत में पाये जाने वाले अर्थों से भिन्न हो गये हैं । प्रत्येक भाषा के विकास में जहां उसके शब्दों में ध्वनि परिवर्तन होता है वहां अर्थ परिवर्तन भी होता है । केवल कुछ स्पष्ट भावों को व्यक्त करने वाले शब्द ही ऐसे होते हैं जिनके अर्थों में सहस्रों वर्षों बाद तक भी कोई परिवर्तन नहीं होता । किसी भाषा में ऐसे शब्द थोड़ी ही संख्या में होते हैं । अधिकतर शब्दों में तो अर्थ विकास होता रहता है । अर्थ परिवर्तन के अनेक कारण होते हैं सामाजिक सांस्कृतिक राजनैतिक मनोवैज्ञानिक आदि उन सबको रोका नहीं जा सकता । अत: हिन्दी में भी अनेक संस्कृत शब्दों के अर्थों का भिन्न हो जाना स्वाभाविक है ।

अर्थ विकास की दृष्टि से हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों को निम्न श्रेणियों में रक्खा जा सकता है :

१ ऐसे शब्द जिनका आधुनिक अर्थ संस्कृत में पाये जाने वाले अर्थों से सर्वथा भिन्न हो गया है जैसे प्रबन्ध प्रस्ताव परिवार आदि ।

२ वे शब्द जिनका अर्थ यद्यपि हिन्दी में संस्कृत से ग्रहण किया गया है तथापि एकाध अन्य अर्थ भी विकसित हो गया है जैसे घण्टा धूप आदि ।

वे वे शब्द जिनका हिन्दी में प्रचलित अर्थ संस्कृत से भिन्न तो नहीं है किन्तु जिनका

संस्कृत में मुख्य अथवा मूल अर्थ भिन्न है जैसे वंश गुण दक्षिणा आदि ।

उपर्युक्त तीनों प्रकार के शब्द हिन्दी में काफ़ी संख्या में प्रचलित हैं । यद्यपि प्रस्तुत ग्रन्थ में अधिकतर ऐसे ही शब्दों के अर्थ विकास का विवेचन किया गया है जिनका हिन्दी में कोई न कोई नया अर्थ विकसित हुआ है तथापि बहुत से ऐसे शब्दों दो भी सम्मिलित कर लिया गया है जिनका हिन्दी में प्रचलित अर्थ संस्कृत में भी पाया जाता है । ऐसे शब्दों को उनके रोचक अर्थ विकास को प्रदर्शित करने के लिये सम्मिलित विया गया है । हिन्दी में बहुत से ऐसे संस्कृत शब्द प्रचलित हैं जिनका वर्तमान अर्थ यद्यपि संस्कृत में लिल जाता है तथापि संस्कृत में उनके मुख्य अथवा मूल अर्थ और ही रहे हैं जैसे प्रार्थना शब्द के हिन्दी में प्रचलित निवेदन और याचना अर्थ यद्यपि संस्कृत में भी मिल जाते हैं तथापि संस्कृत में प्रार्थना शब्द का अभिलाषा अर्थ में प्रचुर प्रयोग हुआ है । पीछे उल्लिखित वंश गुण दक्षिणा आदि शब्दों के भी हिन्दी में प्रचलित अर्थ यद्यपि संस्कृत से भिन्न नहीं हैं तथापि उनके मूल अर्थ अवश्य भिन्न रहे हैं । ऐसे शब्दों के अर्थ विकास को जानना हिन्दी एवं संस्कृत दोनों भाषाओं के ज्ञाताओं के लिये परम उपयोगी दोगा । हिन्दी में प्रचलित ऐसे संस्कृत शब्द काफ़ी संख्या में हैं जिनके अर्थ विकास का विवेचन किया जा सकता है परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ में ऐसे सभी शब्दों को सम्मिलित करना सम्भव नहीं है । इसके अतिरिक्त संस्कृत शब्दों के सभी अर्थों के विकास का विवेचन करना भी सम्भव नहीं है क्योंकि संस्कृत भाषा के इतिहास के कई हज़ांर वर्षों के काल में संस्कृत शब्दों के अनेक अर्थ विकसित हुये हैं । अतः प्रस्तुत ग्रन्थ में सीमित शब्दों के मुख्य मुख्य अर्थों के विकास का विवेचन किया जा रहा है ।

बहुत से संस्कृत शब्दों के हिन्दी में भिन्न अर्थ में प्रचलित हो जाने के कारण बहुधा भ्रान्तिवश संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में भी उन शब्दों का वह अर्थ ही कर दिया जाता है जोकि आजकल हिन्दी में प्रचलित है । इस प्रकार की भूल बहुधा हिन्दी और संस्कृत के बड़े बड़े विद्वानों द्वारा भी कर दी जाती है । उदाहरणार्थ हिन्दी में विनय शब्द के अधिकतर नम्रता अर्थ में प्रचलित होने के कारण संस्कृत साहित्य में भी बहुता उसका अर्थ नम्रता कर दिया जाता है। संस्कृत के प्रसिद्ध सुभाषित विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् में विनय शब्द का अर्थ बहुधा हिन्दी और संस्कृत के बड़े बड़े विद्वानों द्वारा भी नम्रता ही किया जाता है । यद्यपि संस्कृत में विनय शब्द का नम्रता अर्थ भी पाया जाता है किन्तु उस अर्थ में विनय शब्द का प्रयोग बाद के संस्कृत साहित्य में हुआ है । संस्कृत में विनय शब्द का मुख्य अर्थ है आत्म संयम

सदाचार । प्रस्तुत सुभाषित में विनय शब्द का अर्थ आत्मसंयम अथवा सदाचार ही दिखाई पड़ता है और उस अर्थ को करने से श्लोक का भाव बहुत सुन्दर और उपयुक्त हो जाता है । विद्या से आत्म संयम अथवा सदाचार की ही प्राप्ति होती है नम्रता अर्थ कर देने से सुभाषित का वास्तवि वास्तविक तात्पर्य और भाव सौन्दर्य बहुत अंश तक नष्ट हो जाता है । विद्या से आत्मसंयम अथवा सदाचार की प्राप्ति होना माना जाने के कारण ही रामायण महाभारत धर्मशास्त्र नीतिश नीतिशास्त्र तथा प्राचीन काव्यग्रन्थों में अनेक स्थलों पर विनय शब्द का प्रयोग विद्या के साथ पाया जाता है यथा विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे । बौद्ध साहित्य में भी विनय शब्द का आत्मसंयम अथवा सदाचार अर्थ में ही प्रयोग किया गया है । बौद्धों के धर्म ग्रन्थ त्रिपिटक के एक भाग का नाम विनयपिटक अर्थात् आत्मसंयम के नियमों की पिटारी है । इसी प्रकार परिवार प्रार्थना आदि अनेक संस्कृत शब्दों का अर्थ यद्यपि संस्कृत में हिन्दी में प्रचलित आधुनिक अर्थ से भिन्न है किन्तु बहुधा भ्रान्तिवश इनका वह अर्थ ही समझ लिया जाता है केवल हिन्दी में प्रचलित है ।

अत: हिन्दी में प्रचलित संस्कृत शब्दों का अर्थ वैज्ञानिक अध्ययन इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि जिन संस्कृत शब्दों का अर्थ आधुनिक हिन्दी में भिन्न हो गया है उनके संस्कृत में पाये जाने वाले अर्थों पर प्रकाश पड़ेगा जिससे कि संस्कृत साहित्य में भी उन शब्दों का हिन्दी में प्रचलित अ अर्थ समझे जाने की भ्रान्ति के दूर होने में सहायता मिलेगी ।

हिन्दी में अनेक संस्कृत शब्दों के भिन्न अर्थ में प्रचलित हो जाने से एक यह समस्या भी उत्पन्न हो गयी है कि संस्कृत भाषा के व्यवहार में भी संस्कृत शब्दों का प्रयोग उन्हीं अर्थों में किया जाने लगा है जिनमें कि वे आजकल हिन्दी में प्रचलित हैं जैसे कि प्रबन्ध शब्द का प्रयोग आजकल संस्कृत के व्यवहार में इन्तज़ाम अर्थ में इसीलिये किया जाने लगा है क्योंकि यह शब्द हि- हिन्दी में इन्तज़ाम अर्थ में प्रचलित है जबकि संस्कृत में प्रबन्ध शब्द का यह अर्थ नहीं पाया जाता। संस्कृत में प्रबन्ध शब्द का अर्थ है साहित्यिक रचना अविच्छिन्न क्रम आदि । संस्कृत में इन्तज़ाम के भाव के लिये व्यवस्था आयोजन आदि शब्द विद्यमान हैं ।

संस्कृत के जो शब्द हिन्दी में ऐसे नये भाव या विचार प्रकट करने लगे हैं जिनमें कि उन शब्दों का प्रयोग संस्कृत में नहीं होता था और जिन नवीन भावों के लिये संस्कृत में दूसरे शब्द भी नहीं हैं उनके लिये उन शब्दों का हिन्दी के साथ साथ संस्कृत में भी प्रयुक्त होना स्वाभाविक

है परन्तु ऐसे भावों को संस्कृत में प्रकट करने के लिये यथासम्भव उन्हीं संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिये जिन शब्दों का प्रयोग उन नवीन भावों के लिये न केवल हिन्दी में प्रत्युत अधिकतर अन्य भारतीय भाषाओं में भी होता हो यथा धन्यवाद प्रकाशन सम्पादन आदि शब्द नवीन भावों के लिये प्रयुक्त किये जाते हैं और उनका उन अर्थों में प्रयोग प्राय: सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में पाया जाता है । अत: उनका संस्कृत में भी प्रयोग उचित समझा जाता है । परन्तु जिन भावों को हम संस्कृत शब्दों द्वारा हिन्दी में आज नये रूप से प्रकट करने लगे हैं और जिन भावों के लिये संस्कृत में दूसरे विद्यमान हैं यदि उन भावों को प्रकट करने के लिये संस्कृत में भी उन्हीं शब्दों का प्रयोग होने लगा तो संस्कृत शब्दों के अर्थ समझने में एक बड़ी उलझन पैदा हो जायगी । इसलिये उन भावों को प्रकट करने के लिये जिनके लिये संस्कृत में पहिले से शब्द विद्यमान हैं पहिले से विद्यमान संस्कृत शब्दों का ही प्रयोग किया जाना चाहिये यद्यपि ऐसा करना बड़ा कठिन है क्योंकि हिन्दी के राष्ट्र भाषा होने के कारण उसका व्यापक प्रसार होने से उसमें ग्रहण किये संस्कृत शब्दों का संस्कृत में भी आना स्वाभाविक है ।

संस्कृत भाषा के विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक भाषा होने के कारण तथा संसार का प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य संस्कृत में ही होने के कारण संस्कृत शब्दों के अर्थ परिवर्तनों का अध्ययन अर्थ विज्ञान की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है । संस्कृत शब्दों के अर्थ परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन से हमें ऐसी बहुमूल्य सामग्री प्राप्त हो सकती है जो अर्थ विज्ञान नामक नवीन विज्ञान के विकास में सहायक हो सके । इस दृष्टि से संसार की कोई भी भाषा संस्कृत से अधिक समृद्ध नहीं है क्योंकि संस्कृत के पास कई हज़ार वर्षों का विशाल साहित्य मौजूद है जिसमें संस्कृत शब्दों के अर्थों के इतिहास को सूक्ष्मतापूर्वक खोजा जा सकता है और अर्थ विज्ञान सम्बन्धी विभिन्न प्रवृत्तियों का पता लगाया जा सकता है ।

अर्थ परिवर्तन भाषा के आन्तरिक पक्ष से सम्बन्ध रखता है अत: शब्दों के अर्थ परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन से उसके बोलने वाले जनसमुदाय की सभ्यता और संस्कृति के विषय में अनेक तथ्यों का उद्घाटन होता है । संस्कृत शब्दों के अर्थ परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन से प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अनेक बातों का पता चलता है । बहुत सी प्रथायें जो आजकल प्रचलित नहीं हैं और जो प्राचीन काल में प्रचलित थीं प्रकाश में आती हैं उदाहरणार्थ सौगन्ध शब्द के अर्थ परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन से प्राचीन भारत में गुरुजनों अथवा माता पिता द्वारा प्रेम के कारण

छोटे लोगों अथवा बच्चों के सिर सूंघने की प्रथा का पता चलता है। सिर सूंघने की प्रथा आजकल प्रचलित नहीं है। तिलाञ्जलि शब्द के अर्थ परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन से किसी के मरने पर अञ्जलि में जल और तिल लेकर उसके नाम से छोड़ने की हिन्दुओं में प्रचलित प्रथा पर प्रकाश पड़ता है। पिण्ड छूटना मुहावरे में प्रयुक्त पिण्ड शब्द के अर्थ परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन से धार्मिक हिन्दुओं में प्रचलित किसी के मरने पर पिण्ड देने की प्रथा का पता चलता है। इसी प्रकार अन्य बहुत सी प्रथाओं तथा सामाजिक अवस्थाओं का पता चलता है।

हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों के अर्थ परिवर्तन सम्बन्धी अध्ययन से हमें भारतीयों की बहुत सी मानसिक प्रवृत्तियों का पता चलता है। यद्यपि ये प्रवृत्तियां अन्य जन समुदायों में पायी जाने वाली प्रवृत्तियों के समान ही हैं जैसे अशोभन अथवा अश्लील बातों अथवा कार्यों को अच्छे शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है। हिन्दी में पेशाब के लिये लघुशंका शब्द प्रचलित है जिसका शाब्दिक अर्थ है थोड़ा संकोच। टट्टी के लिये शौच शब्द प्रचलित है जिसका मौलिक अर्थ है शुद्धि। बहुत से शब्दों के अर्थ वैज्ञानिक अध्ययन से समाज में प्रचलित अन्धविश्वासों का भी पता चलता है जैसे कतिपय भयंकर वस्तुओं का नामोल्लेख करना अशुभ समझा जाने के कारण उनको श्रेष्ठ नाम दे दिये जाते हैं। अशिक्षित तथा अन्धविश्वासी लोगों में चेचक को माता शीतला आदि नामों से पुकारा जाता है। हैज़ा अथवा प्लेग आदि भयंकर बीमारियों के फैलने को महामारी फैलना कहा जाता है। महामारी का अर्थ है दुर्गा। ऐसी बीमारियों को देवी का प्रकोप माना जाने के कारण ही उनको देवी के वाचक शब्दों द्वारा लक्षित किया जाने लगा है।

प्रागितिहास की विषय वस्तु

धीरेन्द्र नाथ मजूमदार तथा गोपालशरण

प्रागितिहास क्या है

आधुनिक विज्ञानों की श्रेणी में नृतत्त्व अपेक्षाकृत नवागन्तुक है। किन्तु मानव के वर्तमान एवं पूर्ववर्ती आकार प्रकारों आचार विचारों क्रियाकलापों तथा सभी प्रकार के अनुभवों के सम्यक् समन्वित अध्ययन के सफल प्रयत्न से इसने विज्ञानों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। नृतत्त्व के प्रमुख अंग जैविक नृतत्त्व सामाजिक सांस्कृतिक नृतत्त्व नृतात्त्विक भाषाविद्या तथा प्रागितिहास अपने अध्ययन क्षेत्रों और पद्धतियों में साधारणतः एक दूसरे से असम्बद्ध प्रतीत होते हैं। कदाचित् इसी कारण कई नृतत्त्वविद् भी नृतत्त्व को एक समन्वित विषय न मान कर कई विषयों का बेमेल जमघट मानते हैं। यह सच है कि नृतत्त्व को आधुनिक विज्ञान श्रेणियों में से किसी एक में रखना सम्भव नहीं है क्योंकि एक ओर जहां यह विषय सामाजिक विज्ञानों की श्रेणी में रखने योग्य प्रतीत होता है वहीं दूसरी ओर भौतिक और जैविक विज्ञानों की परिधियां भी इससे अछूती नहीं हैं। मानवअनुभव एक और अविभाज्य है। मानव के क्रियाकलापों एवं कृतियों का कृत्रिम श्रेणी विभाग उपादेय नहीं होगा। मानव आदि एवं आधुनिक के क्रिया कलापों एवं कृतियों तथा अनुभवों का सर्वाङ्गपूर्ण अध्ययन नृतत्त्व का चरम उद्देश्य है। इसीलिये जहां जैविक नृतत्त्व मानव की कहानी के जैविक अंश का चित्रण करता है वहां उसका सामाजिक सांस्कृतिक अर्द्धांश चित्रित करना सामाजिक सांस्कृतिक नृतत्त्व का काम है। प्रागितिहास नृतत्त्व का वह अंग है जो उत्पत्ति के अध्ययन में रुचि रखता है। आदि मानव की कृतियों के अध्ययन द्वारा यह जैविक और सांस्कृतिक नृतत्त्व के अटूट सम्बन्ध एवं सम्बद्ध पार्थक्य को पूर्ण रूप से स्थापित करता है। साथ ही वह यह भी निरूपित करता है कि मानव जीवन श्रेणियों और विभागों में नहीं रहा करता है। समग्रता और बारंबारता इसके प्रमुख गुण हैं। इस प्रकार प्रागितिहास नृतत्त्व की समन्वितता को पुष्ट करता है।

ऐतिहासिक काल से पहले की मानव कथा का अध्ययन करने के फलस्वरूप ही इसका प्रागितिहास नामकरण किया गया होगा। कदाचित् इस नाम को ध्यान में रख कर ही कुछ उत्साही विद्वान एक ऐसे वृहत्तर इतिहास की कल्पना करने में नहीं चूके हैं जिसका पूर्वांश वे प्रागितिहास को मानते हैं। किन्तु ये विद्वान भी यह स्वीकार करते हैं कि उनके वृहत्तर इतिहास के पूर्वांश की समस्या एवं अध्ययन पद्धति उत्तरांश से सर्वथा भिन्न हैं। दोनों की साक्षियों और अध्ययन सामग्रियों की भिन्नताएं दोनों को एक दूसरे से स्वतंत्र बनाती हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी कालक्रमिक अध्ययन में एक उपयुक्त समय मापक का होना अत्यावश्यक है। काल विभाजन के अनुसार मानवकथा का नब्बे प्रतिशत से अधिक भाग प्रागैतिहासिक है। दूसरे रूप में हम प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक अवधियों की सापेक्षिता इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं। मानव की उत्पत्ति काल से अब तक के उसके चौबीस घंटे के जीवन में से पौने चौबीस घंटे से भी अधिक प्रागैतिहासिक रहा है और लिखित प्रमाणों की सर्वप्रथम उपलब्धि से लेकर आज तक की हमारी सम्पूर्ण प्रगति पन्द्रह मिनट के भीतर हुई है। मिनटों की अवधि के अध्ययन के निमित्त सेकेण्ड समुचित इकाई है किन्तु चौबीस घंटे की लम्बी अवधि के अध्ययन के लिए वह सर्वथा अनुपयुक्त है। दूसरे शब्दों में ऐतिहासिक कालक्रम प्रागितिहास के काम नहीं आ सकता है। भूतत्त्व का भी अपना कालक्रम है। इसके सम्बन्ध में भी उपर्युक्त तर्क लागू होता है। लेकिन उल्टे रूप में। भूतत्त्व का कालक्रम इतना वृहत् है कि उसमें लाखों वर्षों के हेर फेर से कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता है। प्रागितिहास के लिए यह भी अनुपयुक्त है। पुरातत्त्व का अपना कोई काल मापक नहीं है। ऐतिहासिक या प्रागैतिहासिक काल के अध्ययन के अनुसार पुरातत्त्व ऐतिहासिक या प्रागैतिहासिक हो सकता है। अधिकांश विद्वान् इसे एक पद्धति मात्र मानते हैं और इसे एक विषय की संज्ञा प्रदान करने के लिए तैयार नहीं हैं।

ऐतिहासिक पद्धति में शिलालेख सिक्कों आदि का प्राप्य सामग्री के आयु निर्धारण में उपयोग अन्य लिखित प्रमाणों से तुलना करके किया जाता है। ऐसी पद्धति की उपयोगिता इसी प्रकार के प्रमाणों की उपलब्धि पर निर्भर होने के कारण सीमित है। ज्यों ज्यों हम भूतकाल की ओर बढ़ते जाते हैं त्यों त्यों ऐतिहासिक प्रमाण न्यून होते हैं और साथ ही ऐतिहासिक पद्धति भी क्रमशः अधिक अनुपयुक्त होती जाती है। स्तरीकरण का अध्ययन प्रागैतिहासिक पद्धति की धुरी है। इसी कारण प्रगितिहास प्राकृतिक विज्ञानों में भूतत्त्व पर विशेष रूप से निर्भर करता

है । भूकालक्रमिकी पुराजलवायुविद्या की सहायता से एक के ऊपर एक बननेवाले स्तरों का सापेक्षिक आयु निर्धारण मापदंड प्रस्तुत करता है । यह साधारण ज्ञान की बात है कि यदि एक स्थान पर सामग्री के क्रमशः एकत्र होने के कारण एक स्तरशृंखला का निर्माण बिना किसी अन्य व्यवधान के हुआ हो तो सबसे नीचे वाला स्तर सबसे पुराना होगा और उसके ऊपर वाले स्तर क्रमशः नये होंगे । इसे अध्यारोहण विधि कहते हैं । प्रागैतिहासिक सामग्री के प्रकार और निर्माण वैशिष्ट्य के अध्ययन का भी कम महत्व नहीं है । इसे प्रागैतिहासिक पुरातत्व की संज्ञा प्रदान की जाती है । पहले के अनेक विद्वान इसमें ही प्रागितिहास की समाप्ति मान लिया करते थे । प्रस्तर उपकरणों और अन्य प्रागैतिहासिक अवशेषों के आयु निर्धारण की समुचित पृष्ठभूमि के निर्माण के लिये उनकी दशा और ऊपरी सतह पर परिलक्षित रासायनिक परिवर्तनों और उन अवशेषों के साथ उसी या अन्य स्तर में पायी गई संबंधित सामग्रियों का अध्ययन भी आवश्यक है ।

ऊपर की पंक्तियों मं प्रागैतिहासिक अध्ययन में उपकरण तथा अन्य अवशेषों के प्रकार एवं निर्माण वैशिष्ट्य और स्तरीकरण का महत्त्व बतलाया गया है ॥ साधारणतः ये आज भी प्रागितिहास की विषय वस्तु का अधिकांश निर्माण करती हैं सर्वांश नहीं ॥ प्रागितिहास मानव संस्कृति की उत्पत्ति और उसके उद्विकास के अध्ययन में रुचि रखता है । यदि यह कहें कि इसका अध्ययन करना प्रागितिहास का चरम उद्देश्य है और यही उसे उसका स्वरूप प्रदान करता है तो अत्युक्ति नहीं होगी । इस क्षेत्र में स्वर्गीय प्रोफ़ेसर चाइल्ड का योगदान उल्लेखनीय है । उन्होंने प्रागितिहास को आर्थिक मोड़ देकर उसे आदि मानव के जीवन की शारीर उपकरण प्रकार एवं निर्माण वैंशिष्ट्ज के साथ ही साथ दैहिकी आर्थिक सांस्कृतिक जीवन का भी अध्ययनकर्ता बनने में सहायता दी । प्रोफ़ेसर चाइल्ड के मतानुसार प्रागैतिहासिक काल में दो महान् क्रांतियां प्रथम नवपाषाणयुगीन और द्वितीय कांस्य युगीन हुई थीं जिन्होंने तत्कालीन जीवन धारा ही परिवर्तित कर दी होगी । उनके प्रागैतिहासिक क्रांतियों के दृष्टिकोण ने प्रगितिहास के अध्ययन में महान् क्रांति उत्पन्न कर दी और उसे नृतत्त्व के अन्य भागों के अपेक्षाकृत और अधिक निकट ला दिया ॥ संक्षेप में प्रागितिहास नृतत्त्व का वह अंग है जो मानव के सांस्कृतिक उद्विकास में रुचि रखता है । उस सुदूर अतीत से जब मानव अपनी वानरीय परंपरा से पृथक् एक नवीन प्राणी के रूप में सर्वप्रथम उद्भूत हुआ होगा लेकर तब तक की मानव कथा

प्रागितिहास की विषय वस्तु है जब से उसके अध्ययन के प्रमुख आधार लिखित प्रमाण हो जाते हैं अर्थात् जब से ऐतिहासिक काल आरम्भ हो जाता है।

भौतात्विक समय सारणी और जीवन विकास

यह स्वाभाविक ही है कि आदि मानव की कथा के अध्ययन की प्रस्तावना पशु जगत् में मानव स्थान रूपी वंशावली के मूल्यांकन के रूप में लिखी जाय। निम्नलिखित वर्णन का प्रमुख उद्देश्य जैविक उद्विकास नहीं है। नहीं है। इसलिए हम विमित्र भौतात्विक कल्पों और कालों में पाये गये मुख्य मुख्य जीवान प्रकारों का वर्णन करेंगे न कि विभिन्न जीवन प्रकारों के भौतात्विक युगों का।

यद्यपि इस संबंध में विद्वान् एकमत नहीं फिर भी यह अनुमान किया जाता है कि पृथ्वी का अपना पृथक् अस्तित्व लगभग २०० करोड़ वर्ष पूर्व हुआ होगा। भूतत्व में पृथ्वी के इतिहास को कई विभागों और उपविभागों में बांटा जाता है। यह काम स्तरीय भूतत्व का है। भूतत्व के चट्टानविद्या और जीवाश्म विज्ञान आदि अंगों द्वारा प्रदत्त सूचना के आधार पर स्तरीय भूतत्व उस प्रदेश का भौतिक भुगोल समझाने की चेष्टा करता है जहां चट्टानों का निर्माण हो रहा हो। वह यह भी जानने को उत्सुक रहता है कि स्तर व्यवधान रहित बन रहे हैं अथवा नहीं। संक्षेप में स्तरीय भूतत्व हमें भूमि के जीवन वृत्तान्त में घटनाओं का क्रम बतलाता है।

पृथ्वी के लगभग १०० करोड़ वर्ष के जीवन को कई भौतात्विक कल्पों और अनेक कालों में विभाजित किया जाता है। यह स्मरणीय है कि इन कल्पों और कालों की अवधि बराबर नहीं है। अभी तक कोई भी ऐसी पद्धति ज्ञात नहीं हो सकी है जिससे भौतात्विक समय का ठीक ठीक अनुमान लगाया जा सके। खगोलविद्या संबंधी रेडियो सक्रियता आदि कई आधुनिक पद्धतियों द्वारा भौतात्विक कामक्रम का अब पहले की अपेक्षा अधिक ठीक पता चल सकता है। किंतु भौतात्विक पद्धति वह सरलतम पद्धति है जो चट्टानों के आयु निर्धारण में उपयोग की गई थी। भौतात्विक समय का कल्पों में विभाजन का प्रमुख आधार भी यही रही होगी। इस पद्धति में नदियों और समुद्रों में जमा होने वाले बालू एवं धूलि कणों की तलछट की वार्षिक मात्रा की माप द्वारा उसके जमा होने की दर और समय मालूम किया जाता है। यह मान लिया जाता है कि पिछले भौतात्विक कालों में भी तलछट के जमा होने की दर यही रही होगी।

भौतात्विक कल्प पांच हैं: आदि कल्प प्रादि कल्प पुराकल्प या प्राथमिक मध्यकल्प या

द्वितीयक नवकल्प । पिछले तीन भौतात्विक कल्पों को भौतात्विक कालों में निम्न प्रकार बांटा जाता है । पुराकल्प : त्रिखण्ड काल अवरप्रवालादि काल प्रवालादि काल मत्स्य काल अंगार काल गिरिकाल । मध्यकल्प : रक्ताश्मकाल महासरट काल खटी काल । नवकल्प के दो उपविभाग हैं तृतीयक और तुरीय । तृतीयक : आद्यनूतन काल आदिनूतन काल मध्यनूतन काल और अतिनूतन काल । तुरीय : प्रातिनूतन काल और आधुनिक ।

आदिकल्प में जीवन की विद्यमानता की असंदिग्ध साक्षियां नहीं पाई गई हैं । अधिक से अधिक इसे एककोषीय अथवा कीट डिंब जीवन काल कहा जा सकता है । ऐसा अनुमान है कि प्र प्रादि कल्प में मोलस्क जैसे आदिम समुद्रीय अमेरुदण्डी का उद्भव हुआ होगा । पुराकल्प के आरंभ में पूर्ववर्त्ती कल्प से अधिक विकसित समुद्रीय अमेरुदण्डी जीवों का प्राधान्य था । किन्तु जहां इस कल्प के मध्य में प्रथम मेरुदण्डी जीवों और प्रथम पौधों का आगमन हुआ वहां इसके अंत तक मेढक परिवार के जीव प्रमुख हो चुके थे । मध्यकल्प अपने विविध प्रकार के विशालकाय सरीसृपों के लिए प्रसिद्ध है । इनमें दांत वाले पक्षी और उड़ने वाले सरीसृप भी थे । फूल और आवरण रहित बीज वाले पौधे भी सर्वप्रथम इसी कल्प में पाये गये थे । इन विशालकाय सरीसृपों ने तत्कालीन वातावरण से ऐसा तादात्मय स्थापित कर लिया था कि मध्यकल्प की समाप्ति के साथ ही उनकी भी समाप्ति हो गई ।

नवकल्प आधुनिक वनस्पति जीवन और स्तनपायी पशुओं का युग कहा जा सकता है । इसमें स्तनपायी पशु जीवन का आरम्भ होकर मानव में समाप्ति हुई । आद्यनूतन में विकसित स्तनपायी पशु पाये गये आदिनूतन के साथ पुरुषाभ वानर जीवन आरम्भ हुआ और मध्यनूतन में तत्कालीन वनस्पति और स्तनपायी पशु जीवन अपनी पराकाष्ठा को पहुंचा । पुराने प्रागितिहासज्ञों के मतानुसार मानव वानर का मानव में परिवर्तन प्रातिनूतन काल में हुआ । यह मत अब मान्य नहीं है । फिर भी आदिनूतन का प्रागैतिहासिक दृष्टिकोण से अपना महत्त्व है क्योंकि इसी काल में एक या कई प्रकार के वानरों से कई प्रकार के मानव सम प्रकारों का प्रस्फुटन हुआ होगा । वर्त्तमान मान्य मतानुसार उपकरण निर्माता मानव का सर्व प्रथम उद्भव प्रातिनूतन काल में हुआ । आस्बोर्न के कथनानुसार प्रतिनूतन बुद्धि उद्योग और कला का उष:काल था ।

सांस्कृतिक मर्यादा और उपकरण : आदिम समाज

आदिम समाज

प्रत्येक समाज में मनुष्यों के पारस्परिक व्यवहार से एक प्रकार का संघर्ष उत्पन्न होता है। एक व्यक्ति दसरे से जब मिलती है तब उनमें रुचिभेद प्रगट होता है। वे एक दूसरे से समन्वय करने की चेष्टा करते हैं किन्तु उनका भेद अपनी जगह वर्त्तमान रहता है।

समाज में कुछ परम्पराएं होती हैं कुछ नियम होते हैं और उनके साथ रिवाज के तौर पर बहुत सी बातें चलती रहती हैं। मनुष्य एक परिस्थिति में जन्म लेता है और वह उसको निरन्तर प्रभावित करती है। परम्परा उसकी एक अभिव्यक्ति है। ये परम्पराएं समाज में पिता से पुत्र को और पुत्र से पौत्र को दाय स्वरूप प्राप्त होती हैं। मनुष्य एकदम परिवर्तन नहीं कर पाता। पिता के हाथों जब पुत्र पलता है तो पिता के युग की छाप बाल्यावस्था में पुत्र पर पड़ती है। सुख दुख दोनों में ही उसका वह मानसिक अध्ययन करता है। उसके समय में संघर्ष होते हैं। पहले भी कुछ संघर्ष हो चुके होते हैं। अत: वह नये संघर्षों को पुरानों की पृष्ठभूमि के अन्तर्गत रखकर देखता है।

विशेष घटनाओं के बारे में जो सर्वमान्य निर्णय होते हैं और जिन्हें समाज अपने लिए उचित तथा उपयोगी स्वीकार करता है उन्हें परमपरा के अन्तर्गत रख लिया जाता है। प्रत्येक बार के संघर्ष के लिये नयी व्याख्या नहीं खोजी जाती क्योंकि मतैक्य के लिये पृष्ठभूमि की आवश्यकता पड़ती है।

अत: किसी भी समाज के अध्ययन में हमें इसीलिए उसके इतिहास को देखना पड़ता है। भारतीयों में जनेऊ पहनना अब एक परम्परा के अन्तर्गत आता है किन्तु किसी समय इसका भी कोई उद्देश्य रहा होगा। उस उद्देश्य का लिखा न जाना यही बताता है कि परम्परा में उसकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं थी। भारतीय पर्दा प्रथा अनेक जातियों में विद्यमान है। इसका उल्लेख विशेषकर राक्षस संस्कृति के साथ हुआ है। अत: वह भी एक प्रचीन परम्परा है। भारतीय

पंचगव्य का प्रसाद पाते हैं परन्तु अन्य देशीय ऐसा नहीं करते । खेतिहर समाज में कभी कोई प्रथा थी जो हमारे यहां पवित्र बन गई । परम्परा पालन केवल भारतीयों में ही नहीं अपितु संसार के अन्य देशों में भी होता है । अरबों के देश में चन्द्रमा रेगिस्तान में शुभकर होता है काफिले चांदनी में ही चलते हैं । वह पवित्र लगता है । इसीलिये नया चांद देखने की प्रथा भारतीय मुसलमानों में भी विद्यमान है । अरबों के साथ यह परम्परा भारत में आगई और चल पड़ी और मुस्लिम रहन सहन में धर्म के सहारे उतर गई ।

ये परम्पराएं पीढ़ी दर पीढ़ी चलती हैं । इन पर प्रायः लोग तर्क भी नहीं करते । समाज में इसी भांति जब नयी समस्या आती है तब उससे उद्भूत नये नये संघर्षों को उनके आधार पर ही निर्णीत कर लिया जाता है । समाज में नया संघर्ष नयी परिस्थितियों से जन्मता है । परन्तु कोई भी नयापन अपने पीछे एक आधार लिये होता है । उस आधार के बिना वह अपने अस्तित्व को समझ नहीं पाता । केवल सभ्य ही नहीं असभ्य और आदिम कही जाने वाली जातियां भी इसमें पीछे नहीं हैं । एक मतानुसार विगत की घटनाओं की स्मृति या आलेख उस समय के निश्चय निर्णय या विधि विधान का संश्लिष्ट रूप ही कानून है । इसमें जनरीतियां पुराणकथा परम्परा इत्यादि का भी समावेश होता है जिनकी सहायता से कि घटना विशेष द्वारा उत्पन्न समस्या का निदान प्रस्तुत किया जाता है ।

वर्तमान युग में विधि विज्ञान बहुत विकास कर गया है । आजकल कोई कानून यों ही नहीं बन सकता । सामंतीय युग में दो प्रकार के कानून भारत में प्रचलित थे ।

एक । धर्मशास्त्र ।

दो । दैनंदिन कार्यों में राजा का वचन ।

धर्मशास्त्र के निर्माता ब्राह्मण थे । वे अपने समाज में एक प्रकार की मर्यादा रखना चाहते थे । इसलिये उनके बनाये नियमों में एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ति है । पाप पुण्य और धार्मिक भावना से बना वह वर्णाश्रम पर आधारित विधान भारत में अभी तक लागू रहा है ।

सामंतीय शासक एक शासनकर्ता था । वह केवल ब्राह्मणकृत कृत नियमों का ही मुख्यतया पालन करता था । किन्तु वह दण्ड विधान में जहां कि उसे विधि नहीं मिलती थी अपने विवेक से काम लेता था । प्रायश्चित और दण्ड को ब्राह्मणकृत धर्म शास्त्र में वहीं उल्लिखित किया गया है जहां उसका धर्म और समाज से सम्बन्ध होता है ।

आगे चलकर विधान सभाएं और काउंसिलें कानून बनाने लगीं। तब तक समाज बहुत बदल गया। इस समय धर्म को पीछे छोड़कर प्रजाहित के नये मानदंडों का आसरा लिया गया।

इस दृष्टि से आदिम समाजों में कोई कानून नहीं होता। कानून की नयी परिभाषा यहां लागू नहीं होती।

प्राचीन भारत में समितियां होतीं थीं। परन्तु उससे भी प्राचीन काल में समितियों का अभाव था। अथर्ववेद में क्रम दिया गया है। पहले गृहपति होता था। जब उससे काम नहीं चला तब सभा बनी। सभायें जब बड़ी होने लगीं तो समितियां चुनी गईं और अंततोगत्वा राजा आया जिसने विधि को सुरक्षित रखा।

कुछ के मतानुसार लिखित नियम और विधि ही समाज में कानून कहला सकती हैं जिनके द्वारा शासन संभव होता है। किन्तु इंग्लैंड में अब भी अलिखित विधान है। वहां परम्परा से ही काम चलता रहता है। परन्तु कानून और विधान में अन्तर होता है।

प्राचीन काल की कई सभ्य जातियां भी ऐसी बतायी जाती हैं जिनके यहां लेखन सर्वसाधारण में नहीं था। फिर भी उनके यहां मौखिक रूप से ही कानूनों को याद रखा जाता था।

भारत में लेखन बहुत प्राचीन है। पाश्चात्यों में इस पर मतभेद है। वस्तुत: यहां इस विषय पर विवाद न करके हम यही कहेंगे कि परम्परा जब सर्वमान्य नहीं होती और संश्लिश्ट हो जाती है तब कानून को लिखा जाता है।

परन्तु भारत में कई कबीला जातियां हैं जिनमें लेखन नहीं रहा। फिर भी उनके समाज में कुछ कानून माने जाते हैं।

जो समाज केवल एक ही परिवार के विकास से बना हो जिसमें शासन की आवश्यकता न हो वहां राज्य नहीं होता। वहां कानून की भी आवश्यकता नहीं होती। कानून निष्पक्षता चाहता है। दण्ड और कानन सामाजिक मान्यता के बिना नहीं रह सकते। पहले भयानक यानक यातनाएं दी जाती थीं क्योंकि अपराधी को कष्ट देना तत्कालीन समाज में मान्य था परन्तु आगे चलकर इस प्रकार शारीरिक कष्ट देने को श्रेयस्कर नहीं माना गया उसे बर्बर समझा जाने लगा।

प्रत्येक आदिम समाज में हमें नियम और विधि के दर्शन होते हैं। उनका कड़ाई से पालन किया जाता है।

कार्डोज़ के मतानुसार कानून की परिभाषा यों है कानून एक आचार व्यवहार का नियम या सिद्धान्त है वह इस औचित्यानुसार निर्धारित किया जाता है कि यदि अमुक रूप से उल्लंघन होगा तो कचहरियां उसके लिये निर्धारित रूप से शक्ति प्रयोग करके उसे लागू करेंगी । यह सर्वमान्य रूप से माना जाता है कि कानून व्यवहार में आने वाली शक्ति है ।

किन्तु इस हिसाब से कचहरी का महत्त्व सबसे अधिक हो जाता है । कानून से पहले कचहरी का स्थान बन जाता है । आदिम समाजों में कचहरी का रूप क्या था यह विषय हमारे सामने चिंतनीय बन कर आता है । उस समय इस प्रकार की व्यवस्था नहीं थी । परम्परा भी इस प्रकार नियमों के जाल को फैला नहीं सकी थी ।

अधिकांश आदिम समाजों में आधुनिक ढंग के संगठन नहीं हैं जिनके अन्तर्गत हम कचहरी को रख सकते हों । किन्तु प्रकारांतर से अन्य रूपों में उनमें कचहरियां जैसी कुछ व्यवस्था थी ऐसा हमें मिलता है ।

समाज के महत्वपूर्ण व्यक्ति एकत्रित होते थे और झगड़ों के फैसले किया करते थे । वह एक प्रकार की अस्थायी कचहरी बन जाती थी । कुछ समय के लिये आपस में उस विषय पर विचार किया जाता था ।

भारतीय समाज की पंचायतें इसी का प्रकारान्तर हैं । पौर जनपदों में वयोवृद्ध मिलते थे और उनकी शक्ति कालान्तर में इतनी बढ़ गई थी कि सम्राट भी उनसे सलाह लेकर काम किया करते थे । पौर जनपदों का राजनीतिक रूप लुप्त हो गया है किन्तु अब भी गांवों में पंचायतों को महत्व वर्तमान है । नयी पंचायतें ग्रामीणों की इसी परम्परा को देखकर बनायी गई हैं ।

प्रत्येक आदिम समाज में झगड़े तय किये जाते हैं । और इसके लिये कोई न कोई मार्ग अपनाया जाता है । वे सभा के रूप में इकट्ठे हो जाते हैं । यह काम आधा धार्मिक माना जाता है ।

जो उस समय झगड़े तय कराते हैं वे निर्णायक माने जा सकते हैं । उनके वचन का प्रतिपालन आवश्यक होता है ।

इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि आदिम समाजों में भी कचहरियां थीं । जो आज भी अ आदिम व्यवस्था में रहते हैं उनके यहां ऐसी कचहरियां मिलती हैं । उनमें वादी और प्रतिवादी अपने अपने पक्ष का प्रतिपादन करते हैं ।

जब भी समाज के पंचों की मर्यादा को आघात पहुंचता है तब वह कचहरी का अपमान बन जाता है। उस समय जाति संगठित होकर विद्रोही को छेक देती है।

आदिम कानून व्यक्तिपरक कानून होते हैं। असामाजिक कार्य्य या भूल या गलती को टार्ट कहा जा सकता है उसे अपराध के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता। गलती व्यक्ति के प्रति होती है और अपराध समाज के प्रति माना जाता है। आगे व्यक्ति समाज के व्यापक विस्तार का एक अंग माना जाता है।

कानून में एक विधि होती है। उसको तोड़ा नहीं जा सकता। उसका प्रतिपालन समाज की परम्परा को आगे बढ़ाता है।

झगड़े खड़े होते हैं तनिक भी इधर उधर चलने से। इनसे नये नये कानून बनते जाते हैं।

एक व्यक्ति आदिम समाज में किसी की अनुपस्थिति में उसके घर में प्रवेश कर लेता है। वह एक अनधिकार चेष्टा है। जब निर्णय होता है तो नियम बनता है कि बिना किसी की स्वीकृति के कोई किसी के घर में प्रवेश नहीं करे। यदि वह करता है तो उसे समस्त समाज के प्रति अपराध मान लिया जाता है।

सीगल के मतानुसार खंडन से ही कानून जन्म लेता है। जिस प्रकार आवश्यकता आविष्कारों की जननी है उसी प्रकार खंडन के कारण कानूनों की आवश्यकता पड़ती है। खंडन कानून के टकराने से जन्म लेता है।

समाज में एक प्रौद्योगिकी होती है। एक आर्थिक संगठन होता है। प्रत्येक समाज की मान्यता अपनी प्रौद्योगिकी और आर्थिक संगठन की व्यवस्था पर आधारित होती है।

कानून की दुरूहता टैक्नालौजी और आर्थिक संगठन के संश्लिष्ट हो जाने पर बढ़ती है। समस्या अपने आधारों से जन्म लेती है। जब समाज संश्लिष्ट नहीं होता व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्ध सीधे होते हैं और उनको सरलता से समझा जा सकता है किन्तु जहां सम्बन्धों में सीधापन नहीं रहता और माध्यम स्वरूप कई कई व्यवित बीच में आ जाते हैं तब वहां कर्त्तव्य और अधिकारों का जाल भी सीधा नहीं रह पाता।

आदिम समाज किसी लिखित अनौचित्य का दास नहीं होता। उसमें झूठे मुकदमे नहीं चलते क्योंकि यहां प्रत्येक व्यवित एक दूसरे से तथा परिस्थिति से परिचित होता है। वहां सबकुछ प्रस्तुत के अन्तर्गत लिया जाता है।

जब समाज में झूंठ का बोलबाला हुआ सभी कानून का उदय हुआ । अर्थात जब व्यक्ति को ऐसा अवसर मिल सका कि वह अपने आपको छिपा सके तब नियमों का भी विस्तार हुआ ।

पहले भारत में मूंछ का बाल गिरवीं रखकर कर्ज लिया जाता था । कर्जा न चुकाना एक अपराध माना जाता था । परन्तु उसके माथ एक नैतिकता भी थी । यह माना जाता था कि यदि किसी रूप में कर्जा बाकी रह गया तो कर्ज़दार को किसी न किसी रूप में अगले जन्म में उसे चुकाना पड़ेगा ।

आजकल स्टाम्प लिख देने पर भी लोग रुपया वापिस देने में आनाकानी करते हैं । इसका कारण यही है कि अब परलोक की व्यवस्था में लोगों को विश्वास नहीं रहा है । समाज के विकास और प्रगति के साथ कानून का भी रूप बदलता है । हमारे पुराने कानूनों में इतनी सतर्कता नहीं है जितनी कि नए कानून में अक्षर और शब्द के प्रति भी रखी गई है ।

आदिम समाज में जब मनुष्य जंगल में भोजन ढूंढते और एकत्र करते थे तब नियम सीधे ही बनते थे और लागू कर दिये जाते थे । उस समय उनकी समस्याएं प्राय: समान होती थी ।

वहां के कानून वास्तव में नये नहीं होते । वे तो पुराने रिवाजों और परम्पराओं के पुन: लागू किये हुए रूप होते हैं । अर्थात् ऐसा होता रहा है अत: उसी को चालू रखना उनके मत का आधार होता है ।

कानून वास्तव में जनमत है । यदि जनता में एक ही विषय पर बहुत से मत हों तो उसका कोई कानून नहीं बन सकता । कानून सबका मत होता है । उसका व्यक्ति से सम्पर्क होता है । व्यक्ति की मान्यता उसे स्वीकार करती है ।

उसके द्वारा समाज में व्यक्ति एक दूसरे पर नियन्त्रण रखते हैं । अपने अधिकार की रक्षा दूसरे की निरंकुशता को रोक कर ही हो सकती है ।

कानून आदिम समाज में आज के समाज के कानून से भिन्न होता था । आज शब्दों के आधार को प्रमुखता दी जाती है जबकि तब घटना का प्रमुखता दी जाती थी ।

जिन समाजों में एक विश्वास होते हैं उनमें जादू और धर्म के अतिरिक्त परम्पराएं और जनमत भी कानून का रूप धारण कर लेते हैं ।

इसका मुख्य कारण होता है कि समाज में मनुष्यों की संख्या कम ही होती है।

कोई भी व्यक्ति यदि कोई नियम तोड़ता है तो उसको शीघ्र ही बाकी लोग देख लेते हैं

क्योंकि वे एक दूसरे के बहुत समीप रहते हैं। निकटता के कारण वे एक दूसरे पर दृष्टि रख सकते हैं और शीघ्र ही उसे रोक भी सकते हैं।

समाज का विकास दूसरी समस्या प्रस्तुत करता है। तब समाज सहज से संश्लिष्ट हो जाता है।

सहज समाज में गृहपति या दलपति हुआ करते थे।

उनमें सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक अधिकार निहित रहते थे। कभी कभी तीनों एक ही के हाथ में रहते थे।

जब दलपति स्वयं ही नियम तोड़ते थे तब वृद्ध लोग एकत्र होते थे और वे उस पर रुकावट लगाते थे। वे दण्ड भी देते थे। दण्ड अपराधानुसार दिया जाता था। यही कानून की पहली मंजिल थी और प्रजातन्त्र का सीधा और प्रारम्भिक रूप था।

जब कानून सीधा नहीं लागू हुआ तब समाज में एक दूसरी मंजिल आ गई। इन समाजों में प्रजातन्त्रात्मकता तो थी किन्तु प्रणाली प्रजातन्त्र की न थी जो कि कानूनों को लागू करती। समाज में एक व्यक्ति दलपति बनता था और जब कहीं कोई अपराध होता था तब वह कानून टूटने के कारण अपने अधिकारों का प्रयोग करके दण्ड देता था।

इन अधिपतियों के हाथ में सारी शक्ति निहित होती थी। उन्हें कोई भी रोक नहीं सकता था। उन पर केवल दैवी शक्तियों का आधिपत्य माना जाता था। अवश्य ही जनमत का भी उन्हें भय रहता था। परन्तु ऐसे लोग जो सर्वशक्तिमान माने जाते थे वे अपने समाज में प्राय: अत्याचार नहीं करते थे। परन्तु स्वयं अपराध करने पर ये अधिपति दण्डनीय नहीं हो सकते थे जैसे कि पहली अवस्था के समाज के दलपतियों को दण्ड मिल जाता था।

तीसरी अवस्था में मनुष्य खेतिहर चरागाह संस्कृति में आगया।

इन लोगों में या तो मुखिया या राजा चुने जाते थे। ये राजा अपनी जगह पर कानून को ठीक रखने के लिये कचहरियों में न्यायाधीश नियुक्त किया करते थे। फिर उनके नीचे और भी न्यायाधीश होते थे। वे अपने अधिकारों को इस प्रकार बांट लिया करते थे।

अब धन भी जुर्माने के रूप में लिया जाता था। वह धन इन समाजों के अधिपतियों को दिया जाता था। उस धन का कुछ भाग अन्य कार्यों पर भी व्यय किया जाता था।

कचहरियों में प्राय: ही कानून का पालन किया जाता था। पहले कानून की दृष्टि से

देखा जाता था कि अमुक कार्य से कानून टूटता है या नहीं और फिर कचहरी यह जांच करती थी कि अपराधी ने वास्तव में अमुक अपराध किया है या नहीं । यह दूसरा काम कठिन था अतः इसके लिये प्रमाण की आवश्यकता पड़ने लगी और तब गवाह की आवश्यकता ने जन्म लिया । किसी भी व्यक्ति के अपराध को प्रमाणित करने को साक्षी की आवश्यकता पड़ने लगी । प्रारम्भिक काल में गवाह की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि सभी एक दूसरे को जानते थे और एक दूसरे के सामाजिक और असामाजिक कार्यों से परिचित थे ।

नयी अवस्था में परीक्षण प्रारम्भ हुए । ये विचित्र परम्पराएं भारत में कई विदेशियों के आगमन तक रहीं जैसे अपराध किया है या नहीं जांचने के लिये अग्नि स्पर्श इत्यादि कराना । यदि कोई अग्नि छू कर भी नहीं जलता था तो उसे सच्चा मान कर छोड़ दिया जाता था ।

परन्तु यह बात तुर्कों को ठीक नहीं लगी । तुर्क मुसलमान थे । मुल्ला लोगों ने इसे शरीयत के खिलाफ़ माना और इसे काफिर प्रथा समझकर रोक दिया गया ।

इसके बाद तो साक्ष्य को प्रस्तुत करना एक लम्बी प्रक्रिया हो गई ।

आज के प्रत्येक गवाह की पूरी तरह से जांच होती है । न्यायधीश चोर से बाद में पूछता है पहले गवाह के बारे में जांच की जाती है कि वह ठीक कह रहा है या झूठ ।

परन्तु यह संश्लिष्ट पद्धति सभ्यता के विकास के कारण जन्मी है । अब न्यायाधीश का प्रत्येक व्यक्ति से परिचय नहीं होता । समाज बड़ा हो गया है ।

आदिम समाज की एक बहुत बड़ी विशेषता होती थी कि उसकी इकाइयां छोटी होती थीं छोटा भूगोल होता था और इसीलिये उसके सदस्य एक दूसरे को जानते थे ।

परस्पर व्यक्तिगत परिचय होने के कारण समस्या दूसरी होती है और न जानने की परिस्थिति में दूरी का बना रह जाना संभाव्य है ।

आदिम राज्य के विषय में भी मत निर्धारण करना कठिन कार्य है । क्या उनमें कोई सरकार नामक वस्तु थी । आजकल हम जिसे सरकार कहते हैं वह आदिमकाल में नहीं थी । तब तक राज्य के स्वरूप का विकास नहीं हुआ था ।

किन्तु उस समय भी सरकारी काम अवश्य होते थे अर्थात् किसी शासक की आज्ञा चलती थी ।

प्रजा की स्वतन्त्रता जीवन रक्षा और समृद्धि के लिये तब भी कोई व्यवस्था होती थी ।

उस अवस्था को ही हम प्रकारान्तर से राज्य कहते हैं। यह व्यवस्था व्यक्ति के हाथ में थी या किसी समिति के यह परिस्थिति के अन्तर पर निर्भर था।

आदिम समाज की व्यवस्था करने वाली शक्ति में सामाजिक और कानूनी दोनों प्रकार के अधिकार संचित थे जबकि आज सरकार का कार्य मुख्यतया कानून की रक्षा करना है। आज कानून की शक्ति बहुत अधिक है जब कि पहले परम्परा रिवाज और जादू तथा धर्म को भी काफी महत्त्व दिया जाता था।

बोआस के मतानुसार आदिम लोगों में सरकार की परिभाषा यही दी जा सकती है कि वह एक ऐसी संस्था थी जो समुदाय को एकत्रित रखती थी उसके भोजन की व्यवस्था करती थी कि उसका अभाव न हो और वह शांति बनाये रखने का प्रयत्न भी करती थी।

यह व्यवस्था तभी तक चल सकी जब तक कि समुदाय छोटा था। गांवों में अबभी बिरादरी के लोग इसी प्रकार एकत्र होते हैं परन्तु अब उच्च जातियां इसे अधिक महत्त्व नहीं देतीं क्योंकि उन्हें मालूम होता है कि ऐसी पंचायतों के पास राजनीतिक अधिकार नहीं होते।

आदिम समाज में सरकार दो सिद्धान्तों पर आधारित होती है

१ राज्य सीमा।

२ और समुदाय। बिरादरी।

राज्य सीमा का सिद्धान्त तब लागू होता है जब तक सीमा में रहने वाले लोगों की रक्षा के लिये एक ही सत्ता होती है। वह अपने समुदाय की रक्षा करती है।

समुदाय सिद्धान्त तब लागू होता है जबकि लोग घुमन्तू दलों में घूमते हैं और उनके लिये भूमि के किसी भाग की सीमा का प्रश्न नहीं उठता। उन्हें अपना खाना जुटाने के लिये जगह जगह जाना पड़ता है। ऐसी अवस्था में किसी विशेष भूमि से मनुष्य बंध कर नहीं रह सकता।

खाना इकट्ठे करते हुए घूमने वाले लोगों और शिकारियों जैसे आस्ट्रेलिया के आदिवासी लंका के वेद्दा लोगों में अभी भी वही मंजिल है। इन समाजों में कभी कभी दलों का प्रसार ४००० से १०००० वर्ग मील की दूरी तक हो जाता है। किन्तु सबका शासन नियन्त्रण तक ही संस्था करती है। दलों में बीस से सौ व्यक्ति तक होते हैं। सारा समुदाय ही शांति और नियम पालन करने के लिए उत्तरदायी होता है। परिवारों में प्रायः न केवल धरती ही सारे दल की होती है वरन् और भी सामग्रियां होती हैं।

जब एक परिवार वृद्धि के कारण दूरे परिवार की धरती दबाता है तो झगड़ा होता है। यदि निर्णय उचित नहीं होता तो डट कर युद्ध होता है।

शांति से यदि काम नहीं होता वहां शक्ति से काम लिया जाता है।

इन समाजों में व्यक्तिगत स्वामित्व का प्रश्न नहीं सा ही रहता है। प्राय: व्यक्तिगत सम्पत्ति के अन्तर्गत आते हैं गहने और धनुष बाण। यद्यपि व्यक्ति इनका स्वयं ही निर्माण करता है फिर भी इन वस्तुओं पर भी उसका सम्पूर्ण स्वामित्व नहीं होता क्योंकि समुदाय का उन पर भी अधिकार होता है। समुदाय को अपनी सीमा के भीतर ही रहना पड़ता है और इस कानून को तोड़ना गम्भीर अपराध माना जाता है। कभी कभी इसका अन्त युद्ध भी होता है। प्राय: दल इस प्रकार के झगड़ों को आपस में शांति पूर्ण वार्ता से भी सुलझा लेते हैं।

आस्ट्रेलिया वासी कबीला जातियों में एक और प्रकार की सरकार होती है जिसे यूरोपवासी जिरेन्ट्क्रेसी कहते हैं। यह सरकार बूढ़ों द्वारा चलाई जाती है। बूढ़ों के छोटे दल को राज्य संचालन के अधिकार दे दिये जाते हैं और उन्हें अपनी जाति के युवकों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मार्ग दर्शन करने का अधिकार होता है। वे उन्हें दण्ड भी दे सकते हैं। कभी कभी आज्ञा का अनादर करने वाला मृत्युदण्ड भी प्राप्त करता है। इन कबीला जातियों में मुखिया या दलपति शायद ही होते हैं। किन्तु जहां भी दलपति होते हैं वहां जनमत पर बहुत कुछ निर्भर करता है।

बोआस ने उन लोगों को हार्वेस्टर कहा है जो कि साल भर का भोजन इकट्ठा करते हैं। वे जंगली पौधे ढूंढ़ते हैं। उन्हें खेतिहर नहीं कहा जा सकता। मैलेनेशिया में कुछ जातियां ऐसे भोजन इकट्ठा करके रख लेती हैं। न्यूगिनी के दक्षिणी और पश्चिमी तीर पर कुछ जातियां ऐसा करती हैं। इस प्रकार प्राकृतिक रूप से उगे भोजन को काट कर इकट्ठा करने से कबीले को भोजन ठीक तरह से मिल जाता है। कटाई के समय ये कबीला जातियां अन्य कबीला जातियों को भी निमन्त्रित करती हैं। आर्थिक निर्भरता के इस स्वरूप से उनके समाजों में नये कानून बनते हैं।

जब सभा जुड़ती है तब हर एक के प्रति एक दूसरे का व्यवहार निश्चित रहता है। दावत में इकट्ठा भोजन काम में आता है। परन्तु आगन्तुक पुराने वासियों की स्थायी सम्पत्ति पर हाथ नहीं डालते। नृत्य गीतादि के विषय में भी नियम निर्धारित रहते हैं। भूमि सम्बन्धी

स्वत्व समस्त कबीला जाति के माने जाते हैं। यदि किसी व्यक्ति या परिवार को कोई भूमि दी जाती है कि उसमें से वह भोजन एकत्र करता रहे तब भी उस भूमि के विक्रय पर सारी जाति का ही अधिकार प्रायः महत्त्व रखता है।

अरुण्डा लोगों में व्यक्तिगत सम्पत्ति का प्रचलन है। वहां बड़े पुत्र को ही सम्पत्ति मिलती है। एक टाटेम ग्रुप का नेता ही प्रायः सारे कबीले का नेता बनता है। जनमत इनमें भी बड़ा महत्त्व रखता है। इसके लिये सभायें जोड़ी जाती हैं। एक बार निर्वासित किया हुआ व्यक्ति कभी भी लौटाया नहीं जा सकता वह सदैव निर्वासित ही रहता है।

इनमें कभी कभी नेता मिलकर जनमत पर परामर्श भी करते हैं।

मध्य और दक्षिण अमेरिका मैलेनेशिया पश्चिमी अफरीका और पूर्वी उत्तरी अमेरिका में सादे खेतिहर समाज विद्यमान हैं। किसान बहुत ही मामूली गांव या बस्तियां बसा कर रहते हैं। खेतों से ही उनके घर घिरे रहते हैं। प्रत्येक गांव में एक मुखिया होता है। सारी कबीला जाति का एक प्रमुख होता है और ये सब गांवों के मुखिया उसके आधीन होते हैं। उनका महत्त्व विशेष नहीं होता। न्यूगिनी की आदिम जातियों में प्रमुख का प्रभुत्व इसी से ज्ञात किया जाता है कि उसके पास कितनी भूमि है जिस पर वह खेती कराता है। उसका मुख्य कार्य ग्राम में आगंतुक अतिथियों का सत्कार करना होता है और वही उनका खर्चा उठाता है। प्रमुख दण्ड नहीं दे सकता क्योंकि उसके अधिकार सीमित होते हैं। यहां मातृसत्ताक प्रभाव होने के कारण स्त्रियों के अधिकार अधिक होते हैं और वे प्रमुख को पदच्युत भी कर सकती हैं।

सारी भूमि का स्वामित्व अन्ततोगत्वा समुदाय का ही होता है। किन्तु समुदाय भी भूमि नहीं बेच सकता क्योंकि ऐसा करना उनमें असम्भव माना जाता है। भोजन देना पूरे दल का उत्तरदायित्व है ताकि कोई भूखा न रहे। चल सम्पत्ति पर ही व्यक्तिगत अधिकार हो सकता है।

दण्ड मृत्यु तक हो सकता है। कठिन यातनाएं देना भी प्रचलित है। गांव की सीमा के बाहर दल किसी प्रकार का अधिकार प्रयोग नहीं करता।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समाज में नियमन का विकास मनुष्य की बढ़ती हुई आवश्यकताओं और बदलती हुई परिस्थितियों के हिसाब से अपना रूप परिवर्तित करता गया है।

परिवार

शा० ना० व्यास

कुटुम्ब अथवा परिवार समस्त मानवीय संठनों की मूल इकाई है और सामाजिक विकास की पहली सीढ़ी । आज के विशृंखलता के युग में भी परिवार का काफी महत्त्व है भले ही वह पहले की भांति सामाजिक ढांचे का इतना अनिवार्य अंग अब न माना जाता हो । सामाजिक कर्तव्यों का पालन कराने के लिए परिवार मानवीय व्यक्तित्व के विकास में कितना योग देता है इसका ज्वलंत उदाहरण दशरथ के पारिवारिक जीवन में उपलब्ध होता है । वास्तव में रामायण एक कौटुंबिक महाकाव्य है। राग द्वेष हर्ष शोक ममता मोह लोभ त्याग आदि की सामान्य कौटुम्बिक घटनाओं का चित्रण उसे सर्वसामान्य के लिए एक हृदयग्राही रचना बना देता है । वाल्मीकि ने पारिवारिक जीवन के प्राचीन आदर्शों को भावी पीढ़ियों के लिए अपनी रामायण में सुरक्षित कर दिया है ।

परिवार का रूप निस्संदेह पैतृक था । उसमें पिता कुटुम्ब का मुखिया था जिसका आदेश सर्वोपरि होता था । पत्नी गृहस्वामिनी थी किन्तु गृहस्वामी पर आश्रित और उसकी आज्ञाकारिणी । पुत्र और पुत्रियों पर पिता का पूर्ण नियंत्रण था । पिता की अनुमति के बिना वे अपना जीवन साथी नहीं चुन सकते थे । उदाहरणार्थ धनुर्भंग करके सीता को पाने के अधिकारी होने पर भी राम ने पिता की इच्छा जाने बिना विवाह करने से इन्कार कर दिया

दीयमानां न तु तदा प्रतिजग्राह राघवः ।
अविज्ञाय पितृश्छन्दमयोध्याधिपतेः प्रभोः ।। २।११८।५१

व्यवहारिक मामलों में पिता की आज्ञा कानून के तुल्य होती थी आनी संपत्ति कावह स्वेच्छानुसार पुत्रों में विभाजन कर सकता था । दशरथ ने कैकेयी के पिता को अपने बल बूते पर यह वचन दे दिया था कि इसीका पुत्र कोसल राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा । जब भरत ने चित्रकूट पर राम से कोसल राज्य स्वीकार करने की प्रार्थना की तब राम ने कहा कि मुझे मृगछाला और चीर वल्कल पहना कर जंगल में भेजने या राजगद्दी पर बैठाने दोनों में मेरे पिता

सर्वथा समर्थ हैं ।

कुटुम्ब का ढांचा इस अर्थ में संयुक्त था कि सारे सदस्य एक ही मुखिया की आज्ञा शिरोधार्य करते थे । राज परिवारों में राजा की विभिन्न पत्नियां और पुत्र अपने पृथक् महलों में रहते थे उनके अपने सेवक और अनुचर होते थे पर सभी महत्त्वपूर्ण कामों में वे गृहस्वामी पिता या बड़े भाई के आदेशों का पालन करते थे । विवाह के बाद राम अपने पृथक् प्रासाद में रहने लगे थे २।१६ फिर भी उन्होंने पिता के आदेशानुसार वन जाने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई । राज्य की बागडोर संभालने पर राम की अपने भाइयों और उनके पुत्र कलत्र से भरे संयुक्त परिवार पर शासन करने बारी आई ।

समाज की एक इकाई के रूप में परिवार उसकी परंपराओं एवं आचार विचारों को वर्षों से आत्मसात करता आता है । इस नाते वह अपने सदस्यों में उनका संचार करने का एक अच्छा माध्यम सिद्ध होता है । वाल्मीकि ने बारंबार यह शिक्षा दी है कि मनुष्य को उन सब संस्कारों और रूढ़ियों का मनोयोगपूर्वक संरक्षण और पालन करना चाहिए जो परिवार में अतीत काल से प्रतिष्ठित हो गई हैं तथा अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को कुटुम्ब के सामूहिक हितों के समक्ष गौण रखना चाहिए । रामायण में ऐसे अभिजात पुरुषों के अनेक दृष्टांत आये हैं जिन्होंने परिवार की सांस्कृतिक थाती का निष्ठापूर्वक पालन करने का सदैव आग्रह रखा । महाराज दशरथ ने अपनी राज्य सभा के समक्ष गर्वपूर्वक यह घोषणा की थी कि प्रजा की रक्षा में जागरूक रहकर मैंने अपने पूर्वजों के मार्ग का ही अनुसरण किया है ।

माता कौसल्या से वन जाने की अनुमति मांगते हुए राम ने यही तर्क दिया था कि पिता की आज्ञा मानकर मैं पूर्वकाल के धर्मात्मा पुरुषों द्वारा सेवित मार्ग पर ही चल रहा हूं पूर्वैरयमभिप्रेतो गतो मार्गोऽनुगम्यते २।२१।३६ । जब कैकेयी ने यशस्वी इक्ष्वाकु कुल के कल्याण की अवहेलना कर अपने और अपने पुत्र के स्वार्थों को प्रधानता दी तब दशरथ अपने महान् वंश पर आनेवाली घोर विपत्ति से आशंकित हो उठे थे । राम के वनवास और भरत के राज्याभिषेक का दुराग्रह करके कैकेयी ने परिवार की प्रतिष्ठित परम्पराओं को तोड़ने की चेष्टा की जिससे सभी विचारशील लोगों के चित्त संशकित हो गए । सुमंत्र ने कैकेयी की भर्त्सना करते हुए कहा इस कुल में यही रीति रही है कि राजा के देहांत के बाद उसके पुत्र आयु के अनुसार राज्य के [illegible] अधिकारी बनें । इस सनातन प्रथा को तुम महाराज के जीते जी तोड़ देना चाहती हो । ऐसा

कोई भी कृत्य जो अमर्याद अर्थात् पारिवारिक परंपराओं के प्रतिकूल होता हेय और लोक निंदित था। उज्ज्वल इक्ष्वाकु परिवार पर अपयश का टीका लगानेवाली कैकेयी को स्वकुलोपघातिनी कुलघ्नी और कुलपांसनी जैसे विशेषणों से संबोधित किया गया है। इसके विपरीत कैकेयी पुत्र भरत प्रभूत प्रशंसा के पात्र इसलिए बने कि पारिवारिक प्रथाओं का उल्लंघन करने का जो प्रयत्न उनकी माता ने किया उसे उन्होंने निर्मूल कर दिया। जब मंत्रियों तथा राज्य सभा के प्रमुख सभासदों ने उनसे राजगद्दी पर बैठने को कहा तब भरत ने यही उत्तर दिया कि हमारे वंश में ज्येष्ठ पुत्र ही शासन करने का उचित अधिकारी होता है ज्येष्ठस्य राजता नित्यमुचिता हि कुलस्य न: २।७९।७ ।

इस प्रकार के पारिवारिक संगठन में पुत्र का महत्त्वपूर्ण स्थान होना स्वाभाविक था क्योंकि वह वंश को चलाने वाला था वंशकर: १।३८।१२ धार्मिक दृष्टि से भी पुत्र की आवश्यकता अनुभव की जाती थी। पुत् नामक नरक से बेटा पिता की रक्षा करता है इसलिए वह पुत्र पितरों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला कहलाता है। पारलौकिक कल्याण के लिए पुत्र प्राप्ति नितांत आवश्यक थी पितृ ऋण से मुक्त होने का वह साधन थी। भरत जैसे धर्मात्मा पुत्र को पाकर महाराज दशरथ निस्संदेह ऋण मुक्त हो गए थे।

अतएव पुत्र के अभाव में माता पिता का उद्विग्न रहना स्वाभाविक ही था विनात्मजेनात्मवतां कुतो रति: २।१२।१११ । पुत्र प्राप्ति के लिए बड़े उद्योग किये जाते थे तपस्या तथा यज्ञों का संपादन किया जाता था। लोगों की इस बात में बड़े श्रद्धा थी कि दीर्घ तपस्या सदाचारी जीवन तथा धार्मिक अनुष्ठानों के परिणामस्वरूप ही सुयोग्य पुत्र की उपलब्धि हो सकती है। महाराज दशरथ को कठोर तपस्या असाधारण परिश्रम तथा विभिन्न प्रकार के पराक्रमों और मंत्र तंत्रों के प्रयोग से राम सदृश शुभ लक्षण संपन्नकी प्राप्ति हुई थी। राम जैसा पुत्र पाकर उनका जीवन धन्य और कृतकृत्य था। स्त्रियां भी संतान प्राप्ति के लिए तपस्या का आश्रय लेती थीं। पुत्रों की कल्याण कामना से माता पिता मांगलिक कृत्यों का अनुष्ठान करते थे। राम के प्रस्तावित यौवराज्याभिषेक के दिन जब दशरथ ने उन्हें कैकेयी के प्रासाद में बुला भेजा तब राम ने सोचा कि जान पड़ता है माता कैकेयी और पिताजी होनों मिलकर मेरे अभिषेक के संबंध में कोई औपचारिक कृत्य करने का विचार कर रहे हैं २।१६।१५ ।

परिवार में पुत्र स्नेह का केंद्र बिंदु था। दर्पण में पड़नेवाले प्रतिबिंब सदृश

आदर्शतलसंस्थाम पुत्र पे बढ़कर और क्या प्रिय हो सकता है नास्ति पुत्रसम: प्रिय: २।७४।२४ । कवि ने दशरथ और अंधमुनि के पुत्र स्नेह का मार्मिक चित्रण कर पुत्र के प्रति मानव की शाश्वत ममता को साकार कर दिया है ।

पुत्रों में भी ज्येष्ठ पुत्र का अधिकारपूर्ण स्थान था । वंशगत और भावनात्मक दोनों कारणों से वह पिता का अधिक प्रीति पात्र था । दशरथ के चारों पुत्रों में से ज्येष्ठ राम ही उनकी आंखों के तारे थे तेषां केतुरिव ज्येष्ठो रामो रतिकर: पितु: १।१८।२४ । गुणवती पटरानी कौसल्या के गुणवान् पुत्र होने के नाते राम के प्रति दशरथ का आकर्षण और भी बढ़ा हुआ था । विस्वामित्र की यज्ञ रक्षा के लिए राम को दशरथ इसीलिए नहीं भेजना चाहते थे कि वह उनके जेठे बेटे थे । कैकेयी निस्संदेह दशरथ की प्राणप्रिय भार्या थी पर राम उससे भी अधिक उन्हें प्यारे थे । कैकेयी की मांगें पूरी करने का वचन देते हुए उन्होंने राम की शपथ खाई थी तेन रामेण कैकेयि शापे ते वचनक्रियाम् २।११।७ ।

उत्तराधिकार का कानून ज्येष्ठ पुत्र को विशेषाधिकार प्रदान करता था । जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है उसे अपने छोटे भाइयों से पहले राजगद्दी पर बैठने का अधिकार था । पिता की अंत्येष्टि तथा पितरों के श्राद्ध में पिंड दान करने का पहला अधिकार ज्येष्ठ पुत्र को ही प्राप्त था । ऐसी मान्यता थी कि पिता के प्रिय पुत्र द्वारा प्रदत्त पिंड आदि पितृलोक में अक्षय हो जाते हैं ।

बड़े भाई के विवाह को प्राथमिकता दी जाती थी । उससे पहले विवाह कर लेनेवाला छोटा भाई परिवित्ता कहलाता था और नरक का भागी बनता था । छोटे भाई बड़े भाई को पितृतुल्य मानते और उनके आदेशों का तन मन से पालन करते थे । जब कुंभकर्ण ने लंका की राज्य सभा में रावण को राजधर्म पर उपदेश दे डाला तब रावण ने उत्तेजित होकर उसे फटकारा कि मैं तुम्हारा बड़ा भाई और आचार्य की तरह माननीय हूं फिर तुम मुझे क्या शिक्षा बघार रहे हो । मान्यो गुरुरिवाचार्य: किं मां त्वमनुशाससे ६।६३।२३ । भरत को ज्येष्ठानुवर्ती अर्थात भाई का आज्ञा पालक कहा गया है । वन गमन की वेला में सुमित्रा ने लक्ष्मण को जो उपदेश २।४०।५ ६ दिया उससे भी यह स्पष्ट है कि छोटे भाई के लिए बड़ा भाई सम्मान का कितना पात्र था । इसी तरह बड़े भाई का भी यह कर्तव्य था कि वह छोटे भाइयों से पुत्र तुल्य व्यवहार करे । राज्य करते समय राम हर एक कार्य में अपने भाइयों का परामर्श लिया करते थे तथा उन्हें सुख

पहुंचाने और प्रसन्न रखने की चेष्टा करते थे।

माता पिता अपनी संतान के परम स्नेह और श्रद्धा के भाजन थे। पिता शब्द की व्युत्पत्ति पा रक्षा करना धातु से हुई है और इसलिए पिता का अर्थ संरक्षक है। यह व्युत्पत्तिजन्य अर्थ ही पिता के उस सर्वाधिक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का सूचक है जो वह अपने नन्हें अबोध शिशुओं का पालन पोषण करके निभाता है। माता और पिता पुत्र के प्रति सर्वदा जो स्नेहपूर्ण बर्ताव करते हैं अपनी शक्ति के अनुसार उत्तम खाद्य पदार्थ देने अच्छे बिछौने पर सुलाने उबटन लगाने सदा मीठी बातें बोलने लालन पालन करने आदि के द्वारा जो उपकार करते हैं उसका बदला सहज ही नहीं चुकाया जा सकता। जिसमें मनुष्य अपने प्रादुर्भाव का मूल पाता है और जो प्रत्यक्ष देव तुल्य है उस पिता का वह कैसे विरोध कर सकता है।

पिता और माता की आज्ञा का पालन पुत्र का सर्वोपरि कर्तव्य था। राम के अनुसार इससे बढ़कर विडंबना और क्या हो सकती है कि हम अपने बीच प्रत्यक्ष रूप से विराजमान माता पिता और गुरु की तो उपेक्षा करें और उन देवताओं की पूजा करें जिनके अस्तित्व का हमें कुछ पता नहीं। जिनकी सेवा से धर्म अर्थ और काम तीनों की प्राप्ति होती है जिनकी आराधना से तीनों लोकों की आराधना हो जाती है उन माता पिता के समान पवित्र इस संसार में दूसरा कोई भी नहीं है। पिता की सेवा करना कल्याण प्राप्ति का जैसा उत्तम साधन माना गया है वैसा न सत्य है न दान है न मान है और न पर्याप्त दक्षिणावाले यज्ञ ही हैं। गुरुजनों की सेवा से स्वर्ग धन धान्य विद्या पुत्र और सब कुछ भी दुर्लभ नहीं है २।३०।३२ ६ ।

इन महान् आदर्शों से अनुप्राणित होकर ही राम ने वन की राह ली थी। उन्होंने कहा था सत्य और धर्म में स्थित मेरे पिता मुझे जो भी आदेश दें मैं उसीका पालन करना चाहता हूं यही सनातन धर्म है। वन जाने से मैं कैसे इन्कार कर सकता हूं पिता की आज्ञा उनकी प्रतिज्ञा और सत्य की मांग ये सब मुझे जाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। पिता की आज्ञा का उल्लंघन कर मैं जीवित नहीं रहना चाहता २।३०।३५ ३१ २ । माता पिता के शुश्रूषा जनित पुण्य से और सत्य के प्रभाव से सुरक्षित होकर राम ने वन को प्रस्थान किया।

ऐसे पुत्रों के भी उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने पिता की आज्ञा का पालन उसके औचित्य अनौचित्य का विचार किये बिना ही कर डाला हो। राम पिता के कहने से आग में कूदने तेज जहर खा लेने और समुद्र में भी गिर पड़ने को तैयार थे पिता ही उनके हितचिंतक उनके गुरु

और उनके सम्राट् सब कुछ थे । अपनी माता के संमुख राम पिता की आज्ञा की आज्ञा का बिना ननु नच किये धर्म समझकर पालन करने की महत्ता प्रतिपादित की चाहे वह आज्ञा क्रोध प्रेम अथवा वासना के वशीभूत होकर ही क्यों न दी गई हो ।

गुरुश्च राजा च पिता च वृद्धः क्रोधात्प्रहर्षादथ वापि कामात ।
यद् व्यादिशेत् कार्यमवेक्ष्य धर्मं कस्तं न कुर्यादनृशंसवृत्तिः ।।२।२१।५६

कंडु ऋषि का पिता की आज्ञा से गो हत्या करना और सगर की आज्ञा से उनके पुत्रों का धरती खोदकर मृत्यु का ग्रास बनना ये पूर्वकालीन उदाहरण राम के सामने मौजूद थे । इन लोगों ने तथा अन्य कितने ही देवतुल्य पुरुषों ने आंख मीच कर पिता का वचन माना था । पिता की आज्ञा का उल्लंघन करना राम की शक्ति के बाहर की बात थी २।२१।३० ४ ।

एक रोचक प्रश्न यह उपस्थित होता है कि माता की आज्ञा और पिता के आदेश में परस्पर विरोध होने पर किसका वचन पुत्र के लिए अधिक आदरणीय होना चाहिए । यों तो धर्मात्मओं की पिता में जितनी गौरव बुद्धि होती है उतनी ही माता में भी तथापि रामायण में ऐसी विषम स्थिति में पिता की आज्ञा को ही अधिक ऊंचा पद दिया गया है । कौसल्या और राम के संवाद से यह प्रकट है । जब राम ने पिता की आज्ञासुसार वन जाने की अनुमति माता से मांगी तब कौसल्या ने उनसे कहा हे धर्मज्ञ यदि तुम धर्म का आचरण करना चाहते हो तो यहीं रहकर मेरी सेवा करो । देखो कश्यप ऋषि अपने घर में ही नियमपूर्वक माता की सेवा में लगे रहे और अन्त में स्वर्ग गये । जिस प्रकार गुरु भाव से राजा तुम्हारे पूज्य हैं वैकी मैं भी हूं । मैं तुम्हें वन जाने की आज्ञा नहीं देती इसलिए न जाओं २।२१।२४ ५ । इसके उत्तर में राम ने परशुराम का उदाहरण दिया जिन्होंने पिता की आज्ञा का आंख मूंदकर पालन करके अपनी माता रेणुका का सिर फरसे से काटा डाला था २।२१।२३ । माता के प्रति अतिशय स्नेहमय होने पर भी राम पिता के वचन अधिक माननीय समझते थे क्योंकि पिता की आज्ञा पालन करने से कोई भी धर्म से भ्रष्ट नहीं होता । शुक्रनीति २।७५ ६ के अनुसार पिता के पुण्य के प्रभाव से परशुराम को अपनी माता पुनः मिल गई और राम को अपना राज्य पुनः प्राप्त हो गया जबकि पिता की आज्ञा की अवहेलना करके ययाति और विश्वामित्र के पुत्र निम्नतम स्थिति को प्राप्त हो गए । सामान्यतः माता पिता दोनों के ही वचन पुत्र के लिए वरेण्य थे किंतु पितृ प्रधान परिवार में पिता को स्वभावतः कुछ प्रमुखता मिल जाती थी ।

राजकीय परिवारों में ज्येष्ठ पुत्र अपने विवाह के बाद दैनिक कार्य कलाप में पिता को भरसक सहयोग देता था । सीता से विवाह हो नाने के बाद राम अपने पिता की सेवा शुश्रूषा का विशेष ध्यान रखते थे उनकी आज्ञा के अनुसार वह राज काज देखने तथा प्रजाजनों के प्रिय और हित में निरत रहने लगे । समय समय पर वह अपनी माताओं तथा अन्य गुरुजनों की सेवा करने का भी ध्यान रखते थे । उनके इस बर्ताव से राजा दशरथ पुरवासी वेदवेत्ता ब्राह्मण तथा वैश्य महाजन संतुष्ट और प्रसन्न थे १।७७।२० ४ ।

मानव सभ्यता के अरुणोदय से ही परिवार को स्थायित्व प्रदान करने में पैतृक स्नेह और यौन इच्छा का प्रमुख योग रहता आया है । समाज का यह कर्तव्य है कि वह इन दोनों भावनाओं का इस प्रकार संचालन करे कि वे सामाजिक दृष्टि से उपयोगी बन जायं । पैतृक स्नेह ही पिता को संतति के लिए त्याग और श्रम करने को कटिबद्ध रखता है । वृद्धावस्था में पुत्र को सब कुछ सौंप उपराम वृत्ति ग्रहण करने की आज्ञा देकर हमारे शास्त्रकारों ने पिता के संपत्ति प्रेम या स्वार्थ भाव को परिवार की भावी सुख शांति और सुचारु व्यवस्था के निमित्त वियंत्रित रखने की चेष्टा की । इसी प्रकार यौन भावना पर व्यवहार कानून नैतिक और धार्मिक नियमों तथा परंपराओं और संस्कारों का बंधन लगाकर उसे मर्यादित रखा गया जिससे वह कामोपभोग की उद्दाम वासना की अपेक्षा वंश चलाने की हार्दिक अभिलाषा का रूप लें सके ।

परिवार के सदस्यों का सौहार्दमय पारस्परिक संबंध ही आर्य संस्कृति का प्रधान संबल उसकी उत्कृष्टता का प्रमुख रहस्य रहा है । रामायणकार ने पाठक के सामने संयुक्त परिवार के विभिन्न सदस्यों के बीच स्नेह और सद्भावनापूर्ण सम्बन्धों का एक उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत किया है । दशरथ के पारिवारिक जीवन का चित्रण कर वाल्मीकि ने पिता पुत्र भाई भाई पति पत्नी देवर भौजाई सास पुतोहू आदि के स्नेहसिक्त एवं अनुकरणीय सम्बन्धों के समुज्ज्वल उदाहरण उपस्थित किये हैं । यह सत्य है कि कैकेयी की ईर्ष्या भावना इस सुखी परिवार पर काली छाया की तरह आ पड़ी है पर उसकी स्वार्थपरायणता और अमर्यादित आचरण के कारण ही तो अन्य सदस्यों की उदात्त वृत्तियां और निःस्वार्थ व्यवहार प्रकाश में आ सके । दशरथ में यदि आदर्श पिता और राम में आदर्श पुत्र मूर्तिमान हो उठे हैं तो लक्ष्मण और भरत में आदर्श भाई तथा कौसल्या और सीता में आदर्श पत्नी का रूप निखरा है । रामायणकालीन समाज का कोई भी अध्ययन इन विशिष्ट चरित्रों के पारिवारिक आचरण का समुचित मूल्यांकन किये बिना पूर्ण नहीं हो सकता ।

राम और उनके तीनों भाइयों के बीच निश्छल और प्रगाढ़ भ्रातृ प्रेम था । जैसे गाय के खुर अथवा प्रोष्ठपद नाम के तारे दो दो के जोड़े में परस्पर अनुरक्त रहते हैं वैसे ही वे चारों भाई राम लक्ष्मण और भरत शत्रुघ्न के दो दो के जोड़े में परस्पर अनुरक्त थे प्रोष्ठपदोपमाः । उनमें कोई स्पर्धा कोई प्रतियोगिता या कलह नहीं था । राम को अपने भाई प्राणों से प्यारे थे । वन प्रस्थान के समय उन्होंने सीता को घर पर रहने के लिए समझाते हुए कहा था कि प्राणप्रिय भरत और शत्रुघ्न का तुम अपने भाई और पुत्र के समान विशेष ध्यान रखना । भाइयों के प्रति उनका प्रेम चित्रकूट पर भी उस समय उज्ज्वल रूप में प्रकट हुआ है जब उनसे अयोध्या लौट चलने की अनुनय विनय की गई थी । लक्ष्मण ने राम के लिए निःस्वार्थ आत्मोत्सर्ग कर रखा था और राम के भी वह मानों बाह्यप्राण ही थे बहिः प्राण इवापरः १।१८।३० । राम और भरत का प्रेम भी अद्वितीय और देवोपम था । राम का भरत के राज्याभिषेक के प्रस्ताव से आनंदित होकर अपना अधिकार छोड़ देना तथा भरत का उसे स्वीकार न करना और तपस्वी रूप में जीवन यापन करना एक दूसरे से बढ़कर आदर्श उपस्थित करते हैं ।

राम के यौवराज्याभिषेक पर कैकेयी के आक्रोश की घटना को एक अपवाद मान लिया जाय तो हम देखेंगे कि दशरथ की रानियों का पारस्परिक व्यवहार नितांत सौहार्दपूर्ण था । कौसल्या का कैकेयी के प्रति भगिनीवत व्यवहार था । सुमित्रा ने अपनी स्थिति सर्वथा गौण बना रखी थी उसने कौसल्या के हितों में ही अपने हितों को एकाकार कर दिया था और अपने पुत्र को जेठे भाई के प्रति पूर्णतया अनुरक्त बनने देने में ही गौरव का बोध किया था । मंथरा द्वारा बहकाये जाने से पहले कैकेयी राम को अपना बड़ा पुत्र मानती थी उसके स्नेह के वह और भरत समान रूप से पात्र थे । राम का भी अपनी विमाता के प्रति मातृ तुल्य व्यवहार था । उन्हें अपने प्रति कैकेयी की सद्भावना में कोई संदेह नहीं था । उसके षड्यंत्र के प्रकट होने पर भी राम के व्यवहार में कोई अंतर नहीं आया । सच तो यह था कि दशरथ के विशाल अंतःपुर में जहां असंख्य नर नारी रहते थे राम से कोई अप्रसन्न नहीं था

बहूनां स्त्रीसहस्राणां बहूनां चोपजीविनाम् ।
परिवादोऽपवादो वा राघवे नोपपद्यते ।। २।१२।२७

इस प्रकार हम देखते हैं कि माता और पिता की भक्ति संतति का प्रेम पति पत्नी की अनुरक्ति अतीत की परंपराओं में आस्था तथा पूर्वजों का श्रद्धामय स्मरण ये ही वे सुकुमार तंतु थे

जो परिवार के सदस्यों को परस्पर बांधे रखते थे। एक संस्कारी हिंदू गृहस्थ का घर गृह देवता अग्नि के संरक्षण में परिवार के जीवित सदस्यों का ही नहीं अपितु दिवंगत पितरों का भी आवास है। अग्निकी साक्षी में पंच महायज्ञों का अनुष्ठान किया जाता है तथा पितृ यज्ञ के समय पूर्वजों का प्रतिदिन स्मरण। ऐसे पवित्र वातावरण में प्राचीन आर्यों का परिवार मातृ स्नेह पैतृक संरक्षण दाम्पत्य प्रणय और संतानोत्पत्ति की हमारी प्राकृतिक प्रवृत्तियों के आधार पर समाज हित में योग दान करता था।

परिवार का नष्ट भ्रष्ट तितर बितर या विशृंखलित हो जाना एक महान् विपत्ति था। अराजकता के दोषों का वर्णन करते हुए वाल्मीकि कहते हैं कि राजा रहित प्रदेश में पारिवारिक जीवन और नैतिक जीवन का चरम पतन हो जाता है तब पिता और पुत्र में संघर्ष होने लगता है और स्त्रियां हाथ से बाहर निकल जाती हैं नाराजके पितुः पुत्रो भार्या वा वर्तते वशे २।६७।१० ।

मनुष्य के चरित्र निर्माण में कुटुंब के महान् योग को रामायण ने स्वीकार किया है। कुल या परिवार ही एक ऐसा शिक्षणालय है जिसमें व्यक्ति स्नेह और सौहार्द का गुरुजनों के प्रति आदर और भक्ति भाव का तथा सामूहिक कल्याण के लिए वैयक्तिक प्रवृत्तियों और महत्त्वाकांक्षाओं को दबाने का पाठ सीखता है। अपने पारिवारिक जीवन में जमी थीं। जहां उन्होंने सत्य दान तप त्याग मित्रता पवित्रता सरलता विद्या और गुरु सेवा जैसे सद्गुणों को विकसित किया वहीं उन्होंने प्रजाजनों को सत्य से दीनों को दान से गुरुजनों को सेवा से और शत्रुओं को धनुष से जीतना सीखा। शत्रु और मित्र के प्रति सरल शिष्ट व्यवहार जीवन के विषम क्षणों में उच्च नैतिकता का आग्रह विचारों की दृढ़ता असत्य और ईर्ष्या द्वेष से सर्वथा मुक्ति दानशीलता और उदाराशयता समस्त मानवों के प्रति सेवा भाव प्राणि मात्र के प्रति प्रेम और भ्रातृत्व आदि गुण जो उनके उथल पुथल भरे जीवन में पद पद पर प्रकट हुए हैं अपने उद्भव और विकास के लिए पारि पारिवारिक सहयोग पारिवारिक अनुशासन एवं पारिवारिक वातावरण के ही ऋणी थे। वस्तुतः राम का समग्र जीवन परिवार के मनो वैज्ञानिक एवं सामाजिक सत्भाव का उज्ज्वल दृष्टांत है।

संस्कारों का प्रयोजन

डा० राजबली पाण्डेय

प्रास्ताविक

हिन्दू संस्कारों जैसी प्राचीन संस्ताओं के प्रयोजन तथा महत्त्व की गवेषणा के मार्ग में अनेक कठिनाइयां हैं। सर्वप्रथम वे परिस्थितियां जिनमें उनका प्रादुर्भाव हुआ था युगों के गर्भ में जा छिपी हैं और उनके चारों ओर लोकप्रचलित अन्धविश्वासों का जाल का बिछ गया है। अत: उनसे सुदूर वर्तमान में समस्या पर दृष्टिपात करने लिये तथ्यों के गम्भीर ज्ञान से संयुक्त सुनियोजित कल्पना अपेक्षित हैं ॥ दूसरे जातीय भावना अतीत के देदीप्यमान पार्श्व की ओर ही ध्यान देती है और इस प्रकार समीक्षात्मक दृष्टि आच्छन्न हो जाती है जो किसी भी अनुसन्धान कार्य के लिये अत्यन्त आवश्यक है। किन्तु इससे भी बड़ी कठिनाई आधुनिक मस्तिष्क की पूर्वाग्रही धारणाओं के कारण उत्पन्न होती है। वह साधारणत: यह समझता है कि प्राचीन काल की प्रत्येक बात अन्धविश्वासपूर्ण है। उसमें कठोर अनुशासन को समझने के लिये धैर्य नहीं है जो प्राचीन धम की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। प्राचीन संस्कृति के विद्यार्थी को एक ओर तो निरी श्रद्धा से और दूसरी ओर अति सन्देहवादी मनोवृत्ति से अपने को बचाना आवश्यक है। उसे अतीत के प्रति समुचित आदर और विकास के विभिन्न स्तरों से चलते हुए मानवस्वभाव के प्रति पूर्ण सहानुभूति के साथ संस्कारों का अध्ययन करना चाहिये।

२ दुहरा प्रयोजन

मौटे तौर से हम संस्कारों के प्रयोजन को दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। पहला वर्ग सरल विश्वास तथा अकृत्रिम मन की सहज सादगी से उद्दिष्ट है। द्वितीय वर्ग कर्मकाण्डीय व सांस्कृतिक है। इसका उद्भव सामाजिक विकास और उन्नति की नियामक चेतन शक्तियों के कारण होता है जब कि मनुष्य प्राकृतिक आधारों के ऊपर ही विकास का प्रयत्न करता है ॥ पुरोहित जनसाधारण की पहुंच से दूर न होते हुए भी उसकी अपेक्षा उच्चतर स्तर पर अवश्य था

उसने विभिन्न प्रकारों से सामाजिक प्रथाओं को और परिष्कृत किया । दोनों प्रकार के संस्कार अत्यन्त प्राचीन समय से ही समानान्तर रूप से व्यवहृत होते रहे हैं उन्होंने परस्पर एक दूसरे को प्रभावित किया है और आज भी वे हिन्दू धर्म में प्रचलित हैं ।

३ लोकप्रिय प्रयोजन

लोकप्रिय प्रयोजन पर विचार करते समय हमें यह ध्यान में रखना चाहिये कि संसार के अन्य देशों की भांति हिन्दुओं का भी विश्वास था कि वे चारों ओर से ऐसे अतिमानुष प्रभावों से घिरे हुए हैं बुरा और भला करने की शक्ति रखते थे । उनकी धारणा थी कि उक्त प्रभाव जीवन के किसी भी महत्त्वपूर्ण अवसर पर व्यक्ति के जीवन में हस्तक्षेप कर सकते हैं । अतः वे अमङ्गलजनक प्रभावों के निराकरण तथा हितकर प्रभावों की प्राप्ति के लिये प्रयत्न किया करते थे जिससे मनुष्य बिना किसी वाह्य विघ के अपना विकास और अधिवृद्धि कर सके और देवों तथा दिव्य शक्तियों से सामयिक निर्देश और सहायता प्राप्त कर सके । संस्कारों के अनेक अङ्गों के मूल में यही विखास रहे हैं ।

४ अशुभ प्रभावों का प्रतीकार : अवांछित प्रभावों के निराकरण के लिये हिन्दुओं ने अपने संस्कारों के अन्तर्गत अनेक साधनों का अवलम्बन किया । उनमें प्रथम स्थान आराधना का था । भूतों पिशाचों और अन्य अशुभ शक्तियों की स्तुति की जाती उन्हें बलि व भोजन दिया जाता था जिससे वे बलि से तृप्त होकर बिना किसी प्रकार की क्षति पहुंचाए लौट जाएं । गृहस्थ अपनी पत्नी और बच्चों की रक्षा के लिये चिन्तित रहता था और भूत पिशाचों की निवृत्ति अपना कर्तव्य समझता था । स्त्री के गर्भिणी रहने के समय शिशु जन्म शैशव आदि के समय इस प्रकार की प्रार्थनाएं की जाती थीं । यदि शिशु पर रोगवाही भूत कुमार आक्रमण कर देता है तो शिशु का पिता कहता है शिशुओं पर आक्रमण करने वाले कुर्कुर सुकुर्कुर शिशु को मुक्त कर दो । हे सिसर मैं तुम्हारे प्रति आदर प्रकट करता हूं आदि । दूसरा उपाय था उनको बहकाने का । यदा कदा आराधना को या तो अनावश्यक समझा जाता या सप्रयोजन उसे दूर ही रखा जाता था । उदाहरणार्थ मुण्डन के अवसर पर काटे हुए केशों को गाय के गोबर के पिण्ड के साथ मिलाकर गोष्ठ में गाड़ दिया जाता अथवा नदी में फेंक दिया जाता था जिससे कोई भूत या पिशाच उस पर अपने चमत्कारी प्रयोग न कर सके । बहकावे की यह प्रक्रिया अन्त्येष्टि के कृत्यों से भी प्रमाणित होती है । बहकावे के लिये मृत्यु के आसन्न होने पर मृत्यु के

पहले मरणासन्न व्यक्ति की प्रतिकृति का दाह कर दिया जाता था। इसके मूल में यह उद्देश्य निहित था कि मृत्यु जब मरणासन्न व्यक्ति के शरीर पर आक्रमण करे तो तथाकथित मृत व्यक्ति के कारण भ्रम में पड़ जाए। किन्तु जब आराधन और बहकावे दोनों अपर्याप्त सिद्ध हुए तो एक तीसरा क्रान्तिकारी चरण उठाया गया। अशुभ शक्तियों को स्पष्टत: दूर चले जाने के लिये कहा जाता उनकी भर्त्सना की जाती और प्रत्यक्षत: उन पर आक्रमण किया जाता। जातकर्म संस्कार के समय शिशु का पिता कहता है शुण्ड मर्क उपवीर शौण्डिकेय उलूखल मलिम्लुच द्रोणास और च्यवन तुम सभी यहां से अदृश्य हो जाओ स्वाहा। गृहस्थ देवों और देवताओं से भी अशुभ प्रभावों का निवारण करने के लिये प्रार्थना करता। चातुर्थिकर्म के अनुष्ठान के अवसर पर पति नवविवाहिता पत्नी के घातक तत्वों के निवारण के उद्देश्य से अग्नि वायु सूर्य चन्द्र तथा गन्धर्व का आह्वान करता था। किन्तु कभी कभी जल और अग्नि से वह स्वयं उक्त अशुभ शक्तियों को आतंकित कर दूर हटा देता।

इस प्रयोजन की सिद्धि के लिये अन्य उपाय भी काम में लाये जाते थे। जल का उपयोग साधारणत: प्रत्येक संस्कार में किया जाता था।। जल दैहिक अशौच को धोता और भूत पिशाचों व राक्षसों से रक्षा करता। शतपथ ब्राह्मण में जल को राक्षसों का नाशक कहा गया है। अवांछित शक्तियों को आतंकित करने के लिये अन्त्येष्टि के समय शब्द किया जाता था। कभी कभी व्यक्ति स्वयं अपनी दृढ़ता व बल की घोषणा कर देता था। अपने मार्ग में आनेवाली किसी भी अमङ्गल सम्भावनाका सामना करने के लिये वह अपने को अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित कर लेता था जैसे विद्यार्थी दण्डधारण करता था। वह इस दण्ड को छोड़ नहीं सकता था और उससे सदा इसे अपने पास रखने की अपेक्षा की जाती थी। विद्यार्थि जीवन की समाप्ति के समय जब दण्ड का त्याग कर दिया जाता था तो समावर्तन संस्कार के अवसर पर वह दृढ़तर वंश दण्ड का धारण करता था। यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पशुओं और मानव शत्रुओं से रक्षा के लिये ही नहीं राक्षसों और पिशाचों से रक्षा के लिये भी यह उपयोगी है। दण्ड को सवेग आन्दोलित करना भी अशुभ प्रभावों को दूर करने का एक उपाय था। सीमन्तोन्नयन संस्कार के अवसर पर केशों को इसी उद्देश्य से संवारा जाता था। स्वार्थपरता के वशीभूत होकर वह इन अमङ्गल शक्तियों को अपने ऊपर से हटाकर अन्य व्यक्तियों की ओर संक्रमित करने का भी प्रयास करता था। उदाहरणार्थ वधू द्वारा धारण किये हुए वैवाहिक वस्त्र ब्राह्मण को दान कर दिये

जाते थे क्योंकि वे वधू के लिये घातक समझे जाते थे। कुछ भी हो इस विषय में लोगों की धारणा थी कि ब्राह्मण इतना सशक्त है कि उस पर अशुभ शक्तियां आक्रमण ही नहीं कर सकतीं। वैवाहिक वस्त्रों को गोशाला में रख या वृक्ष पर टांग भी दिया जाता था।

५ अभीष्ट प्रभावों का आकर्षण : जिस प्रकार अशुभ प्रभावों से बचाव का प्रयत्न किया जाता था उसी प्रकार किसी भी संस्कार के अवसर पर संस्कार्य व्यक्ति के हित के लिये अभीष्ट प्रभावों को आमन्त्रित और आकृष्ट किया जाता था। हिन्दुओं का विश्वास था कि जीवन का प्रत्येक समय किसी न किसी देवता द्वारा अधिष्ठित है। अत: प्रत्येक अवसर पर संस्कार्य व्यक्ति को वर व आशीर्वाद देने के लिये उस देवता का उद्बोधन किया जाता था। विष्णु गर्भाधान के समय के प्रधान देवता थे विवाह के समय प्रजापति और उपनयन के समय बृहस्पति इत्यादि इत्यादि। किन्तु वे केवल देवताओं पर ही पूर्णत: आश्रित नहीं थे। लोग स्वयं विविध उपायों से अपनी सहायता करते थे। इसमें साम्य रखने वाले पदार्थों की ओर संकेत का महत्त्वपूर्ण स्थान था। शुभ वस्तुओं के स्पर्श से वे मङ्गल परिणाम की आशा करते थे। सीमन्तोन्नयन संस्कार के समय उदुम्बर वृक्ष की शाखा का पत्नी के गले से स्पर्श कराया जाता था। यह विश्वास था कि उसके स्पर्श से स्त्री में उर्वरता आ जाती है। शिलारोहण से दृढ़ता आ जाती है ऐसा विश्वास था अत: ब्रह्मचारी और वधू के लिये उसका विधान कर दिया गया। हृदयस्पर्श ब्रह्मचारी और आचार्य तथा पति और पत्नी के बीच में ऐक्य और सामंजस्य स्थापित करने का एक निश्चित उपाय समझा जाता था। श्वास जीवन का प्रतीक समझा जाता था अत: पिता नवजात शिशु पर उसके श्वास प्रश्वास को दृढ़ करने के लिये तीन बार फूंकता था। पुत्र की प्राप्ति के लिये इच्छुक मां को दधिमिश्रित दौ द्विदलधान्यों के साथ जौ का एक बीज खाना आवश्यक था। कारण स्पष्ट है। इच्छुक मां जिन वस्तुओं को ग्रहण करती थी वे पुरुष की प्रतीक थीं अत: उनसे गर्भ में पौरुष को सत्कृत कर देने की आशा की जाती थी। सन्तति प्रजनन के लिये पत्नी की नाक के दायें छेद में दूरव्यापी जड़वाले विशाल वटवृक्ष का रस छोड़ा जाता था। समंजन से स्नेह और प्रेम उत्पन्न होने की धारणा थी। विवाह संस्कार के अवसर पर जब वर समस्त देवों तथा जल आदि से दम्पति के हृदयों में ऐक्य और प्रेम का प्रादुर्भाव करने की प्रार्थना करता रहता था वधू का पिता उन दोनों का समंजन करता था। यह धारणा थी कि कुरूप और अशुभ दृश्यों के निवारण और अपवित्र व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध तोड़ लेने से

पवित्रता सुरक्षित रहती है। स्नातक के लिये अशुभ अक्षरों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों का उच्चारण या दूषित विचारों को मस्तिष्क में लाना भी निषिद्ध था। वह गर्भिणी को विजन्या नकुल को शकुल और कपाल को भगाल कहता था। यदाकदा अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिये नाटकीय ढंग से भी कुछ बातें पूछी जाती थीं। सीमन्तोन्नयन संस्कार के अवसर पर पत्नी को चावल लि की ओर देखने के लिये कहा जाता था जबकि पति उससे पूछता था कि सन्तान पशु सौभाग्य और मेरे लिये दीर्घायु इनमें से तुम क्या देख रही हो।

६ संस्कारों का भौतिक उद्देश्य संस्कारों का भौतिक उद्देश्य था पशु सन्तान दीर्घ जीवन सम्पत्ति समृद्धि शक्ति और बुद्धि की प्राप्ति। संस्कार गृह्यकृत्य थे और स्वभावतः उनके अनुष्ठान के समय घरेलू जीवन के लिये आवश्यक सभी वस्तुओं की भावना देवों से की जाती थी। हिन्दुओं औरयह विश्वास था कि आराधन और प्रार्थना के माध्यम से उनकी इच्छाओं और आकांक्षाओं को देवता जान लेते हैं और पशु सन्तान अन्न स्वास्थ्य तथा सुन्दर शरीर और तीक्ष्ण बुद्धि के रूप में उनकी पूर्ति करते हैं। इन भौतिक उद्देश्यों की नींव अत्यन्त दृढ़ है और आज भी उन्होंने जनसाधारण के मन पर अधिकार कर रक्खा है। पुरोहित सदा जनसाधारण की इन भौतिक आकांक्षाओं को प्रश्रय देता रहा है। वह इन्हें परिष्कृत करने और गृहस्थ के लिये उनका औचित्य सिद्ध करने का प्रयास करता आया है।

७ संस्कार : आत्माभिव्यक्ति के माध्यम किन्तु गृहस्थ न तो बराबर केवल भयभीत ही रहता था और न वह देवताओं का व्यावसायिक प्रार्थी ही था। वह जीवन की विभिन्न घटनाओं के कारण होनेवाले हर्ष आनन्द और यहां तक कि दुःख व्यक्त करने के लिये भी संस्कारों का अनुष्ठान करता था। सन्तान की प्राप्ति लुभानेवाली वस्तु थी अतः उसके जन्म के समय पिता को असीम आनन्द होना स्वाभाविक था। विवाह मनुष्यजीवन के सबसे बड़े उत्सव का अवसर था। शिशु के प्रगतिशील जीवन का प्रत्येक चरण परिवार को सन्तोष और हर्ष से पूर्णतः भर देता था। मृत्यु शोक का अवसर था जो चारों ओर करुणा ही करुणा का दृश्य उपस्थित कर देता था। वह अपने हर्ष के भावों को साज सजावट संगीत भोज तथा उपहारों के रूप में व्यक्त करता और उसके शोक की अभिव्यक्ति अन्त्येष्टि कृत्य में होती थी।

८ सांस्कृतिक प्रयोजन

संस्कारों के लोकप्रिय प्रयोजा को पूर्णतः स्वीकार करते हुए महान् लेखकों और

विधिनिर्माताओं ने उनमें उच्चतर धर्म और पवित्रता का समावेश करने का प्रयास किया । मनु कहते हैं कि गार्भ होम जातकर्म चूडाकर्म और मौञ्जीबन्धन संस्कार के अनुष्ठान से द्विजों के गर्भ तथा बीज सम्बन्धी दोष दूर हो जाते हैं । उनका यह भी कहना है कि द्विजों को गर्भाधान आदि शारीरिक संस्कार वैदिक कर्मों के साथ करने चाहिये जो इहलोक तथा परलोक दोनों को पवित्र करते हैं । याज्ञवल्क्य भी इसी विचार की पुष्टि करते हैं । लोगों का विश्वास था कि बीज और गर्भवास अपवित्र व अशुद्ध हैं और जातकर्म आदि संस्कारों के द्वारा ही इस मल या पाप से छुटकारा पाया जा सकता है । आत्मा के निवास के लिये शरीर को उपयुक्त माध्यम बनाने के लिये सम्पूर्ण शरीर संस्कार भी आवश्यक समझा जाता था । मनु के अनुसार स्वाध्याय व्रत होम देव और ऋषियों के तर्पण यज्ञ सन्तानोत्पत्ति . यज्ञ व पञ्चमहायज्ञों के अनुष्ठान से यह शरीर ब्राह्मी हो जाता है । यह सिद्धान्त भी प्रचलित था कि उत्पन्न होते समय प्रत्येक व्यक्ति शूद्र होता है अतः पूर्ण विकसित आर्य होने के लिये उसका संस्कार व परिमार्जन करना आवश्यक है । कहा गया है कि जन्म से प्रत्येक बन जाता है और ब्रह्म के साक्षात्कार से उसे ब्राह्मण की स्थिति प्राप्त हो जाती है ।

सामाजिक विशेषाधिकार तथा अधिकार भी संस्कारों के साथ सम्बद्ध थे । उपनयन संस्कार एक प्रकार से समाज और उसके धार्मिक साहित्य में प्रविष्ट होने का प्रवेश पत्र था । यह भी द्विजों का विशेषाधिकार था और शूद्रों के लिये वर्जित था । विद्यार्थि जीवन की समाप्ति तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के लिये समावर्तन संस्कार का अनुष्ठान करना आवश्यक था । वैदिक मन्त्रों के द्वारा उपनयन और विवाह संस्कार से किसी भी व्यक्ति को सभी प्रकार के यज्ञों के अनुष्ठान करने तथा समाज में अपने उन्नयन का अधिकार मिल जाता था ।

संस्कारों का अन्य प्रयोजन स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति था । जब दीर्घसत्रों का चलन नहीं रहा तो केवल देवों का आराधन और सामान्य यजन ही स्वर्ग प्राप्ति के अमोघ साधन समझे जाने लगे । संस्कारों को भी जो कि पहले गृह्यकृत्य थे अत्यधिक महत्त्व प्राप्त होने लगा । हारीत संस्कारों के प्रयोजन का वर्णन इस प्रकार करते हैं ब्राह्म संस्कारों से संस्कृत व्यक्ति ऋषियों की स्थिति को प्राप्त कर उनके समान हो जाता और उनके निकट निवास करता है तथा दैव संस्कारों से संस्कृत व्यक्ति देवों की स्थिति को प्राप्त कर लेता है आदि आदि । क्योंकि मोक्ष को जीवन का चरम उद्देश्य मान लिया गया अतः संस्कारों को भी स्वभावतः उसी की

प्राप्ति का साधन समझा जाने लगन । शङ्ख लिखित लिखते हैं संस्कारों से संस्कृत तथा आठ आत्मगुणों से युक्त व्यक्ति ब्रह्मलोक में पहुंच कर ब्राह्मपद को प्राप्त कर लेता है जिससे वह फिर कभी च्युत नहीं होता ।

९ नैतिक प्रयोजन

कालक्रम से संस्कारों के भौतिक स्वरूप से उनका नैतिक पार्श्व प्रस्फुटित हुआ । चालीस संस्कारों को गिनाने के पश्चात् गौतम दया क्षमा अनूसूया शौच शम उचित व्यवहार निरीहता तथा निर्लोभता इन आत्मा के आठ गुणों का उल्लेख करते हैं । वह आगे कहते हैं कि जिस व्यक्ति ने चालीस संस्कारों का अनुष्ठान तो किया है किन्तु जिसमें उक्त आठ आत्मगुण नहीं वह ब्रह्म का सान्निध्य नहीं पा सकता । किन्तु जिस व्यक्ति ने केवल कतिपय संस्कारों का ही अनुष्ठान किया है और जो आत्मा के उक्त आठ गुणों से सुशोभित है वह ब्रह्मलोक में ब्रह्म का सान्निध्य प्राप्त कर लेता है ।

किन्तु संस्कारों को अपने आप में उद्देश्य कभी नहीं माना जाता था । उनसे फूल फल कर नैतिक सद्गुणों के रूप में परिपक्व हो जाने की अपेक्षा की जाती थी । संस्कारों में जीवन के हर एक सोपान के लिये व्यवहार के नियम निर्धारित हो चुके थे जैसे गर्भिणी धर्म अनुपनीत धर्म ब्रह्मचारिधर्म स्नातक धर्म आदि । निस्सन्देह उनमें अनेक बातें धार्मिक व अन्धविश्वासपूर्ण हैं किन्तु व्यक्ति के नैतिक विकास के प्रयत्न भी प्रत्यक्ष हैं । संस्कारों का यह स्वरूप निश्चय ही संस्कारों से प्राप्त होनेवाले वैयक्तिक हित की अपेक्षा उच्चतर नैतिक प्रगति को सूचित करता है ।

१० व्यक्तित्व का निर्माण और विकास

हिन्दुओं के प्राचीन धार्मिक कृत्यों और संस्कारों से जिस सांस्कृतिक प्रयोजन का उद्भव हुआ वह था व्यक्तित्व का निर्माण और विकास । अंगिडरा चित्रकर्म से तुलना करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार चित्रकर्म में सफलता प्राप्त करने के लिये विविध रंग अपेक्षित होते हैं उसी प्रकार ब्राह्मण्य या चरित्र निर्माण भी विभिन्न संस्कारों के द्वारा होता है । हिन्दू समाज शास्त्रियों ने मनुष्य को सहजगत्या विकास के लिये छोड़ देने की अपेक्षा विवेकपूर्वक वैयक्तिक चरित्र को ढालने की आवश्यकता का अनुभव किया ।

संस्कार जीवन के प्रत्येक भाग को व्याप्त कर लेते हैं । यही नहीं उनके द्वारा मृत्यु के बाद व्यक्ति को आत्म सिद्धान्त द्वारा भी प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है । ये

संस्कार इस प्रकार व्यवस्थित किये गये हैं कि जीवन के आरम्भ से ही व्यक्ति उनके प्रभाव में आ जाता है । संस्कार मार्गदर्शक का कार्य करते थे जो आयु के बढ़ने के साथ व्यक्ति के जीवन को एक निर्दिष्ट दिशा की ओर ले जाते थे । फलत: एक हिन्दू के लिये अनुशासित जीवन व्यतीत करना आवश्यक था तथा उसकी शक्तियां सुनियोजित व सोद्देश्य धारा में प्रवहमान रहती थीं ।

इस प्रकार गर्भाधान संस्कार उस समय किया जाता था जब पति पत्नी दोनों शारीरिक दृष्टि से पूर्णत: स्वस्थ होते तथा परस्पर एक दूसरे के हृदय की बात जानते और दोनों में सन्तान प्राप्ति की वेगवती इच्छा होती थी । उस समय उनके समस्त विचार गर्भाधान की ओर केन्द्रित होते और होम व समयानुकूल वैदिक मन्त्रों के उच्चारण से शुद्ध व हितकर वातावरण तय्यार कर लिया जाता था । स्त्री जब गर्भिणी होती तो दूषित शारीरिक व मानसिक प्रभावों से उसे बचाया जाता और उसके व्यवहार को इस प्रकार अनुशासित किया जाता था जिसका गर्भस्थ शिशु पर सत्प्रभाव पड़े । जन्म होने पर आयुष्य तथा प्रज्ञाजनन कृत्यों का अनुष्ठान किया जाता और नवशिशु को पत्थर के समान दृढ और कुल्हाड़े की तरह शत्रुनाशक तथा बुद्धिमान् होने के लिये आशीर्वाद दिये जाते थे । शैशव में प्रत्येक अवसर पर आशापूर्ण जीवन के प्रतीक आनन्द और उत्सव मनाये जाते और इस प्रकार शिशु के विकास का उपयुक्त वातावरण प्रस्तुत हो जाता था । चूडाकरण या मुण्डन संस्कार के पश्चात् जब शिशु बालक की अवस्था में पहुंच जाता तो उसे बिना ग्रंथों के अध्ययन तथा विद्यालय के कठोर नियन्त्रण के ही उसके कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों से उसका परिचय कराया जाता था । उपनयन तथा अन्य शिक्षासम्बन्धी संस्कार ऐसी सांस्कृतिक भट्ठी का काम करते थे जिसमें बालक की आकांक्षाओं अभिलाषाओं व इच्छाओं को पिघलाकर अभीष्ट सांचों में ढाल दिया जाता और अनुशासित किन्तु प्रगतिशील और परिष्कृत जीवन व्यतीत करने के लिये उसे तय्यार किया जाता था । समावर्तन के पश्चात् व्यक्ति विवाहित गार्हस्थ्य जीवन में प्रवेश करता था । विवाह की यह व्यवस्था मानव सभ्यता का विकसित स्वरूप था और पाणिग्रहण संस्कार विवाहित दम्पति के भावी जीवन के मार्गदर्शन के लिये किया जानेवाला धर्मोपदेश । गृहस्थ के लिये जिन विविध यज्ञों व व्रतों का विधान किया गया था उनका प्रयोजन स्वार्थपरता को दूर कर उसे यह अनुभव करने की प्रेरणा देना था कि वह समस्त समाज का एक अङ्ग है । पूर्ववर्ती संस्कारों के मानसिक प्रभाव से व्यक्ति के लिये मृत्यु का सामना करना सरल हो जाता था और इससे जीवन के दूसरे

मार्गकी यात्रा करने में उसे सान्त्वना तथा सहायता मिलती थी । निस्सन्देह संस्कारों में अनेक ऐसी विधियां हैं जिनकी उपयोगिता निरे विश्वास पर ही अवलम्बित है । किन्तु संस्कारों के मूल में निहित सांस्कृतिक उद्देश्य के माध्यम से व्यक्ति पर पड़नेवाले प्रभाव को कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता भले ही किसी पूर्ण वैज्ञानिक व व्यवस्थित योजना में उनकी गणना न हो सके ।

संस्कारों को अनिवार्य बनाने में हिन्दू समाज शास्त्रियों का उद्देश्य संस्कृति व चरित्र की दृष्टि से समाज का स्वरूप विकास तथा उसे समान आदर्श से अनुप्राणित करना था । अपने प्रयास में वे बहुत दूर तक सफल रहे । हिन्दू अपनी व्यापक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ संसार की एक विशिष्ट सांस्कृतिक जाति हैं । अनेक विदेशी जातियों को जो हिन्दुओं के सम्पर्क में आई उन्होंने अपनी व्यापक संस्कृति द्वारा प्रभावित किया व अपने में पचा डाला और आज भी हिन्दू एक राष्ट्र के रूप में जीवित है ।

११ आध्यात्मिक महत्त्व

आध्यात्मिकता हिन्दुत्व की प्रमुख विशेषता है और हिन्दू धर्मका प्रत्येक युग उससे घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है । हिन्दुओं के इस सामान्य दृष्टिकोण ने संस्कारों को भी अध्यात्म साधन के रूप में परिणत कर दिया । संस्कारों के आध्यात्मिक महत्त्व की स्पष्ट व्याख्या करना या उसे लिपिबद्ध करना कठिन कार्य है । यह तो उनका अनुभव है जो संस्कारों से संस्कृत हो चुके हैं । हिन्दुओं के लिये प्रत्यक्ष अङ्ग उपाङ्गों की अपेक्षा उनका बहुत अधिक महत्त्व है । उनकी दृष्टि में वे संस्कार्य व्यक्ति के आन्तरिक व आध्यात्मिक तत्वों के बाह्यप्रतीक थे । उसकी दृष्टि संस्कारों के बाहरी विधि विधान से बहुत दूर चली जाती और वे ऐसा अनुभव करते कि जैसे कोई अदृश्य वस्तु उनके समस्त व्यक्तित्व को पवित्र कर रही हो । इस प्रकार संस्कार हिन्दुओं के लिये सजीव धार्मिक अनुभव थे केवल बाहरी उपचारमात्र नहीं ।

संस्कार जीवन की आत्मवादी और भौतिक धारणाओं के बीच मध्यमार्ग का काम देते थे । पहले मत के अनुयायी आत्मा की अर्चना और शरीर की अवहेलना करते हैं । शरीर को वे पंचतत्वमय संसार की सारहीन वस्तु समझते हैं जब कि दूसरे मत के अनुगामियों को शरीर के परे कुछ दिखाई ही नहीं देता और वे मनुष्य जीवन के आध्यात्मिक पहलू को अस्वीकार कर देते हैं जिसके फलस्वरूप वे आत्म शान्ति तथा आनन्द से वञ्चित रहते हैं । एक ओर शरीर को

अनुकरणीय व मूल्यवान् वस्तु बनाना तथा दूसरी ओर इसे परिष्कृत करना संस्कारों का कार्य था जिससे वह आत्मा का सुन्दर व पवित्र मन्दिर बन सके और आध्यात्मिक विकास का उचित माध्यम ।

संस्कार एक प्रकार से आध्यात्मिक शिक्षा की क्रमिक सीढ़ियों का कार्य करते थे । उनके द्वारा संस्कृत व्यक्ति यह अनुभव करता था कि सम्पूर्ण जीवन वस्तुत: संस्कारमय है और सम्पूर्ण दैहिक क्रियाएँ आध्यात्मिक ध्येय से अनुप्राणित हैं । यही वह मार्ग था जिससे क्रियाशील सांसारिक जीवन का समन्वय आध्यात्मिक तथ्यों के साथ स्थापित किया जाता था । जीवन की इस पद्धति में शरीर और उसके कार्य बाधा नहीं पूर्णता की प्राप्ति में सहायक हो सकते थे । इन संस्कारों के अनुष्ठान से हिन्दुओं का सामान्य जीवन जो अन्यथा समय समय पर होने वाले अनुष्ठानों के विना पूर्णत: भौतिक बन जाता एक विशाल संस्कार ही बन गया । इस प्रकार हिन्दुओं का विश्वास था कि सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से वे दैहिक बन्धन से मुक्त होकर मृत्यु सागर को पार कर लेंगे । यजुर्वेद के अनुसार जो व्यक्ति विद्या तथा अविद्या दोनों को जानता है वह अविद्या से मृत्यु को पार कर विद्या से अमरत्व को प्राप्त कर लेता है ।

१२ संस्कारों की विभिन्न अवस्थायें

अपने इन प्रयोजनों के कारण ये हिन्दूसंस्कार हिन्दुओं के जीवन के अनिवार्य अङ्ग हो गये थे और हिन्दू संस्कारों की भाषा में सोचते और व्यवहार करते थे । अपने सृजनकाल में संस्कार जीवन के प्रति यथार्थ थे वे लचीले और सजीव संस्था थे जड व अपरिवर्तनीय कर्मकाण्ड नहीं । उन्हें देश और काल के अनुसार व्यवस्थित किया गया । प्रत्येक वैदिक परिवार संस्कारों का अनुष्ठान अपनी अपनी पद्धति से करता था । जब संस्कारों को नियमित व व्यवस्थित किया गया तो बौद्धिक आधार पर उनका वर्गीकरण किया जाने लगा । इस समय सृजनकाल समाप्त हो रहा था और प्रत्येक बात को अन्तिम रूप से निश्चित करने का प्रयास किया जाने लगा । संस्कारों के विभिन्न ब्यौरों के सम्बन्ध में विविध विवाद और विकल्प पाये जाते हैं । सूक्ष्मतम बातें निश्चित कर दी गईं और उनका उल्लंघन वांछनीय न रहा । किन्तु परिवर्तन अब भी सम्भव था । हिन्दू मस्तिष्क अभी तक निष्क्रिय नहीं हुआ था । इसी समय हिन्दुओं के धार्मिक जीवन का तृतीय युग आया । उनके मस्तिष्क में ये धारणाएं घर करने लगीं कि उनकी शक्ति का ह्रास हो चुका है वे किसी नयी वस्तु की रचना नहीं कर सकते और उनका काम

केवल प्राचीन का सङ्कलन व संरक्षण करना है। संस्कारों के निश्चित ब्यौरे में छोटे मोटे भेद को भी वे पाप समझने लगे और अनुभव करने लगे कि वे संस्कारों में न तो थोड़ा बहुत परिवर्तन ही कर सकते और न प्राचीन ऋषियों द्वारा अविहित शब्द का ही उच्चारण कर सकते। और भी विषम समस्या तो तब उत्पन्न हुई जब कि मन्त्रों और विधिविधानों की भाषा बोधगम्य न रही। यह वह युग था जब संस्कारों की सच्ची आत्मा लुप्त हो चुकी थी और उनके अन्धानुयायियों को पूजा करने के लिये उनके ध्वंसावशेष ही बच रहे थे। अब देश और काल की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप संस्कारों को व्यवस्थित परिष्कृत और परिमार्जित नहीं किया जाता था। इस प्रकार अब संस्कार निष्प्रयोजन व निर्जीव संस्था बन कर रह गये हैं।

कन्यादान और हिन्दू विवाहमें उसका महत्त्व

सम्पूर्णानन्द

दान शब्द दा धातुसे निकला है। उसका प्रयोग खैरात भेंट समर्पण के अर्थमें होता है। इन सब प्रकारोंसे वस्तुका हस्तान्तरण होता है और हस्तान्तरणके साथ उसका स्वामी भी बदल जाता है। मुख्य प्रयोग तो यही है यों व्यवहारमें ऐसे स्थलोंपर भी इस शब्द या इससे सम्बद्ध क्रिया पदोंसे काम लेते हैं जहां हस्तान्तरण या स्वामिपरिवर्तनका भाव नहीं होता। उदाहरणके लिए अतिथिको आसनदान किया जाता है अर्थात बैठनेकी जगह दी जाती है दर्जीको कपड़े दिये जाते हैं परीक्षा दी जाती है इत्यादि। कन्यादान में दान शब्दका प्रयोग मुख्य अर्थमें ही हुआ है। कन्याका वरको सौंप दिया जाना कन्यादान है उस प्रक्रियाको भी कन्यादान ही कहते हैं जिसके द्वारा यह दान सम्पन्न होता है। कन्याका पिता ही दाता होता है पर यदि पिता न हो तो याज्ञवल्क्यके अनुसार क्रमात् पितामह बड़ा भाई और माता यह कृत्य कर सकते हैं। यदि इनमेंसे कोई भी न हो तो कोई भी बड़ा सम्बन्धी पिताकी जगह ले सकता है। वर ही आदाता होता है।

यों तो कन्याको वरको अर्पित करनेकी प्रथा अन्यत्र भी पाई जाती है परन्तु हिन्दू समाजमें इसको जिस धार्मिक दृष्टिसे देखा जाता है वह और कहीं नहीं है। दूसरी जगह वह केवल सामाजिक रवाज है जिसको छोड़ देनेसे विवाहकी पद्धतिमें कोई कमी नहीं आती। हिन्दुओंमें कन्यादान विवाह पद्धतिका अनिवार्य अंग है। आर्यसमाजने भी इसे रखा है। अब तो इसकी अनिवार्यताका केवल एक अपवाद रह गया है। अब कहनेका विशेष कारण है। हमारी सभी स्मृतियोंने ऐसा कहा है कि विवाहके आठ प्रकार होते हैं: ब्राह्म दैव आर्ष प्राजापत्य आसुर गान्धर्व राक्षस और पैशाच। इनमेंसे कुछको तो विवाह कहना भाषाके साथ अन्याय करनासा प्रतीत होता है। उदाहरणके लिए पैशाचको बलात्कारसे भिन्न मानना कठिन प्रतीत होता है। स्मृतिकारोंने इनको इसीलिए विवाहकी पदवी दी है कि इनसे जो सन्तान उत्पन्नहो वह वैध

मान ली जाय और निराश्रय न रहे। आजकल ब्राह्म ही वास्तविक विवाह माना जाता है। हिन्दू मात्रमें कमसे कम उन लोगोंमें जो न्यूनाधिक रूपसे शास्त्रोंका पालन करते हैं यही प्रचलित है। स्मृतियोंने भी इसको ही सबसे श्रेष्ठ और पवित्र बतलाया है। परन्तु इसके साथ साथ गान्धर्वको भी मान्यता प्राप्त है। यदि कोई स्त्री और पुरुष साथ रहते हों और दम्पती जैसा व्यवहार करते हों और यदि उनका विवाह अन्य किसी कारणसे अवैध न होता हो तो उनके इस सम्बन्धको विवाह जैसा मान लिया जाता है। गान्धर्व विवाहमें कन्यादानके लिए कोई स्थान नहीं है।

यहां हमको ब्राह्मविवाह पर ही विचार करना है। इसमें ही वस्तुतः कन्यादान होता है। विवाहकी यह पद्धति बहुत लम्बी है। इसकी अन्तिम कड़ी सप्तपदी है।

कन्यादानसे जो पुण्य होता है वह अक्षय्य और अपरिमेय है। लिंगपुराणके शब्दों में :

यावन्ति सन्ति रोमाणि कन्यनयाश्च तनौ पुनः ।
तावद्वर्षसहस्राणि रुद्रलोके महीयते ॥

कन्याके शरीरमें जितने रोम हैं उतने सहस्र वर्ष कन्याका दाता रुद्रलोकमें निवास करता है

मनु कहते हैं :

दश पूर्वान् परान् वंश्यान् आत्मानं चैकविंशकम् ।
ब्राह्मीपुत्रः सुकृतकृन् मोचयेदेनसः पितृन् ॥

ब्राह्मविवाहसे उत्पन्न लड़का अपने कुलके इक्कीस व्यक्तियोंको पापसे नरकसे मुक्त करता है अपने पहलेके दस पीछेके दस और एक स्वयं।

भविष्यपुराणकी घोषणा है :

ब्रह्मदेयान्तु यः कन्याम् अलंकृत्य प्रयच्छति ।
सप्त भूतान्भविष्यांश्च स्वकुले सप्त मानवान् ॥
तेन कन्याप्रदानेन तारयिष्यत्यसंशयम् ।

जो कन्याको अलंकृत करके ब्राह्मविधिसे देता है वह निश्चय ही अपने सात पूर्वजों और सात वंशजोंको नरकसे बचा लेता है

आश्वलायन इससे भी आगे जाते हैं :

तस्यां जातो द्वादशावरान्द्वादशपूर्वान् पुनाति ।

उसमें उत्पन्न हुआ लड़का बारह पूर्वजों और बारह अवरजोंको पवित्र करता है ॥

इन वाक्योंकी लाक्षणिक मीमांसा ही करनी चाहिए । शब्दश: अर्थ लगाना तो अन्याय होगा । यदि यों ही पूर्वज और अवरज पवित्र हुआ करें तो फिर कोई हिन्दू कभी नरक जायगा ही नहीं क्योंकि वह किसी न किसी कन्यादान करनेवालेका पूर्वज या अवरज तो होगा ही । इस प्रकारके वाक्योंको अर्थवादकी दृष्टिसे देखना चाहिए जिनमें अतिशयोक्तिमय प्रशंसाके द्वारा किसी कर्तव्यकी ओर प्रेरित किया जाता है । तात्पर्य यह प्रतीत होता है कि कोई लड़की बेब्याही न रह जाय । पिता न हो तो कोई और सम्बन्धी इसका दायित्व अपने ऊपर ले ले । यदि दुर्भाग्यसे कोई भी सम्बन्धी न हो तो नारद कहते हैं:

यदा तु नैव कश्चित् स्यात् कन्या राजानमाव्रजेत् ।

यदि कोई न हो तो कन्या राजाके पास जाय ।

इसका तात्पर्य यह है कि राज्यका यह कर्तव्य था कि इस बातका प्रबन्ध करे कि विवाहयोग्य लड़कियोंका विवाह हो जाय । वर्तमान कालमें राज्यके अधिकारों और कर्तव्योंके क्षेत्रका बहुत विस्तार हुआ है परन्तु इस कर्तव्यको किसीने नहीं अपनाया है । प्राचीन हिन्दू राज्य इस विषयमें बहुत आगे था ॥

कन्यादानसे पुण्यसंचय होनेका विश्वास इतना दृढ़ है कि पिताके दान कर लेनेपर बहुतसे सम्बन्धी और ऐसे लोग भी जो दूसरे वर्ण और कुलके होते हैं उसको दान देते हैं । कमसे कम उत्तर भारतमें तो ऐसा कई जगह देखा जाता है । यह शंका नहीं उठती कि एक बार दान की हुई वस्तुका फिर कैसे दान होगा ।

दान करनेके पुण्यके साथ साथ दान करनेके दण्डका भी वर्णन है । इससे निष्ठा और दृढ़ होती है । याज्ञवल्क्य कहते हैं:

अप्रयच्छन् समाप्नोति भ्रूणहत्यामृतावृतौ ।

कन्याका दान न करने से उसके प्रत्येक ऋतुकाल पर पिताको भ्रूणहत्याका पाप लगता है ।

कन्यादानका जहां जहां विधान है वहां यह भी लिखा गया है कि कन्याको अपने वित्तके अनुसार सोना चांदी और अन्य बहुमूल्य द्रव्य देना चाहिए । दानके लिए जो संकल्प पढ़ा जाता है वह इस प्रकार है । यह संकल्प आनन्दाश्रम पूनाकी छपी संस्कार पद्धतिसे लिया गया है ।

अमुकप्रवरान्वितामुकगोत्रोऽमुकशर्मा हं मम समस्तपितॄणां निरतिशयसानन्दब्रह्मलोकाव

निरतिशयसानन्दब्रह्मलोकावाप्त्यादिकन्याप्रतिपादनकल्पोक्तफलावाप्तयेऽनेन वरेणास्यां कन्यायामुत्पादयिष्यमाणसंतत्या द्वादशावरान्द्वादश परान् पुरुषान् पवित्रीकर्तुमात्मनश्च लक्ष्मीनारायणप्रीतये ब्राह्मविवाहविधिना कन्याप्रतिपादनं करिष्ये ।

अमुक प्रवरान्वित अमुकगोत्रोत्पन्न अमुक शर्मा वर्मा आदि वर्णानुसार मैं कन्यादान कल्पमें बतलाये गये निरतिशय सानन्द ब्रह्मलोकप्राप्ति आदि फलोंको अपने सब पितरोंको प्राप्त करानेके लिए इस वरसे इस कन्यामें उत्पन्न होनेंवाली संततिके द्वारा बारह पर बारह अवर पुरुषोंको तथा अपनेको पवित्र करनेके लिए लक्ष्मीनारायणकी प्रीतिके लिए ब्राह्मविवाह विधिसे इस कन्याका दान करता हूं।

जब प्रतिगृह्णामि कहकर वह अपनी स्वीकृति दे देता है तब दान के अनुरूप दक्षिणा दी जाती है क्योंकि दक्षिणा बिना कोई शास्त्रसम्मत दान सम्पूर्ण नहीं होता ।

विवाहके प्रसंगमें शास्त्रोंमें शास्त्र सर्वत्र कन्या शब्दका प्रयोग हुआ है। यह एक प्रकारका पारिभाषिक शब्द माना जाता है और दस वर्षकी अविवाहिता लड़कीके लिए आता है। स्मृतियोंमें कई जगह ऐसा स्पष्ट आदेश है कि इस वयसे आगे लड़कीका विवाह नहीं टलना चाहिए। इससे पहले विवाह हो जाना तो बहुत ही श्रेयस्कर है। लड़की यदि विवाहके पहले रजस्वला हो गई तो घरवालोंको महान् पातक लगता है। इसलिए कुछ विद्वानोंका मत है कि विवाहके सम्बन्धमें सर्वत्र कन्या शब्द दस वर्षकी लड़कीके लिए ही आया है। ऐसा मानना समीचीन नहीं प्रतीत होता। कुछ स्मृतिकारोंने निश्चय ही यह अर्थ लिया है परन्तु यह व्याख्या सर्वसम्मत नहीं है। बहुत छोटे वयमें विवाह कर देनेकी प्रथा अर्वाचीन प्रतीत होती है। मनुका परामर्श है कि:

त्रिंशद्वर्षो वहेत्कन्यां हृद्यां द्वादशवार्षिकीम्

तीस वर्षका वर बारहवर्षकी मनोहारिणी कन्यासे विवाह करे ।

और वह यह भी आदेश देते हैं:

त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती ।
ऊर्ध्वं तु कालादेतस्माद्विन्देत सदृशं पतिम् ।।

ऋतुमती होनेके पश्चात् कुमारी तीन वर्ष तक प्रतीक्षा करे यदि घरवाले तब भी उसका विवाह न करें तो योग्य त.सें स्वयं विवाह कर ले ।

इसका अर्थ तो यह हुआ कि सत्रह अठारह वर्षकी वय तकका विवाह तो मनुको भी सम्मत है। फिर नारदने जो यह आदेश किया है कि यदि घरवाले विवाह न करें तो कन्या राजाके पास जाय यह आदेश भी दस वर्षकी लड़कीके लिए नहीं हो सकता। इन बातोंसे यह प्रतीत होता है कि साधारणतः कोई भी अविवाहिता स्त्री कन्या कहलाती थी। इसका अपवाद वही स्त्रियां हो सकती थीं जिन्होंने किसी कारणसे तपश्चर्या और योगाभ्यासमें जीवन बितानेका संकल्प कर लिया हो। इसके कई उदाहरण हैं। महाभारतमें सुलभाका आख्यान है। उनकी तपोनिष्ठाका विलक्षण कारण है:

साहं तस्मिन् कुले जाता भर्तर्यसति मद्विधा।
विनीता मोक्षधर्म्मेषु चराम्येका मुनिव्रतम् ।।

उस कुलमें उत्पन्न हुई मैं अपने योग्य वरके न होनेसे मोक्षधर्म्ममें विनीत होकर अकेली मुनिव्रतका पालन करती हूं

ऐसी देवियोंको जिनका विवाह होना ही नहीं है कन्या कहना निरर्थक है।

कन्याके बराबरका ही वर शब्द है। वर वह पुरुष हुआ जो वरण करता है या जिसका वरण किया जाता है। साधारण बोलचालमें दूल्हेको उस पुरुषको जिसका विवाह होनेवाला है वर कहते हैं।

यदि कन्या देय वस्तु है यदि उसका दान करनेसे दाता और उसके कुलमें उत्पन्न और उत्पन्न होनेवाली पीढ़ियोंको पुण्यसंचय होता है तो फिर इस दानसे अन्य दानकी भांति कुछ और भी फल घटित होते होंग। दान की हुई वस्तुका उत्भोग नहीं हो सकता। दान की हुई गऊका दूध ग्रहण करना पाप होगा। हां यदि कोई बहुत बड़ी आवश्यकता पड़ जाय और गत्यन्तर न हो तो मूल्य देकर दूध काममें लाया जा सकता है। हिन्दू कन्याके प्रति ऐसा ही व्यवहार करता है। लड़कीके घरका अन्नजल ग्रहण नहीं किया जाता उसके घरकी कोई और वस्तु भी व्यवहारमें नहीं लायी जाती। यदि कोई ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई कि कहीं औरसे कामकी वस्तु उपलब्ध नहीं हो सकती तो मूल्य देकर कन्याकी सम्पत्तिका उपयोग को लेते हैं परन्तु मूल्य बाज़ारभावसे कहीं अधिक दिया जाता है। आदित्यपुराणमें आदेश है।

अप्रजायां तु कन्यायां नाश्नीयात्तस्य वै गृहे।
ब्रह्मदेया विशेषेण नैव भोज्यं सदैव तु ।।

जब तक कन्याको सन्तान न हो जाय तब तक उसके जामाताके घर नहीं खाना चाहिए। विशेषकर ब्राह्मविवाहमें दी गई लड़कीके घर कभी नहीं खाना चाहिए।

सन्तान हो जानेके उपरान्त लड़कीके घर खाना या उसकी अन्य वस्तुका उपयोग करना उतना बुरा नहीं माना जाता। यह भी समझ लेना चाहिए कि सन्तानसे तात्पर्य यहां पुत्रसे है। हिन्दू दायविभागके अनुसार गर्भमें आनेके ही लड़का पैतृक सम्पत्तिका भागी हो जाता है अतः पुत्रके जन्म होनेसे अब सम्पत्ति केवल लड़की जामाताकी नहीं रही वरन् दौहित्र भी अंशतः उसका स्वामी हो गया।

नाती लड़कीके लड़के का पद बड़ा ऊंचा माना जाता है। वह पुत्रके समान ही नरकसे उद्धार करनेमें समर्थ होता है। पुत्रका तो नाम इसीलिए पड़ा है कि वह पुत् अर्थात् नरक से त्राण करता है। यों तो मनुष्य अपने कर्मोंके फलसे ही पुण्यपापका भागी होता है पुत्र किसीकी क्या सहायता करेगा। और फिर सब पुत्र तो इस योग्य भी नहीं होते कि अपनेको संभाल सकें। जैसा कि बोधायनीय गृह्यपरिभाषामें लिखा है:

न मांसपेशलः पुत्रो नाविद्वानाप्यकर्मकृत् ।
स्वयं न याति यः स्वर्गं पितरं तारयेत्स किम् ॥

मांसपिंड पुत्र नहीं होता न जो अविद्वान् और अधर्मचारी है वह पुत्र होता है। जो स्वयं स्वर्ग नहीं जायगा वह पिताको क्या तारेगा।

फिर भी पुत्रोत्पत्तिके लिए लोग बड़े बड़े यत्न करते हैं न जाने कितने जपतप करते कराते हैं। कुछ नहीं होता तो दत्तक लेकर सन्तोष करते हैं।

जिनको पुत्र नहीं होता वह नातीसे भी वैसी ही आशा रखते हैं पुत्रके अभावमें नाती अपने नानाकी सम्पत्तिका स्वामी भी होता है। यदि अतिशयोक्ति न मानी जाय तो नातीका पद पुत्रसे भी बड़ा है पुत्र तो पिताको ही संभालता है परन्तु नाती पचीस पीढ़ियोंतकका त्राण करता है।

विवाहके प्रसंगमें देनेकी बात एक और स्थलपर भी आती है। उसका कन्यादानसे कोई सम्बन्ध नहीं है परन्तु प्रसंगतः उसका भी उल्लेख कर देता हूं। ऋग्वेद में सूर्याके विवाहके प्रसंगमें वर कहता है :

सोमो ददद् गन्धर्वाय गन्धर्वो दद् दग्नये ।

रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ।।

इससे पहले वाला मन्त्र कहता है :

सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः ।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ।।

इसका तात्पर्य यह है कि हे कन्या पहिले सोमने तुझे पाया फिर गन्धर्वने । तेरा तीसरा पति अग्नि हुआ और चौथा पति मनुष्यकी सन्तान अर्थात् मनुष्य है ।

इसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि एक स्त्रीके कई पति होते हैं या विवाहके पहिले देवगण कन्याका भोग करते हैं । यह तो घोर पापकी बात होगी । यहां पतिका अर्थ पाता रक्षक ही हो सकता है । इस बातकी पुष्टि बादवाला मंत्र करता है । उसका स्पष्ट अर्थ यह है कि कन्याके शैशवकालमें सोम उसके रक्षक होते हैं फिर वय बढ़नेपर वह इस भारको गन्धर्वको सौंपते हैं । इसी प्रकार और बड़ी होनेपर गन्धर्व अग्निको यह काम सुपुर्द करते हैं । जब कन्या वयस्का होती है तो अग्नि वरको कन्या और कन्याके साथ पुत्र और धनसम्पत्ति देकर भारमुक्त होते हैं । यह मंत्र अब भी विवाह प्रकरणमें पढ़ जाते हैं ।

हन्दू धर्म और दर्शन

किसी भी सामाजिक संस्था को अच्छी तरह समझने के लिए उसके दार्शनिक आधार की जानकारी आवश्यक होती है । जाति व्यवस्था को भी सही अर्थों में समझने के लिए हिन्दू धर्म और [illegible] का विश्लेषण उपयोगी प्रतीत होता है । हिन्दू धर्म की ठीक ठीक परिभाषा देना कठिन है क्योंकि इस विषय पर कितने ही परस्पर विरोधी मत मिलते हैं । फिर भी एक सर्वसामान्य दृष्टिकोण है कि हिन्दू धर्म समाज व्यवस्था के स्थायित्व की रक्षा करने वाली विधियों की एक संहिता है । यही कारण है कि इस धर्म में चातुर्वर्ण्य व्यवस्था जैसे सिद्धान्तों को प्राथमिक महत्त्व दिया जाता है । कुछ विचारक इस प्रकार के तर्कों का विस्तार करते हुए कहते हैं कि ईश्वर की कल्पना तथा परलोक पुनर्जन्म देवता आदि की धारणा मूलतः प्रतीकात्मक है और इनकी अवतारणा इसलिए हुई है कि जन साधारण विधियों और सामाजिक नियमों का पालन करें । दूसरे विचारक ऐसे भी हैं जिनका विश्वास है कि हिन्दू धर्म इहलोक और परलोक में सुख शान्ति प्राप्त करने का भार्ग बतलाता है श्रुति स्मृति और पुराण चारों पुरुषार्थ और चारों वर्णों के सिद्धान्तों का प्रचार करते हैं और बतलाते हैं कि अपने वर्णाश्रम धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करता है ।

एक तीसरा भी मत है कि हिन्दू धर्म शत प्रतिशत आध्यात्मिक धर्म है । शैव वैष्णव और वेदान्ती सभी इस मत की पुष्टि करते हैं । उनका कहना है कि जीव भोक्ष मार्ग का तीर्थयात्री है । उसके लिए यह भौतिक जीवन एक पड़ाव मात्र है । आत्म रक्षा समाज रक्षा धन तेष्णा आदि तमाम बातें निरर्थक मायाजाल हैं ।

ये सब मत विवादास्पद हैं । हिन्दू धर्म से सामाजिक स्थायित्व और सुव्यवस्था को बल मिला यह बात भी मानने योग्य नहीं । इस अर्थ में हिन्दुओं ने धर्म को कभी स्वीकार भी नहीं किया । कुछेक अपवादों को छोड़कर हिन्दू धर्म के सभी आचार्यों ने हमेशा परस्पर विरोधी विचारों का प्रचार किया । इसका प्रमाण वैदिक विधियों में आत्मा ब्रह्म मुक्ति और अमरत्व

सम्बन्धी उपनिषदों की परिकल्पनाओं में स्मृतियों के वर्णाश्रम धर्म में पुराणों की प्रार्थना तीर्थयात्रा तथा अन्य धार्मिक नियमों में बड़ी आसानी से मिल जाएगा । वेदों में धर्म का सर्वथा भौतिकवादी रूप मिलता है । उनमें भौतिक सुख के लिए शक्ति के लिए वर्षा के लिए सुन्दर स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए प्रार्थनाएं मिलती हैं । उपास्यदेव भी भौतिक शक्तियों के प्रतीकमात्र हैं । ठीक इसके विपरीत वेदान्त का धर्म मूलत: आध्यात्मिक है ।

भौतिक पदार्थों का महत्त्व स्वीकार करनेवाला धर्म पिछड़े हुए सामाजिक संगठन का सूचक होता है । वैसे धर्म को स्वीकार करनेवाले लोग विश्वास करते हैं कि मनुष्य के दैनन्दिन जीवन व्यापार में भी देवताओं का हाथ रहता है और उन देवताओं की प्रसन्नता से अभीप्सित फल की प्राप्ति हो सकती है । अन्यथा उनके कोप से जीवन विपद संकुल और कष्टकर हो जाता है । वस्तुत: इस प्रकार का विश्वास भौतिक घटनाओं के कार्य कारण भेद को न जानने से ही उत्पन्न होता है । ऐसे अज्ञान धूमिल व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने में सर्वथा असमर्थ रहते हैं । हिन्दू धर्म के अधिकांश ग्रन्थ ऐसे ही लोगों ने लिखे हैं जिन्हें दैवी शक्तियों में अन्धविश्वास था अथवा जिन्हें समाज के प्रभावशाली वर्गों से प्रेरणा मिलती थी । वैदिक धर्म का प्रभाव क्षीण होने पर विमिन्न प्रकार के मत प्रतिपादित किये गए जिनमें उपनिषदों का प्रभाव विशेष रूप से क्रान्तिकारी सिद्ध हुआ । यही कारण है कि अनेक लोग हिन्दू धर्म को सर्वथा आध्यात्मिक मानते हैं । इन सब परस्पर विरोधी विचारों से भारतीय समाज का अध:पतन हुआ । वेद पुराण और स्मृतियों ने भारतवासियों को धर्मशास्त्रों का अन्धविश्वासग्रस्त उपासक बना दिया । उन लोगों ने पूर्ण आस्था के साथ वर्णाश्रम धर्म को स्वीकार किया और ऐसा मानने लगे कि कोई भी व्यक्ति उच्च श्रेणी का हो या निम्न श्रेणी का यदि वह अपने धर्म का पालन करता हो तो निश्चय ही मुक्ति लाभ करेगा । भारतीय दर्शन ने भी बड़ी सफ़ाई से दुनिया के कठोर सत्य पर अध्यात्म की चादर डाल दी है । इसी खोखले आधार पर मायावाद का वितंडा खड़ा किया गया जिसकी ओट में लाखों करोड़ों दैन्य पीड़ित भारतीय जनता का अश्रुसिक्त चेहरा छिप गया । यह संसार माया है हम आज जो कुछ हैं और जिस दशा में हैं वह सब हमारे पूर्व जन्म के कर्मों का फल है और उसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की सम्भावना नहीं । इसलिए उसे बदलने की चेष्टा ही क्योंकर की जाए क्यों न अपने को भाग्य के भरोसे छोड़ दिया जाए पुनश्च जब भूदेव ब्राह्मणों द्वारा प्रतिपादित कर्तव्यों का पालन करते हुए मोक्ष लाभ किया जा सकता है तब फिर इहलोक की

की स्थिति में परिवर्तन लाने की आवश्यकता ही क्या ।

हिन्दू धर्म में नाना प्रकार के धार्मिक रूपों और परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों का सम्मिश्रण है । इसके दो महत्त्वपूर्ण पहलू हैं । एक तो यह कि सामाजिक जीवन में तरह तरह की प्रथाएं और नियम हैं दूसरे तरह तरह के असंगतिपूर्ण परस्पर विरोधी अध्यात्मवादी सम्प्रदाय चालू हैं । प्रत्येक धर्म के मूल में कोई न कोई समाज व्यवस्था होती है । हिन्दू धर्म का यह पहलू बिल्कुल स्पष्ट है जैसे चातुर्वर्ण्य जाति व्यवस्था विवाह सम्बन्धी विधियां पारिवारिक या जाति जीवन के मानदण्ड तथा संयुक्त परिवार प्रणाली आदि आदि । इस प्रकार हिन्दू धर्म एक विशिष्ट सामाजिक संठन से सम्बन्धित विधि विधानों का प्रतिरूप है । हजारों वर्षों से लोग मानते आ रहे हैं कि यह धर्म जाति व्यवस्था पर आधारित है । जो हिन्दू अपनी जाति के नियमों का पालन कोता है वही वास्तव में हिन्दू है । सभी धर्म ग्रन्थों ने समाज व्यवस्था की हिमायत में पुनर्जन्म और कर्मवाद के सिद्धान्त का उपयोग किया है । हिन्दुत्व का धार्मिक पक्ष सामाजिक प्रथाओं और नियमों को केवल भौतिक महत्त्व ही नहीं देता बल्कि उनका आध्यात्मिक मूल्य भी बतलाता है । इस तरह से सभी सामाजिक नियमों का कोई न कोई धार्मिक अभिप्राय बतलाया गया है ।

सभी सामाजिक और राननीतिक आन्दोलनों का एक दार्शनिक आधार रहता है । दर्शन विज्ञानपरक भी हो सकता है और धर्मपरक भी । यह सब सामाजिक चिन्ता धारा पर निर्भर करता है । प्राचीन काल के सामाजिक आन्दोलनों पर धर्म का विशेष प्रभाव रहता था । धर्म भी कितने प्रकार के थे स्वाभाविक प्रकृति पूजा बहुदेववाद एकेश्वरवाद ईश्वरीय सर्वसत्तावाद अथवा शंकावाद । उन दिनों सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक विकास धार्मिक माध्यम से ही सम्भव था जोकि आधुनिक काल में सम्भव नहीं दीखता । शोचनीय बात है कि आज के बहुतेरे शिक्षित भारतीय नहीं जानते कि सामाजिक और राजनीतिक उथल पुथल पर विज्ञान और दर्शन का कितना असर रहता है । सामाजिक गति शीलता जब तक स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं हो जाती तब तक दर्शन हवाई किले जैसा लगता है । यह याद रखने की बात है कि क्रान्ति का प्रभाव जीवन के सभी अंगों पर पड़ता है । आजकल की सामाजिक क्रांतियां हमारे अध्यात्मिक और नैतिक जीवन को प्रभावित करती हैं । परन्तु प्राचीन काल में मनुष्य के मन पर धार्मिक और आधिदैविक विश्वासों का सर्वाधिक प्रभाव रहता था । उन दिनों लोग विश्वास पर ही जीते थे ।

स्वभावत: वैसे ज़माने में लोगों के धार्मिक विश्वासों विचारों और संस्थाओं में परिवर्तन लाने के लिए धार्मिक आन्दोलन के रूप में ही क्रांति का सूत्रपात होता था अर्थात् दुनिया के सभी धर्म महान् क्रांतियों के परिचायक हैं। बौद्ध धर्म एक प्रकार की महान् क्रांति थी। इसी प्रकार ईसाई और इस्लाम धर्म भी। इन सभी क्रांतियों के मूल में प्रारम्भिक प्रकृति पूजा और पुरोहितों के विरुद्ध विद्रोह की भावना थी।

वैदिक युग का ब्राह्मणवाद एक प्रकार की प्रारम्भिक प्रकृति पूजा थी जिसके विरुद्ध लगातार विद्रोह होते रहे। उनमें बौद्ध और जैन धर्म प्रमुख हैं। इसलिए प्राचीन भारतीय समाज की धार्मिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण आवश्यक प्रतीत होता है। धार्मिक विश्वासों और रूढ़ियों का स्वरूप स्थिर होते होते पूरा युग बीत जाता है जिसे हम सामाजिक परिवर्तन का काल कह सकते हैं। भौतिक और सामाजिक जीवन में क्रमश: परिवर्तन होते रहते हैं और तदनुसार लोगों के आदर्शों में भी परिवर्तन होते हैं। यदि कोई धार्मिक विश्वास खंडित हो गया तो इसका अर्थ है कि जिस सामाजिक व्यवस्था की नींव पर वह विश्वास टिका हुआ था वह व्यवस्था ही विघटित हो गई। मनुष्यों का जैसा कुछ आपसी सम्बन्ध रहता है वैसा ही कुछ सम्बन्ध मनुष्य और ईश्वर के बीच अथवा मनुष्य और देवताओं के बीच स्थापित हो जाता है। वेदों की प्रकृति पूजा दरअसल तरह तरह की प्राकृतिक शक्तियों की उपासना है। एकेश्वरवाद केन्द्रीभूत राजसत्ता से मिलता जुलता है। आदिम प्रजातन्त्र में ही तरह तरह के देवी देवताओं की पूजा सम्भव थी। वे देवी देवता वस्तुत: शक्तिशाली आदर्श व्यक्तियों के समान थे। उसके बाद जिस प्रकार जन जातीय स्वतन्त्रता के भग्नावशेष पर राजतन्त्र की इमारत खड़ी होती है उसी प्रकार प्रकृति पूजा और बहुदेववाद के पश्चात् एकेश्वरवाद का उदय होता है। इन सब बातों को सामाजिक आवश्यकताओं की रोशनी में ही समझना चाहिए। धर्म के स्वरूप में क्रमिक विकास हुआ करता है जैसे बहुदेववाद के बाद एकेश्वरवाद। ये सब सामाजिक संक्रान्ति के परिणाम हैं। प्रगतिशील शक्तियों के अनुरूप ही क्रांतियां होती हैं। बहुदेववाद का सर्वथा अन्त हो जाने पर एकेश्वरवाद की स्थापना हुई जिसके फलस्वरूप तमाम सामाजिक सम्बन्धों में क्रांतिकारी परिवर्तन होने लगे। पुराने और नये ज़माने के बीच एक प्रकार का समझौता हुआ और उसके नतीजे में लोगों ने बहुदेववाद को छोड़कर सर्वशक्तिसम्पन्न एक ईश्वर की उपासना शुरू की। इसका अर्थ है कि सामाजिक संगठन पूरा पूरा मिट नहीं सका था प्रगतिशील शक्तियां

इतनी पुष्ट नहीं हो पाई थीं कि वे प्राचीन गलित व्यवस्था को उखाड़ फेंकतीं ।

प्राचीन भारत में लोग बहुधा समझौते का रास्ता अपनाते थे । वेदान्त के एकेश्वरवाद ने वैदिक विश्वासों का सर्वथा उन्मूलन नहीं किया बल्कि उपनिषदों ने आदिमकाल के बहुदेववाद का एक प्रकार से युक्ति पोषित रूप ढूंढ निकाला । इस तरह का समझौता क्योंकर हुआ यह जानने के लिए सामाजिक वर्गों के आपकी सम्बन्ध का विश्लेषण करना चाहिए । किसी नये वर्ग ने एकेश्वरवाद को प्रचारित नहीं किया था । सर्वेश्वरवादी दृष्टिकोण प्राचीन परम्परा से सर्वथा भिन्न नहीं था । यही कारण है कि बहुदेववादी ब्राह्मणों ने रहस्योन्मुख एकेश्वरवाद को ईश्वरीय सर्वसत्तावाद का रूप दे डाला । और इसीलिए भारत में सामाजिक और राजनीतिक एकता स्थापित नहीं हो सकी और न केन्द्रीभूत राजसत्ता का विकास हुआ । विचारणीय बात है कि क्रांतिकारी बौद्ध धर्म के झंडे के नीचे बड़े बड़े साम्राज्यों का उदय हुआ परन्तु वे ज़्यादा दिनों तक नहीं टिक सके । सामाजिक एकता के अभाव में केन्द्रीभूत सत्ता वाले राज्य छिन्न भिन्न हो गए । यहा न तो पूर्णतः एकेश्वर वादी धर्म का विस्तार हुआ और न सामाजिक और राजनीतिक एकता स्थापित हुई ।

इतिहास क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के संघर्ष की कहानी है । भारतीय इतिहास में बौद्ध जैन और लिंगायत धर्म के द्वारा क्रान्तिया हुई । इन सब धर्मों ने वैदिक धर्म और वैदिक समाज का विरोध किया । इन्होंने समाज से ब्राह्मणों का आधिपत्य मिटाने की चेष्टा की और उच्च वर्ग के विरुद्ध जन साधारण के अधिकारों का नारा बुलन्द किया ।

बुद्ध ने समाजगत विरोधों की परीक्षा की । उन्होंने देखा कि वेदों के पुरोहितवाद के कारण समाज में अशेष दुःख हैं । ब्राह्मण पुरोहित जनता का आर्थिक और सामाजिक शोषण करते हैं विद्या पर ब्राह्मण वर्ग का एकाधिकार है वेद विदित यज्ञादि कृत्यों का चारों ओर बोलबाला है जनता का कर्म फल में अशेष विश्वास है लोग पेड़ और पत्थर को देवता रूप में पूजते हैं । जैसा कि एम० एन० राय ने लिखा है इतिहास के विभिन्न युगों में तरह तरह से अतिरिक्त सामाजिक अधिकार सोशल सरप्लस संचित होते रहते हैं । प्राचीन काल में वैसा ही एक रास्ता था देवताओं के प्रति नैवेद्यादि अर्पित करने का । और ये नैवेद्यादि किस प्रकार अर्पित किये जाएं यह पुरोहित ही बतला सकता था । इसीलिए हम कह सकते हैं कि ब्राह्मण ही उस ज़माने के बैंकर थे । वे न केवल देवताओं के दलाल थे बल्कि समय समय पर देवताओं के प्रति अर्पित किये गए नैवेद्यों के

रूप में अतिरिक्त सामाजिक अधिकारों के संरक्षक भी थे। देवता के दलालों के लिए यह बड़े ही मुनाफ़े का व्यापार था। वे जनता से ज़्यादा से ज़्यादा वसूल लिया करते थे। आज एक देवता कुछ है तो इसको प्रसन्न करने के लिए एक नहीं बल्कि तीन तीन बकरियां अथवा दूसरी कोई चीज़ चढ़ानी चाहिए। इस प्रकार इतना कुछ चढ़ावा चढ़ता था कि पुरोहित एकबारगी हज़्म नहीं कर सकता था। बचा हुआ चढ़ावा उसकी निजी सम्पत्ति हो जाती थी। इस तरह से धीरे धीरे सारा सामाजिक धन ब्राह्मणों के एकाधिकार में चला गया और वे समाज के शासक बन गए। इस वैदिक ब्राह्मणवाद के विरुद्ध बौद्ध धर्म ने विद्रोह का शंख फूंका। इसकी ध्वनि को जन साधारण ने बड़े चाव से सुना। बौद्ध धर्म न केवल परम्परागत ही धर्म का विरोधी था बल्कि संस्कार जर्जरित जातिबद्ध समाज व्यवस्था के विरुद्ध घोर प्रतिरोध का भी सूचक था। लगभग हज़ार वर्षों तक इस धर्म ने ब्राह्मणवाद का मुकाबला किया लेकिन अन्त में जीत ब्राह्मणवाद की हुई। बौद्ध धर्म की पराजय का एक कारण यह भी था कि वह धर्म उतना एकेश्वरवादी नहीं था जितना कि नकारात्मक। अपने अन्तिम दिनों में तो वह धर्म मठवाद के दलदल में बुरी तरह फंस गया था और जिस भ्रष्टाचार के विरुद्ध विद्रोह के रूप में उदित हुआ था उसी भ्रष्टाचार से स्वयं आक्रान्त हो गया था। ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया के नायक शंकराचार्य ने अन्त में बौद्ध धर्म का श्राद्ध कर डाला। शंकराचार्य के महत्त्वाकांक्षापूर्ण एकेश्वरवाद के बल पर प्रतिक्रियावादी हिन्दू धर्म ने बौद्ध धर्म का उन्मूलन तो कर दिया परन्तु अपनी जड़ जमाने के लिए समाज में अज्ञान और अन्धविश्वास को खूब प्रश्रय दिया।

हिन्दू धर्म तन्त्र चाहे बौद्ध युग के पहले का हो अथवा शंकराचार्य के ज़माने का उस पर एकाधिकार ब्राह्मणों का ही रहा। जनता के लिए वस्तुतः पतनोन्मुख पौराणिक अन्धविश्वासों और जाति तथा छुआछूत सम्बन्धी सामाजिक पूर्वाग्रहों के सिवा दूसरा कोई धर्म नहीं बच रहा था। उन अन्ध विश्वासों और सामाजिक रूढ़ियों को कट्टरपंथी बाह्मण जाति बड़ी मुस्तैदी से प्रचारित और प्रोत्साहित करती थी।

व्यापारी वर्ग की कमज़ोरी के कारण बौद्ध धर्म में पुनर्निर्माण की अपेक्षा विघटन की शक्ति ही अधिक सक्रिय थी। यह ठीव है कि बौद्ध धर्म के विद्रोह से वैदिक समाज की बुनियाद हिल गई और ब्राह्मणवादी व्यवस्था विनष्ट हुई। परन्तु साथ ही तत्कालीन शिथिल समाज व्यवस्था में विघटनकारी प्रवृत्तियों को भी विशेष बल मिल गया। बौद्ध धर्म के सगुण पक्ष से प्रेरित होकर

नया समाज बनाने की अपेक्षा अधिकांश लोग उसके नकारात्मक पक्ष से ही प्रभावित हो गए और नव निर्माण के कठिन पथ से परां मुख होकर निर्वाण की खोज में लग गए। अन्ततः बौद्ध समाज अपनी आन्तरिक कलह से जर्जर हो गया और प्रतिक्रियावादी ब्राह्मणवादी के दुर्धर्ष आक्रमण से रक्षा नहीं कर सका।

बौद्ध धर्म को पराजित करके सत्ता पुनर्स्थापित करने के लिए ब्राह्मणों ने शंकराचार्य के नेतृत्व में तमाम दार्शनिक चिन्तनों को जोकि उपनिषदों में समाविष्ट हैं छोड़ दिया और वेदों की ओर लौट चले। बौद्ध धर्म और ब्राह्मणवाद का संघर्ष इतना दुर्धर्ष था कि सारा समाज उससे अस्तव्यस्त हो गया और साधारणजन आधिदैविक शक्तियों की उपासना करने नगे। महाशून्य में लय होने की अपेक्षा यह लोक परलोक अथवा किसी दूसरे जन्म में ही सुख पाने की आशा कहीं ज्यादा आकर्षक थी। इसलिए लोगों को ब्राह्मणवाद अधिक भाने लगा। ब्राह्मणों का नारा भी था देवताओं का पूजन करो, वे तुम्हारे इस जन्म के सभी कष्टों का मोचन करेंगे और यदि तुमने धर्म का पथ नहीं त्यागा तो वे तुम्हें अगले जन्म में यथोचित पारितोषिक भी देंगे। यहां धर्म से तात्पर्य है मनुस्मृति जैसे धर्म शास्त्रों में वर्णित सामाजिक नियम। इस प्रकार अन्ततोगत्मा पुनर्जन्म कर्म और माया सम्बन्धी शंकराचार्य के सिद्धान्त ने सभी प्रगतिशील शक्तियों का नाश कर डाला। इन सबमें कर्मवाद का सिद्धान्त सबसे प्रबल पुरावृत्त मिथ साबित हुआ है। कर्मवाद तथा उससे ही संलग्न भाग्यवाद तथा पुनर्जन्म के सिद्धान्त में हिन्दुओं का धार्मिक दृष्टिकोण तथा मानव जीवन सम्बन्धी उनकी समस्त व्याख्या समाविष्ट है। श्री अरुणराय लिखते हैं इस सिद्धान्त कर्मवाद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने अच्छे और बुरे कर्मों का मीठा कड़वा फल चखना पड़ता है। एक ही जन्म की अवधि में कार्य कारण भेद का पता नहीं चल सकता। कर्मवाद का ही दूसरा पहलू हैं पुनर्जन्म का सिद्धान्त। फिर भी भारतीय रहस्यवाद स्पिरिचुअलिज्म का चरम लक्ष्य है निष्काम कर्म अर्थात् फल पाने की चिन्ता किए बिना कर्म करते जाना।

परन्तु कोई चाहे अथवा न चाहे जब उसके कर्मों का फल उसको मिलने ही वाला है तब भला वह फल की चिन्ता किए बिना किस प्रकार अपना कर्म करता जाएगा। वस्तुतः कर्मवाद और निष्काम कर्म का पारस्परिक विरोध स्वतन्त्र इच्छा और भाग्यवाद के आन्तरिक विरोध का सूचक है। भारतीय आधिदैविक चिन्तन का दूसरा आदर्श यह है कि कर्मों की शृंखला

को एक दुष्ट आवर्त माना जाए और तब उससे मुक्त होने की चेष्टा की जाए । यह आदर्श बहुत ही अधिकारपूर्ण शब्दों में गीता में प्रतिपादित है मैं किसी फल की कामना से प्रेरित होकर कोई कर्म नहीं करता । मैं न किसी का मित्र हूं और न शत्रु । मैं अपनी सृष्टि में प्रत्येक को उसकी आवश्यकता अथवा योग्यता के अनुसार यथेष्ट देता हूं । जो मेरे इस गुण को जानता है और फल की कामना किये बिना कर्म किये जाता है और मुझ सा होने की चेष्टा करता है वह सभी बन्धनों से मुक्त हो जाता है । यदि इस धार्मिक सिद्धान्त को कर्मवाद की पृष्ठभूमि में देखा जाए तो स्पष्ट जात होगा कि या तो कर्मवाद का सिद्धान्त व्यर्थ है अथवा मोक्षाभिलाषी लोगों के समक्ष किसी अप्राप्य आदर्श को प्रस्तुत किया गया है । यदि कर्मवाद अलीक है तब हम फल की इच्छा रखे बिना काम करते जाएंगे और फिर भी हमें अपने कर्मों का फल मिलता जाएगा । हम स्वर्ग में भी जाएं तो भी कर्म के बन्धन से मुक्ति ही है । चूंकि कर्मवाद के नियम अडिग और अटूट हैं इसलिए स्वतन्त्रता का आदर्श हमेशा अप्राप्य ही रहेगा । यह भी एक कारण है जिससे कर्मवाद निष्काम कर्म सम्बन्धी उच्चतर आदर्शों के विरुद्ध पड़ता है । परन्तु इस सब गोलमाल में भी एक बोधगम्य बात यह है कि ये दोनों परस्पर विरोधी सिद्धान्त जनता की सामाजिक दासता की कड़ियां जोड़ने में एक दूसरे का पूरक बन गई हैं । कर्मवाद लोगों को भाग्य पर भरोसा करने की शिक्षा देता है । यह कोई बात नहीं । भारतीय इतिहास में ऐसे अनेक अवसर आए हैं जबकि जनता के भाग्यवाद अथवा धार्मिक पूर्वाग्रह के कारण सड़ी गली सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था बहुत दिनों तक कायम रही है । प्राचीन ऋषियों ने परलोकवासी दार्शनिक सिद्धान्त इसलिए प्रतिपादित किया कि जन साधारण अपने कष्टों के लिए अपने को ही उत्तरदायी समझे और मन मारकर उन्हें बर्दाश्त करता जाए ।

एक और महत्त्वपूर्ण बात है कि धर्म की स्थापना के बाद से हिन्दू समाज में कोई भी क्रान्तिकारी बौद्धिक आन्दोलन खड़ा नहीं हो सका जिससे हिन्दू धर्म में नव जागरण आ पाता । कोई सामाजिक उथल पुथल भी नहीं मची । कितने ही साम्राज्य स्थापित हुए और मिट गए । किन्तु समाज व्यवस्था की सामान्य रूपरेखा ज्यों की त्यों बनी रही । इस प्रकार हिन्दू समाज में एक तरह की जड़ता आ गई जिसके कारण सदियों तक किसी प्रकार की प्रगति नहीं हुई । सातवीं आठवीं सदी में जो महान् चिन्तक पैदा हुए थे वे थे कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य । कुमारिल भट्ट ने पूर्व मीमांसा में प्रतिपादित धर्म सम्बन्धी सिद्धान्तों की परीक्षा की और सिद्ध

किया कि एकेश्वरवादियों तथा जैनों और बौद्धों की अनेक अभिधारणाएं गलत थीं । उन्होंने वेदों की आत्म प्रकाशित सत्ता को भी एक विशिष्ट पद्धति से प्रमाणित किया । उनकी इक पद्धति का परवर्ती दिनों में इतना गहरा प्रभाव फैला कि सभी विद्वानों ने अपने धार्मिक चिन्तन में उनका अनुसरण किया । कुमारिल भट्ट त्याग और कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करने और संन्यास लेने का विरोध करते थे । वे गार्हस्थ्य धर्म और यज्ञादि सम्बन्धी आधिभौतिक नियमों की सार्वभौमिकता पुनर्स्थापित करना चाहते थे । किन्तु उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली । शंकर दिग्विजय ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया । फिर भी उन्होंने वेदों और श्रुतियों की भी महिमा को जिस विलक्षण शैली में पुनर्स्थापित किया उससे सभी विद्वान् स्वयं शंकराचार्य भी विमुग्ध थे । अस्तु एक ओर तो उन्होंने ईश्वर तथा आदिदैविक शक्तियों की सर्वसत्तात्मकता का प्रत्याख्यान किया और दूसरी ओर वेदों की सत्ता भी पुनः प्रविष्ट करके उन्होंने अन्धविश्वास के लिए गहरी नींव डाल दी । उनके अनुसार सभी प्रकार के चमत्कार वेदों स्मृतियों और पुराणों से ही उद्भूत होते हैं । श्रुतियों और स्मृतियों के धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण का कुमारिल भट्ट ने पूर्ण समर्थन किया । परन्तु यह दृष्टिकोण तर्क शुद्ध भी नहीं था बल्कि सदियों पूर्व इसकी शिथिलता और निष्क्रियता प्रकट हो चुकी थी । शिथिल राजसत्ता स्मृतियां का अत्याचारपूर्ण विधान पुरोहितों राजाओं और अभिजातवर्ग के लोगों का अनियन्त्रित अधिकार मद इन तमाम बातों के कारण समाज के उत्पादक वर्ग तथा व्यापारियों और शिल्पकारों की स्थिति अत्यन्त दीन हो गई थी । जो धन पैदा करने वाले थे वे दरिद्र हो चले थे और जो तथाकथित उच्च वर्ग के लोग थे वे पतित मनोवृत्ति वाले थे । ऐसी दशा में समझदार लोगों के लिए घोर निराशा में डूब जाने के सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं था । चारों ओर जड़ता फैली हुई थी और समाज का अंग अंग निष्चेष्ट था । शंकर के मायावद में इसी का दार्शनिक रूप मिलता है । शंकराचार्य की बौद्धिक उड़ान का क्या कहना । उन्होंने सभी प्रकार के दार्शनिक मतों का विश्लेषण किया और सबकी कमज़ोरियां खोलकर रख दीं । उनकी आलोचनाओं से यही निष्कर्ष निकलता है कि इस सृष्टि की जितनी भी व्याख्या की जाए वह सब एक सीमा के बाद असंगतियों से आकीर्ण हो जाती है । उन्होंने यहां तक स्वीकार किया कि उनका अपना ही ब्रह्मवाद है । सिद्धान्त सर्वथा युक्तिपूर्ण ढंग से सिद्ध नहीं किया सकता । उनहोंने यह भी माना है कि आत्मा और पुनर्जन्म के सम्बन्ध में केवल तर्क के बल पर सब कुछ जाना नहीं जा सकता । जीवन और सृष्टि

की खोज करते करते एक ऐसी स्थिति आती है जब मनुष्य की समस्त चिन्ताधारा स्थगित हो जाती है। इसलिए शंकर ने मायावाद का सिद्धान्त प्रतिपादित किया अर्थात् सत्य के अन्वेषण में विचार का स्थगित हो जाना जड़ता का लक्षण है और इसी जड़ता के आधार पर मायावाद का सिद्धान्त खड़ा है। इस सृष्टि का तात्त्विक रूप अवर्णनीय है। इसके सम्बन्ध में न तो अन्तिम रूप से कुछ कहा जा सकता है और न मौन ही रहा जा सकता है। सब कुछ माया है। परन्तु सृष्टि के इस माया रूप को शंकर ने केवल श्रुतियों के बल पर ही प्रमाणित किया है। चूंकि श्रुतियों का मत है कि केवल ब्रह्म ही सत्य है इसलिए शंकर ने इस सृष्टि को माया माना। इस प्रकार शंकर का मायावाद अन्ततोगत्वा तर्क बुद्धि की पराजय है। यह हिन्दू दर्शन की युक्ति संगत चरम परिणति है जो बौद्धिक दुष्ट आवर्त को भंग नहीं कर सकी।

तत्कालीन समाज इतना जड़ हो गया था कि शंकर की उदग्र प्रतिभा भी भटक गई। समाज पतनोन्मुख था इसलिए दर्शन भी अस्पष्ट सपनों में खो गया। ऐसी दशा में संन्यास तथा ईश्वर के प्रति आत्मार्पण के सिवा धर्म का कोई दूसरा अर्थ नहीं रहा। हिन्दू साम्राज्यों के पतन के बाद १२वीं सदी से हिन्दू धर्म की केवल तीन मुख्य बातें बच गईं मायावाद का सिद्धान्त भक्ति मार्ग और जाति व्यवस्था। इसी रूप में यह धर्म मुसलमानों मराठों और अंग्रेज़ों के शासनकाल में चलता रहा।

लोकसाहित्य का अध्ययन

हजारीप्रसाद द्विवेदी

हमारे देश में और नगर के रहनेवाले और जानपद गांवों में रहनेवाले लोगों में अन्तर तो बहुत पहले से स्वीकार कर लिया गया था परंतु आज के यंत्रयुग में शहरों और गांवों के जीवन में जैसा अन्तर आ गया है वैसा पहले कभी नहीं आया था। प्राचीन ग्रंथों में लोक और वेद या लोक और शास्त्र का भेद तो स्वीकार किया गया था परन्तु लोक की किसी अलग संस्कृति और उसके किसी पृथक् साहित्य का कोई उल्लेख नहीं मिलता। लोक साहित्य और लोक संस्कृति जैसे शब्द बहुत हाल में प्रचलित हुए हैं। पुराने आचार्य लोग विद्वानों द्वारा अनुशीलित और गुरु शिष्य परम्परा से प्रचारित परिष्कृत ज्ञान और आचरण को शास्त्रीय कहते थे और जन साधारण के व्यावहारिक जान और अल्प परिष्कृत परम्परा लब्ध आचरण को लौकिक कहते थे। जन जीवन से संबद्ध होने के कारण लौकिक आचार प्रत्यक्ष और यथार्थ होते हैं और बौद्धिक विवेचना और धार्मिक विश्वास पर आधारित आचार अप्रत्यक्ष फल देनेवाले और आदर्श। नाट्यशास्त्र के चौदहवें अध्याय में अनेक नाट्यधर्मी और लोकधर्मी प्रवृत्तियों का उल्लेख है। शास्त्रकार ने उस स्थल पर नाट्यधर्मी शब्द से परिष्कृत रुचि के लोगों में रूढ़ि रूप में स्वीकृत कन्वेंशनल नियमों का संकेत किया है और लोक धर्मी शब्द से साधारण जनता में व्यवहृत होनेवाले आचार परम्परा को रियलिस्टिक। इस प्रकार केवल ज्ञान और आचार के क्षेत्र में ही नहीं रसानुभूति के क्षेत्र में भी लोक और शास्त्र का अन्तर प्राचीन काल में स्वीकृत हो चुका था।

लोक शब्द का अर्थ जानपद या ग्राम्य नहीं है बल्कि नगरों और गांवों में फैली हुई वह सूची जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं हैं। ये लोग नगर के परिष्कृत रुचिसंपन्न सुसंस्कृत समझे जानेवाले लोगों की अपेक्षा सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचिवाले लोगों की सूची विलासिता और सुकुमारता को मिला रखने के लिये जो भी वस्तुएं आवश्यक होती हैं उनको उत्पन्न करते हैं। परन्तु कभी कभी अपरिष्कृत

और शास्त्र बहिर्भूत भाषा और आचार को ग्राम्य भी कहा जाता था। बहुत बाद में यह प्रवृत्ति बहुत व्यापक हो गई थी। हेमचंद्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में अपभ्रंश के दो भेद किए हैं। एक शास्त्रीय और दूसरा ग्राम्य। ग्राम्य अपभ्रंश हो उन्होंने होमिक्का हल्लीसक रासक श्रीगदित आदि काव्य रूपों को गिना था। आजकाल इन्हीं रूपों को लोक साहित्य कहा जाता। तुलसीदास जी ने जिस भाषा में रामचरितमानस लिखा था उसे गिरा ग्राम्य कहा था। आजकल तुलसीदास जी की रामायण को लोकसाहित्य नहीं माना जाता। वस्तुतः आजकल हम जिस श्रेणी के साहित्य को लोकसाहित्य कहते हैं सारा का सारा पुराने आचार्यों द्वारा न तो कभी उपेक्षित ही समझा गया था और न उस सारे के सारे साहित्य को जिसे हम लोकसाहित्य नहीं कहते कभी शास्त्रीय और समादर योग्य ही माना गया था।

वस्तुतः हम लोकसाहित्य शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के फोक लोर और फोक लिटरेचर शब्द के अर्थ में अधिक करते हैं और अपने पुराने आचार्यों द्वारा प्रयुक्त साधारण जनता में प्रचलित व्यावहारिक ज्ञान और आचार के अर्थ में कम। उन्नीसवीं के मध्यभाग तक यूरोप में लोकसाहित्य फोक लोर पुरातत्त्व का ही अंग माना जाता था। उसका आरम्भ मानवविज्ञान के साधन के रूप में हुआ था और उसी के साथ वह दीर्घकाल तक जुड़ा रहा। फोक लोर शब्द का प्रथम व्यवहार डब्लू० जे० थाम्स ने किया था। कहते हैं कि उन्हींके शक्तिशाली लेखों ने इस शब्द को समूचे यूरोप में प्रचारित किया और अब यह समूचे यूरोप में विशुद्ध मानव विज्ञान से थोड़े भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होने लगा है। भिन्न भिन्न देशों में यह शब्द कुछ विशिष्ट अर्थों में प्रयुक्त होता है। स्मिथ थाम्पसन ने लिखा है कि फ्रांस और स्कैण्डेनेविया में यह शब्द परंपरा से चले आते हुए गृहनिर्माण शिल्प कृषि विषयक नियम और विश्वास वस्त्र चयन कला जैसे उद्योगों के अर्थ में व्यक्त होता है और इंग्लैण्ड में जनता के किसी वर्ग के लिखित या अलिखित परंपरा सौंदर्य की अभिव्यक्ति तथा रसानुभूति के तौर तरीकों के अर्थ में। हमारे देश में इस शब्द के तौल पर गढ़े हुए लोकसाहित्य ग्रामसाहित्य आदि शब्दों का प्रयोग बहुत कुछ इन्हीं अर्थों में होने लगा है। जिन देशों में लोकसाहित्य की छान बीन बहुत सावधानी से की जा रही है वहां भी भिन्न भिन्न विद्वानों में यह मतभेद दिखाई देता है कि क्या क्या बातें लोकसादित्य फोक लोर में स्वीकार की जायं और क्या क्या उसके बाहर रखी जांय। कुछ विद्वान् जिस चीज़ को लोकसाहित्य कहते हैं उसे दूसरे विद्वान् वैसा नहीं मानना चाहते। परन्तु साधारणतः

लोककथानकों लोकगीतों अन्धविश्वासों प्रदेशिक निजंधरी कथाओं लोकोक्तियों को इस साहित्य का विवेच्य विषय माना जाता है। फ्रांस और स्कैंडिनेविया में जिन परंपरा प्रचलित शिल्पों कलाओं और उद्योगों को फोक लोर माना जाता है वे लोक साहित्य शब्द से सूचित नहीं हो पाते। उनके लिये अपने देश के कई विद्वानों ने जन संस्कृति लोक संस्कृति जैसे शब्दों का प्रयोग अधिक उचित समझा है। इस प्रकार इस देश में लोक साहित्य का प्रयोग तो साधारण जाता में प्रचलित आलोचित शब्दमय साहित्य को कहा जाने है और लोक संस्कृति लोक जीवन से संबद्ध शिल्प कलाओं को।

शुरू शुरू में यूरोप के विद्वानों ने आधुनिक सभ्यता के कारण बनी हुई जटिल समाज व्यवस्था को समझने के लिये आदिम जातियों के विश्वासों कथानकों लोकगीतों और रीतिरस्मों की जानकारी का संग्रह और अध्ययन शुरू किया था। पिछले सौ वर्षों में इस प्रयत्न के कारण बहुत ही महत्त्वपूर्ण सामग्री का संग्रह हुआ है और उसके फलस्वरूप मानव विज्ञान और समाज विज्ञान जैसे महत्त्वपूर्ण शास्त्रों का जन्म हुआ है। आज हम सभ्य और नागरिक कहे जानेवाले लोगों के अनेक प्रकार के सामाजिक नियमों बौद्धिक आलोचनाओं सामाजिक विधि निषेधों और मनोवैज्ञानिक ग्रन्थियों के मूलरूप को आसानी से समझ सकते हैं और अनेक सामाजिक रोगों का निदान और उपचार करने की परिस्थिति में हैं। धीरे धीरे विद्वानों ने अनुभव किया कि केवल आदिम और असभ्य समझी जानेवाली जातियों के साहित्य और संस्कृति के अध्ययन पर ही बहुत अधिक बल नहीं देना चाहिए उन लोगों के साहित्य और संस्कृति का भी अध्ययन होना चाहिए जो अपेक्षाकृत अधिक सभ्य हैं और नागरिक जीवन के संपर्क में आ सके हैं। इस प्रकार उनका ध्यान नगरों से र गांवों में फैली हुई उस जनता की ओर गया जो न तो आदिम श्रेणी की जातियों की भांति पिछड़ी हुई हैं और न यंत्रयुग की सुविधाओं और आधुनिक ढंग की वैज्ञानिक और मानवतावादी शिक्षा द्वारा सुसंस्कृत नगरवासियों के समान अग्रसर ही हैं। इन्हीं विद्वानों ने साहित्य के विविध काव्यरूपों को समझने के उद्देश्य से भी ग्रामों में प्रचलित विविध वर्ग की जनता के गीतों कथानकों आदि का संग्रह किया। गंभीर अध्ययन और मानसिक आलोड़न विलोड़न के फलस्वरूप ऐसे साहित्य का महत्व निश्चित रूप से स्वीकृत हो गया। अब लोकसाहित्य केवल नागरिक जन की जटिल समाज व्यवस्था और बौद्धिक विवेचना का आवश्यक साधन ही नहीं माना जाता बल्कि समूची मानव जाति के विकास और गतिविधि के अध्ययन का आवश्यक अंग माना

जाने लगा है। भारतवर्ष जैसे प्राचीन सभ्यता के देश में इस साहित्य का अध्ययन बहुत जटिल व्यापार है क्योंकि शास्त्रीय चिन्तन धारा यहां बराबर लोक विश्वासों को प्रभावित करती रही है और साधारण जनता के प्रचलित साहित्य रूप भी उपरले स्तर के साहित्यिक प्रयत्नों को प्रभावित करती रही है।

भारतीय शास्त्रों ने लोकप्रचलित साहित्य रूपों की कभी उपेक्षा नहीं की है। नवीन छंद नवीन गीत पद्धति नवीन नाट्य रूपक बराबर ही लोक चित्त से छनकर उपरले शास्त्रीय सतह तक पहुंचते रहे हैं। भारतीय नाट्यशास्त्र ने लोकप्रचलित नाटकों को भी अपनी विवेचना का विषय बनाया है। पुराने नाट्य शास्त्रीय ग्रंथों के अध्ययन से यह बात प्रकट होती है। उन दिनों के अभिनीयमान नाटकों में सब प्रकार के मनोरंजक और रसोद्दीपक रूपक होते थे। शृंगार वीर या करुणरस प्रधान ऐतिहासिक नागरिक रईसी की कविकल्पित प्रेमकथाओं के प्रकरण धूर्तों और दुष्टों का हास्योत्तेजक उपाख्यानमूलक भाण स्त्रीहीन वीररसप्रधान एकांकी व्यायोग और तीन अंक का समवकार भयानक दृश्यों को दिखानेवाला भूत प्रेत पिशाचोंका उपस्थापक डिम स्वर्गीय पेमिका के लिये जूझ पड़नेवाले प्रेमियों का सनसनीखेज़ ईहामृग स्त्री शोक की करुण कथा सम्बन्धित एकांकी अंक एकही पात्रद्वारा अभिनीयमान विनोद और शृंगार प्रधान वीथी हंसानेवाला प्रहसन आदि रूपक बहुत लोकप्रिय थे। फिर बहुत तरह के उपरूपक भी थे जिनमें नाटिका का प्रचलन सब से अधिक था। यह स्त्रीप्रधान चार अंक का नाटक होता था और इसका कार्यक्षेत्र साधारणत: राजकीय अन्त:पुर तक ही सीमित था। प्रकरणिका सट्टक और त्रीटक इसी श्रेणी के हैं। गोष्ठी में नंदस पुरुष और पांच या छ: स्त्रियां अभिनय करती थीं हल्लीश में एक पुरुष कई स्त्रियों के साथ नृत्य करता था। इसी प्रकार के और बहुत से छोटे मोटे रूपकों का अभिनय होता था। परवर्ती ग्रन्थों में अट्ठारह प्रकार के उपरूपक गिनाए गए हैं। उपर्युक्त उपरूपकों के सिवा नाट्य रासक है प्रख्यान है उल्लास्य है काव्य है प्रेंखण है रासक है संलापक है श्रीगदित है शिल्पक है विलासिका है दुर्मल्लिका है भाणिका है। अचरज की बात यह है कि इतने विशाल संस्कृत साहित्य में इन उपरूपकों में से अधिकांश को उदाहरणस्वरूप समझने के लिये भी मुश्किल से एक् आध पुस्तक मिल पाती है। कभी कभी तो एक भी नहीं मिलती। सम्भवत: ये लोकनाट्य रूप में जीते हों। उदाहरण के लिये समवकार नामक रूपक का जिसमें देवासुर संघर्ष ही बीज होता था नायक प्रख्यात और उदात्त का असुर होता था और जिसमें

तीन प्रकार के प्रेम तीन प्रकार के कपट तथा तीन प्रकार के विद्रव तथा उत्तेजनामूलक घटनाएं हुआ करती थी जिसमें बारह या अधिक अभिनेता हो सकते थे तथा जो लगभग सात सवा सात घण्टे में खेला जाता था   पुराना नमूना नहीं मिलता । वत्सराज का समुद्र मंथन १२ वीं शताब्दी बहुत बाद की रचना है और भास के पंचविश नाटक के समवकार होने में संदेह प्रकट किया गया है । सात सात घंटे तक चलनेवाले ऐसे पौराणिक नाटक को लोक नाटक समझना ही उचित जान पड़ता है । परवर्ती काल में जब रंगमंच बहुत उन्नत हो गया होगा और कालिदास जैसे कल्प कवि के नाटक उपलब्ध होने लगे होंगे तो ये लम्बे नाटक उपरले स्तर के समाज में उपेक्षित हो गए होंगे । साधारण जनता में ये फिर भी प्रचलित रहे होंगे । इनके लक्षणों को पढ़कर आजकल की रामलीला के पुराने लौकिक रूप का थोड़ा अन्दाजा लगाया जा सकता है । इसी प्रकार ईहामृग डिम आदि के भी पुराने नमूने नहीं प्राप्त होते । बारहवीं शताब्दी के कवि वत्सराज ने नाट्य लक्षणों का अध्ययन करके इनके नमूने बनाए थे । इसी कवि के समवकार की चर्चा ऊपर हो चुकी है । इनका रुक्मिणीहरण ईहामृग का उदाहरण है । परन्तु पुराना उदाहरण नहीं मिलता । स्पष्ट है कि नाट्यशास्त्रकार ने केवल पुस्तकी विद्या का ही विश्लेषण नहीं किया है बल्कि उन दिनों जितने प्रकार के नाटक और अभिनय प्रचलित थे सबका विश्लेषण किया है । परवर्ती शास्त्रकारों की दृष्टि इतनी उदार और व्यापक नहीं थी ।

इस प्रकार संस्कृत पाली और प्राकृत में लोककथानकों ने लिखित साहित्य का रूप धारण किया है । जातकों की कहानियां पंचतंत्र की कथाएं और बड्डकहा बृहत्कथा की निजंधरी कथाएं केवल साहित्य का अंग ही नहीं बनी हैं परवर्ती काल के अत्यंत अलंकृत कथासाहित्य को प्रेरणा भी देती रहती हैं । सुबंधु की वास वक्ता और बाण की कादंबरी जैसे अत्यधिक अलंकृत साहित्य का वक्तव्य विषय गुणाढ्य की बृहत्कथा से ही लिया गया है । इस कथा का मूल रूप जो पैशाची प्राकृत में लिखा गया था जो अब खो गया है । परन्तु उसके तीन संस्कृत रूपान्तर प्राप्त हैं । सबसे अधिक परिचित रूप कथा सरित्सागर है । मध्ययुग के अनेक श्रेष्ठ उपकरणों चंपूकाव्यों और निजंधरी कथाओं का मूल रूप लोक कथानक हैं । कथा सरित्सागर की प्रस्तावना में बताया गया है कि कथा का मूल वक्ता कोई अभिशप्त गंधर्व था जो शापवश विंध्याटवी में आ गया था । अनुमान किया जा सकता है कि गुणाढ्य पंडित ने मूल रूप में कथा नगर से दूर रहनेवाले ग्राम्य या वन्य लोगों से सुनी थी । इस प्रकार भारतीय साहित्य

का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग लोकसाहित्य पर आधारित था। कहना व्यर्थ है कि यहां के लोक कथानकों का अध्ययन बहुत सहज नहीं है। न जाने कितनी बार वह साहित्य उपरले स्तर के ग्रंथों से प्रभावित हुआ है और कितनी बार उसने प्रभावित भी किया है।

परंतु यह स्पष्ट रूप से समझ लेना आवश्यक है कि लोक साहित्य के अध्ययन का उद्देश्य पुन: प्रवर्तन का प्रयास नहीं है। लोक साहित्य के अनेक विद्वानों में इस प्रकार के भाव आ जाते हैं परन्तु इस प्रकार के भाव तो पुराने इतिहास और पुरावृत्त के अध्ययन करनेवालों के चित्त में भी आ जाते हैं। लोक साहित्य के संकलन और सम्पादन का प्रयत्न बड़े उद्देश्य से होना चाहिए। यह तो स्पष्ट ही है कि नवीन विज्ञान ने हमें ऐसा दृष्टिकोण दिया है जो अबतक संसार के इतिहास में अपरिचित था। नवीन साधनों ने जीवन के प्राय: प्रत्येक विचार और आचार के मूल्यों में परिवर्तन का भाव ला दिया है। समूचा समाज मथित हो रहा है। पुराने मूल्यों के स्थान पर नये मूल्यों की प्रतिष्ठा बढ़ रही है। वैज्ञानिक साधनों ने गांवों के स्थिर और शान्त जीवन में भी हलचल उत्पन्न कर दी है। अब सारी समाज व्यवस्था को नये सिरे से ढालने का विचार प्रबल से प्रबलतर होता जा रहा है। गांवों को अब शहरी जीवन से असंपृक्त नहीं रखा जा सकता और नवीन सुविधासंपन्न जनमंडली के संपर्क में आने से उनके भीतर जो असन्तोष उत्पन्न होगा उसे रोका भी नहीं जा सकता। ग्राम सुधार का कार्य अब शहरी नेताओं की कर्तव्य बुद्धि का विषय नहीं रह गया है। उनके लिये ही आवश्यक हो गया है। सुधार का अर्थ है कि अधिक व्यवसाय और उद्योगों का प्रवर्तन अधिक स्कूल कालेजों का खोलना अधिक वैज्ञानिक सुविधाओं की आयोजना। इन्हीं बातों को जनपदीय जनता के मंगल का द्वार समझा जा रहा है। अभी तक इससे भिन्न श्रेणी के सुझाव देखने को नहीं मिले। जो सुझाव थोड़ी भिन्न श्रेणी के लगते हैं उनके बाह्य रूप में और गति की मात्रा में ही अन्तर है। ऐसा लग रहा है कि इन सुधारों की ओर जनता और राज्य का ध्यान आगे भी केंद्रित होता जाएगा और ऐसी अवस्था में ग्रामीण साहित्य कला और शिल्प के अविमिश्र शुद्ध रूप के बचे रहने की आशा करना व्यर्थ है। अभी से इस बात के लक्षण प्रकट होने लगे हैं कि लोक नीवन पर आधुनिकता के प्रभाव पड़ते जा रहे हैं। यह चिन्ता की बात नहीं है। जहां जीवन होगा वहां प्रभाव भी पड़ेगा। उससे घबराना बेकार है। यह कैसे संभव है कि सारे संसार में मानवीय आचारों और विचारों के मूल्य में परिवर्तन होता रहेगा और हमारे जनपद उससे एकदम

अस्पृष्ट रहेंगे। मिश्रण भी होगा नवीन विनोद साधनों का प्रचार भी बढ़ेगा और नई समाज व्यवस्था का आयोजन भी होगा। चिंता की बात यह नहीं है दूसरी है।

वैज्ञानिक युग के कान्तिकारी साधनों ने एकदम नवीन युग की सूचना दी है। गांवों के स्थितिशील या मंदगतिशील समाज में जो आलोड़न विलोड़न के लक्षण प्रकट हुए हैं उनका प्रभाव बहुत दूर तक व्याप्त होगा। ग्राम जीवन अब उस प्रकार परंपरावाहक नहीं बना रहेगा जिस प्रकार अबतक रहा है। शहरों में काम करनेवाली साधारण जनता भी दीर्घकालतक और पुश्तोंतक एक ही स्थान पर नहीं बनी रहेगी। जीवनसंघर्ष की कठोरता प्रतिदिन बढ़ती जो रही है। जीविका के लिये शहर और गांव दोनों के रहनेवाले यायावर बनते जायेंगे। ऐसी अवस्था में पुरानी परंपरा के टूटने की संभावना को बहुत बल देकर सिद्ध करने की ज़रूरत नहीं है। हमने ऊपर देखा है कि लोक साहित्य परंपराप्राप्त साहित्य है। उससे हमारे पुराने इतिहास की कड़ियां जुड़ती हैं मनुष्य की मानस ग्रंथियों पर प्रकाश पड़ता है और सामाजिक विकास के स्तरों को समझने में मदद मिलती है। इस बहुमूल्य सम्पत्ति को नष्ट हो जाने देना किसी प्रकार वांछनीय नहीं है। उसे यथासम्भव विशुद्ध रूप में सुरक्षित रखने का प्रयास हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। चिन्ता का कारण लोक जीवन में दिखनेवाले परिवर्तन नहीं हैं बल्कि नवीन पुग के जन्म लेने के समय उत्पन्न होनेवाली हलचलों के कारण वर्तमान लोकसाहित्य के खो जाने की आशंका है। इस युग सन्धि के समय यदि हम अनासक्त दृष्टि लेकर अपनी इस बहुमूल्य सम्पत्ति को यथार्थ रूप में सुरक्षित नहीं कर सके तो यह अपार राष्ट्रीय क्षति होगी। इसी लिये हमें सावधानी से अपने इस आलोचित और अनालोचित साहित्य सम्पत्ति का जल्दी से जल्दी संकलन और संपादन करना चाहिए। इस कार्य में शिथिलता और लापरवाही से भयंकर क्षति होगी। इनके संकलन संपादन में अधिक विलम्ब नहीं होना चाहिए। ठीक ठीक संकलन और संपादन हुए बिना हम वास्तविक लाभ नहीं पा सकेंगे। संकलनकर्ताओं की दृष्टि में किसी प्रकार का आग्रह और आसक्ति का होना एकदम वांछनीय नहीं है। न तो यह पुन: प्रवर्तन का प्रयास है न स्थानीय गौरव के प्रचार की आसक्ति। अनासक्त अनाविल दृष्टि की इसमें सर्वाधिक आवश्यकता है।

संसार के जिन देशों ने अपने देश के लोक साहित्य का संकलन संपादन किया है उन देशों के परिष्कृत और अभिजात साहित्य में कभी कभी यह प्रयत्न हुआ है कि साहित्य के विविध रूपों को लोक साहित्यिक रूप दिया जाय। कई बार यह प्रयत्न बहुत सफल भी हुए हैं पर यह पुन:

प्रवर्तन का प्रयास नहीं बल्कि नयी जीवन शक्ति से अभिजात साहित्य की कृत्रिमता भंग करने का प्रयास सिद्ध हुआ है। यह दूसरी बात है। हम अन्यत्र इसकी चर्चा करेंगे।

इस संबंध में ध्यान देने की बात यह है कि भारतीय सभ्यता का इतिहास पश्चिम के उन समृद्ध देशों के इतिहास से थोड़ा भिन्न है जहां सभ्यता के मूल उत्स नगरों के रहनेवाले तत्वचिंतक विद्वान् थे। यद्यपि इस देश में बहुत प्राचीन काल से ही पौर और जानपद जनों का अन्तर स्वीकार कर लिया गया था पर जिन विचारकों ऋषियों और आचार्यों को यह देश अपना मार्गदर्शक मानता आया है वे नगरों के निवासी नहीं थे। यहां के सभी आचार्यों और सन्तों ने अपनी साधना भूमि नगरों से बाहर बनाई थी। कथा पुराण और गीत नृत्यों के द्वारा जनपदों के निवासी निरन्तर उच्चतर ज्ञान को प्राप्त करते रहते थे। नगरों के निवासी भी इन्हीं सांस्कृतिक आदर्शों से प्रेरणा पाते थे। इस प्रकार यहां केवल नगर और ग्राम के भेद से नागरिक और लोकसंस्कृति को भिन्न भिन्न नहीं समझा जा सकता। संस्कृति एक ही थी उसके उन्नायक आचार्य एक ही थे नगरों से छन छन कर वह ग्रामों में नहीं पहुंचती थी बल्कि ग्रामों से नगरों की ओर जाती थी। सन् ईस्वी के कुछ पूर्व से समृद्ध नगरियों की संख्या बढ़ने लगी थी और ग्रामों के साथ उनका व्यवधान भी बढ़ने लगा था। साधारणत: नगरों में रहने वाले लोग भोक्ता वर्ग के थे या उनकी सेवाओं में नियुक्त होते थे और गांवों में रहनेवाले लोग उत्पादक वर्ग के थे। नगर राजाओं राजपुरुषों और श्रेष्ठियों के आवास थे गांव कृषिजीवी लोगों और उनके सहायकों की वासभूमि थे। राजाओं और श्रेष्ठियों के यहां आश्रय पाने के लिये बड़े बड़े कलावन्त   कवि गायक चित्रकार शिल्पी   नगरों की ओर जाते थे। इन्हें अपना सारा समय तत्तत् कलाओं को और भी निखारने और मांजने में लगाना पड़ता था। राजदरबार प्रतिद्वंद्वियों से भरे रहते थे। गांवों में इतनी प्रतिद्वंदिता भी नहीं होती थी अच्छा पुरस्कार भी नहीं मिलता था और कला को मंज घिसकर निखारने का अवसर भी नहीं मिलता था। इसी लिये शहरों में कलाओं और विदाओं के संस्कार हुए सूक्ष्म बौद्धिक विवेचनावाले ग्रंथ लिखे गए। गांव की जनता को न इतना समय था न इतनी जरूरत। दिन भर काम काज करने के बाद अपने मन बहलाव के लिये वह भी नृत्य गीत उत्सवों का आयोजन करती थी पर ये आयोजन अधिक सहज अधिक प्रत्यक्ष होते थे और अधिक अमार्जित रह जाते थे। शहर के वृत्तिनीवी कलावन्तों को यह गंवारू मनोरंजन भोंडे लगते थे और गांव के लोगों को दरबार के बहु विघोषित कला गुण दुर्बोध। गांव और शहर का

व्यवधान धीरे धीरे बढ़ता गया। गांव के जो लोग शहरी दरबारों में जाकर अपनी विद्या मांज घिस लेते थे वे भी गांवों ऊबने लगते थे। बिहारी कवि ने एक बार पछता कर कहा था कि गयो गरब गुन को सबै बसे गंवारे गांव। शहरी गुणों का गर्व गांव में रहना संभव ही नहीं था। यह व्यवधान बढ़ता ही गया है। परन्तु फिर भी भारतवर्ष की संस्कृति के उन्नायक शहरों से चलकर गांव की ओर नहीं आए बल्कि गांव से चलकर शहरों की ओर गए हैं। मुसलमानी शासन काल मेंगांव और शहर का अंतर काफ़ी अधिक बढ़ गया था परन्तु भारतीय संस्कृति को उस समय भी प्राय: निरक्षर सन्तों का नेतृत्व मिल गया। वे जनता के अपने आदमी थे उन्हीं में जन्मे हुए उन्हीं में पले हुए और उन्हीं में बढ़े हुए। वे सच्चे अर्थों में नगर और गांव के व्यवधान के मिलनसेतु थे। उन्होंने अपने सहज ज्ञान और उच्च चरित्रबल से समूची जनता को प्रभावित किया था। ऐसा कभी नहीं हुआ कि उनका ज्ञान गांव तक ही समिति रह गया हो। वह शहर के गण्यमान्य लोगों को प्रभावित किया करता था।

इन मध्ययुग के सन्तों का लिखा हुआ साहित्य कई बार तो वह लिखा भी नहीं गया कबीर ने तो मसि कागद छुआ ही नहीं था।। लोकसाहित्य कहा जा सकता है या नहीं। आजकल हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में इन सन्तों की रचनाएं विवेच्य मानी जाती हैं अर्थात् उनकी गणना अभिजात और परिष्कृत साहित्य में होने लगी है। सीमा रेखा कहां है। क्यों कबीर की रचना लोकसाहित्य नहीं है। सच पूछा जाय तो कुछ थोड़े से अपवादों को छोड़कर मध्ययुग के संपूर्ण देशीभाषा के साहित्य को लोक साहिस्य के अन्तर्गत घसीट कर लाया जा सकता है। इसीलिये इस देश में लोक साहित्य की खोज का काम बहुत जटिल है। केवल परिष्कृत और लौकिक कहे जानेवाले साहित्य की अध्ययनप्रणाली को ही भेदक माना जा सकता है। लोक साहित्य मौखिक परंपरा से प्राप्त और संगृहीत होता है जब कि मध्ययुग का तथाकथित परिष्कृत साहित्य सन्त पाण्डुलिपियों के आधार पर संपादित होता है।

साधारणत: मौखिक परंपरा से प्राप्त और दीर्घकाल तक स्मृति के बल पर चले आते हुए गीत और कथानक ही लोक साहित्य कहे जाते हैं। इसी प्रकार किसी पुस्तक के आधार पर न होकर जो नृत्य परम्पराक्रम से चला आ रहा है उसे लोकनृत्य कहा जाता है। तुलसीदास जी की रामायण को आश्रय करके जो रामलीलाएं उत्तर भारत में प्रचलित हैं वे लोकनाट्य हैं या नहीं। इन रामलीलाओं में तुलसीदास का रामचरित मानस अक्षरश: पठित और अभिनीत होता है।

इनमें न तो कोई यवनिका होती है न प्रवेशक विष्कंभक न नांदीपाठ न सूत्रधार । संस्कृत के शस्त्रीय नाटकों की जो नाट्यधर्मी वृत्तियां हैं अपवार्य भाषण आकाश भाषित स्वगत उक्ति वे इसमें कुछ भी नहीं होतीं । रामलीलाओं में क्रिया की परवा कम की जाती है तुलसीदास के रामायण को प्रत्यक्ष करके मूर्तिमान् बनाने की अधिक । इन लीलाओं से अधिक पुस्तक निबद्ध नाटक कम खेले जाते होंगे फिर भी वे लोकनाट्य से भिन्न नहीं हैं । इसीलिये यूरोप के कुछ विचारकों ने लोकसाहित्य फोक लोर को लिखित या अलिखित साहित्य न कह कर परम्पराप्रथित साहित्य ही कहना पसंद किया था । इंग्लैण्ड में इस बात पर काफी बहस हुई थी कि शेक्सपियर के नाटकों के जो अभिनय तीन सौ वर्षों से चले आ रहे हैं वे परम्पराप्रथित होने के कारण लोकनाट्य की श्रेणी में आ सकते हैं या नहीं । अधिकांश विचारक उन्हें लोक नाट्य मानने के पक्ष में नहीं थे । इन बातों से पता चलता है कि लोकसाहित्य को ठीक ठीक परिभाषा में बांधना बड़ा कठिन है । देश का इतिहास जितना ही विपुल और विशाल होगा उतना ही जटिल होगा उसके लोकसाहित्य का अध्ययन । ऐसा मान लिया जा सकता है कि जो चीजें लोक चित्त से सीधे उत्पन्न होकर सर्वसाधारण को आन्दोलित चालित और प्रभावित करती हैं वे ही लोकसाहित्य लोकशिल्प लोकनाट्य लोककथानक आदि नामों से पुकारी जा सकती हैं । लोक चित्त से तात्पर्य उस जनता के चित्त से है जो परम्पराप्रथित बौद्धिक विवेचनापरक शास्त्रों और उन पर की गई टीका टिप्पणियों के साहित्य से अपरिचित होता है ।

जहां एक ओर भारतीय लोकसाहित्य का अध्ययन जटिल गहन है वहीं वह प्रेरणादायक और नवीन आलोक की उत्स भूमि भी है । लोकसाहित्य और लौकिक आचारों के अध्ययन से कभी कभी हमारे भूले हुए और विशृंखलित साहित्य पर आश्चर्यजनक प्रकाश पड़ता है । ऐसे सैकड़ों उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं जहां लोक प्रचलित आचार परंपराओं लोकोक्तियों और पहेलियों ने भूले हुए इतिहास को आलोकित किया है । हमने ऊपर लोकसाहित्य के छः मुख्य विभाग किए हैं । उनकी अलग अलग चर्चा करते समय लोकसाहित्य के इस महत्त्वपूर्ण पहलू पर भी कुछ लिखने का प्रयास किया जाएगा । जहां कहीं भी इस अलिखित मौखिक साहित्य की ओर पंडितों का ध्यान गया है वहीं इन गीतों के अत्यन्त मर्मभेदी और प्रभावशाली काव्यतत्व को देखकर आश्चर्य प्रकट किया गया है । इंग्लैण्ड के रोमांटिक काल के कवियों और आलोचकों में से कई लोग इन गीतों की मोहक चारुता और हृदयसंवादक वेदना और उल्लास से इतने अधिक प्रभावित हुए थे कि

वास्तविक कवित्व के लिये इन लोकगीतों का आदर्श स्वीकार करने लगे थे । लोकगीतों की अव्यवहित प्रभावशालिता ने साहित्य में प्रिमिटिविज्म आदिम वृत्तिवाद नामक नवीन तत्वदर्शन को जन्म भी दिया था और उसमें उत्तेजना का संचार भी किया था ।

राजस्थानी लोक कथाओं का एक मूल अभिप्राय : लखाणो दूहो

डा० कन्हैयालाल सहल

राजस्थानी लोक कथाओं के असंख्य मूल अभिप्रायों में से एक मूल अभिप्राय है लखीणो दूहो जिसका तात्पर्य है एक लाख रुपों के मूल्यवाला दोहा । उक्त अभिप्राय के निदर्शनार्थ एक राजस्थानी लोक कथा यहां उद्धृत की जा रही है

एक राजा के कोई सन्तान नहीं थी । एक दिन वह घोड़े पर सवार होकर घूमता घूमता एक साधु की कुटिया के पास जा पहुंचा । वहां घोड़े से उतर कर उसने साधु की परिक्रमा की और उसे नमस्कार करके बैठ गया । साधु उस समय ध्यान में मग्न था । उसे ध्यान में ही पता चला कि कोई उसकी धूनी के पास बैठा हुआ है । आंखें खोल कर साधु ने राजा से सब हाल पूछा । राजा ने कहा आप पहुंचे हुए सिद्ध महात्मा हैं आप घट घट की जानते हैं । भगवान् की कृपा से मेरे यहां और तो सब आनन्द है किन्तु कोई लड़का नहीं । आपका आशीर्वाद मिल जाय तो सन्तान की प्राप्ति हो जाय । यह सुन कर साधु ने अपनी धूनी में से थोड़ी सी विभूति देते हुए कहा इसे रानी को खिला देना । प्रभु ने चाहा तो तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा । राजा ने विभूति ले जाकर रानी को दी । नौ महीने बाद रानी के पुत्र उत्पन्न हुआ । बड़ा उत्सव मनाया गया । राजा के लोगों को इनाम इकराम मिला । राजकुमार दिनों दिन बड़ा होने लगा ।

उस राजा के राज्य में एक पढ़ी लिखी गरीब स्त्री थी उसने अपने पति को निम्नलिखित दूहा लिख कर दिया :

बैठक बैठज्ये पांव ठामज्ये तिरिया मारग टाल ।
पहरो दे तो सांचो दीज्ये आई रीस निवार ।।

उक्त दोहा सौंपते हुए पत्नी ने अपने पति से कहा अपना घर दारिद्र्य का अड्डा बना हुआ है । आप यह दोहा ले जाकर किसी को बेच दें किन्तु जिस किसी को भी बेचें उससे एक

लाख रुपये से पाई भी कम न लें। यह दोहा बहुत ही मूल्यवान है।

दोहा लेकर वह बहुत घूमा किन्तु कोई भी इतने बड़े मूल्य में दोहा खरीदने से लिये तैयार नहीं हुआ। अन्त में वह उस नगर के राजा के पास गया। राज ने दोहा पढ़ कर कहा दोहा है तो नसीहत से भरा हुआ किन्तु इसका मूल्य इतना नहीं दिया जा सकता। राजा के वचनों को सुनकर वह व्यक्ति बड़ा निराश हुआ और माथे पर हाथ रख दोनों आंखों को मींच मन ही मन दुखी होकर सोचने लगा कि इसमें किसी का दोष नहीं वस्तुतः मैं ही अभागा हूं।

कुंवर ने जिसकी अवस्था इस समय लगभग १५ वर्ष की रही होगी उसे दुखी देख कर नौकर के हाथ बुला भेजा और दोहे को पढ़ कर खजानची को हुक्म दिया कि इस व्यक्ति को खजाने से एक लाख रुपया दे दिया जाय। वह आदमी एक लाख रुपया लेकर अपने घर चला गया। इधर चुगलखोरों ने राजा से कहा कि महाराज। जिस दोहे को आपने एक लाख रुपये में नहीं खरीदा उसी को कुंवर ने एक लाख रुपया देकर खरीद लिया। दीवान साहब भी राजा के पास ही बैठे थे। उन्होंने भी कहा कि यदि इसी प्रकार खजाने का रुपया लुटाया जायगा तो खजाना खाली होते क्या देर लगेगी। यह सुन कर राजो बड़ा रुष्ट हुआ और उसने हुक्म दे दिया कि इस प्रकार का उड़ाऊ लड़का किस काम का। इसे अभी देश से बाहर निकाल दिया जाय। राजा के हुक्म को मानकर कुंवर उसी समय काली पोशाक पहन काले घोड़े पर सवार हो राज्य से बाहर निकल गया।

करीब तीस चालीस मील चलने के बाद वह एक बावड़ी के पास पहुंचा। यहां पर विश्राम करने लिए कुंवर थोड़ी देर के लिए रुक गया। इसी बीच एक स्त्री दौड़ती हुई कुंवर के पास आई और कहने लगी मेरे पास बहुत सा द्रव्य है मैं आपके साथ चलना चाहती हूं। असल में इस स्त्री ने एक ठाकुर के लड़के को मार कर उसका सब धन हस्तगत कर लिया था। कुंवर ने कहा तुम जो चाहती हो वह तो ठीक किन्तु मैं पहले अपना दोहा देख लूं। दोहे में स्पष्ट निर्देश था तिरिया मारग टाल अर्थात मार्ग में कोई स्त्री साथ होना चाहे तो उससे बचो। कुंवर ने साफ कह दिया मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले चल सकता। इतना सुनते ही वह स्त्री आगे भगी। वह कुछ ही दूर गई होगी कि लगभग बीस घुड़सवार पीछा करते करते बावड़ी के समीप आ पहुंचे और पूछे जाने पर कुंवर ने कह दिया कि एक स्त्री अभी अभी इधर से भग कर गई है। घुड़सवारों ने उसे जा पकड़ा और मारते कूटते उसे वापिस ले आये। कुंवर ने मन ही मन कोचा

यदि मैं इसे अपने साथ ले लेता तो मेरी भी यही दुर्गति होती । निश्चय ही यह दोहा एक बहुमूल्य चीज है मैं सदा इसे अपने साथ रखूंगा और इसके निर्देशों के अनुसार काम करूंगा ।

ऐसा सोच कर कुंवर आगे बढ़ा । रास्ते में एक शहर आया । शहरपनाह की दीवार पर बैठे हुए एक मोर के उड़ने से उसका घोड़ा चौंक उठा और दीवार को फांद कर शहर के भीतर के एक चौक में जा पड़ा । यह हवेली ठगों की थी । एक भाग्यशाली पुरुष को घोड़े समेत आये हुए देख कर ठग बहुत प्रसन्न हुए और सबके सब कुंवर के पास पहुंच कर कहने लगे आपके साथ बालपन में हमारी बहिन की शादी हुई थी तब से कभी आप इधर नहीं पधारे । आज हमारे अहो भाग्य हैं जो आपके दर्शन हुए । इस प्रकार कहते हुए उन्होंने घोड़े को यथास्थान बांध दिया और कुंवर को एक पलंग पर बिठला दिया । राजकुमार की पूरी खातिर होने लगी । कुंवर को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ किन्तु वह मन ही मन सोचने लगा मेरा इनके यहां कब विवाह हुआ था । शायद बाल्यावस्था का प्रसंग होने से मुझे कुछ स्मरण न रहा हो । यदि विवाह न हुआ होता तो ये लोग मेरी इतनी आवभगत क्यों करते ।

यथासमय राजकुमार को भोजन कराया गया और उसके बाद परस्पर सगे सम्बन्धियों का सा मधुरालाप होता रहा । रात्रि के भोजन की तैयारी अन्तःपुर में हुई । ठीक समय पर एक दासी ने आकर अर्ज किया आप जनाने महल में पधारें । कुंवर जब अन्दर गया तो क्या देखता है कि एक सुसज्जित महल में झाड़फानूस की रोशनी हो रही है और पलंग पर बढ़िया किस्म का रेशमी गद्दा बिछा हुआ है । इस प्रकार एक अजनबी स्थान पर अपना इतना अधिक आदर सत्कार होते देखकर कुंवर शंकित होकर सोचने लगा कि कहीं मेरे साथ धोखा तो नहीं हो रहा है । उसने अपना दोहा पढ़ा जिसमें लिखा था बैठक बैठज्ये पांव ठामज्ये । पढ़ते ही पलंग को ध्यान से देखा तो पता चला कि उसके नीचे भालों की अनी खड़ी की हुई है और पलंग पर रेशमी गद्दा न होकर मात्र एक झीना का रेशमी वस्त्र है । यह देख कर कुंवर पलंग पर न बैठ कर नीचे ही बैठ गया । इतने में षोडश शृंगार किये हुए वस्त्राभूषणों से सुसज्जित घूंघट पट की ओट से एक कामिनी ने आकर मधुर स्वर में कहा आज मेरा अहोभाग्य है जो आपने दर्शन दिये किंतु आप नीचे क्यों बिराज रहे हैं आप पलंग पर बिराजें । कुंवर ने उत्तर दिया कोई बात नहीं है नीचे ही ठीक है । इसके बाद राजकुमार को भोजन करवाया गया भोजन के बाद कुंवर को एक दूसरे सुसज्जित कमरे में ले जाया गया जहां एक शानदार पलंग बिछा हुआ था ।

कुंवर थका मांदा तो था ही लेटने के थोड़ी देर बाद ही गहरी नींद के वशीभूत हो गया। कुंवर को गहरी नींद में सोया देख कर वह स्त्री नजदीक आई और उसने राजकुमार को पलंग से बांध दिया तथा स्वयं कटारी हाथ में लेकर उसकी छाती पर चढ़ बैठी। राजकुमार की नींद उड़ गई। छाती पर स्त्री को चढ़ा हुआ देख कर वह जोर से हंसने लगा। कुंवर को हंसता हुआ देख कर उस स्त्री को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने हंसी का कारण पूछा। कुंवर ने कहा लोभ के कारण अब तक न जाने तुम कितने व्यवितयों की हत्या कर चुकी हो और भविष्य में भी जान पड़ता है करती रहोगी। मुझे यह सोच कर हंसी आई कि इस स्त्री को निर्दोष व्यक्तियों की हत्या करते हुए तनिक भी हिचकिचाहट नहीं होती और इसे यह भी पता नहीं कि इस जघन्य पाप का कितना बुरा फल इसे भोगना होगा। इस पर स्त्री ने उत्तर दिया इन हत्याओं का पाप मुझे नहीं लगेगा क्योंकि मैं तो अपने माता पिता की आज्ञा से ऐसा करती हूं। राजकुमार ने कहा तुम अपने मात पिता से पूछकर आओ मैं तो तुम्हारे कब्जे में हूं कहीं भगने से रहा।

कुंवर के शब्दों को सुन कर वह स्त्री अपनी मां के पास गई अपनी लड़की के पैरों की आहट पहचान कर मां पीछे की ओर मुड़ती हुई बोली तू थोड़ी देर रुक जा अभी मैंने भगवान् के दर्शन नहीं किये हैं। मां जब लौट कर आई तो उस स्त्री ने अपनी मां से पूछा तुम भी यह हत्या का काम मुझसे करवा रही हो उसका फल किसको मिलेगा। मां ने उत्तर दिया इसमें पूछना ही क्या है। तुम जो काम करोगी उसका फल भी तुम्हें ही मिलेगा।

यह उत्तर पाकर वह अपने पिता के पास गई और वहीं प्रश्न दुहराया। पिता ने जवाब दिया बेटी। जो जैसा बोयेगा वैसा ही काटेगा जो जैसा करेगा वैसा ही भोगेगा। बाही जो लणही करही जो भरही।

माता पिता के उत्तर सुन कर उस स्त्री की आंखें खुल गईं और उसने राजकुमार के बन्धन खोलते हुए कहा आपके ही उपदेश से मेरा उद्धार हुआ है। अब मैं सदा के लिए हत्याजैसे जघन्य कृत्य को तिलांजलि दे रही हूं। मेरी अन्यतम इच्छा है कि आप मुझसे विवाह कर मुझे कृतार्थ करें। यदि आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की तो मैं अभी आत्म हत्या करके अपने प्राण दे दूंगी।

उस स्त्री के हृदय परिवर्तन से प्रभावित होकर राजकुमार ने उसके साथ विवाह कर लिया

और फिर वहां से वह रवाना हो गया । चलते चलते वह एक नगर में पहुंचा और एक सम्मानित गृहस्थ के यहां ठहरा । इस नगर की राजकुमारी के पेट में एक सर्प के उत्पन्न होने से वह नगर के बाहर एक महल में रहती थी और बारी बारी से शहर के लोग उसके यहां पहरा दिया करते थे । जिस गृहस्थ के यहां राजकुमार ठहरा हुआ था पहरे पर जाने की उस दिन उसी की बारी थी । जो भी पहरे पर जाता उसे ही राजकुमारी के पेट से निकला हुआ सर्प खा जाता था । इस गृहस्थ का एक लड़का आज से १२ वर्ष पहले पहरे पर गया था और सर्प का भक्ष्य बन चुका था । अतः आज वह गृहस्थ बड़ा उदास और दुखी था । राजकुमार ने उसे उदास देख कर सब हाल मालूम किया और कहा आज तुम्हारी बारी में पहरे पर मैं जाऊंगा । तुम निश्चिंत रहो और अपने पुत्र को घर पर ही रहने दो । गृहस्थ ने उत्तर दिया यदि राजा को इस का पता लग गया तो वह हमारे समस्त कुटुम्ब को घानी में पेल देगा । इस पर राजकुमार ने कहा तुम मत घबराओ । आज तुम्हारे पुत्र के बदले मैं ही जाऊंगा और तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा । तुम मेरी बात पर विश्वास रखो ।

इस पर गृहस्थ आश्वस्त हुआ और उसने राजकुमार को बड़े प्रेम और आदर सम्मान पूर्वक खिलाया पिलाया तथा बाद में उसे राजा के महल तक पहुंचा दिया । वहां जाकर राजकुमार पहरा देने लगा । थोड़ी देर बाद कुंवर देखता क्या है कि राजकुमारी के मुंह में से एक सर्प निकल रहा है । सर्प को भली भांति देखने के लिए ज्योंही राजकुमार आगे बढ़ा त्यों ही सर्प वापिस राजकुमारी के पेट में प्रविष्ट हो गया । राजकुमार ने रेशम की डोर का एक पाश बना कर राजकुमारी के मुंह पर रख दिया । थोड़ी देर बाद ज्यों ही सर्प बाहर निकला कुंवर ने डोर खैंच ली । इस प्रकार सर्प पकड़ लिया गया । अब राजकुमार ने डोरी खैंचकर कपड़े का अंचल सर्प की टुड्डी पर डाला और टुड्डी फाड़ कर सर्प को पेट में से खैंच कर बाहर निकाल लिया तथा तलवार से उसके टुकड़े टुकड़े करके उसे ढाल के नीचे रख दिया । यह सब देख कर राजकुमारी बेहोश हो गई । जब उसे होश आया तो राजकुमार को अपने सामने बैठे हुए देखा । राजकुमारी ने पानी की मांग की जिस पर राजकुमार ने उसे पानी पिलाया । राजकुमारी ने कहा आज तक जो भी पहरे पर आया वह मुझे सदा मरा हुआ ही मिला और मेरे द्वारा पानी मांगे जाने पर किसी ने मुझे पानी नहीं पिलाया आज यह पहला अवसर है जब किसी ने ऐसे विकट समय में पानी पिलाकर मेरी प्यास बुझाई है । बताइए किस प्रकार आपके

प्राण बचे ।

राजकुमार ने अथ से इति तक सब हाल कह सुनाया । बातों ही बातों में रात बीत गई । जब प्रभात के समय मुर्दे को डालने वाले आये तो महल में से ही राजकुमार बोला मुर्दे डालते हुए तुम्हें बहुत दिन हो गये आज मैं सही सलामत बैठा हूं । यह सुनते ही वे राजा के यहां गये और १०।१२ आदमियों को अपने साथ लेकर आये । कुंवर ने उनसे भी वही बात दुहराई । किन्तु हिम्मत करके उन्होंने महल का दरवाजा खुलवाया और वे कुंवर से मिले । पूछने पर कुंवर ने सब हाल उन्हें कह सुनाया । राजा को जब सर्प के मारे जाने की खबर मिली तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने अपनी लड़की का विवाह राजकुमार के साथ कर दिया । बहुत दिनों तक कुंवर वहीं राजकुमारी के साथ आनन्दपूर्वक रहा । तत्पश्चात् उसने राजा से बिदा ली और अपनी धर्मपत्नी सहित ठगों की नगरी के लिए रवाना हो गया । वहां से पूर्व परिणीता पत्नी को भी साथ ले लिया । अब तीनों ने फौज सहित चल कर अपनी रियासत की सीमा के पास मुकाम किया । कुंवर ने रोष में भर कर पहले तो यह निश्चय किया कि जिस राजा ने उसे जरा सी बात पर देशनिकाला दे दिया था उससे लड़ाई करके राज्य पर कब्जा कर लिया जाय किन्तु जब उसने दोहे में पढ़ा आई रीस निवार तो उसने क्रोध छोड़ कर दूसरे उपाय का आश्रय लिया और राजा से कहला भेजा कि या तो फौज के लिए खरचा दो या मेरे साथ युद्ध करो । राजा ने अपने दीवान से सलाह ली । दीवान ने कहा हुजूर की मर्जी हो तो भले ही फौज खर्च दिला दिया जाय किन्तु मेरा सुझाव है कि एक बार उस व्यक्ति से मिलें तो सही । राजा के दूसरे सरदार राजकुमार से मिलने के लिए गए । देखते ही उन्होंने राजकुमार को पहचान लिया और सब बड़े प्रसन्न हुए । राजकुमार ने कहा कि जिस दोहे के कारण मुझे देशनिकाला दे दिया गया था उसी ने मुझे अनेक मुसीबतों से बचाया । इस बार भी मैंने युद्ध का विचार किया था किन्तु दोहे ने मेरी सहायता की जिसके परिणामस्वरूप मैंने अपने क्रोधको छोड़ कर फौज खर्च के लिए राजा को कहलवाया । मेरे इस प्रस्ताव के कारण ही आप लोग यहां मिलने के लिए आ गये और लड़ाई की नौबत ही नहीं आई ।।

दीवान ने राजकुमार विषयक सब समाचार राजा के पास पहुंचाया । राजा के हर्ष की सीमा न रही । उसने राजकुमार को महलों में बुला लिया और सब मिल कर आनन्दपूर्वक रहने लगे ।

उक्त लोक कथा में निम्नलिखित प्रसिद्ध मूल अभिप्रायों का प्रयोग हुआ है :

१ विभूति द्वारा पुत्र जन्म ।

२ कुंवर का हंसना ।

३ नगर के लोगों का बारी बारी से सर्प का भक्ष्य बनना। विभूति द्वारा पुत्र जन्म को निष्क्रिय मूल अभिप्राय के रूप में ग्रहण किया जा सकता है क्योंकि कथा की गति विधि में इस अभिप्राय से कोई विशेष सहायता नहीं मिलती । इस कथानक रूढ़ि को हटा कर भी यदि उक्त कथा का प्रारम्भ हो जाता तो भी कथा के कार्य व्यापार को कोई क्षति नहीं पहुंचती । अतः कार्य संकलन की दृष्टि से इस अभिप्राय की कोई सार्थकता नहीं जान पड़ती । इस अभिप्राय से यदि कोई गम्य अर्थ अभिप्रेत हो तो वह यही हो सकता है कि कथा नायक के जन्म में एक प्रकार की असाधारणता है जिससे यह ध्वनित होता है कि वह आगे चल कर अपने जीवन में भी असाधारण कार्य करेगा ।

कुंवर का हंसना एक महत्त्वपूर्ण अभिप्राय है क्योंकि यह हंसी ही कुंवर के प्राणों की रक्षा करती है और इसी से ठगबाला का हृदय परिवर्तन होता है । लोक कथाओं में हास्य नामक मूल अभिप्राय के विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं जिन्हें देख कर यह आभास होने लगता है कि हास्य रोदन की अपेक्षा भी कहीं अधिक प्रभावशाली है ।

लोक कथाओं में प्रायः देखा जाता है कि नगर के लोग बारी बारी से किसी दानव के भक्ष्य बनते हैं । प्रस्तुत कथा में राजकुमारी के पेट में रहने वाले सर्प ने ही दानव का रूप धारण कर रखा है ।

ऊपर जिन तीन प्ररूढ़ियों का वर्णन हुआ है वे प्रस्तुत कथा में अंगभूत बन कर आई हैं अंगी बन कर नहीं । इस कथा का अंगी अभिप्राय है लखीणो दूहो । दूहो राजस्थान का लाड़ला और बहुप्रचलित छन्द है । मूल अभिप्राय के रूप में प्रयुक्त दूहो शब्द न केवल छन्द शास्त्र सम्मत दोहे का ही वाचक है बल्कि यह आवश्यकतानुसार पद्य मात्र का बोधक बन जाता है । लखीणो दूहो नामक मूल अभिप्राय मुख्यतः राजस्थानी लोक कथाओं को प्ररूढ़ि है ।

प्रस्तुत कथा से स्पष्ट है कि लखीणो दूहो ही कथा के आरम्भ विकास और परिणति का कारण है । राजकुमार दूहे को लाख रुपये देकर खरीद लेता है जिसके कारण उसे देशनिकाले का दण्ड मिलता है । यहीं से कथा का वास्तविक प्रारम्भ होता है । दोहे के चारों चरण ही

कथा को आगे बढ़ाते हैं। इस दोहे के चरणों के अतिरिक्त कथा के अपने कोई चरण नहीं हैं। दोहे में जिस क्रम से शिक्षा दी गई है उस क्रम से सब घटनाएं घटित नहीं हुई हैं। इसलिए घटनाओं की दृष्टि से क्रमालंकार अथवा यथासंख्य को कुछ व्याघात पहुंचा है। आई रीस निवार उक्त दोहे का चौथा चरण है जिसके द्वारा कथा को परिणति प्राप्त होती है।

महाकवि भारवि के सहसा विदधी न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् को लेकर भी एक इसी प्रकार की लोक कथा कही जाती है जिसमें उक्त श्लोक की सहायता से हत्या होते होते बच जाती है।

संस्कृत काव्य में शकुन और उनका वर्गीकरण

दीपचन्द्र शर्मा

भारतवर्ष में शकुनों में विश्वास की दो अवस्थायें परिलक्षित होती हैं। पहली अवस्था में शकुनों के संकेतों द्वारा भावी अशुभ घटनाओं को जानने का प्रयत्न किया जाता था जिससे यज्ञ अथवा देवताओं की स्तुति द्वारा अथवा अन्य जादू टोनों के मंत्रों द्वारा उनका निराकरण किया जा सके। दूसरी अवस्था में शकुनों के संकेतों द्वारा भावी शुभ या अशुभ घटनाओं की यथार्थता को जानने की चेष्टा की जाती थी। किन्तु विकास की दोनों अवस्थायें इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि शकुनों में विश्वास निर्विवाद रूप से विद्यमान था।

भारतीय शकुनों के विकास की उपर्युक्त दोनों अवस्थाओं को स्पष्ट करने के लिये तथा संस्कृत काव्य में प्राप्त शकुनों के वर्गीकरण पर विचार करने के लिये वैदिक साहित्य में प्राप्त शकुनों का संक्षिप्त परिचय देना युक्तिसंगत होगा। वैदिक साहित्य के प्रारम्भिक युग से लेकर अन्तिम युग तक शकुनों में विश्वास पाया जाता है। ऋग्वेद में पक्षियों से दक्षिण दिशा में बारम्बार शब्द करके सुमंगलशंसी होने की प्रार्थना की गई है जिससे चोर और दुष्ट व्यक्ति हम पर प्रभुत्व न करें और पुत्र पौत्र सम्पन्न होकर हम सभी यज्ञ में प्रभूत स्तुति करें। ऋग्वेद में कपोत का घर में आना दास दासी गौ अश्व आदि के लिये अशुभ ही नहीं माना गया है अपितु उसे यमराज का दूत एवं पक्षधारी अस्त्र कहा गय है। उलूक के सम्बन्ध में भी यही विश्वास पाया जाता है तथा उसकी ध्वनि को अमंगल सूचक कहा गया है। इसी लिये बारम्बार उस अशुभ के निराकरण के लिये प्रार्थना की गई है। अशुभ सूचक स्वप्नों में विश्वास के भी स्पष्ट संकेत मिलते हैं। उषादेवी से दुःस्वप्नों के फल को दूर रखने की प्रार्थना के साथ साथ उन अशुभ फलों को शत्रुओं की ओर भेजने की कामना भी की गई है।

अथर्ववेद संहिता में कपोत तथा उलूक को यम का दूत कहा गया है और प्रार्थना की गई है कि ये दूत सदा घर से दूर रहें। यात्रा के लिये जाते समय पीछे से किसी के द्वारा पुकारना

सामने की ओर किसी के द्वारा छींकना तथा रिक्त कुम्भ का दर्शन अशुभ माना गया है और प्रार्थना की गई है कि समस्त नक्षत्र देवों सहित सूर्य इस अशुभ फल से मुक्ति प्रदान करें ॥ अन्य दो मन्त्रों में शुभ एवं अशुभ छींक के उल्लेख के साथ साथ शृगाल नपुंसक तथा महावात के अशुभ प्रभाव को दूर करने की प्रार्थना की गई है ।। भूकम्प विदीर्ण भूमि उल्का धूमकेतु सूर्यग्रहण एवं लाल दूध देने वाली गौ को अशुभ सूचक मानकर उनसे उत्पन्न होने वाले उपद्रवों की शांति के लिये स्तुति की गई है । एक अन्य मंत्र में शुभ एवं अशुभ स्वप्नों का भी उल्लेख मिलता है ।

षड्विंशब्राह्मण के अन्तिम प्रपाठक में अशुभ सूचक शकुनों एवं विभिन्न देवताओं की स्तुति रा उनके निराकरण का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है । मणि मणिकुम्भ एवं स्थाली आदि का भेदन यान छत्र शय्या आसन अवस्थ ध्वज पताका आदि का भग्न होना एवं गजवाजियों रा अधिक मूत्रोत्सर्ग करना अशुभ माना गया है । कनक रजत श्रेष्ठ वस्त्र वज्र वैदूर्य आदि का वियोग मित्रों का वियोग अशुभसूचक पक्षियों का घर पर आकर बैठना भूमि में बंबई का उत्प होना तथा मधुमक्षिकाओं का बैठना आदि अशुभ के द्योतक माने गये है ॥ पृथ्वी का अकस्मात् उच्चरित होना पृथ्वी का स्फोटन कूजन कम्पन ज्वलन आदि वर्षा के बिना जल का गिरना पाषाण का तैरना शव का निमग्न होना अकाल में पुष्प फलों का उदय अश्वतरी में गर्भ का होना हथिनी का अकारण जलमग्न होना भूकम्प एवं महल का भग्न होना राजा की मृत्यु के सूचक माने गये हैं । इसी प्रकार ग्राम महिषी तथा गौ का घर पर आरोहण अशुभ का प्रतीक समझा गया । । तेज वायु का चलना बादलों में नीलकण्ठ जैसी आकृतियों का दर्शन खर उष्ट्र मन्थमृग कंक कपोत उलूक काक गृध्र गीदड़ बाज आदि का घरों में प्रवेश धूलि मांस अस्थि एवं रुधिर की वर्षा काकमिथुन का दर्शन रात्रि में इन्द्रधनुष का दर्शन खरगोशों का ग्रामों में प्रवेश वृक्षों से रुधिर का स्रवण तथा आकाश में गन्धर्व नगरों का दर्शन आदि अशुभ के द्योतक माने गये हैं । आकाश से नक्षत्रों की वर्षा एवं उल्काओं का पतन दिशाओं का दाह एवं मलिनता धूमकेतुओं का उदय गायों के सींगों पर धूमदर्शन तथा स्तनों से रुधिरस्रवण एवं अत्यधिक हिमपात आदि को अशुभ का द्योतक समझा गया है । अयुक्त यानों का चलना देवमन्दिरों का कम्पन देवप्रतिमाओं का हंसना रोना तथा नृत्य करना देवप्रतिमाओं का भेदन पसीनों से युक्त होना नेत्रोन्मीलन निमीलन नदियों का विपरीत बहना सूर्य के प्रकाश में सिर से हीन छाया का दर्शन अवर्षाकाल में सूर्य चन्द्रमा के चारों ओर परिधि का दर्शन केतु पताका छत्र वज्र विषाण का

अकारण जलना अश्वों की पूंछों में चिनगारियों का दर्शन तथा बाजों का अताड़ित होने पर भी बजना अशुभ सूचक के रूप में स्वीकार किये गये हैं। गायों से भिन्नप्राणियों अश्व उष्ट्र आदि का जन्म होना हीन अंगवालों अधिक अंग वालों अथवा विकृत अंग वालों का जन्म असम्भव वस्तुओं का उत्पन्न होना अचल पदार्थों का चलायमान होना आदि अशुभसूचक के रूप में स्वीकार किये गये हैं। पर्वतों का स्फोटन आकाश से नक्षत्रों का पतन भूमिकम्पन महान् वृक्षों का गिरना पाषाणों का जल पर तैरना तालाबों का प्रज्वलित होना चार पैर वाले पशुओं का पांच पैरों वाले होना आदि अशुभ के द्योतक माने गये हैं॥

ऐतरेय आरण्यक में आयु की अल्पता के सूचक अनेक अपशकुनों का वर्णन मिलता है। सूर्य से उष्ण रश्मियों का प्रादुर्भाव न होने के कारण उसका चन्द्रमा के समान प्रतीत होना द्यौ का लोहित होना पायुद्वार का अत्यन्त विवृत होना सिर में कौओं के घोंसलों जैसी गन्ध का आना तथा उस गन्ध का दूर दूर तक फैलना सूर्य का रथचक्र की नाभि के समान दृष्टिगत होना अपने शरीर की छाया का छिद्रयुक्त दृष्टिगत होना दर्पण या जल में अपने प्रतिविम्ब का कुटिल सिर से युक्त या सिर से हीन दिखाई देना अथवा प्रतिविम्ब में नेत्रों के कृष्ण एवं शुक्ल मण्डल का विपरीत वर्ण वाला अथवा वक्र प्रतीत होना नेत्रों के बन्द करने पर सूक्ष्म एवं श्वेत वर्तुलों का दर्शन न होना तथा कानों को अंगुलियों से दृढ़तापूर्वक बन्द कर लेने पर भी प्रज्वलित अग्नि जैसे अथवा तेज चलते हुए रथ जैसे शब्द का सुनाई न देना प्रज्वलित अग्नि का मयूरग्रीवा के समान नील प्रतीत होना मेघरहित आकाश में बिजली का दर्शन तथा मेघयुक्त आकाश में बिजली के चमकने पर भी उसके दर्शन का अभाव सघन मेघों से युक्त आकाश में सूर्य किरणों का दर्शन एवं तृणकाष्ठादि रहित भूमि का प्रज्वलित दृष्टिगत होना अल्प आयु के सूचक माने गये हैं। स्वप्न में कृष्ण वर्ण वाले अथवा कृष्ण दांतों वाले पुरुष द्वारा स्वप्नद्रष्टा का वध जंगल में वराह द्वारा स्वप्नद्रष्टा का वध मर्कट का सिर पर आरोहण अतिशीघ्रगामी वायु द्वारा निम्नप्रदेश की ओर ले जाना सुवर्णनिर्मित आभूषण को लड्डू की तरह खाकर वमन करना मधु को कण्ठपर्यन्त पेट भर के खाना बिस का भक्षण लाल कमल को सिर पर धारण करना खर एवं वराहों को रथ में जोतकर गमन करना तथा लाल फूलों की माला धारण करके दक्षिणाभिमुख होकर काले बछड़े वाली काली गौ को देशान्तर के लिए प्रेरित करना अल्प आयु के सूचक माने गये हैं। उपवास के साथ यज्ञ करके ब्राह्मणों को अन्य भोजन कराकर होमशेष चरु के भक्षण द्वारा उपर्युक्त अपशकुनों के निराकरण

के उपाय का विधान भी किया गया है ।

कौषीतकगृह्यसूत्र में जाया के समस्त अंगों का शरीर के अनुकूल होना केशान्तों का सम होना तथा सीधी और ग्रीवा पर हो रोमावर्तों का होना छः वीर पुत्रों को जन्म देने का सूचक समझा गया है । आपस्तम्बगृह्यसूत्र में सिर या किसी अन्य भाग पर वृक्ष से फल का गिरना पक्षी द्वारा पंखों का फड़फड़ाना मेघहीन आकाश से बूंदों का गिरना अगारस्थूणों में अंकुरों का उत्पन्न होना अगारों में मधुमक्षिकाओं का बैठना पचनागार में कपोत का प्रवेश आदि अशुभ माने गये हैं तथा उनके निराकरण की विधि का भी उल्लेख किया गया है । मघानक्षत्र में गायों का खरीदना पूर्वफल्गुनी तथा उत्तर फल्गुनी नक्षत्र में सेना द्वारा व्यूह रचना करना तथा स्वाति नक्षत्र में कन्या का विवाह करना शुभ माना गया है ।

वैदिक साहित्य में प्राप्त शकुनों के इस संक्षिप्त विवरण से प्रतीत होता है कि भारतीय शकुनों के विकास की पहली अवस्था में शकुनों के संकेतों द्वारा प्रायः अशुभ घटनाओं को जानने की चेष्टा की जाती थी जिससे देवताओं की स्तुतियों द्वारा एवं यज्ञों के विधान द्वारा उनका निराकरण किया जा सके । अशुभ घटनायें देवताओं द्वारा प्रेषित समझी जाती थीं और इस कारण उनकी स्तुतियों द्वारा उन अशुभ घटनाप्रों का निराकरण सम्भव मान लिया गया था । ब्राह्मण काल में तो यज्ञों का प्राधान्य यहां तक बढ़ गया था कि देवता और असुर भी यज्ञ से ही अपनी शक्ति ग्रहण करते थे इस काल में यज्ञ साधन न रहकर साध्य बन गया था । अतः यज्ञों के द्वारा भावी अशुभ घटनाओं को शुभ के रूप में परिवर्तित करना असम्भव न था । बेबीलोन तथा असीरिया में भी स्तुतियों एवं यजों के द्वारा देवताओं के निश्चय में परिवर्तन करके भावी अशुभ घटनाओं के नियन्त्रण में विश्वास किया जाता था । शकुनों के विकास की दूसरी अवस्था में शकुनों के संकेतों द्वारा भावी अशुभ एवं शुभ घटनाओं की यथार्थता को जानने की चेष्टा की जाती थी । इस दूसरी अवस्था में अपशकुनों के निराकरण में विश्वास पहली अवस्था के समान दृढ़ नहीं पाया जाता । बराहमिहिर ने अपशकुनों को दिव्य आंतरिक्ष तथा भौम तीन भागों में विभाजित किया है । उनके विचार में भौम अपशकुनों को उपायों द्वारा शान्त किया जा सकता है । आंतरिक्ष अपशकुनों को शान्त तो नहीं किया जा सकता किन्तु उनके प्रभाव को कुछ मृदु किया जा सकता है । दिव्य अपशकुनों का निराकरण सम्भव नहीं है । कुछ विद्वानों के अनुसार दिव्य अपशकुनों का निराकरण अति कठोर प्रयत्न साध्य है । लौकिक संस्कृत के काव्यों

में शकुनों के विकास की दूसरी अवस्था के दर्शन होते हैं। इसीलिये संस्कृत काव्य में जो शकुनों का उल्लेख मिलता है उसमें निवृत्ति के उपायों के संकेत बहुत कम हैं।

वैदिक काल में प्राप्त शकुनों में विश्वास का प्रवाह संस्कृत काव्य में प्रवाहित होता हुआ दृष्टिगोचर होता है। अतः वैदिक शकुनों का निम्नलिखित वर्गीकरण संस्कृत काव्य के शकुनों पर भी सरलता से लागू हो जाता है। वैदिक साहित्य में या संस्कृत काव्य में प्राप्त शकुनों को छः वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

१ ग्रहोपग्रहों से प्राप्त शकुन:

सूर्य चन्द्रमा धूमकेतु उल्का तथा अन्य नक्षत्रों से प्राप्त शकुनों का समावेश इस वर्ग में किया गया है।

२ प्राकृतिक तत्वों से प्राप्त शकुन:

वायु आंधी बिजली आदि स्वाभाविक एवं अद्भुत दोनों प्रकार के प्राकृतिक तत्वों का समावेश इस वर्ग में किया गया है।

३ पशुपक्षियों आदि की गति विधियों से प्राप्त शकुन:

शृगाल स्वान व्याघ्र अश्व गज आदि पशुओं उल्लू गिद्ध काक आदि पक्षियों एवं नकुल सर्प आदि अन्य जीवों की गति बोली तथा अन्य क्रियाओं से प्राप्त शकुनों का समावेश इस वर्ग में किया गया है।

शारीरिक लक्षणों से प्राप्त शकुन:

अंगो का फड़कना अंगों की शिथिलता तथा चक्र पद्म भंवर आदि शारीरिक चिह्नों से प्राप्त शकुनों का समावेश इस वर्ग में किया गया है।

५ स्वप्नों से प्राप्त शकुन:

शयनावस्था में किसी भी काल में किसी भी वस्तु व्यक्ति अथवा घटना आदि के दर्शन से प्राप्त शकुनों का समावेश इस वर्ग में किया गया है।

६ विविध शकुन:

उपर्युक्त पांच वर्गों में से प्रत्येक वर्ग में समाविष्ट शकुनों का बाहुल्य है तथा उन्हें सरलता से विशिष्ट वर्ग में स्थान दिया जा सकता है। किन्तु ऐसे शकुन भी पर्याप्त संख्या में मिलते हैं जिनका समादेश उपर्युक्त पांच वर्गों में से किसी में भी नहीं किया जा सकता तथा छोटे छोटे

वर्गों में विभाजित करने से वर्गों की संख्या बहुत अधिक हो जाती है । अतः उपर्युक्त वर्गों में स्थान ग्रहण न करने वाले शकुनों का समावेश इस वर्ग में किया गया है ।

एक अन्य स्थल पर भी वैदिक शकुनों का वर्गीकरण किया गया है तथा उन्हें छः वर्गों में विभाजित किया गया है :

१ प्राणियों का शुभाशुभ सूचक दर्शन एवं क्रियायें विशेषतः पक्षियों की शाकुन
२ प्राकृतिक क्रम के विरोधी तत्वों का दर्शन अद्भुत
३ शारीरिक चिह्न लक्षण
४ नक्षत्रों से प्राप्त शकुन
५ यज्ञ के अवसर पर होने वाली घटनाओं से प्राप्त शकुन तथा
६ स्वप्न ।

इस वर्गीकरण में पांच वर्ग तो प्रायः उपर्युक्त वर्गीकरण के पांच वर्गों के ही समान हैं । प्रस्तुत निबन्ध के वर्गीकरण के विविध शकुन वर्ग का स्थान यज्ञसम्बन्धी घटनाओं से प्राप्त शकुन वर्ग ने ले लिया है । इस वर्गीकरण में यह कमी है कि शकुनों की एक काफी बड़ी संख्या ऐसी रह जाती है जिसका समावेश इन वर्गों में से किसी में भी नहीं किया जा सकता । अतः इस वर्गीकरण में एक सातवां वर्ग जोड़ने की आवश्यकता बनी रहती है । संस्कृत काव्य में प्राप्त शकुनों के वर्गीकरण की दृष्टि से यज्ञ सम्बन्धी घटनाओं से प्राप्त शकुन वर्ग अनुपयोगी है क्योंकि इस प्रकार के शकुनों की संख्या संस्कृत काव्य में बहुत कम है और इसी कारण उनका समावेश विविध शकुन वर्ग में किया जा सकता है ।

वराहमिहिर ने स्थान के आधार पर अपशकुनों को तीन वर्गों में विभाजित किया है :

१ दिव्य ग्रह एवं नक्षत्रों से प्राप्त ।
२ आन्तरिक्ष उल्का निर्घात पवन परिवेष गन्धर्वपुर इन्द्रचाप आदि से प्राप्त ।
३ भौम भूमि पर विद्यमान चर एवं अचर सृष्टि के निपर्यास से प्राप्त ।

यह वर्गीकरण केवल उत्पातों को ध्यान में रखकर किया गया है और इस प्रकार केवल विशेष कोटि के अपशकुनों से सम्बद्ध है । शेष अपशकुनों तथा शकुनों के लिये इस वर्गीकरण में कोई स्थान नहीं है । अतः इस वर्गीकरण का क्षेत्र अत्यधिक सीमित है ।

इस स्थल पर संसार के कुछ अन्य प्रसिद्ध प्राचीन देशों के शकुनों के वर्गीकरण पर विचार

करना भी युक्तिसंगत होगा । बेबीलौन के प्राचीन शकुन साहित्य एवं धार्मिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वहां भावी घटनाओं की सूचना प्रदान करने से सम्बद्ध विद्या का अत्यन्त सुव्यवस्थित रूप में अध्ययन किया जाता था और इसके लिये व्यक्तियों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता था । इस प्रकार प्रशिक्षित व्यक्ति मन्दिरों से सम्बद्ध होते थे तथा भविष्य के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त करने के लिये उत्सुक जन इन्हीं मन्दिरों में जाकर तत्सम्बन्धी सूचना प्राप्त करते थे । शकुनों का प्रभाव अत्यन्त व्यापक था । शकुनों में विश्वास की प्रवृत्ति राजाओं दरबारों तथा राजकीय कार्यों तक ही सीमित न थी अपितु सर्व साधारण के दैनिक जीवन तक व्याप्त थी । बेबीलौन तथा असीरिया के निवासी जीवन की भावी घटनाओं की पूर्व सूचना में ही विश्वास नहीं रखते थे अपितु उनकी यह दृढ़ धारणा थी कि भावी घटनाओं को नियन्त्रित भी किया जा सकता है ।

प्राचीन बेबीलौन में प्रचलित शकुनों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया गया है :

१ स्वभाव सिद्ध
    अ स्वप्नदर्शन से प्राप्त शकुन ।
    आ बच्चों के जन्म से प्राप्त शकुन ।
    इ प्राणियों के दर्शन एवं गतिविधियों से प्राप्त शकुन ।
    ई ग्रहोपग्रहों तथा प्राकृतिक तत्वों से प्राप्त शकुन ।
२ उपकरण सिद्ध
    अ जल तल पर प्रक्षिप्त तेल के विविध रूपों एवं यकृत की परीक्षा से प्राप्त शकुन ।
    आ गुटिकापात आदि से प्राप्त शकुन ।

बेबीलौन में ही नहीं प्राचीन ग्रीस तथा रोम में भी शकुनों का एक अत्यन्त व्यापक तथा सुव्यवस्थित विद्या के रूप में विकास हुआ । प्राचीन रोम में पुरोहितों की एक समिति होती थी जिसका सदस्य शकुन परीक्षक के नाम से पुकारा जाता था । बाद के गणतन्त्रकाल में इस समिति में सोलह सदस्य होते थे । यह समिति विधानसभा के विशिष्ट कार्य से सम्बद्ध अधिवेशन के अवसर पर पक्षियों की बोली तथा उड़ान के निरीक्षण द्वारा शकुन प्राप्त किया करती थी । अशुभ शकुनों के प्राप्त होने की दशा में विधानसभा के अध्यक्ष को अधिवेशन स्थगित कर देना पड़ता था । प्राचीन रोम में शकुनों के जिन संकेतों को दैवी इच्छा का द्योतक माना जाता था

उन्हें मुख्यतया पांच वर्गों में विभाजित किया गया है :

१ आकाश में प्राप्त होने वाले संकेत जिनमें प्राकृतिक तत्वों तथा ग्रहोपग्रहों से प्राप्त शकुनों का समावेश है ।

२ पक्षियों की बोली एवं उड़ने की दिशा से प्राप्त संकेत ।

३ पक्षियों के लिये अन्नदान से प्राप्त संकेत ।

४ चतुष्पाद एवं सर्प आदि प्राणियों की बोली तथा गतिविधियों से प्राप्त संकेत ।

५ सभी प्रकार के अद्भुत दृष्टिगोचर विषयों विशेषतः अशुभसूचक से प्राप्त संकेत ।

दैवी इच्छा को जानने के अन्य साधनों में बलि पशुओं की आंतों की परीक्षा का प्रमुख स्थान था । स्वप्नों को दैवी इच्छा का प्रतीक माना जाता था और इस कारण उनसे प्राप्त होने वाले शकुनों में भी विश्वास विद्यमान था । अतः प्राचीन रोम में प्रचलित शकुनों के उपर्युक्त पांच वर्गों में निम्नलिखित दो वर्ग और जोड़े जा सकते हैं ।

६ बलिपशुओं के अंगों की परीक्षा से प्राप्त संकेत ।

७ स्वप्नों से प्राप्त संकेत ।

बेबीलौन तथा रोम के उपर्युक्त वर्गीकरण में उपकरणसिद्ध शकुनों की ओर संकेत किया गया है । वैदिक साहित्य में भी इस प्रकार के शकुन प्राप्त होते हैं । उदाहरणार्थ धनुष की प्रत्यचाओं से निर्मित तीन रज्जुओं की उष्ण अंगारों पर स्थापना करके अथर्ववेद के मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है । मध्य में स्थित रज्जु अन्य दो रज्जुओं में से किसी एक का अतिक्रमण कर जाती है तो इस प्रकार का अतिक्रमण उस सेना की पराजय का सूचक माना जाता है । यदि अन्य दो रज्जुओं में से कोई उस मध्य स्थित रज्जु का अतिक्रमण कर जाती है तो इस प्रकार का अतिक्रमण उस सेना की विजय का सूचक माना जाता है । संसार के अन्य समाजों में भी उपकरण सिद्ध शकुनों का प्रचलन पाया जाता है । ब्रिटेन फ्रांस जर्मनी इटली तथा अन्य देशों में बच्चों के जन्म के अवसर पर लगाये हुए पौधों की वृद्धि या क्षय से आर्मीनिया स्वीडन तथा जर्मनी में उत्सवकाल में समिद्ध अग्नि की लपटों की गन्तव्य दिशा तथा प्रकाश के विस्तार से दक्षिणी अफ्रीका तथा प्राचीन भारत में भूतल पर प्रक्षिप्त अक्षों की गतिविधि से प्राप्त शकुन इसी श्रेणी में आते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में इस प्रकार की उपकरण सिद्ध प्रक्रियाओं का अवलम्बन जादू टोनों के क्षेत्र में भविष्य को प्रभावित करने के लिये किया गया होगा ।

कालान्तर में इस प्रकार की प्रक्रियाओं का क्षेत्र भविष्य को प्रभावित करने तक व्याप्त न रहकर भावी घटनाओं की सूचना प्रदान करने तक सीमित रह गया होगा । फ्रांस में प्रचलित इस विश्वास से कि जून के वर्षाकाल में उत्सव के अवसर पर समिद्ध अग्नि के प्रज्वलित करने से वर्षा बन्द हो जाती है उपर्युक्त धारणा को बल मिलता है ।

प्राचीन बेबीलौन तथा रोम में प्राप्त शकुनों के वर्गीकरण की संस्कृत के काव्यों में प्राप्त शकुनों के वर्गीकरण के साथ तुलना करने से ज्ञात होता है कि जहां तक वर्गीकरण के मुख्य मुख्य वर्गों का सम्बन्ध है वे प्राय: समान हैं । ये मुख्य वर्ग निम्नलिखित हैं :

१ ग्रहोपग्रहों से प्राप्त शकुन ।
२ प्राकृतिक तत्वों से प्राप्त शकुन ।
३ पशुपक्षियों की गतिविधियों से प्राप्त शकुन ।
४ स्वप्नों से प्राप्त शकुन ।

इतना अवश्य है कि बेबीलौन तथा प्राचीन रोम में प्राप्त शकुनों के वर्गीकरण में कहीं कहीं दो वर्गों का एक ही वर्ग में समावेश कर दिया गया है और कहीं कहीं एक ही वर्ग को दो या अधिक वर्गों में विभाजित कर दिया गया है । संस्कृत के काव्यों में प्राप्त शकुनों के वर्गीकरण में शारीरिक लक्षणों से प्राप्त शकुन वर्ग का भी प्रमुख स्थान है । किन्तु बेबीलौन तथा रोम से सम्बद्ध वर्गीकरण में इस वर्ग का कोई स्थान नहीं है । जहां तक बेबीलौन तथा रोम के शकुनों के वर्गीकरण में उपकरण सिद्ध वर्ग से सम्बद्ध शकुनों का सम्बन्ध है संस्कृत के काव्यों में इस प्रकार के शकुनों का प्राय: अभाव है ।

प्रस्तुत निबन्ध में किया गया वर्गीकरण नितान्त वैज्ञानिक प्रतीत होता है क्योंकि इसमें भारतीय समाज में प्रचलित शकुनों का ही नहीं अपितु संसार के विभिन्न समाजों में प्रचलित शकुनों का भी सरलता के साथ वैज्ञानिक रीति से समावेश हो जाता है ।

भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन

शशिशेखर तिवारी

लोकोक्तियां लोक समुदाय के समवेत अनुभव व्यावहारिक ज्ञान और मरम्परागत धारणाओं की प्रतिनिधि अभिव्यक्ति होती हैं। इनमें जन सामान्य की वास्तविक भाषा के विशिष्ट और विविध स्वरूप आकलित होते रहते हैं। इसलिए इस अध्ययन में ऐतिहासिक समाज शास्त्रीय और भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रमुख रहे हैं। यह अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है।

०.१.१ लोकोक्ति क्या हैं लोकोक्ति की प्राप्त परिभाषाएं पूर्ण और प्रामाणिक नहीं हैं। अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि लोकोक्ति के स्वरूप को निश्चित और स्पष्ट कोने के लिए उसे परिभाषाओं में बांधने की अपेक्षा उसके लक्षण निर्धारित करना अपेक्षाकृत अधिक वैज्ञानिक और सरल पद्धति होगी। लोकोक्ति के लक्षण निम्नलिखित हैं १ लोकोक्ति मुक्तक शैली में अभिव्यक्त एक संक्षिप्त और सूत्रबद्ध वक्तव्य है। २ लोकोक्ति का अर्थ वाच्य और व्यंग्य दोनों होता है। ३ अधिकांशत: लोकोक्तियों की अभिव्यक्ति शैली विदग्ध होती है और भाषा लयबद्ध और अलंकारिक। ४ प्राय: लोकोक्तियां लोक समुदाय को बोलचाल की शब्दावली और वाक्य विन्यास पर आधारित होती हैं। ५ लोकोक्ति की विषय वस्तु जन सामान्य के जीवन और प्रत्यक्ष प्राकृतिक जगत् से गृहीत होती है। ६ लोकोक्ति समस्त समुदाय द्वारा स्वीकृत और व्यवहृत होती है। ७ दैनंदिन जीवन में इसका व्यवहार किसी मान्यता या स्थिति के सूचन निर्देशन आलोचन और पोषण के लिए होता है।

०.१:२ लोकोक्ति क्या नहीं है इस निषेधात्मक प्रश्न के उत्तर से भी लोकोक्ति की विशेषताओं और व्याप्ति को और भी स्पष्ट किया जा सकता है। इसके लिए लोकोक्ति और उसकी सजातीय शैलियों जैसे मुहावरे सुभाषित रोजमर्रा पहेली और लौकिक न्याय के पारस्परिक अन्तर का अध्ययन उपादेय है। ये अंतर इस प्रकार है १ अर्थ और रूप की दृष्टि के लोकोक्ति

एक पूर्ण वाक्य है और मुहावरा एक वाक्यखंड । २ लोकोक्ति लोक मानस की स्वत: उच्छ्वसित अभिव्यक्ति है और सुभाषित विदग्ध शैली में कथित विचारित चिंतन का उदाहरण है । कोई उक्ति लोकद्वारा स्वीकृत होकर ही लोकोक्ति बनती है परन्तु सुभाषित के लिए लोक स्वीकृति का कोई बंधन नहीं है । ३ लोकोक्ति भाषा की एक विधा है और रोजमर्रा भाषा का एक परम्परागत प्रयोग है । ४ लोकोक्ति का प्रयोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसी विचार या स्थिति के सूचनार्थ होता है और पहेली का व्यवहार सहज ज्ञान की परीक्षा या बुद्धि विलास के लिए होता है । ५ लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य है और लौकिक न्याय एक कटा छंटा खंड वाक्य है ।

०.१.३ लोकोक्ति का उद्भव और विकास लोकोक्तियों का उद्भव अज्ञात रहता है । प्रारंभ में लोकोक्तियां व्यक्तिगत उक्तियों के रूप में प्रस्फुटित होती हैं और कालान्तर में अपनी सार्वजनीन विषय वस्तु और आकर्षक स्वरूप के कारण स्वीकृत और व्यवहृत होकर लोकोक्ति के पद पर आसीन हो जाती हैं । लोकोक्ति के उद्भव के स्रोतों के सम्बन्ध में कुछ निश्चित धारणाएं बनाई जा सकती हैं । ये स्रोत निम्नलिखित हैं १ दैनंदिन जीवन की घटनाएं प्रत्यक्ष वातावरण और प्राकृतिक जगत् २ लोक कथा ३ पहेली और ४ लोकप्रिय चिंतकों की सूक्तियां ।

लोकोक्तियों का उद्भव मानव सभ्यता के शैशव काल में ही हो गया था । ऋग्वेद की कई सूक्तियां लोकोक्तिपरक हैं । एक अति प्राचीन शिलालेख पर सुमेरियन भाषा की लोकोक्तियां अंकित हैं । डा० क्रेमर के अनुसार इन लोकोक्तियों का समय लगभग ई० पू० चौथी शताब्दी है ।

लोकोक्ति के रूप और अर्थ में परिवर्तन होता रहता है । यह परिवर्तन ही लोकोक्तियों का विकास है । यह विकास दो प्रकार का होता है १ रूप विकास और अर्थ विकास । रूप विकास की प्रमुख दिशाएं दो हैं पाठान्तर या श्रुत्यन्तर और रूपान्तर । अर्थ विकास की दिशाएं भी भाषा के विकास की दिशाओं की तरह तीन हैं अर्थविस्तार अर्थादेश और अर्थसंकोच ।

०:१:४ लोकोक्ति का महत्व लोकोक्तियां लोक समुदाय की एक बहुमूल्य सम्पत्ति है । इसमें समुदाय की बौद्धिक और रागात्मक विरासत संचित रहती है । जन सामान्य जिन परिस्थितियों व्यापारों और विचारों के सम्पर्क में आता है वे सभी लोकोक्तियों की विषय वस्तु बनते हैं । लोकोक्ति का उद्देश्य महान होता है और इसका प्रभाव बहुकालिक होता है ।

उपयुक्त अवसर पर उद्धृत लोकोक्तियां समाज के अधिकांश सदस्यों को सत्पथ और सदाचार की ओर उन्मुख करती हैं। लोकोक्तियां भाषा के व्यावहारिक रूप और उसकी अद्भुत शक्ति का श्रेष्ठ प्रकार और प्रतीक होती हैं। अत: लोक समुदाय की संस्कृति साहित्य और भाषा के विविध स्तरों के अध्ययन के लिए ये लोकोक्तियां प्रामाणिक और समृद्ध आधार सिद्ध होती हैं।

०.२ विषय सामग्री का चयन   भोजपुरी लोकोक्तियों का संग्रह इन दो स्रोतों से हुआ है लिखित साहित्य और लोक समुदाय की बोलचाल। प्रथम स्रोत के अन्तर्गत कोशों पुस्तकों और पत्रिकाओं में संगृहीत भोजपुरी लोकोक्तियों की सूचियां आती हैं। दूसरा स्रोत तो अति व्यापक है। लोकोक्तियों का संग्रह सामान्यत: समस्त भोजपुरी क्षेत्र और विशेषत: आदर्श भोजपुरी दक्षिणी भोजपुरी क्षेत्र से किया गया है। किंचित् ध्वनि और शब्द भेद को छोड़ कर समस्त भोजपुरी क्षेत्र में व्यवहृत होने वाली लोकोक्तियों में समानता है। अत: अनुसंधित्सु द्वारा संगृहीत चार हज़ार लोकोक्तियों को भोजपुरी लोकोक्तियों का प्रतिनिधि संग्रह माना जा सकता है। विषय सामग्री के चयन के प्रसंग में लोकोक्तियों के संग्रह की कठिनाइयां और उनके समाधान संग्रहप्रणाली और सिद्धांत पर भी प्रकाश डाला गया है।

०.३ भोजपुरी लोकोक्तियों की पृष्ठभूमि   भोजपुरी लोकोक्तियों की विषय वस्तु रूप और भाषा की विशेषताओं को स्पष्ट रूप से हृदयंगम करने के लिए भोजपुरी भाषा भोजपुरी क्षेत्र के इतिहास और भूगोल और भोजपुरी भाषाभाषियों की संस्कृति की सामान्य किन्तु शोध स्तरीय रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। इन प्रसंगों में आवश्यकतानुसार लोकोक्तियां भी उद्धृत की गई हैं।

१ लोकोक्तियों का विषय वस्तुपरक वर्गीकरण तथा उसके आधार पर उनका अध्ययन

१.१ लोकोक्तियों का वर्गीकरण और उनका आधार   लोकोक्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उनका विपय वस्तु और प्रकरण के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। कुछ विद्वानों ने रूप के आधार पर भी लोकोक्तियों का वर्गीकरण किया है। किन्तु इस आधार पर लोकोक्तियों का वर्गीकरण करना न तो सुविधाजनक है और न वैज्ञानिक ही। हां लोकोक्तियों का रूपात्मक अध्ययन सर्वथा उपयोगी है।

उपर्युक्त शीर्षक के अन्तर्गत विद्व.नों द्वारा गृहीत लोकोक्तियों के वर्गीकरण के आधार और उनकी उपलब्धि और अभावों पर भी विचार किया है। निम्नलिखित वर्गों के अन्तर्गत लोकोि लोकोक्तियों की विषय वस्तु का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

१.२ इतिहास संबंधी इस परिच्छेद में इतिहास संबंधी लोकोक्तियों का अध्ययन निम्नलिखित वर्गों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया गया है अ घटना आ व्यक्ति इ स्थान और ई बाह्य सम्पर्क और प्राचीन परिस्थिति संबंधी ।

लोकोक्तियों में इतिहास और ऐतिहासिक चेतना के उज्ज्वल और भूले बिसरे अंश सुरक्षित हैं । लोकोक्तियों में ऐसी कितनी ही बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्रियों का उल्लेख हुआ है । इनमें से कुछ का भारतीय इतिहास ग्रंथों में नाममात्र का उल्लेख हुआ है और कुछ का तो बिल्कुल ही नहीं हुआ है ।

१.३ प्राकृतिक भूगोल संबंधी लोकोक्तियों को निम्नलिखित वर्गों के अन्तर्गत विभाजित किया गया है अ वनस्पति और इ जीव जन्तु । उपर्युक्त प्रथम वर्ग को भी दो उपवर्गों में विभाजित किया गया है । वर्षा ऋतु और अन्य ऋतुएं । वर्षा ऋतु संबंधी लोकोक्तियों की संख्या अधिक है । इसका कारण यह है कि भोजपुरी लोक समुदाय की मुख्य जीविका कृषि है और यह कृषि वर्षा ऋतु पर अपेक्षया अधिक आश्रित है ।

वनस्पति और जीव जन्तु का उल्लेख लोकोक्तियों में दो रूपों हुआ है एक विषय वस्तु के रूप में और दूसरे अभिव्यक्ति के साधन के रूप में । प्रथम में वनस्पति और जीव जन्तुओं की प्रकृति गतिविधि और उनकी उपयोगिता पर विचार किया गया है । दूसरे में वनस्पति और जीव जन्तु उपमान और प्रतीक या दृष्टान्त के रूप में वर्णित हैं । ऐसी लोकोक्तियों के अध्ययन से भोजपुरी लोक समुदाय और विभिन्न वनस्पति और जीव जगत् के पारस्परिक संबंधों पर भी प्रकाश पड़ता है ।

१.४ समाज संबंधी लोकोक्तियों का अध्ययन निम्नांकित वर्गों के अन्तर्गत किया गया है अ परिवार और नातेदार आ वैवाहिक संबंध इ वस्त्र और अलंकार और ई गृह पात्र । इस परिच्छेद में विशेषत: ऐसी लोकोक्तियों का अध्ययन किया गया है जिनसे भोजपुरी लोक समुदाय के विभिन्न सामाजिक संगठन रहन सहन और अन्य भौतिक संस्कृति पर प्रकाश पड़ता है । ऐसी लोकोक्तियों से भोजपुरी लोक समुदाय की सामाजिक और संश्लिष्ट संस्कृति के महत्वपूर्ण पक्षों का उद्घाटन होता है ।

१.५ जात पांत संबंधी लोकोक्तियों की संख्या पर्याप्त है । इनमें लोक समुदाय की जाति विषयक धारणाएं और विभिन्न जातियों के यथार्थ जीवन विशिष्ट आचार विचार और

रहन सहन का प्रत्यक्ष और यथार्थ परिचय मिलता है । जिन जातियों का अध्ययन इस परिच्छेद में किया गया है वे हैं अहीर कायस्थ कुरमी गोंड़ चमार जुलाह ठठेरा तेली दर्जी धोबी नाई बनिया ब्राह्मण भाट भाड़ भूमिहार राजपूत और मुसलमान ।

१.६ कृषि संबंधी लोकोक्तियां का अध्ययन निम्न वर्गों के अन्तर्गत किया गया है अ कृषि का महत्त्व आ किसान इ कृषि उपकरण उ कृषि कार्य और ऊ फसलें । भोजपुरी क्षेत्र की भुख्य जीविका कृषि है । इसलिए संख्य और विषयवस्तु की दृष्टि से कृषि संबंधी लोकोक्तियां बहुत समृद्ध हैं । इस वर्ग की लोकोक्तियों से क्षेत्र के आर्थिक जीवन पर विशेष रूप से प्रकाश पड़ता है ।

१.७ नीति और लोक व्यवहार संबंधी लोकोक्तियां कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं । अधिकांश लोकोक्तियों का मुख्य स्वर नीति और लोकव्यवहारपरक है । इसलिए लोकोक्तियों की गणना बुद्धिमूलक साहित्य में की जाती हैं । ऐसी लोकोक्तियां प्रकारान्तर से सामाजिक जीवन की व्यवस्था और समुदाय के चित्त को परिष्कृत करने में बहुमूल्य सहयोग प्रदान करती हैं ।

इस परिच्छेद में नीति और लोक व्यवहार के जिन पक्षों पर विचार किया गया है वे ये हैं । संकल्प उद्योग स्वावलंबन लोभ विवेक सहनशीलता सहयोग अतिशयता स्वामि मान रहन सहन वाणी उपयोगितावाद प्रत्यक्ष प्रमाण संगति और मित्रता शक्ति और सामर्थ्य धन ऋण दुष्ट और दुस्मन पड़ोसी और अतिथि ।

१.८ दर्शन और धर्म संबंधी लोकोक्तियों को इन दो वर्गों में विभाजित किया गया है दर्शन और धर्म । भारतीय धर्म और दर्शन में पूर्णतः सामंजस्य है । दर्शन और धर्म क्रमशः एक ही आध्यात्मिक प्रयत्न के विचार या सिद्धांत पक्ष और व्यवहार या आचार पक्ष हैं । इसलिए दर्शन और धर्म संबंधी लोकोक्तियों का अध्ययन एक ही परिच्छेद में प्रस्तुत यिया गया है ।

लोकोक्तियों में प्रायः सभी दार्शनिक मत मतान्तरों का दाय सुरक्षित है । लोकोक्तियों में विशेषतः निम्नलिखित दार्शनिक विचारधाराओं का उल्लेख हुआ है । क कर्मफलवाद ख पुर्जन्मवाद ग अदृश्य शक्ति के प्रति विश्वास घ कालवाद या नियतिवाद ङ· लोकायत दर्शन । देहात्मवाद और लौकिक धनवाद । धर्मसम्बन्धी वेद और ब्राह्मण के प्रति विश्वास ख फपार्थना ग पूजा और व्रत घ पर्व उत्सव और ङ· तीर्थवास ।

१.९ लोक विश्वास संबंधी लोकोक्तियों का अध्ययन निम्नांकित वर्गों के अन्तर्गत प्रस्तुत

किया गया है क शकुन और ख अदृश्य शक्ति संबंधी विश्वास और अनुष्ठान । इस वर्ग की लोकोक्तियों से लोक समुदाय के जीवन जगत अदृश्य शक्ति और प्रत्यक्ष प्राकृतिक व्यापार संबंधी परम्परागत धारणाओं पर प्रकाश पड़ता ।

१:१ स्वास्थ्य संबंधी लोकोक्तियों का विभाजन विषय वस्तु के आधार पर इस प्रकार किया है अ रोग आ संयम और इ औषधि । इस वर्ग की लोकोक्तियों में स्वास्थ्य विज्ञान के सामान्य पक्षों पर विचार किया गया है । इस वर्ग की प्रायः लोकोक्तिव्यपरक हैं ।

१.११ व्यंग्य विनोद गर्भित अधिकांश लोकोक्तियों में व्यंग्य विनोद गर्भित भाषा में असामाजिक आचार विचार और रहन सहन पर आक्षेप किया गया है । ऐसी लोकोक्तियों को भोजपुरी भाषा में गाभी सं० गर्भित या ताना भी कहा जाता है । ये लोकोक्तियां व्यंग्यार्थ प्रधान होती हैं । इसलिए ऐसी लोकोक्तियों का वर्गीकरण और अध्ययन उनके प्रकरणों के आधार पर हुआ है । प्रकरण निम्नलिखित हैं । अंधानुकरण अनधिकार चेष्टा असंगत कार्य या स्थिति आडंबर आलस्य कंजूसी कायरता कृतघ्नता छिछोरपन डींग मारना ढोंग कोना परजीवी होना पेटू होना मूर्खता लोभ और चोरी स्वार्थ और सामर्थ्य के प्रतिकूल आकांक्षा करना ।

२ लोकोवितयों का रूपात्मक अध्ययन

२.० रूपात्मक अध्ययन की सीमाएं लोकोक्तियों का अभिव्यंजना पक्ष समृद्ध और विविध है । भाषा की प्रायः सभी शैलियां प्रवृत्तियां और शब्दावलियां लोकोक्तियों में नियोजित रहती हैं । किन्तु शैली और भाषा के सभी तत्वों की दृष्टि से लोकोक्तियों का रूपात्मक अध्ययन उपयोगी नहीं है । भाषा और शैली के जो तत्व भोजपुरी लोकोक्तियों को विशेष रूप से उत्कर्षता प्रदान करते हैं और जो अपनी सामान्य प्रकृति और प्रवृत्ति से किंचित भिन्नरूप में लोकोक्तियों में प्रयुक्त है उन्हीं की दृष्टि से भोजपुरी लोकोक्तियों का रूपात्मक अध्ययन किया गया है ।

२.१ शैलीगत

२.११ छन्द प्रायः भोजपुरी लोकोक्तियां लयबद्ध हैं । छन्द की दृष्टि से लोकोक्तियों को तीन वर्गों के अन्तर्गत रखा गया है क छन्दबद्ध ख लयबद्ध और ग लयबद्ध गद्य । अधिकांश छन्दबद्ध लोकोक्तियां मात्रिक हैं । इनमें मात्रा और यति का विधान है । सामान्यतः लोकोक्तियों पन्द्रह मात्राओं से लेकर बाइस मात्राओं में बद्ध हैं । लोकोक्तियों में मात्रिक छन्द के

ऐसे भी प्रकार मिलते हैं जिनका भारतीय काव्यशास्त्र में उल्लेख और नामकरण नहीं हुआ है । लयबद्ध लोकोक्तियों का भी एक विशिष्ट स्वरूप है । इनमें सामान्यत: तीन साधनों से लय प्रस्फटित हुई है वे हैं यति अनुप्रास और पद या वाक्यांश की आवृत्ति ।

२.१.२ अलंकार लोकोक्तियों में अलंकारों का यथेष्ट प्रयोग हुआ है । इनमें सामान्यत: सभी अलंकारों का और विशेषत: सादृश्यमूलक अर्थालंकारों और अनुप्रासमूलक शब्दालंकारों का अधिक प्रयोग हुआ है । लोकोक्तियों में प्रयुक्त उपमानों का भी अध्ययन किया गया है । मुख्यत: ये उपमान ग्रामीण और कृषक जीवन और प्राकृतिक व्यापार से गृहीत हैं ।

२.२ भाषागत

२.२.. पद क्रम लोकोक्तियों के वाक्यों में दो प्रकार के पद क्रम मिलते हैं । आधारित लोकोक्तियों की भाषा का व्यावहारिक होना फलस्वरूप किसी पद पर बल देने के समय पद क्रम का पर प्रयोग होगा । २ लय पूर्ति या अनुप्रास के निर्वाह के लिए लोकोक्तित वाक्यों को अव्याकरणिक पद क्रम में ढालना । ३ श्लिष्ट योगात्मक भाषा संस्कृत से भोजपुरी का सम्बन्ध होना फलस्वरूप लोकोक्तियों में भी पद क्रम के अतिक्रम से अभिव्यक्ति में बाधा न पहुंचाना ।

२.२.१.२ पद लोप लोकोक्ति के वाक्यों में जिन पदों के अर्थ अन्य पदों के अर्थ या प्रकरण से हो जाता है उनका शब्दश: प्रयोग नहीं होता इस प्रवृत्ति को संस्कृत में अध्याहार कहते हैं । इसे पद लोप भी कह सकते हैं । लोकोक्तियों में इस प्रवृत्ति के प्रसार के लिए उपयुक्त अवसर मिलता है । संक्षेप में इसके निम्नलिखित कारण हैं १ लोकोक्तियों का संक्षिप्त होना । २ भावावेश के कारण या कथन को अभीष्ट लयात्मकता देने के प्रयत्न में कुछ अनावश्यक पदों को छोड़ देना या उनका अनुच्चरित होना । लोकोक्तियों में दो प्रकार के पद लोप मिलते हैं पूर्ण पद लोप और अपूर्ण पद लोप । लोकोक्तियों में प्राय: सभी व्याकरणिक कोटियों के लोप के उदाहरण मिलते हैं ।

२.२. १.३ शब्द सामर्थ्य लोकोक्तियों के शब्द सामर्थ्य का अध्ययन उनमें प्रयुक्त प्राचीन शब्द भण्डार नाम पद और संख्या पद के आधार पर किया गया है ।

२.२: १.३.१ प्राचीन शब्द भण्डार भोजपुरी लोकोक्तियों में पर्याप्त संख्या में प्राचीनकालीन शब्द संचित हैं । ऐसे शब्दों के रूप और अर्थ का विकास हो गया है । इनके रूप

और अर्थ विकास एवं प्रकरण के अध्ययन से इतिहास साहित्य और भाषा के कई महत्वपूर्ण पक्षों का उद्घाटन होता है। इस परिच्छेद में ऐसे शब्दों की व्युत्पत्ति पर भी विचार किया गया है।

२.२. १.३.२ नाम पद लोकोक्तियों में नाम पदों का साभिप्रायिक प्रयोग हुआ है। अभिप्राय के आधार पर लोकोक्तिगत नाम पदों को निम्न वर्गों के अन्तर्गत विभाजित किया गया है क आक्षेपार्थक ख उदाहरणपरक ग लयपूरक घ व्यक्तिबोधक और ङ मानवीकृत। इन लोकोक्तिगत नाम पदों से भोजपुरी भाषा की शब्दसामर्थ्य के अतिरिक्त जन सामान्य की संस्कृति और सौन्दर्य बोध का भी पता चलता है।

२.२. १.३.३ संख्या पद लोकोक्तियों के रूप गठन और अभिव्यंजना में संख्यापदों का विशिष्ट महत्व है। इन संख्या पदों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है क उक्ति उत्कर्षक ख समुच्चयकारक और ग लयपूरक। सामान्यत: लोकोक्तियों में या तो छोटी संख्याएं या तो बहुत बड़ी संख्याओं का प्रयोग हुआ है।

संक्षेप में भोजपुरी लोकोक्तियों को निम्नलिखित विशेषताएं हैं १ लोकोक्तियां भोजपुरी जनता के समवेत अनुभव और अभिज्ञता की संवाहिका होने के साथ भोजपुरी क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक और धार्मिक जीवन की परिचायिका हैं। २ लोकोक्तियों की विषय वस्तु विविध और विस्तृत है। भोजपुरी जनता जिन परिस्थितियों वातावरणों और विचारधाराओं के सम्पर्क में आई हैं वे सभी लोकोक्तियों में वर्णित हैं। ३ भोजपुरी लोकोक्तियों के रूप वैविध्य और बहु संख्या से यह सिद्ध होता है कि भोजपुरी क्षेत्र लोकोक्तियों के उद्भव और विकास के लिए उर्वर क्षेत्र है। ४ भोजपुरी लोकोक्तियों का अभिव्यंजना पक्ष भी समृद्ध है। शैली और भाषा के प्राय: सभी तत्व प्रवृत्तियां भोजपुरी लोकोक्तियों में नियोजित हैं। भाषा के ध्वनि शब्द और अर्थ इन तीनों तत्वों की दृष्टि से भोजपुरी लोकोक्तियों का शोधपरक अध्ययन सर्वथा उपयोगी और नयी स्थापनाओं का बहुमूल्य आधार सिद्ध होता है।

भोजपुरी लोकोक्तियां संख्या विषय वस्तु अर्थ सामर्थ्य और रूप की दृष्टि से विविध विशिष्ट और समृद्ध हैं। इनमें भोजपुरी क्षेत्र के जीवन साहित्य और भाषा की प्राय: सभी विशेषताएं संचित हैं। इस प्रकार क्षेत्रीय जीवन और भाषा के यथार्थ और व्यापक अध्ययन के लिए भोजपुरी लोकोक्तियां बहुमूल्य सामग्री सिद्ध होती हैं।

भोजपुरी लोक गीतों में सन् ५७ की क्रान्ति की झलक

डा० कृष्णदेव उपाध्याय

लोक गीत जनता के हृदय के उद्गार हैं। इन गीतों में जन जीवन का जितना सजीव चित्रण उपलब्ध होता है उतना अन्यत्र नहीं। साधारण जनता की आशा निराशा सुख दु:ख हर्ष विषाद आदि का सम्यक् प्रतिबिम्ब इन गीतों में ही दृष्टिगोचर होता है। इसलिए यदि लोक गीतों को जन जीवन का दर्पण कहें तो इसमें कुछ अत्युक्ति न होगी। पाश्चात्य विद्वानों ने लोक गीतों की परिभाषा बतलाते हुए इसे जनता के लिए जनता के द्वारा निर्मित जनता का काव्य कहा है।

समय समय पर इस देश में जो सामाजिक धार्मिक तथा राजनैतिक परिवर्तन या क्रान्तियां हुईं हैं उनका इस देश के साहित्य पर प्रचुर प्रभाव पड़ा है। तत्कालीन कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से उन परिवर्तनों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। लोक कवि भी इस दिशा में मौन नहीं रहा है। जनता के सुख:दुख तथा हर्ष विषाद को देखकर उसकी हृत्तन्त्री बज उठी है उसकी वाणी मुखरित हो चली है। उसने हमारे भावों को व्यक्त करने में अपनी ग्रामीण भाषा के माध्यम के द्वारा सतत योगदान दिया है।

इस महान् देश ने अपने दीर्घकालीन इतिहास में अनेक राजवंशों का उत्थान और पतन देखा है। अनेक विदेशी आक्रमणकारियों के भीषण आक्रमणों का यह साक्षी रहा है। उनके पतन और पराजय को भी इसने अपनी आंखों से देख है। इस देश के वीर बांकुड़ों ने विदेशी शासन को कभी चिर काल तक स्वीकार नहीं किया तथा उसे उखाड़ फेंकने के लिए वे सतत उद्योगशील रहे हैं।

सन् १८५७ की रान्यक्रान्ति ऐसी ही राज्यक्रान्ति थी जिसमें अंग्रेजी शासन को सूल नष्ट करने का प्रथम प्रयास हमारे देश के वीरों ने किया था। यह महान् ब्रिटिश साम्राज्य को प्रथम सशक्त चुनौती थी जिसके कारण एक बार इस साम्राज्य की नींव हिल उठी। भारत माता को

विदेशी अंग्रेजी शासन से मुक्त करने के लिए इस देश में देशभक्तों द्वारा सन् ५७ में सशस्त्र क्रान्ति हुई थी । इस क्रान्ति का प्रभाव जन जीवन पर प्रचुर परिमाण में पड़ा था । इसका प्रतिबिम्ब लोक गीतों में बड़े ही सजीव रूप में दिखाई पड़ता है । यह कुछ कम आश्चर्य की बात नहीं है कि हिन्दी कविता में इस क्रान्ति की चर्चा उतनी सजीव रूप में नहीं पाई जाती जितनी लोक गीतों में उपलब्ध होती है हिन्दी की भोजपुरी बोली में सन् ५७ के स्वतन्त्रता संग्राम संबंधी अनेक गीत उपलब्ध होते हैं जिनमें अंग्रेजों के अत्याचार उनके द्वारा की गई लूट खसोट का वर्णन उपलब्ध होता है । सन् सतावन की क्रान्ति का श्रीगणेश मेरठ से हुआ था । उस समय मेरठ के सदर बाजार में जो लूट खसोट हुई जो अराजकता फैली हुई थी उसका सुन्दर चित्रण इस भोजपुरी गीत में किया गया है:

लोग सब लूटेला साल दुसाला
हमार सइयां जी लुटले रूमाल ।।१।।
मेरठ के सदर बाजार बा
हमार सइयां जी लूटे ना जाने ।।२।।
लोग सब लुटेला थाली कटोरा
हमार सइयां जी लूटले गिलास ।।३।।
लोग सब लूटेला गोला छुहारा
हमार सइयां जी लुटले बदाम ।।४।।
लोग सब लूटेला मोहर असरफी
हमार सइयां जी लुटले छदाम ।।५।।
मेरठ के सदर बाजार बा
हमार सइयां जी लूटे न जाने ।।६।।

भाव यह है कि कोई स्त्री कहती है कि मेरठ में अराजकता फैली हुई है । वहां के प्रधान बाजार में लूट मची हुई है । कोई बर्तन लूट रहा है कोई गोला और छुहारे पर छापा मार रहा है । लुटेरे मोहरें तथा अशरफियां लूट रहे हैं परन्तु मेरा पति इतना मूर्ख है कि वह साधारण वस्तुओं छदाम को ही लूटता है ।

इस क्रान्ति के दिनों अनेक स्थानों पर अंग्रेजी तथा हिन्दुस्तानी सेनाओं में घमासान युद्ध

हुआ था। दोनों ओर के सिपाहियों ने डट करके एक दूसरे से मोर्चा लिया था। अंग्रेजी सेना तोप बन्दूक आदि हथियारों से सुसज्जित थी परन्तु हमारे सिपाहियों के पास वे साधन उपलब्ध नहीं थे। नीचे के गीत में इसी का चित्रण हुआ है:

गोर भइया। कहीं देखल कम्पनी निसान
बांके लेक मार लेला हिन्दुस्तान ॥१॥
लाल लाल कुर्ती गब्बे गब्बे ज्वान
हाथ में पत्थर काला पीठ पर तोपदान ॥२॥
आगे आगे पल्टन पीछे पीछे स्वार
तोप के ठंकार से भागे हिन्दू मुसल्मान ॥३॥
दस दस कम्पनी जवना में गोर गोर कप्तान
गुडोमी फैर बोलेता निकल जात बा जान ॥४॥

कोई ग्रामीण व्यक्ति किसी परिचित से पूछ रहा है कि ए भइया। क्या तुमने ईस्ट इंडिया कम्पनी जिसका राज्य हिन्दुस्तान में उस समय था का झण्डा देखा है। लार्ड लेक हिन्दुस्तान को अपने आधीन कर रहा है। हमारे हिन्दुस्तानी सैनिक ज्वान बड़े विशाल काय हैं तथा वे लाल कुर्ता पहिने हुए हैं। उनके हाथों में अंग्रेजी सेना पर प्रहार करने के लिए पत्थर है तथा उनकी पीठ पर तोपदान है। उनके मुकाबिले में अंग्रेजी सेना बड़ी है। उनकी पल्टन आगे चलती है और पीछे घुड़स्वार चलते हैं। अंग्रेजी सेना में तोपों के प्रहार से शस्त्र हीन हिन्दू तथा मुसल्मान निरीह जनता त्राण के लिए भागी जा रही है। अंग्रेजों के पास सैनिकों की दस कम्पनियां हैं जिनमें अंग्रेज कप्तान हैं। ये लोग गाली देते हैं तोप तथा बन्दूकों से प्रहार करते हैं जिससे निरपराध जनता के प्राण नष्ट हो जाते हैं।

अंग्रेजों ने अवध के नवाबों के साथ सन् सत्तावन की क्रान्ति के समय कैसा दुर्व्यवहार किया था यह इतिहास के विद्वानों से छिपा नहीं है। दिल्ली के सम्राट् बहादु बहादुरशाह को कैद कर वर्मा में निर्वासित कर दिया गया था तथा वाजिदअलीशाह को भी लखनऊ छोड़कर भागना पड़ा था। अंग्रेजों ने अवध की बेगमों के साथ भी कुछ कम अत्याचार नहीं किया। उन्हें तरह तरह का कष्ट पहुंचाया। एक गीत में इसी की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है।

गलियन गलियन रैयत रोवेले

हटियन बनिया बजाज रे ॥१॥
महल में बइठल बेगम रोवेली
डेहरी पर रोवेला खवास रे ॥२॥
मोती महल के बैठक छूटल
छूटल मीना बजार रे ॥३॥
बाग जमनिया के सैर अब छूटल
छूटल मुलुक हमार रे ॥४॥
जो हम अइसन जनतीं
मिलतीं लाट से जाइ रे ॥५॥
हा हा करतीं पैयां परतीं
लिहतीं सइयां छोड़ाई रे ॥६॥

लोक कवि साधारण जनता तथा अवध की बेगमों की दुर्दशा का वर्णन करता हुआ कहता है कि अंग्रेजों के अत्याचार के कारण गली गली में अर्थात् सर्वत्र प्रजा रो रही है। बाजार के लूटे जाने से बनिये तथा बजाज हाट में रो रहे हैं। अवध की बेगमें अपनी दुर्दशा को देखकर महल में बैठकर करुण क्रन्दन कर रही हैं। नौकर चाकर घर के र पर बैठे हुए चार चार आंसू बहा रहे हैं। बेगमों का अधिकार नष्ट हो जाने करने के दिन भी अब सपने हो गये। ज़मनिया बाग में सायं प्रातः का सैर भी छूट गया। सारा राज्य हाथ से जाता रहा और देश छोड़कर नवाब को अन्यत्र जाना पड़ा। बेगमें कहती हैं कि यदि हम लोग जानतीं कि नवाब तथा हम लोगों की ऐसी दुर्दशा होगी तो हम लोग लाट साहब गवर्नर जनरल से मिलकर नवाब वाजिदअली शाह को छुड़ा लेतीं। कहने की आवश्यकता नहीं कि अवध की बेगमों पर जो अत्याचार किया गया था वह उचित नहीं था।

लखनऊ पर अंग्रेजों का अधिकार हो जाने पर वहां के नवाब वाजिदअली शाह को लखनऊ छोड़कर भागना पड़ा था। इसी पलायन का वर्णन निम्नांकित लोक गीत का वर्ण्य विषय है। उस समय लखनऊ पर आक्रमण करते समय अंग्रेजी सिपाहियों को हिन्दुस्तानी फौजों से कठिन संघर्ष करना पड़ा था। वाजिदअली शाह के लखनऊ छोड़ना के पश्चात् बेगमों की दयनीय दशा की झांकी इस गीत में देखने को मिलती है। इस गीत का रचयिता रघुनाथ कुंवर नामक लोक कवि

है जिसने निश्चय ही इस दृश्य को अपनी आंखों से देखा होगा:

श्री पति महाराज अब विपति निबारइड
कब अइहें नबाब देस हो ।।१।।
पहिला मुकाम कानपुर कइले
दोसर मुकाम बनारस हो ।।२।।
तीसर मुकाम कलकत्ता में कइले
बेगम त भगलीं पहाड़ हो ।।३।।
आलम बाग में गोलिया चलत बा
मच्छी भवन में तोप हो ।।४।।
बेली गारद में तलवरिया चलत बा
बानन से महल अंधियार हो ।।५।।
बाहर रोवेला दुःखिया सिपहिया
देवढ़ी रोवेला कोतवाल हो ।।६।।
बीच महलिया में बेगम रोवेली
लट छिटकाइ लामी केस हो ।।७।।
तोपिया छूटेला फिलखान हो
हथिया छूटेला फिलखान हो ।।८।।
घोड़ा तुरंगवा सहरिया में छूटेला
छूटेला साथी हमार हो ।।९।।
कैसर बाग में बेगम रोवेली
लट छिटकाइ लामी केस हो ।।१०।।
रघुनाथ कुंवर बाड़ा दुःख से कहत बाड़े
सब के भइल बन वास हो ।।११।।

इस गीत का आशय यह है कि वाजिदअली शाह जब लखनऊ से चले तब पहिले वे कानपुर में तथा उसके बाद बनारस में ठहरे । उनका तीसरा पड़ाव कलकत्ता में हुआ । इधर उसकी बेगमें अंग्रेजों के अत्याचार से बचने के लिए पर्वतीय प्रदेश को चली गइं । आलम बाग में गोली चल रही

है मच्छी भवन में तोप छूटने की आवाज हो रही है। बेली गार्ड में तलवार से युद्ध हो रहा है। बन्दूकों से गोली छोड़ने से जो धुंआ निकल रहा है उससे चारों ओर अन्धकार छा गया है। महल के बाहर सिपाही रो रहे हैं देली पर बैठा कोतवाल बज्रपात कर रहा है। अपने पति वाजिदअली शाह के वियोग में उसकी दु:खिया बेगमें अपने लम्बे लम्बे वालों को विखेर कर महल में बैठी हुई करुण क्रन्दन कर रही हैं। वे रोती हुई कहती हैं कि हमारी तोपें शस्त्रास्त्र तोपखाने में छूट गई हाथी फीलखाने में छूट गये घोड़े शहर में छूट गये और हमारे सब मित्र हम लोगों से बिछुड़ गये। रघुनाथ कुंअर बड़े दु:ख के साथ कह रहा है कि सब का बनवास हो गया अर्थात् सब को लखनऊ छोड़ कर भिन्न भिन्न स्थानों को भाग जाना पड़ा।

इस गीत से पता चलता है विदेशी शासकों के दुर्व्यवहार के तथा उनके अनियंत्रित शासन से जनता ऊब गई थी अत: भगवान् से यह प्रार्थना कर रही थी कि कब यह विपत्ति अंग्रेजी राज्य दूर होगी तथा नबाब लौटकर राज्य संचालन के लिए कब आयेंगे।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने इस स्वतन्त्रता संग्राम में जो भाग लिया था वह इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। उसने जिस वीरता के साथ लड़ाई की उसे देखकर बड़े बड़े अंग्रेज सैनिक अधिकारियों के छक्के छूट गये थे। इस रानी की वीरता की गाथा लोक गीतों में मुखरित हो उठी है। बुन्देलखण्डी लोकगीतों में ही लक्ष्मीबाई की विजय गाथा का गान नहीं हुआ है अपितु भोजपुरी में भी इनकी वीरता का वर्णन उपलब्ध होता है। निम्नांकित गीत इसी का द्योतक है:

खूब लड़लसि मरदानी आ रे झांसी वाली रानी
बुर्जन बुर्जन तोप लगल बा
गोला चलेला आसमानी ।।१।।
सगरे सिपाहिन के पेड़ा जलेबी
अपने चबावे गुड़ धानी ।।२।।
अंग्रेजन से भइल लड़ाई
ढूंढे मिले ना पानी ।।३।।
खूब लड़लसि मरदानी
आरे झांसी वाली रानी ।।४।।

इस गीत से लक्ष्मीबाई की वीरता का पता चलता है जिसने स्त्री होते हुए भी अपने अलौकिक शौर्य तथा अदम्य साहस का परिचय दिया था । यह लोक गीत सुभद्रा कुमारी चौहान की उस अमर कविता की याद दिलाता है जिसकी प्रथम पंक्ति है

खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी ।।

वीराग्रणी बाबू कुंबरसिंह ने सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में प्रमुख भाग लिया था । वे इस यज्ञ के प्रमुख होता थे जिन्होंने स्वयं अपनी आहुति देकर स्वतन्त्रता की वह अमर ज्योति जलाई थी जो आज भी प्रज्वलित है । बाबू कुंवरसिंह विहार प्रदेश के आरा जिले के जगदीशपुर गांव के निवासी थे । भोजपुरी जनता अपनी वीरता के लिए सदा से विख्यात रही है । अत: वीर जनता के प्रतिनिधि वीर कुंवरसिंह की अप्रतिम वीरता का प्रदर्शन स्वाभाविक ही है । भोजपुरी प्रदेश में इनकी यशोगाथा लोकगीतों तथा कहानियों में व्यक्त है । ये गीत घर घर में गाये जाते हैं । होली का यह गीत सुनिये जिसमें भोजपुरी प्रदेश की स्त्रियां प्रतिज्ञा करती हैं कि कुंवरसिंह के राज्य के पुन: बिना स्थापित हुए हम लोग चुनरी रंगा कर अब नहीं पहिनेंगीं :

बाबू कुंवरसिंह तोहरे राज बिनु
अब ना रंगइबो चुनरिया ।।१।।
इतते अइले घेरि फिरंगी
उतते कुंवर दुनो भाई ।।१।।
गोला बारूद के चले पिचकारी
बिचवा मे होत बा लड़ाई ।।२।।

बाबू कुंवरसिंह का नाम भोजपुरी प्रदेश में अत्यन्त लोकप्रिय तथा घरेलू शब्द बन गया है । इनकी वीरता की गाथा जिसे पवांरा कहते हैं साधारण जनता गाती फिरती है ।

बिहार में स्वतन्त्रता आन्दोलन का झंडा केवल कुंवरसिंह ने ही फहराया था । अन्य राजा या जमीदारों ने या तो अंग्रेजों की सहायता की थी अथवा तटस्थ रहे थे । यदि इस वीराग्रणी को उस समय सहायता मिली होती तो निश्चित रूप से इन्हें विजयश्री प्राप्त हुई होती । किस प्रकार तत्कालीन राजाओं ने इनका साथ नहीं दिया अंग्रेजों से लड़ने में इनकी मदद नहीं की इसका वर्णन एक गीत में पाया जाता है जो इस प्रकार है :

भर भोजपुर में कुंवर विरजले

रीवां रहल सरनिया नू ।।१।।
हाट बजरिया कवन बिसारे
के कहल सब गुनवा नू ।।२।।
बेतियां अवरू दरभंगा बाड़ें
आउर बाड़े टेकारी नू ।।३।।
भोजपुर में डुमरांव बसेला
ऊ हौ बाड़े फिरंगिये नू ।।४।।
सब विसेन मिलि घर में लुकइले
बाबू परेला अकेला नू ।।५।।
हिन्दू खातिर हम बिगड़नी
हिन्दू दिहल पछतिया नू ।।८।।

इस लोक गीत में तत्कालीन राजनैतिक परिस्थिति का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। जब बाबू कुंवरसिंह स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए अंग्रेजों से संग्राम में जूझ रहे थे उस समय तत्कालीन राजे रजवाड़े अंग्रेजों की सहायता करना ही अपना कर्तव्य समझते थे। कुंवरसिंह की यह उक्ति कि

हिन्दू खातिर हम बिगड़नी
हिन्दू दिहल पछतिया नू ।।

वास्तव में बड़ी मार्मिक तथा हृदय स्पर्शिनी है। जिसने भारत माता को स्वतन्त्र करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा ही अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया उनके लिए उनके देशवासियों ने अब तक क्या किया।

कुंवरसिंह अंग्रेजों से लड़ने के लिए जा रहे हैं। अत: उन्होंने लोहे का जिरह वख्तर कवच बनवा कर तैयार करवाया है। तलवार की चोटों का क्या कहना उनके शरीर पर गोली के दर्जनों निशान दिखाई पड़ते हैं। यदि अन्य लोगों ने उनकी सहायता की होती तो जगदीशपुर पर अंग्रेजों का अधिकार न हो पाता।

बाबू कुंवरसिंह पच्छिम से जब चलले
पटना में डेरा गिरवलेना ।।१।।

लोहा के जामा सिअवले कुंवरसिंह
तम्मन बन्द लगवलेना ।।२।।
ढाल तरुवरिया के क्वन ठिकाना
गोली दरजनवा खायेना ।।३।।
ओह दिन संगना उनुकर केहू ना दिहल
जगदीशपुर में ना होइत फिरंगिया कइ राज ।।४।।

बाबू कुंवरसिंह ने अंग्रेजों से युद्ध क्यों किया इसका उत्तर देते हुए उन्होंने अंग्रेजी शासन के दोषों को गिनाया है। उन्हीं अत्याचारों के विरुद्ध इन्होंने अपनी तलवार उठाई थी। लोककवि कहता है:

बबुआ ओहि दिन दादा लेले तरुवरिया हो ना ।
बबुआ धनवा धरम अवरु गइया पर ना ।।
बबुआ विधवा ओ रांड़ि के विरितिया पर ना ।
बबुआ माई ओ बहिनिया की इजतिया पर ना
बबुआ बाप अवरु दादा के कीरतिया पर ना ।
बबुआ आइल रहे विपति के धरिया पर ना ।
बबुआ ओहिदिन दादा ले ले तरुअरिया हो ना ।।
बबुआ बिछिया विछली जाह दिन तोपवा होना ।
बबुआ जंग खाइ गइले बन्दुकिया हो ना ।
बबुआ तजि देले लाठी भोजपुरिया हो ना ।
बबुआ ओहि दिनवे लेली दादा तरुअरिया। हो ना ।।

भोजपुरी प्रदेश में बूढ़े लोग अपने बच्चों को कुंवरसिंह की वीरता की कथा सुनाते समय यह गीत करते हैं और यह बतलाते हैं कि बाबू साहब ने क्यों अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत का झण्डा बुलन्द किया था। उन्होंने निजी स्वार्थ की सिद्धि के लिए विदेशी शासन से मोर्चा नहीं लिया बल्कि गो ब्राह्मण की रक्षा के लिए जनता की गरीबी को दूर करने के लिए तथा भारत माता को स्वाधीन बनाने के लिए ही म्यान से तलवार खींची थी। गत पृष्ठों में भोजपुरी लोक गीतों में सन् सतावन के लोक क्रान्ति का उल्लेख किया गया है। भोजपुरी के ये लोक गीत कुछ थोड़े

परिवर्तन के साथ अवधी में भी मिलते हैं जिनका संग्रह आज से ५० वर्ष पूर्व विलियम कुक ने इंडियन एंटिक्वेरी की जिल्दों में प्रकाशित किया था। ऐसा ज्ञात होता है कि सन् सत्तावन् की क्रान्ति सच्चे अर्थ में लोक क्रान्ति थी जिसमें देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए समस्त जनता ने भाग लिया था। उत्तर प्रदेश भेरठ तथा अवध एवं विहार इस आन्दोलन का केन्द्र था। अतः अवधी तथा भोजपुरी क्षेत्र में वे ही गीत कुछ परिवर्तन के साथ समान रूप में उपलब्ध होते हैं।

सन सत्तावन की क्रान्ति का इतिहास तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक लोक गीतों में वर्णित स्वाधीनता संग्राम संबंधी इन उल्लेखों की चर्चा न की जाय। अतएव भावी ऐतिहासिकों का यह तर्तव्य होना चाहिए कि इस आन्दोलन का इतिहास लिखते समय लोकगीतों की उपेक्षा न करें।

कृष्ण कथापरक लोकगीत और हिन्दी कृष्ण भक्ति साहित्य का पारस्परिक सम्बन्ध

डा० शालिग्राम गुप्त

भारत जैसे प्राचीन सभ्यता के देश में लोक साहित्य का अध्ययन बहुत जटिल व्यापार है । यहां शास्त्रीय चिन्तनधारा बराबर लोक विश्वासों को प्रभावित करती रही है और लोक के प्रचलित साहित्य रूप भी उच्च स्तर के साहित्यिक प्रयत्नों को प्रभावित करते रहे हैं । फिर भारतीय साहित्य का ज्ञाता यह भी जानता है कि किस प्रकार संस्कृत पाली और प्राकृत में लोक कथानकों ने लिखित साहित्य का रूप ग्रहण किया । जातकों की कहानियां पंचतन्त्र की कथाएं और वृहत्कथा की निजंधरी कथायें केवल साहित्य का अंग ही नहीं बनी हैं वरन् परवर्ती काल के अत्यन्त अलंकृत कथा साहित्य को प्रेरणा भी देती रही हैं । फिर मध्ययुग के सन्तों का लिखा हुआ सम्पूर्ण देशी भाषा का साहित्य जो कई बार तो लिखा भी नहीं गया कुछ थोड़े से अपवादों को छोड़कर लोक साहित्य के अन्तर्गत लाया जा सकता है । क्योंकि साधारणत: मौखिक परम्परा से प्राप्त और दीर्घकाल तक स्मृति के बल पर चले आते हुए गीत और कथानक लोक साहित्य के अन्तर्गत आते हैं । अत: यदि गम्भीरता के साथ अध्ययन किया जाये तो हमारे सभी काव्य रूपों के मूलभूत रूप सामान्य अभिप्रायों एवं हमारे अत्यन्त जटिल छन्दो विधान और परिष्कृत संगीत शैलियों के आरम्भिक रूप भी लोक साहित्य में खोजे जा सकते हैं ।

पुन: जहां तक मध्यकालीन हिन्दी कृष्ण भक्त कवियों एवं उनके काव्य का सम्बन्ध है इन भक्त कवियों को सांस्कृतिक समन्वय के कवि के साथ लोक संस्कृति का कवि कहना भी उचित होगा । महाकवि सूरदास के ही काव्य को यदि देखा जाये तो उनके काव्य की मूल विषय वस्तु जैसे लोक की अपनी वस्तु है । यहीं लोक में प्रचलित सोहर बधाव हिंडोला बारहमासा और होली आदि को सुनकर सूरदास ने ब्रज के ग्रामीण जीवन का यथातथ्य वर्णन किया था और यहीं पुत्र जन्म और छठी पर होने वाली लौकिक परम्पराओं उवं विश्वासों को देख सुनकर सूरदास ने लिखा था :

चौक चन्दन लीपि कै धीर आरती संजोइ ।
कहति घोष कुमारि ऐसौ अनन्द जौ नित होइ ।।
द्वार सथिया देत स्यामा सात सींक बनाइ ।
नव किसोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति जसुदा पाइ ।। – सूरसागर पद : ६४४

या फिर

धनि धनि भादौं आष्टमी हो जन्म लियौ जब कान्ह ।
काढ़ौ कोरे कापरा अरु काढ़ौ धी के मौन ।।
जाति पांति पहिराह कै सब समदि छतीसौ पौन ।
काजर रोरी आन्हू मिलि करौं छठी कौ चार ।। – पद : ६५८

सूरदास या अष्टछाप के अन्य कृष्ण भक्त कवियों की महत्व इसी बात में है कि वे ब्रज की भूमि वहां की जन संस्कृति वहां की बोली बानी के सबसे अधिक निकट हैं । सूरदास ने इसी ब्रज लोक संस्कृति के आधार पर लोक जीवन के अनुपम चित्र उपस्थित किये हैं । ब्रज की होली का कैसा सजीव वर्णन लोक शैली के ही माध्यम ससूरदास ने किया है ।

हो हो हो हो लै लै बोलैं गोरस केरे माते डोलैं ।
ब्रज के लरिकनि संग लिये जो लैं घर घर केरे फरके खोलैं ।।
गोपी ग्वाल मिले इक सारी बचत नहीं बिनु दीन्हें गारी ।
आनि अचानक अंखियां मीचैं चन्दन बदन ऊमर सीचैं ।। – पद : ३५१४

मध्य युगीन साहित्य में एक ओर जहां दरबारी कविता की अतिशियोक्तियां हैं वीर और शृंगार रस दोनों में जमीन आसमान के ओर छोर मिलाये जाते हैं अलंकारों की झड़ी लगा दी जाती है वहीं दूसरी ओर यह भक्ति काव्य है जिसकी रुझान यथार्थ जीवन की ओर विशेष है । यह काव्य लोक के रीति रिवाज उनके त्यौहार और आनन्दोत्सव उनकी सुख और सौन्दर्य की कामना ही प्रकट नहीं करता वरन् वह लोक मानस के दु:ख का भी प्रतिबिम्ब है । पुन: इस साहित्य की कला भी अत्यन्त लोकप्रिय है । संतभक्तों ने अपनी रचनाओं को इस तरह संवारा कि वह करोड़ों जन मानस का कण्ठहार बन गई । ऐसे लोकप्रिय साहित्य की रचना और उसका प्रचार एक अपूर्व सफलता है और इस सफलता एवं लोकप्रियता का सम्भवत: मूलभूत कारण उसका लोकगीत साहित्य और लोक संस्कृति से प्रभावित होना भी है ।

कृष्ण भक्तों ने अधिकतर भजन कीर्तन रचे जो लोक में प्राय: गाये और सुने जाते रहे हैं और आज भी यह क्रम किसी न किसी रूप में जारी है। फलस्वरूप इस धारा के सबसे प्रमुख भक्त महाकवि सूरदास के पदों ने अन्य भक्त कवियों की अपेक्षा लोकगीतों और विशेषकर ब्रज के गीतों पर अपनी भाव और शैली द्वारा स्पष्ट छाप डाली है। साहित्य के इस प्रभाव को कुछ सीमा तक स्पष्ट करने के लिये सूरदास के अतिरिक्त परमानन्ददास नन्ददास गोविन्दस्वामी तथा आसकरन प्रभु के अनेक पदों की तुलना लोकगीतों से करके स्पष्ट की जा सकती है।

सूरदास द्वारा रचित तृणावर्त वध शीर्षक के अन्तर्गत आने वाले इस प्रथम पद को ही उदाहरण स्वरूप लिया जा सकता है:

जसुमति मन अभिलाष करै।
कब मेरौ लाल घुटुरुवनि रेंगै कब धरनी पग द्वैक धरै।
कब द्वै दांत दूध के देखौं कब तोतरै मुख वचन भरै।। – पद : ६६४

इस उपर्युक्त पद का प्रभाव निम्नलिखित बुन्देली लोकगीत पर भाव एवं शैली के रूप में स्पष्टत: देखा जा सकता है:

दुविधा कब जैहै जा मन की।
चिंता कब जैहै जा मन की!
इन चरनन परकम्मा देहों छाया गोवरधन की।
जब मेरो कान्ह अंगुलिया मांगे रतन जतन की टोपी। – बुन्देली : १२

इसी गीत को देखकर लगता है कि लोक गायक सूरदास के उपर्युक्त पद की गति ताल और लय के साथ साथ भाव एवं शैली के आधार पर अपनी इसी प्रकार की भावनाओं को अपनी भाषा में व्यंजित कर गया। और यही नहीं उसने उसे लोकप्रिय करने के हेतु उसमें सूरदास की छाप भी दे दी। इसी तरह सूरदास के कुछ अन्य पदों का प्रभाव ब्रज और बुन्देली लोकगीतों पर देखा जा सकता है जिन्हें लोक गायक ने अपने रंग में रंग कर कभी सूरदास सूरस्याम तो कभी चंद्रसखी की छाप डाल दी है। सूर के पदों की सूची इस प्रकार है:

१ मोहन जागि हौं बलि गई। सूरसागर परि० पद : २०४
२ मेरे गिरधर जू सों कौन लरी। परि० पद : २१
३ बूझति जननी कहां हुती प्यारी। पद : १३२६

3 OF 6

ED

024038

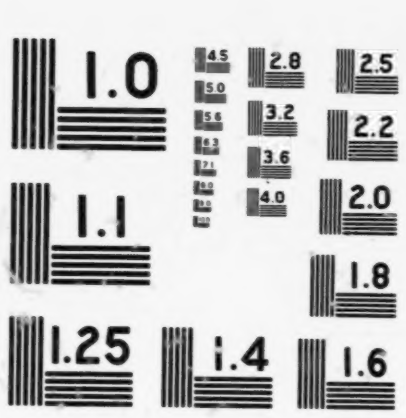
1.0
4.5
5.0
5.6
6.3
7.1
8.0
2.8
3.2
3.6
4.0
2.5
2.2
2.0
1.1
1.8
1.25
1.4
1.6

MICROCOPY RESOLUTION TEST CHART
NATIONAL BUREAU OF STANDARDS-1963

४ मैं हरि की मुरली बन पाई । पद : १८०४
५ श्री गोपाल लाल जी बंसी नेकु तिहारी पाऊं । पद : २७५८
६ तिहारी लाल मुरली नैकु बजाऊं । पद : २७५६
७ ऊंचौ गोकुल नगर जहां हरि खेलत होरी । पद : ३४८८
८ स्यामा स्याम सों आज बृन्दावन खेलति फाग नई । पद : १२७
६ ऊधौ कही सु फेरि न कहियै । पद : ४२२५
१० रुक्मिनि मोहि ब्रज बिसरत नाहीं । पद : ४८६०

सूर के इन पदों का प्रभाव क्रमश: १ बुन्देली गीत : २४ २ ब्रज गीत : ७७ ३ ब्रज गीत : ६० ४ ब्रज गीत : ५७ ५ बुन्देली गीत : ११० ६ ब्रज गीत : १२२ ७ बुन्देली गीत : ११८ ८ ब्रज गीत : १८६ ६ ब्रज गीत : २१० १० बुन्देली गीत : १६४ वें में देखे जा सकते हैं ।

सूरदास की ही तरह परमानन्ददास नन्ददास गोविन्दस्वामी और आसकरन प्रभु के निम्नलिखित कुछ पदों को भी लिया जा सकता है जो थोड़े से हेर फेर के साथ लोक में प्रचलित होकर लोकगीतों की ही कोटि में आ गये हैं । इन पदों की प्रथम पक्तियां इस प्रकार हैं :

१ दधि लै आऊंगी उठि भोर । परमानन्द सागर पद : १६६
२ नेकु पठै गिरधर जू कों मैया । परमानन्द सागर पद : ६६६
३ बृन्दावन क्यों न भये हम मोर । परमानन्द सागर पद : ७६६
४ बन से आबत गावत गोरी ।
मुरली अधर धरे नंदनंदन मानों लगी ठगोरी ।
याही ते कुल कान हरी है ओढ़े पीत पिछौरी ।
ब्रज वधू अटन चढ़ देखत रूप निरखलई बोरी ।
नंददास जिन हरि मुख निरख्यो तिनको भाग्य बड़ोरी । कीर्तन संग्रह भाग ३ उत्तरार्द्ध पृ० : १३
५ महरि के मंन्दिर वेगि चलो री ।
चली चली जाव वह धाम स्याम ही जिन कहूं बीच परी री ।
मालिन बांधत बंदन मालें बीच आंव की मोरी ।
देत महावर पाइन नाइन डोलत दोरी दोरी ।

जन गोविन्द बलबीर दरक कों सबहिन लागी डोरी। कीर्तन संग्रह भाग १ पृ० ७२

६ लाल तेरि फिर फिर जात सगाई।
चोरी की बात छांड दे मोहन लर लो जात लुगाई।
दूध दही घर में बहुतेरो माखन और मलाई।
आसकरन प्रभु मोहन नागर फिर गये बामन नाई। कीर्तन संग्रह भाग १ खंड २ पृ० ११५

इन उपर्युक्त छहों पदों का लोक प्रचलित रूप क्रमश: १ बुन्देली गीत : ७१ २ ब्रज गीत : ५५ और बुन्देली गीत : ५२ ३ ब्रज गीत : २०४ और बन्देली गीत : १३९ ४ ब्रज गीत : ५३ ५ बुन्देली गीत : ८ तथा ६ ब्रज गीत : ३१ में देखा जा सकता है।

इन भक्त कवियों के पदों का जो प्रभाव या प्रचार लोकगीतों पर या लोक में पाया जाता है उसका एक कारण यह भी है कि इनके अनेक पदों को थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ इनके परवर्ती भक्त कवियों ने लोक में गागाकर प्रचलित किया। ऐसे ही कवियों में राधावल्लभ सम्प्रदाय के भक्त एवं लोक कवि चंदसखी का नाम अग्रगण्य है जो कुछ अन्य क्षेत्रों के अतिरिक्त ब्रज और बुन्देली क्षेत्रों में तुलसी मीरा सूर और कबीर की भांति अपने भजनों एवं लोकगीतों के कारण अत्यधिक लोकप्रिय हैं। इनके द्वारा गाये हुए भजन और लोकगीत लोक को इतने रुचिकर प्रतीत हुए कि उनका ग्रामीण समाज में व्यापक प्रचार ही नहीं हुआ वरन् उन्हीं के अनुकरण पर अनेक प्रक्षिप्त रचनायें भी रच ली गईं। अत: चंदसखी के उन गीतों और भजनों का जो कि भक्त कवियों के पदों से प्रभावित होते हुए लोक की भावाभिव्यक्ति के माध्यम बन गये हैं उल्लेख कर देना अनुचित न होगा। यथा –

१ बन से आवत गावत गोरी।
नन्ददास के इस पद से प्रभावित चन्दसखी का ब्रज गीत : ५३

२ नैंक पठै दै मोहनजी को मैया।
परमानन्ददास के पद : ६९९ से प्रभावित ब्रज गीत : ५५

३ स्याम की बंशी बन पाई।
सूरदास के पद १८०४ से प्रभावित ब्रज गीत : ५७

४ माधौ जी मैं न भई बन मोर।
परमानन्ददास के पद : ७६६ से प्रभावित ब्रज गीत : २०४

५ आ जाऊंगी वड़े भोर दही ले के ।

परमानन्ददास के पद : १६७ से पंभावित बुन्देली गीत : ७१

६ भई न विब्ज की मोर सखी री ।

परमानन्ददास के पद : ७६६ से प्रभावित बुन्देली गीत :१३६

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि मध्यकालीन कृष्ण भक्त कवियों को सांस्कृतिक समन्वय का कवि न कहकर लोक संस्कृति का कवि कहना अधिक होगा क्योंकि इनके काव्य की विषय वस्तु अधिकतर लोक की अपनी वस्तु है । लोक में प्रचलित लोक रीतियों परम्पराओं मान्यताओं एवं विश्वासों से प्रभावित होने के कारण ही इन्होंने कृष्ण के जातकर्म पर सोहिले बधाई गारी चहरका आदि के गाये जाने के साथ साथ उनके अन्य संस्कारों जैसे नामकरण निष्क्रमण अन्नप्राशन कनछेदन उपनयन वेदारम्भ और विवाह पर अनेक लोक रीतियों एवं विश्वासों का उल्लेख किया है ॥ उदाहरण स्वरूप कृष्ण जन्मोत्सव एवं छठी सम्बन्धी सूरसागर के अनेक पदों की कुछ पंक्तियों को देखा जा सकता है जिनमें ब्रज की लोक परम्पराओं एवं विश्वासों से प्रभावित होने के कारण ही सूरदास ने लिखा है कि कृष्ण जन्म के हर्षातिरेक पर कोई गोपी मंगल सूचक दधि दूब सिर पर रखती है तो कोई परस्पर हरद दही छिड़कता है तथा कोई दधि गोरोचन दूब दूसरे के शीश पर रख कर शिशु की मंगल कामना करता है । – दशम् स्कन्ध पद : २० – इसी अवसर पर होम द्विज पूजा और घर लीपने का भी काई सम्पन्न होता है । – पद : ४ – यदि एक ओर बारिन या मालिन बन्दनवार और तोरण बांधती है – पद : १६ – तो दूसरी ओर नन्द बाबा स्नान करके कुश हाथ में ले नांदीमुख श्राद्ध और पितरों का पूजन करते हैं । – पद : २४ – साथ ही सूति गृह के द्वार पर स्त्रियां सींक से सतिया स्वास्तिक चिह्न बनाती हैं । पद : २६

कृष्ण जन्म के छठे दिन ब्रज नारियां और यशोदा उनकी छठी मनाती हैं । वे एकत्र हो स सोहर या सोहिलो गाती हैं और काजर रोरी से छठी के चार करती हैं ॥ – पद : ४० – नाइन यशोदा के पैरों में महावर लगाती है और पुरस्कार में लाख टका और झुमका पाती है । इसी अवसर पर गोपियों द्वारा चहरका गीत भी गाये जाने का उल्लेख हुआ है । – पद : ३० –

इन उपर्युक्त लोक प्रचलित परमप्राओं एवं विश्वासों के साथ साथ इन भक्त कवियों ने लोकोत्सवों के अन्तर्गत हिंडोला और बसन्त लीला आदि का भी वर्णन किया है ॥ साथ ही

लोकगीतों की विविध गति ताल और लय के आधार पर या यों कहें कि विविध लोक शैली के आधार पर अनेक पदों की रचनायें भी की हैं जिनके द्वारा निःसन्देह ब्रज के प्रचलित लोकगीतों का कलात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है। इस प्रक्रिया में उन्होंने लोकगीतों के अस्तित्व की रक्षा भी की है। ब्रज के प्रमुख लोकगीतों यथा रसिया होली सोहिलो मल्हार आदि को सूरदास ने अपने पदों में केवल स्थान ही नहीं दिया है वरन् उसका स्वरूप भी ठीक वही रखा है जो आज लोक में प्रचलित है तथा पहले भी रहा होगा। उन्होंने लोकगीतों की भावुकता इतिवृत्तात्मकता सूक्ष्मगत सामाजिक चेतना आदि विशेषताओं को भी जन्म बधाई के सोहिलों लम्बे वर्णनों और होली जैसे उत्सव पदों में ज्यों का त्यों रखा है। इस प्रकार सूरदास के ये पद कला गीत भी हैं और लोकगीत भी। लोक गीतों की समस्त विशेषतायें सूरदास के कुछ पदों में अवश्य प्राप्त होती हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि सूरदास के ये पद लोकगीतों के अनगढ़ रूप से मुक्त हैं। उनका रूप परिष्कृत है। दशम स्कन्ध पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध में ऐसे पदों की संख्या अधिक है जिसमें लोकगीतों की अंग: प्रत्यक्ष है। यद्यपि भाषा का साहित्यिक रूप और शास्त्रीय रागों का झीना आवरण उसमें गरिमा अवश्य भर दिये हैं।

कृष्ण जन्म पर बधाई सोहिलो ज्योनार राधा कृष्ण विवाह हिंडोला होली बसन्त आदि प्रसंगों में सूरदास तथा अन्य कृष्ण भक्त कवियों के अनेक परिष्कृत लोकगीत पद मिलते हैं जिनमें से कुछ उदाहरण स्वरूप भी दिये जा सकते हैं। ब्रज के जान्त गीतों से प्रभावित सूर के ये निम्नलिखित तीन पद बिना किसी झिझक के परिष्कृत लोकगीतों की कोटि में रखे जा सकते हैं:

१ धनि धनि नन्द जसोमति धनि जग पावन रे।
धनि हरि लियो अवतार सुधनि दिन आवनरे। – पद : ६४६

२ गौरि गनेस्वर बीनऊं हो देवी सारदा तोहिं।
गावौं हरि कौसोहिलौ हो मन आखर दै मोहि। – पद : ६५८

३ पालनौं अति सुन्दर गढ़ि ल्याउ रे बढ़ैया।
सीतल चन्दन कटाउ धरि खराद रंग लाउ
विविध चौकरी बनाउ धाउ रे बनैया। – पद : ६५९

इसी प्रकार लोकगीतों का प्रिय छन्द लावनी अपनी लय के कारण सूर को प्रिय हुई तो उन्होंने उसका कृष्ण के अन्नप्राशन प्रसंग में प्रयोग कर डाला–

कान्ह कुंवर की करहु पासनी कछु दिन घटि षट्मास गए ।
नन्द महर यह सुनि पुलकित जिय हरि अनप्रासन जोग भए । – पद : ७०६

इसी प्रकार यह पद–

लालन हौं या छवि ऊपर वारी ।
बाल गोपाल लगौ इन नैननि रोग बलाइ तुम्हारी । – पद : ७०९

शुद्ध ग्राम गीत का उदाहरण है । जिसमें वही मातृ भाव व्यक्त है जो प्रायः सामान्य लोरियों में प्राप्त होता है । पुनः सूरदास ने गोचारण प्रसंग में अनेक ऐसे पद लिखे हैं जिन्हें लोकगीत की धुन में ग्रामीण सहज ही गा सकता है । ऐसा ही एक पद राग बिलावल का है –

आज चरावन गाइ चलौ जू कान्ह कुमुद बन जैये ।
सीतल कुंज कदम की छहियां छाक छूहं रस लैये । – पद : १०६३

कृष्ण विवाह प्रसंग के अन्तर्गत भी कुछ लोकगीतों से प्रभावित पद मिलते हैं जिसमें से एक वधू द्वारा विविध रूप धारण कर वर को देखने की उत्सुकता से सम्बन्धित एक अति प्रचलित लोकगीत से प्रभावित है । पद इस प्रकार है –

दूलह देखौंगी जाइ
उतरे संकेत बटहिं मिस लखि पाउं ।
फूल गूंथि माला लै मालिनी ह्वै जाउं । – पद : १६६३

विवाह के अवसर पर ज्योनार भी ग्रामीण नारियों का एक अति प्रिय लोकगीत है । सूरदास ने इसी गीत शैली पर इस ज्योनार पद की रचना की है–

भोजन भयो भावते मोहन तातोइ जेंइ जाहु गो गोहन ।
खीर खांड़ खीचरी संवरी मधुर महेरी गोपिन प्यारी । – पद : १८३१

इसी तरह दान लीला के अन्तर्गत सूरदास ने जिन पदों की रचनायें की हैं उनमें से कुछ में रसिया की प्रवृत्ति का आभास निश्चित रूप से लक्षित होता है जैसे अग्रांकित पद में –

ऐसो दान मांगियै नहिं जौ हमपै दियौ न जाइ ।
बन में पाइ अकेली जुवतिन मारग रोकत धाइ । – पद : २०८०

सावन का झूला या हिंडोला गीत और फागुन की होली ब्रज के सबसे प्रिय और प्रसिद्ध लोकगीत हैं । अतः सूरदास ने इनसे भी प्रभावित होकर इन्हीं ऋतूत्सवों पर सबसे अधिक पदों

की रचनाएं भी की हैं । यद्यपि सीमा पार करके कला गीत हो चले हैं फिर भी कुछ पद ऐसे हैं जो परिष्कृत लोकगीतों की कोटि में अवश्य गिने जायेंगे । जैसे हिंडोले का यही पद है -

हिंडोरे हरि संग झूलियै हो अरु पिय कौ देहि झुलाइ ।
गई बीति ग्रीष्म गरद हित रितु सरस बरषा आइ । - पद : ३४४८

होली के पद तो सूरसागर में ७४-७५ के लगभग हैं जो शास्त्रीय रागों में बंधे होने पर भी शास्त्रीय स्वर ताल का उतना आग्रह नहीं करते जितना लोक होरी का । फलत: लगभग सभी पदों में लोक होरी की उमंग शब्दावली और नादो उल्लास का संयोग मिलता है । उदाहरण के लिये इन हो होली पदों को देखा जा सकता है:-

निकसि कुंवर खेलन चले रंग होरी ।
मोहन नंद किसोर लाल रंग होरी । :- पद: ३४८४

या

कछु दिन ब्रज औरौ रहौ हरि होरी है ।
अब जिनि मथुरा जाहु अहो हरि होरी है । :- पद : ३५३२

इसी तरह संक्षेप में अन्य कृष्ण भक्त कवियों के कुछ पदों को भी उदाहरण स्वरूप उपस्थित करें जो किसी न किसी लोकगीत विशेष की भाव धारा के साथ साथ उसकी शैली से भी स्पष्टत: प्रभावित दीख पड़ते हैं । जैसे:-

तुम आवोरी तुम आवो
मोहन जू कौं गारी सुनावौ । :- परमानन्द सागर पद : ३३५

चलहु तौ ब्रज में जैये जहां राधा कृष्ण रिझैये ।
वृषभान राज घर आये तहां अति रस न्यौति जिवाये । - परमानन्द सागर पद : ६२६

प्रथम पद काफी राग में बंधी होली सम्बन्धी गाली द्रुतलय में गाने की दृष्टि से ही लिखी गई है । इसी प्रकार परमानन्ददास का उपर्युक्त दूसरा पद भी गारी या ज्योनार गीत की कोटि में आता है । इसी प्रकार हरिदास स्वामी और गिरधर प्रभु के क्रमश: निम्नलिखित दो पद स्पष्ट रूप से सावन गीतों की भाव धारा से अनुप्राणित होते हुए उसी गीत शैली में रचे गये हैं

१ हिंडोरे झुलत है दुलहा दुल्हिन बिहारी वरी ललना ।
गौर स्याम तन अति छबि भात हा बिहारी वरी पलना ।
नीलाम्बर पीताम्बर चंचल चलत ध्वजा फहरात री कलना ।
हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी हा बिहारी वरी ललना ।

– कीर्तन संग्रह भाग ३ खंड २ पृ० : ११७

२ हेरी सखी स्वेत हिंडोरो सोभा देत नटवर झूलत उमंग को । रंग०
हेरी सखी काछनी परम रसाल पहरे सब गुण आगरी । रंग०
हेरी सखी देखन सब मिलि जाय चलौं जुथ जुरी आगरी । रंग०

– गिरधर प्रभु कीर्तन संग्रह भाग १ खंड २ पृ० : ३३६

ठीक इसी प्रकार आनन्दघन एवं नन्ददास के ये पद भी देखे जा सकते हैं जो ब्रज के रसिया गीत की गति ताल और लय के आधार पर ही रचित हुए जान पड़ते हैं । –

१ होरी खेलूंगी श्याम संग जाय हो सजनी भागीन तें फागुन आयो ।
ओ भीजवे मेरी सुरंग चुनरियां में भीज्बुं बाकी पाग ।
चौवा चंदन और अरगजा रंग की परत फुहार ।
लाज निगोड़ी रहो चांय जावो मेरो हीयरो भरो अनुराग ।
आनन्दघन खेलो सुघड़ बालम सो मेरो रहीयो है भाग सुहाग ।

– कीर्तन संग्रह भाग २ पृ० : २३७

२ गोकुल की पनिहारी पनियां भरन चली ।
बड़े बड़े नयना तामैं खुभ रह्यो कजरा
पहिरैं कसूंमी सारी अंग अंग छबि भारी
गोरी गोरी बहियन में मोतिन के गजरा । – नन्ददास कीर्तन संग्रह भाग ३ खंड १
पृ० : ७७

अन्त में उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जहां एक ओर हिन्दी भक्ति साहित्य में कृष्ण कथा के अन्तर्गत लोक गायक के लिये कुछ नवीन कल्पनायें और नया वातावरण प्रस्तुत हुआ है वहीं इस हिन्दी कृष्ण भक्ति साहित्य को प्रेरणा और स्वरूप देने में लोक साहित्य और विशेषकर लोक गीतों का भी योगदान कुछ कम नहीं रहा है ।

लोक संगीत और परम्परा

इन्दु प्रकाश पांडेय

विश्व की समस्त ललित कलाओं का उद्भव लोक कलाओं से ही हुआ है। शास्त्रीय संगीत इस नियम का अपवाद नहीं है क्योंकि लोक संगीत का परिष्कृत एवं नियमित रूप ही शास्त्रीय संगीत है। लोक गीतों की स्वच्छंद सुमधुर धुनों को नियमबद्ध करने के प्रयत्न में शास्त्रीय संगीत का इतिहास सन्निहित है। लोक धुनें ही कालान्तर में नियमबद्ध होकर निश्चित स्वरूप ग्रहण करती हैं और लोक धुनों का यही परिनिष्ठित रूप शास्त्रयि संगीत बन जाता है।

भारतीय संगीत के उद्भव एवं विकास पर विचार करने वाले अधिकांश विद्वानों का मत है कि भारतीय संगीत का आरम्भ वैदिक काल से होता है। ऋग्वेद की ऋचाओं के पाठ में केवल उदात्त तथा अनुदात्त स्वरों का प्रयोग होता था जिनसे ऋग्वेद के पाठ में कुछ संगीतमयता अवश्य आ गई थी। परन्तु इन स्वरों का प्रयोग केवल भाषागत विशेषता थी। यजुर्वेद के अनुसार उदात्त अनुदात्त और स्वरित वैदिक स्वर हैं। परन्तु वृहत् देशी ग्रन्थ के रचनाकार मतंग के अनुसार चार अथवा चार से कम स्वरों के प्रयोग से संगीत का प्रादुर्भव नहीं हो सकता। मतंग ने जनपदों की लोक धुनों की ओर संकेत करते हुए लिखा है कि शबर पुलिंद कम्भोज वंगस किरात वाहीक और आन्ध्र जनपदों के लोक संगीत में पांच स्वरों का प्रयोग हुआ है। इस दृष्टि से तो सामगान भी केवल संगीतमय पाठ की संज्ञा प्राप्त कर सकता है। परन्तु नहीं लोकगीतों की धुनों की विभिन्नता तथा स्वरसमृद्धि के प्रभाव के फलस्वरूप सामगान के उत्तरकाल में सात स्वरों का प्रयोग होने लगा था।

भाषाओं के विकास के बहुत पहले ही संगीत का जन्म हो चुका था जिसकी कल्पना पशु पक्षियों की बोली से की जा सकती है। प्रारम्भिक संगीत में उसी प्रकार उदात्त तथा अनुदात्त स्वरों में भातों को प्रकट किया जाता था। जिन प्रदेशों में कुछ भाषा का विकास हो गया था उनमें भावों को भाषा के माध्यम से स्वरों के चढ़ाव उतार का प्रयोग तो अवश्य होता था परन्तु

उनके मध्यान्तरों के संबंध में उन्हें समुचित ज्ञान न था । उस संगीत में संभव है सभी सप्तस्वर सुनाई दे जायें परन्तु उनमें न कोई व्यवस्था होती थी और न किसी प्रकार का अनुपात । इसको हम लोक संगीत नहीं कह सकते । लोक संगीत में भाषाबद्ध भाव और लय का विशेष प्रयोग होता है जिसमें कुछ निश्चित धुनों की परिकल्पना होती है जबकि जंगली संगीत में केवल स्वरों के चढ़ाव उतार का प्रयोग होता है जिनकी ध्वनियां भी प्राय: निरर्थक होती हैं । लोक संगीत सापेक्षत: विकसित समाज की स्वाभाविक एवं सरल कलात्मक अभिव्यक्ति है जिसमें किसी विशिष्ट संगीत संबंधी नियम का आग्रह नहीं होता ।

संगीत के सम्यक् विकास के लिये किसी प्राकृतिक रूप अथवा व्यापार की नकल का आधार न था । अत: सगीत को शब्द और लय का सहारा लेना पड़ा जो संगीत के अभिन्न तत्व नहीं हैं । परन्तु वेदों के स्वराघात से लय अधिक महत्त्व पूर्ण है जिसके सहारे संगीत का विकास प्रारम्भ हुआ । शब्दों के मिल जाने से संगीत को और भी सार्थकता प्रात हो गई । यही सार्थक शब्दों से युक्त लयात्मक भाषा लोक संगीत है । यही लोक संगीत अपने शब्दों की विशिष्टता त्याग कर विशिष्ट स्वर संयोजन की प्रक्रिया से शास्त्रीय संगीत के रूप में विकसित हो गया । लघु और गुरू स्वरों पर आधारित लय से एक ओर संगीत का विकास हुआ तो दूसरी ओर छन्दशास्त्र का प्रादुर्भाव हुआ । लघु और गुरु की वियमित व्यवस्था लय के लिये अनिवार्य नहीं है परन्तु ताल और छन्द के लिये यह नितान्त आवश्यक है ।

धीरे धीरे तंतुवाद्यों का विकास हुआ जिनका प्रयोग मौखिक संगीत के साथ किया जाने लगा था । मौखिक संगीत के साथ तंतुवाद्यों के प्रयोग से स्वरों का स्वरूप निश्चित होने लगा । यही शास्त्रीय संगीत की वास्तविक पृष्ठ भूमि है । लय छन्द ताल और स्वरों की विशिष्टता और धुन के गायन में उनकी सुनिश्चित व्यवस्था संगीत के निर्णायक तत्व हैं । इन स्वरों की प्रारम्भिक अवस्था की कुछ चर्चा की जा चुकी है । श्री गोस्वामी ने स्वरों के उद्भव और विकास के संबंध में कुछ रोचक उत्प्रेक्षाएं प्रस्तुत की हैं और वर्तमान सप्तक के समान एक भि : नामों वाले वैदिक सप्तक की चर्चा की है ।

किन माध्यमिक स्वरों और सोपानों से संगीत का विकास हुआ इसका पूरा इतिहास उपलब्ध नहीं है । परन्तु इतना निश्चित है कि प्रारम्भ में आर्य संगीत विद्या में प्रवीण नहीं थे क्योंकि तत्कालीन वेद पाठ में केवल उदात्त और अनुदात्त स्वरों का ही प्रयोग होता था जिसका

संबंध शाब्दिक बलाघात से अधिक था। आर्यों के आगमन के पूर्व भारतीय अनार्यों में शिश्नदेव की पूजा के लिये नृत्य और संगीत का अत्यधिक प्रचार था। इस प्रकार की पूजा तथा उनके पुजारियों की चर्चा वेदों में पर्यात रूप से प्राप्त है। अनार्यों के देवता शिव जिसको कालान्तर में आर्यों ने अपना लिया नटराज हैं जिनसे प्रारम्भिक छः रागों का उद्भव माना जाता है। इसके अतिरिक्त आर्यों के पूर्व भारतीय अनार्य जातियो के पास लोक धुनों का असीम भाण्डार था जिनसे आर्यों ने बहुत कुछ ग्रहण किया और लोक संगीत के आधार पर शास्त्रीय संगीत का विकास किया।

संसार के प्रत्येक देश में संगीत के विकास के पीछे धर्म का विशेष हाथ रहा है। अपने इष्ट देवताओं को प्रसन्नकरने के लिए प्रार्थना तथा गुणगान के रूप में संगीत का विकास हुआ। इस दैवी संगीत को भार्ग संगीत के नाम से अभिहित किया गया। साथ ही संगीत में स्वान्तः सुखाय लौकिक परम्परा यथावत् बढ़ती गई जिसे देशी की संज्ञा दी गई। इस देशी संगीत के गान के लिये किसी नियम का बंधन नहीं था। देशी संगीत की संज्ञा प्राप्तलोक संगीत की बंधन मुक्त मौखिक परम्परा निरन्तर विकासशील रही जब कि निश्चित नियमों के अनुसार चलने वाले मार्ग अथवा शास्त्रीय संगीत में अपेक्षाकृत स्वल्प परिवर्तन ही सम्भव थे। अतएव समय समय पर कठोर नियमों से संचालित शास्त्रीय संगीत में नवीन प्राणों के स्पन्दन और नूतन स्फुरण के लिये देशी अथवा लोक संगीत का आश्रय लिया जाता रहा है अथवा लोक सगीत अधिक जीवन्त तथा प्राणवान होने के कारण शास्त्रीय संगीत को सदैव प्रभावित करता रहा है। परन्तु अर्वाचीन लोक धुनों के आधार पर प्राचीन शास्त्रीय संगीत का अध्ययन बहुत वैज्ञानिक न होगा फिर भी सापेक्षतः कम प्राचीन शासत्रीय संगीत के विकास की कल्पना लोकसंगीत के आधार पर की जा सकती है। कुछ संगीतज्ञों तथा संगीत शास्त्रियों ने लोक संगीत से विकसित होने वाले कुछ राग रागिनियों का निश्चित उल्लेख किया है। इस प्रभाव का महत्व ऐतिहासिक अधिक है गुणात्मक कम क्योंकि शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आकर लोक धुन प्रायः बिल्कुल परिवर्तित हो जाती है। कुछ राग रागिनियों के नाम विशेष स्थान या जनपद से सम्बद्ध हैं जिसके आधार पर यह कल्पना की गई है कि वह विशिष्ट राग अथवा रागिनी कभी उस विशिष्ट स्थान की कोई अत्यधिक लोकप्रिय लोक धुन रही होगी परन्तु आज इस लोक धुन का कोई पता नहीं है। कुछ न ही लोक धुनें जिनसे शास्त्रीय संगीत के विभिन्नप्रकार विकसित हुए आज भी विद्यमान हैं।अस्तु लोक संगीत

के सम्बन्ध का अध्ययन समीचीन ही होगा ।

डा० सुमति मुटाटकर के अनुसार भारतवर्ष में लोक संगीत के क्षेत्र में अठारह धुनें प्राप्त हैं । उनके नाम इस प्रकार है सारंग सोरठ गौरी पहाड़ी मांड़ बिहारी झिंझोटी धनाश्री बिलावल कान्हड़ा कुकुभ सिंध काफी भैरवी कल्यान जोगिया असावरी और छायानत । भरतमुनि ने अपने नाटयशास्त्र ग्रन्थ के संगीत प्रकरण में अठारह जातियों का उल्लेख किया है । ये जातियां वर्गीकृत लोक संगीत की धुनें ही थीं । बहुत संभव है कि उपर्युक्त अठारह धुनें इन अठारह जातियों के समान ही रही हो परन्तु आज इस बात को निर्विवाद रूप से सिद्ध करना कठिन है ।

प्रसिद्ध संगीतशास्त्री श्री रतनजनकर ने भी लगभग यही विचार व्यक्त किये हैं । उनका कथन है रागों का संगीत या शास्त्रीय संगीत मेरी दृष्टि में लोक संगीत से विकसित हुआ है । अतएव लोकसंगीत का वैज्ञानिक अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है । ध्रुपद ख्याल ठुमरी होली टप्पा इत्यादि लोक संगीत से ही विकसित हुए हैं । गौरी सारंग देश धनाश्री कान्हड़ा मल्हार अहीर भैरव झिंझोटी बिहारी पहाड़ी भोपाली यमन भैरवी इत्यादि राग उत्सवों संस्कारों या पूजा इत्यादि के अवसरों पर गाई जाने वाली लोक धुनों से विकसित हुए हैं । कुछ मिला कर लगभग बीस लोक धुनें सामान्य रीति से समस्त देश में प्रचलित हैं । यह शोध का एक अच्छा विषय होगा यदि कोई विद्वान् प्राचनि संगीत ग्रन्थों में उल्लिखित अठारह जातियों से इनका सम्बन्ध स्थिर कर सके ।

इस प्रकार भारतीय संगीत का इतिहास आर्यों के आगमन से आज तक लोक संगीत के साथ समन्वय का इतिहास है । प्राचीनतम संगीत ग्रन्थों में रागों के स्थान पर जातियों का उल्लेख हुआ है और इन जातियों का नामकरण स्वरों के नामों से किया गया था जिनमें से कुछ आज भी प्रचलित हैं । षडज से षडजी ऋषभ से आर्षवी गंधार से गांधारी मध्यम से मध्यमी पञ्चमी धैवत से धैवती और निषाद से निषादी प्रमुख हैं । आर्षवी आज आसावरी हो गई और मध्यमी मध्यमदी मधमदी हो गई । इस प्रकार नामों में भी परिवर्तन होते रहे ।

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही अनेक देशी जातिया निवास करती रही हैं । उनकी अपनी लोक धुनें भी प्रचलित हो कर भारतीय संगीत के समन्वित तथा संश्लिष्ट रूप का निवास करती रही हैं । श्री गोस्वामी ने इस पर कुछ विस्तार से विचार प्रस्तुत किये हैं । इतिहास से हमें यह विदित है कि शक मालव आभीर गुर्जर शबर पुलिन्द भैरव और द्रविड़ जातियां

भारत में निवास करती थीं इनमें कुछ तो आर्यों के आने के पूर्व ही बस गई थी और कुछ जातियां उनके बाद आई।

शकों ने शक राग प्रदान किया निसके विस्तार शक तिलक और शकमिश्रित हैं जो आज विद्यमान नहीं हैं। भतंग के प्रसिद्ध ग्रंथ वृहत्‌देशी में टक्क राग को विशेष प्रमुखता प्रदान की गई है। यह राग लक्ष्मी का प्रिय राग माना गया है। इसी का एक रूप टंकारी नाम से कांगड़ा की घाटी में प्रचलित है। आज वही टोंक राग के नाम से भी विख्यात है जिसका ऐतिहासिक सम्बन्ध राजस्थान के टोंक राज्य से स्थापित किया गया है। इसी का एक प्रस्तार तानकेसरी भी है।

प्राचीन भारत की शक्तिशाली जाति मालव के नाम से संगीत में मालवी राग प्रख्यात है और इसी राग के प्रस्तार मालव कौशिकी से मालकौंस का विकास हुआ जो रात्रि के समय गाये जाने वाले प्रमुख रागों में से है। हिन्दुस्तानी सङ्गीत में मालश्री और कर्नाटक सङ्गीत में मालवश्री मालव राग के ही दो रूप हैं।

आभीर जाति ने भी भारतीय संगीत में योग दिया और अहीर या अहीरी राग जो बहुत प्रचलित नहीं है आभीर से ही विकसित हुआ। दक्षिण में तो अभी भी मूल आभीर शब्द का प्रयोग होता है। शबरी राग शबर जाति की देन है जो उत्तर और दक्षिण में सामान्य रूप से बहुत लोकप्रिय है।

गुजरी राग का विकास गुर्जर जाति द्वारा हुआ और गुजरात का गर्बा नृत्य भी इसी जाति की देन है। पहाड़ी और भांड़ राग तो आज अपने शुद्धतम रूप में कांगड़ा और कुल्लू की घाटियों में गाये जाते हैं। पुलिन्दी राग पुलिन्द जाति की देन है और आन्ध्री राग आन्ध्र की।

भैरवी रागिनी राग भैरव से प्राचीन है जिसका मूल उद्‌गम भैरवी जाति में हुआ जो उत्तर भारत में संपेरों का पेशा करते थे। जब शैव सम्प्रदाय और शैव भक्ति का जोर बढ़ा तो इसी रागिनी को राग भैरव में परिवर्तित करके उसे शिव भक्ति का प्रमुख राग बना दिया गया।

मारव राग का विकास मारव जाति की प्रमुख लोक धुन से हुआ। इस प्रकार अनेक जातियो की लोक धुनें हमारे शास्त्रीय संगीत की व्यापक व्यवस्था में स्थान पाती गई और संगीत कला की श्रीवृद्धि करती रहीं।

शास्त्रीय संगीत की कुछ राग रागिनियां जनपदों नगरों अथवा गांवों के नाम से प्रख्यात

हैं जो स्थानों की लोकप्रिय लोक धुनें रही होंगी। राग बंगाला सिंधु सोरठ वरारी क्रमशः बंगाल सिंधु सौराष्ट्र तथा बरार अथवा विराट देश की प्रमुख धुनें थीं। इस प्रकार के रागों को प्राचीन काल में देशाख्य राग कहा जाता था। गौड़ी का सम्बन्ध बंगाल के एक भाग गौड़ से हैं। पूर्वी प्रदेशों से सम्बन्धित है। ककुभ रागिनी का सम्बन्ध काल के प्रसिद्ध नगर ककुभ से है। सिंहल और शौरसेन राग अपने विभिन्न जनपदों की ओर संकेत कर रहे हैं। खम्भाटी का जन्म खम्भावती नगरी में हुआ था। कल्यान राग का जन्म कल्यानी नगर में हुआ जहां चालुक्यों का राज्य था। राग जौनपुरी का नाम जौनपुरी इसलिये पड़ा क्योंकि जौनपुर के सुल्तान हुसेन शिरकी ने उसकी रचना की थी। राग जोगिया योगियों के यहां से विकसित हुआ। राग तोड़ी का सम्बन्ध बहुत सम्भव है टोड़ा जाति से हो जो आज भी नीलगिरी और छोटा नागपुर में बसे हुए हैं। राग मुल्तानी का सम्बन्ध मुल्तान की किसी लोकप्रिय लोक धुन से होगा। टप्पा का विकास पजाब के ऊंटों पर यात्रा करने वालों की संगीत विधि से विकसित हुआ है। सभी टप्पा पंजाबी भाषा में हैं। कहरवा दादरा के ठेके भी लोक संगीत के ढोलक के ठेकों से लिये गये हैं।

धम्मार की अपनी विशिष्ट ताल है और उसी ताल का नाम धम्मार है जिससे इसका नामकरण हुआ है। प्रारम्भ में यह मथुरा और वृन्दावन की प्रमुख लोकधुन थी जिसमें श्रीकृष्ण और गोपिकाओं की विशेष रूप से होली के अवसर की क्रीड़ाओं का वर्णन रहता है॥

विशेष रूप से बनारस की ठुमरी पर कजरी और चैती का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। इसी प्रकार पंजाबी ठुमरी पर सोनी महिवाल के प्रेमाख्यान के संगीत का प्रभाव स्पष्ट है।

कुछ लोक गीतों के गाने का ढंग इतना विकसित है कि उन्हें हम अर्ध शास्त्रीय संगीत कह सकते हैं। कजरी बारहमासे सावन सोहर इत्यादि की अनेक लोक धुनें शास्त्रीय संगीत के बहुत निकट हैं। सूरदास तुलसीदास कबीर इत्यादि सन्तों के अनेक पदों को बड़े ही अच्छे ढंग से गाया जाता है। होरी और धम्मारी तो बिल्कुल धम्मार की भांति गाई जाती हैं। अवधी क्षेत्र में लेजें गाई जाती हैं जिनकी विलम्बित गति ख्याल गायकी की दूसरी आवृत्ति ही है। लेजों के गायन के साथ बड़े बड़े ढोलों पर एक ताल बजाई जाती है। प्रतापगढ़ और सुल्तानपुर में फाग चौताले पर गाया जाता है।

अनेक पौर्वात्य एव पाश्चात्य लोक संगीत अध्येताओं का यह निश्चित मत है कि लोक संगीत

संगीत कला की दृष्टि से बहुत ही सरल एवं साधारण कोटि का है। विषय और भाषा भी बहुत ही सरल एवं साधारण होते हैं। विषय में न तो गंभीरता होती है और न किसी प्रकार की जटिलता। प्राय: सांस्कृतिक परिष्कार का भी अभाव होता है। हास्य काफी भोंड़ा अश्लील कोटि का होता है। लोक संगीतज्ञ संगीत विधा का जानकार नहीं होता। वह अपने सुर को परिमार्जित करने तथा मीठा बनाने का प्रयत्न भी नहीं करता। स्वरों की तारता को बहुत ऊंचा उठा कर अचानक गिरा देने में अपनी कला की निपुणता मानता है। बिरहा गाने वाले की प्रशंसा उसकी आवाज की बुलन्दी के आधार पर की जाती है। रात की खामोशी में अमुक बिरहा गाने वाले की आवाज चार कोस तक सुनाई देती है। प्राय: इन प्रशंसाओं के योग्य बनने के लिये गवैये सुर को और भी बेसुरा बना लेते हैं। सुर की कर्कशता और विद्रूपता ही कर्णगोचर होती है। अल्हैतों के गान की विशेषता उनकी द्रुत लय में सिमट जाती है जिसमें युद्ध का वातावरण तो कुछ प्रस्तुत हो जाता है परन्तु संगीत का कलात्मक रूप कम ही उपलब्ध होता है। स्त्रियों के गाने में बेसुरापन कम नहीं रहता परन्तु स्त्रियों की स्वाभाविक पतली और अपेक्षाकृत कुछ मीठी आवाज सुनने वाले को मोह लेती है जिससे बेसुरापन खटकता नहीं। स्वरों का ज्ञान स्त्रियों को भी नहीं होता और संगीत में किस प्रकार मिठास और रस भर दिया जाये उन्हें भी ज्ञात नहीं होता। परम्परागत रूप में रूढ़िगत धुन को स्वरों के चढ़ाव उतार के साथ गाते हैं और स्वरों के सुन्दर सानुपातिक संघात के ज्ञान के अभाव में वे तादृश प्रभाव पैदा नहीं कर पाते। इसका कारण यह है कि लोक संगीत का विज्ञान तो है परन्तु कला का अभाव है। जिस प्रकार जल में वर्णविहीनता है और जिस वर्ण का हम उसे बनाना चाहते है बना लेते हैं उसी प्रकार लोक संगीत में उसके अपने निश्चित स्वर नहीं होते प्रत्युत गीत के भाव उसे अपने वातावरण में ढाल लेते हैं। इसीलिये प्राय: एक ही धुन और लय विपरीत भावों के सम्प्रेषण के लिये प्रयुक्त हो जाती है।

जहां तक स्वर ग्राम का सम्बन्ध है लोक संगीत में प्राय: वादी स्वरों का ही आश्रय लिया जाता है। लोक संगीत में इसीलिये न तो शास्त्रीय संगीत की की जटिलता है और न स्वरों के आधार पर प्रभावोत्पादकता। एक ही धुन में वादी स्वरों के अतिरिक्त संवादी आदि स्वरों का प्रयोग कष्टसाध्य कार्य है। अतएव लोक संगीतकार केवल एक स्वर से काम चलाने का प्रयत्न करता है और वादी स्वर सहजता के साथ कर्णप्रिय प्रतीत होते हैं इसलिये लोक संगीत संगीत विस्तार के

अभाव में भी बुरा नही लगता ।

लोक संगीत के प्रमुख साधन भाषा और लय हैं जो संगीत के अनिवार्य अंग नहीं हैं । भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से लेकर संगीत रत्नाकर तक संगीत में शब्द अथवा भाषा के महत्त्व को स्वीकार किया गया है । इसीलिये सारंगदेव ने अपने ग्रन्थ संगीत रत्नाकर में स्पष्ट रूप से कहा है कि कोई भी वाद्य जो संगीत या नृत्य के साथ न बज कर स्वतंत्र रूप में बजाया जाता है वह केवल शुष्क वाद्य है । तदुपरान्त ध्वन्यालोक के रचनाकार अभिनवगुत ने शब्दविहीन संगीत को प्रमुखता प्रदान की । केवल स्वरों के सानुपातिक संघात से ही भावों की अभिव्यञ्जना की जा सकती है । लोक संगीत प्रारंभ से ही शब्द का सहारा लेता रहता है और इसीलिये प्रारंभिक शास्त्रीय संगीत में भी शब्द के विशिष्ट महत्त्व को स्वीकार किया गया था परन्तु बाद में ध्वनि के संकेतों को ही संगीत के लिये सर्वश्रेष्ठ अभिव्यंजना का माध्यम माना गया ।

गीत को प्रबन्ध भी कहा जाता था । उनमें दो से लेकर छः तक अंग होते थे जिन्हें धातु भी कहा जाता है । इनका पालन बहुत कठोरता से नहीं किया जाता था । इन गीतों के लिये यह आवश्यक नहीं था कि वे लयात्मक ही हों । हां तालबद्धता आवश्यक थी । परन्तु लोकगीतों का मूलाधार लय है तालबद्धता नहीं । अनेक प्रकार के लोकगीत तबले या ढोलक की ताल के साथ नहीं गाये जा सकते क्योंकि उनकी रचना ताल के अनुकूल नहीं है । जनेऊ और सोहाग के गीतों में अनोखी विलंबित लयात्मकता है परन्तु उनकी पंक्तियों में न कोई निश्चित छन्द है और न ताल । शास्त्रीय और लोक संगीत का यह एक महत्त्वपूर्ण भेद है । लोक संगीत के लिये शब्द और लय अनिवार्य हैं और शास्त्रीय संगीत के लिये गौण । इसी निबंध संगीत के विकास का अगला चरण अलाप है जिसमें किसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग नही होता केवल स्वरों का उपयोग होता है । लोक संगीत में अलाप का अभाव है ।

लोक संगीत के अन्तर्गत गाये जाने वाले अनेक गीतों में एक विचित्र प्रकार की अपूर्णता का भाव रहता है । विवाह सोहाग और जनेऊ के गीतों में केवल स्थायी ही होता है अन्तरा का अभाव रहता है । छन्द की दृष्टि से तो दो पंक्तियां होती हैं परन्तु उन दोनों पंक्तियों को स्थायी के रूप में गाया जाता है । बिना अन्तरा के स्थायी का गायन संगीत की दृष्टि से अपूर्णता का भाव पैदा करता है । पूर्णता के कारण जिस सरलता के साथ रस की निष्पत्ति हो सकती थी वह नहीं हो पाती और भावनाएं अधर में टंगी की रह जाती हैं इन गीतों के गाने

में जिस स्वर को मूलाधार बनाया जाता है उक तक लौटने के सिवाय न तो कोई सम प्रतीत होता है और न संगीत की पूर्णता । प्रत्येक पंक्ति एक प्रश्न बन कर जाती है जिसका शमन अन्तरा के अभाव में नहीं हो पाता ।

सामान्य वैदिक स्वर ग्राम सामान्यत: अवरोहात्मक मूर्च्छना में होता था । उसी प्रकार लोक संगीत का स्वर ग्राम अवरोहात्मक मूर्च्छना में संचालित होता है । इस तथ्य से लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत की प्रारंभिक दशा का परिचय प्राप्त होता है । यदि बड़े समाज के लिये किसी लोकधुन को गाया गया तो कुछ उच्च सप्तक से गान प्रारम्भ किया जायेगा परन्तु स्वर ग्राम वही रहेगा ।

लोकधुन बहुत ही सरल होती है और अन्तरालों तथा उनके क्रमों का पालन सहज ढंग से ही हो जाता है । उनके लिये प्रयत्न नहीं करना पड़ा । शास्त्रीय संगीत के विद्यार्थी को यह विदित है कि चतुर्थ से एकदम पंचम पर पहुंच जाना कितना कठिन है परन्तु लोक संगीतकार अनायास ही अनजाने ही उसे प्राप्तकर लेता है ।

लोक संगीत में न तो किसी एक विशेष स्वर पर आग्रह होता है और न उसे धुन का मूलाधार माना जाता है । इसीलिये लोक संगीत के लिये किसी तानपूरे की आवश्यकता नहीं रहती जो मूल स्वर से बांध रखे । और यही कारण है कि हम लोक संगीत का परीक्षण स्वर के आधार पर नहीं कर सकते । लोक संगीत में मूल स्वर तो लगभग सभी मिल जाते हैं परन्तु न तो उनका नियोजन किसी विशेष नियम के आधार पर होता है और न स्वर का आग्रह ही । प्राय: अनुपयुक्त स्वरों का भी प्रयोग मिलता है जिससे लोक संगीत बेसुरा भी हो जाता है । एक साथ तीन स्वरों से अधिक का प्रयोग कदाचित् ही मिलेगा । जोर से गाने पर कभी कभी आसपास के एक आध स्वर का प्रयोग और हो जाता है । परन्तु वास्तव में स्वर संधान या विस्तार का कोई विचार नहीं होता केवल भाषाबद्ध भावों को छन्दों के अनुसार अनेक प्रकार लयात्मक धुनों में गाया जाता है । इस संगीत में सहजता और प्रवाह होता है । लोक संगीत में किसी भी एक स्वर को विलंबित रूप में प्रस्तुत करके उसके सौदर्य को सम्पादित नहीं किया जाता ।

लोक संगीत प्राय: समूह केद्वारा गाया जाता है जब कि शास्त्रीय संगीत किसी एक व्यक्ति द्वारा जाया जाता है । एक संगीत प्रेमी अभ्यास और परिश्रम से अपने मधुर स्वर से

संगीत के कलात्मक रूप को प्रस्तुत कोने में सफल हो सकता है परन्तु समूह में अधिकांश न तो संगीत मर्मज्ञ होंगे हौर न सुरीले गले वाले। वैसी स्थिति में कला की दृष्टि से ऐसा स्वच्छंदता से गाया जाने वाला कोरस संगीत का उत्कृष्ट उदाहरण तो नहीं हो सकेगा परन्तु एक बड़े जन समुदाय का मनोरंजन अवश्य कर सकेगा जो शास्त्रीय संगीत की स्वर संबंधी जटिलताओं को दयंगम नहीं कर सकता।

हिंदू शासन प्रणालियों के स्वरूप

गण और कुल दोनों संघराज्यों के दो मुख्य विभाग थे। इन होनों के मध्य में शासनप्रणाली के और भी कई भिन्न भिन्न प्रकार थे। जहां तक हम इन भिन्न भिन्न प्रणालियों के नाम और विवरण आदि एकत्र कर सके हैं वे सब हम यहां पर दे देना चाहते हैं। पहले हम सब से प्राचीन शासनप्रणाली को ही लेते हैं।

भौज्य शासनप्रणाली का ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख मिलता है। इस शासनप्रणाली के संबंध में हमें कुछ बातें ऐसे स्थान से मिलती हैं जहां से उनके मिलने की कोई विशेष संभावना नहीं हो सकती थी। पाली त्रिपिटक में यह बतलाया गया है कि एक कुलपुत्त क्या क्या कर सकता है। इन कामों में से एक काम उसका निर्वाचित राजा होना तो है ही इसके उपरांत हमें रठ्ठिक और पेत्तनिक के दो कार्य और मिलते हैं। दोनों एक या समान ही हैं। अंगुत्तर निकाय की टीका में बतलाया गया है कि पेत्तनिक का अभिप्राय पैतृक या वंशानुक्रमिक नेतृत्व है जो पूर्वजों के समय से चला आता है। इन पेत्तनिकों के विपरीत राष्ट्रिक और भोजक या भोज होते थे और इसका अर्थ यही जान पड़ना है कि इन लोगों का नेतृत्व वंशानुक्रमिक या पितरादत्त नहीं होता था। सापतेय का अर्थ है मिलकर नेतृत्व करना अथवा संयुक्त नेतृत्व और इससे यह जान पड़ता है कि इन दोनों में से प्रत्येक दशा में एक से अधिक नेता या शासक हुआ करते थे। महाभारत में जहां अनेक प्रकार के शासकों की सूची दी गई है वहां भोज भी उनमें से एक प्रकार बतलाया गया है॥ खारवेल के शिलालेख को देखते हुए भी मुझे यही अर्थ ठीक जान पड़ता है क्योंकि उसमें जहां राज्य के लवाजमे का जिक्र है वहां राष्ट्रिक और भोजक का भी नाम आया है। इसके बाद के शिलालेखों में भोजों और महाभोजों का उल्लेख है जिससे यह जान पड़ता है कि इस प्रकार के नेता या शासक साधारण वर्ग के भी होते थे और उच्च वर्ग के भी। राज्याधिकार भी शासकों या नेताओं को प्राप्त होता था। जैसा कि ऐतरेय ब्राह्मण में आया है स्वयं उस शासनप्रणाली को

भौज्य कहते थे । यहां यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखने की है कि जाति का यह भोज नाम उनके इस प्रकार के नेताओं या शासकों के कारण पड़ा था और आगे चलकर परवर्ती साहित्य में ये भोज लोग उन यादवों की एक शाखा या उपजाति के रूप में उल्लिखित हैं जिनका अपने आरंभिक इतिहास में अंधकवृष्णी नामक दो प्रजातंत्रों एककाक्ं क्ंथा और ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार सत्वत् लोगों में भौज्य शासनप्रणाली प्रचलित थी ।

यह भी संभव है कि इस प्रकार की शासनप्रणाली पूर्वी भारत में भी प्रचलित रही हो क्योंकि इसका उल्लेख पाली त्रिपिटक में भी आया है और पाली त्रिपिटक में पूर्वी भारत को छोड़कर पश्चिमी भारत के राज्यों आदि का उल्लेख नहीं मिलता ।

अपनी निशिष्ट शासनप्रणाली के कारण ही पश्चिमी भारत की एक जाति के लोग भोज कहलाते थे । संभवत: यह उन्हीं अवस्थाओं में से एक है जिनमें अपनी राजनीतिक शासनप्रणाली के कारण ही एक जाति का नामकरण हुआ है । अंधकवृष्णी लोग गुजरात या काठियावाड़ के प्रायद्वीप में रहा करते थे । भोज या भौज्य शब्द अब तक आधुनिक भुज के रूप में वर्तमान है जो काठियावाड़ एजेंसी कच्छ में एक देशी रियासत की राजधानी का नाम है । गुजरात इन भौज्य लोगों के सर्वप्राचीन निवासस्थानों में से एक है । परंतु इस बात की बहुत कुछ संभावना जान पड़ती है कि सत्वत् लोग दक्षिण की ओर बढ़कर फैल गए हों । ऐतरेय ब्राह्मण में उन्हें दक्षिण में ही स्थान दिया गया है । यदि ऐतरेय का कर्ता कुरु देश के उत्तर में था जिसे वह मध्य देश में रखता है तो फिर वह अपनी दृष्टि से गुजरात को भी दक्षिण में ही रख सकता है ।

ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है कि पश्चिमी भारत में स्वाराज्य नाम की एक और विलक्षण शासनप्रणाली प्रचलित थी । इस शासनप्रणाली में जो शासक या सभापति होता था वह स्वराट कहलाता था । इसका शब्दार्थ है स्वयं शासन करनेवाला । तैत्तिरिय ब्राह्मण में वाजपेय यज्ञ की प्रशंसा में लिखा है कि जो बुद्धिमान् विद्वान् वाजपेय यज्ञ के द्वारा बलि प्रदान करता है वह स्वाराज्य प्राप्त करता है और इस स्वराज्य शब्द की व्याख्या में लिखा है अपने समान लोगों का नेता बनना । वह बड़प्पन या ज्यैष्ठ्य प्राप्त करता है । इस छोटी सी सूचना से यह पता चलता है कि समान लोगों में से ही कोई स्वराट् शासक चुना जाता था जो सभापति या प्रधान शासक बनाया जाता था और यह चुनाव इंद्र होने ही योग्यता पर निर्भर करता था क्योंकि यह कहा गया है कि इंद्र ने ही पहले पहल अपनी योग्यता प्रमाणित करके अपना स्वाराज्य अभिषेक

कराया था । जान पड़ता है कि यह उल्लेख गण या काउंसिल के सभापति के निर्वाचन या चुनाव के ही संबंध में है । यहां इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि महाभारत में कहा गया है कि गण के सब सदस्य समान समझे जाते थे । ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार इस प्रकार की शासनप्रणाली पश्चिमी भारत के नीच्य या अपाच्य लोगों में प्रचलित थी । नीच्य लोगों का निवासस्थान जैसा कि उनके नाम से सूचित होता है सिंधु नदी के मुहाने आसपास की नीची भूमि में रहा होगा । और अपाच्य लोग संभवत: उसके ठीक ऊपर के प्रदेशों में रहते होंगे । पर यजुर्वेद के समय में स्वाराज्य शासनप्रणाली उत्तरीय भारत में प्रचलित थी । इस शासनप्रणाली के संबंध में ऐतरेय ब्राह्मण के बाद का कोई उल्लेख अब तक नहीं मिला है ।

ऐतरेय ब्रह्मण में यह भी लिखा है कि उत्तर की कुछ जातियों में वैराज्य नाम की निज की शासनप्रणाली प्रचलित है । इस उत्तर शब्द की व्याख्या में उसका स्थाननिर्देश करते हुए कहा गया है हिमालय के पार्श्व में । यजुर्वेद के समय में इस प्रकार की शासनप्रणाली दक्षिण में प्रचलित थी । इससे यह पता चलता है कि इस प्रकार की शासनप्रणाली केवल उत्तर में ही नहीं प्रचलित थी बल्कि देश के अनेक भागों में भी उसका प्रचार था । इसका ठीक ठीक शब्दार्थ होता है बिना राजा की अथवा राजारहित शासनप्रणाली । ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार सारा देश या जाति राजपद के लिये अभिषिक्त होता था । इस बात में किसी प्रकार का संदेह नहीं हो सकता कि यह शासनप्रणाली वास्तव में प्रजातंत्री थी । ऐतरेय ब्राह्मण में उदाहरण के रूप में कहा गया है कि उत्तर मद्रों और उत्तर कुरुओं में यह शासन प्रणाली प्रचलित थी । व्याकरण में मद्रों का उल्लेख दिशा के विचार से हुआ है जिससे सिद्ध होता है कि मद्रों में कम से कम दो विभाग थे । पाणिनि के समय में मद्र लोगों में प्रजातंत्री शासनप्रणाली प्रचलित थी और उनमें ई० पू० चौथी शताब्दी तक जब कि गुप्त वंश के लोगों से उनका मुकाबला हुआ था बराबर प्रचलित रही । जान पड़ता है कि उत्तर मद्रों में जो शासनप्रणाली प्रचलित थी वह दक्षिण मद्रों की शासनप्रणाली से भिन्नप्रकार की थी । इसके परवर्ती साहित्य में उत्तर कुरुओं का जो उल्लेख है उससे जान पड़ता है कि उस समय उनका अस्तित्व केवल कथाकहानियों में ही रह गया था वे लोग पौराणिक कोटि में चले गए थे और वे अपनी संपन्नता तथा सुखपूर्ण जीवन के लिये प्रसिद्ध थे । ऐतरेय ब्राह्मण में उनका उल्लेख मद्रों की भांति ऐतिहासिक जातियों के रूप में हुआ है । इससे यह जान पड़ता है कि परवर्ती काल में इन लोगों का एक स्वतंत्र जाति के रूप में अस्तित्व नहीं रह

गया था और अपनी संपन्नता तथा वैभव आदि के कारण ये लोग कथाकहानियोंवाले वर्ग में आ गए थे । और इस देश में जहां प्राय: इतिहास को जंगलीपन से पुराणों का रूप दे दिया जाता है इस प्रकार की घटना प्राय: हुआ करती है ॥

हिंदू टीकाकार वैराज्य शब्द का ठीक ठीक महत्त्व समझने में असमर्थ रहे हैं और उन्होंने भूल ले इसका अर्थ किया है प्रकाशमान अवस्था । पर यहां इस शब्द का शासनप्रणाली संबंधी जो अर्थ किया गया है उसके ठीक होने में जरा भी संदेह नहीं किया जा सकता । ऐतरेय के उसी वाक्यांश में जो शब्द आए हैं उनका भी इसी प्रकार शासनप्रणाली संबंधी ही अर्थ होता है । यदि इसके लिये किसी और विशेष प्रमाण की आवश्यकता हो तो हम यही कहेंगे कि पाठक इस संबंध में कौटिल्य का अर्थशास्त्र देखें जिसने इसे शासनप्रणाली का एक प्रकार माना है गीर जिसे इस इसने खराब या दूषित समझकर तिरस्कृत और अस्वीकृत कर दिया है । अपने समकालीन यूनानी विचारशीलों की भांति वह भी प्रजातंत्र को घृणा या उपेक्षा की दृष्टि से देखा करता था । उसका मत है

जहां वैराज्य शासनप्रणाली होती है वहां किसी व्यक्ति के मन में निजत्व का भाव ही उत्पन्न नहीं होता । वहां राजनीतिक संघटन का उद्देश्य ही नष्ट हो जाता है । प्रत्येक व्यक्ति देश को बेच सकता है । कोई अपने आपको उत्तरदायी नहीं समझता और लोग उदासीन होकर राज्य छोड़कर चले जाते हैं ।

जैन आचारांग सूत्र में भी जहां भिन्न भिन्न प्रकार की शासनप्रणालियों का उल्लेख है वहां वैराज्य का नाम आया है । महाभारत में विराज शब्द शासक की पदसंबंधी उपाधियों में से एक बतलाया गया है ।

यद्यपि पाणिनि ने मद्रों की राजधानी का नाम नहीं दिया है तथापि उसने उसका उल्लेख अवश्य किया है । और और मार्गों या साधनों से हमें पता चलता है कि उसका जाम शाकल था जो आधुनिक स्यालकोट माना जाता है । यदि लोगों का यह मानना ठीक हो तो शाकल अवश्य ही आरंभ में उत्तर मद्रों का निवासस्थान रहा होगा ॥

मिलिंद पन्हो के अनुसार ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी में यह राजनगर मेनेंडर की अधीनता में गया । जान पड़ता है कि उस समय मद्रों ने अपना मूल निवासस्थान छोड़ दिया था और वहां से चलकर वे लोग दक्षिण प्रदेश में चले आए थे जहां वे गुप्त काल में धनधान्यपूर्ण अवस्था में

रहते थे ।

यह बात प्रत्यक्ष है कि पश्चिम के राष्ट्रिक लोगों में जो अशोक के शिलालेखों में तथा भोजों और पितनिकों के वर्ग में उल्लिखित हैं कोई वंशानुक्रमिक या एकराज राजा नहीं हुआ करता था । अशोक ने उनके किसी राजा का उल्लेख नहीं किया है । खारवेल ने भी उनका उल्लेख बहुवचन में ही किया है । वे लोग भोजकों के साथ मिलकर और राज्य के पूरे लवाजमे के साथ खारवेल से लड़े थे । अब इस बात में किसी प्रकार का संदेह नहीं रह गया कि इन लोगों में प्रजातंत्र शासनप्रणाली प्रचलित थी । जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है पाली त्रिपिटक के कर्ता को शासक के राष्ट्रिक या रठ्ठिक वर्ग का ज्ञान था और उसने उसका उल्लेख भी किया है।

टीका में जो कुछ कहा गया है उससे यह ध्वनि निकलती है कि राष्ट्रिक सापत्य नेताओं का मंडल वंशानुक्रमिक नहीं होता था अत: वे लोग निर्वाचित होते थे । पाली त्रिपिटक में जो कुछ उल्लेख है उससे यह अभिप्राय निकलता है कि राष्ट्रिक शासनप्रणाली बहुत पहले पूर्वीय भारत में भी प्रचलित थी । भौज्य की भांति इस शासनप्रणाली के आधार पर भी पश्चिम के राष्ट्रिक शासनप्रणाली के ही कारण पड़ा था । अर्थशास्त्र के अनुसार सुराष्ट्र लोग प्रजातंत्री थे और उनमें कोई राजा उपाधिधारी शासक नहीं होता था । जान पड़ता है कि देशों के राष्ट्रिक और सुराष्ट्र नाम इसी प्रकार की प्रजातंत्री शासनप्रणाली के कारण पड़े हैं ।

ऊपर पाली त्रिपिंटक के जिस वाक्य का उल्लेख किया गया है उसमें पेतनिक लोग राष्ट्रिकों के समकक्ष रखे गए हैं और जैसा कि हम ऊपर बतला चुके हैं इस पेतनिक शब्द का अभिप्राय है वंशानुक्रमिक नेता । जान पड़ता है कि इन लोगों की शासनप्रणाली राष्ट्रिकों की या बल्कि भोजों की शासनप्रणाली के बिल्कुल विपरीत थी जिसमें शासकों था नेताओं ने अपना अधिकार वंशानुक्रमिक बना लिया था । स्वयं ऐतरेय ब्राह्मण में साधारण भोजों से भिन्न एक विशिष्ट प्रकार के भोज कहे गए हैं जिनके लिये भोज पितरम् शब्द आया है । इस भोज पितरम् का अर्थ है वंशानुक्रमिक भोज अथवा वह भोज जो किसी और भोज का पिता भी हो । अंगुत्तर निकाय में एक स्थान पर भुत्तानुत्तम् भुंजति आया है जो भोज पेतनिक का सूचक होगा । जैसा कि अशोक के शिलालेखों से प्रमाणित होता है पेतनिक विशिष्ट वर्ग की अथवा संभवत: सरदारों की या गण शासनप्रणाली पश्चिमी भारत में प्रचलित थी । और पाली वाक्य से यह जान पड़ता है कि पूर्वी भारत में भी उसके प्रचलित होने की संभावना है ।

कौटिल्य ने वैराज्य शासनप्रणाली के प्रसंग में द्वैराज्य शासनप्रणाली का भी विवेचन किया है। उसके अनुसार द्वैराज्य या दो का शासन ऐसा है जिसमें प्रतियोगिता या पारस्परिक संघर्ष होता है जो अंत में नाशक प्रमाणित होता है। यहां इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि आचारांग सूत्र में भी इस प्रकार की शासनप्रणाली का उल्लेख है और उसमें यह शासन गण शासन से भिन्न माना गया है। यह द्वैराज्य न तो एकराज अथवा ऐसा शासन था जिसमें कोई एक ही वंशानुक्रमिक राजा शासन करता था और न ऐसा शासन था जिसमें थोड़े से विशिष्ट या बड़े बड़े लोगों के हाथ में शासनाधिकार होता था। यह ऐसी शासनप्रणाली थी जो केवल भारत के ही इतिहास में पाई जाती है। हमारे यहां के साहित्य और शिलालेखों में इस प्रकार की शासनप्रणाली के कई ऐतिहासिक उदाहरण मिलते हैं। हिंदू इतिहास के किसी युग में अवंती में इसी प्रकार की शासनप्रणाली प्रचलित थी क्योंकि महाभारत में इस बात का उल्लेख मिलता है कि अवंती में विंद और अनुविंद इन दो राजाओं का राज्य था और ये दोनों राजा मिलकर शासन करते थे। शिलालेखों में इस शासनप्रणाली के जो उल्लेख आए हैं उनके कारण भारतीय शिलालेख पढ़नेवाले विद्वान् बहुत गड़बड़ी में पड़ गए हैं और वे इस समस्या का कोई ठीक ठीक निराकरण नहीं कर सके हैं। ईसवी छठी और सातवीं शताब्दी में नेपाल इसी प्रकार की शासनप्रणाली के अधीन था। लिच्छवी राजवंश तथा ठाकुरी राजवंश के राजाओं के ठीक एक ही समय के शिलालेख काठमांडू में पाए गए हैं। ये एक ही राजधानी में के दो स्थानों से निकली हुई घोषणाएं हैं जिनकी तिथियों से प्रमाणित होता है कि ये दोनों राजवंश साथ साथ और एक समय में शासन करते थे। परंतु शिलालेख पढ़नेवाले लोग द्वैराज्य शासनप्रणाली से परिचित नहीं थे इसलिये वे लोग इसका वास्तविक महत्व नहीं समझ सके थे। इसीलिये उन्हें विवश होकर एक काल्पनिक विभक्त राजसीमा का अनुमान करना पड़ा था। परंतु उनका ऐसा करना क्षम्य हो सकता है क्योंकि आधुनिक काल में द्वैराज्य शासनप्रणाली का भाव लोगों के लिये बिलकुल अज्ञात है और वे सहसा उसे समझ नहीं सकते। साधारणत: इस प्रकार शासनप्रणाली की न तो कल्पना ही हो सकती है और न यही समझ में आ सकता है कि इससे काम प्रकार चलता होगा। भारत में इस प्रकार की शासनप्रणाली से काम लेना मानों शासनसंबंधी अनुभव और सफलता का एक अद्भुत और उत्कृष्ट उदाहरण है करामात है। नेपाल में इस प्रकार की शासनप्रणाली बहुत दिनों तक प्रचलित थी। केवल हांब्स का सिद्धांत जाननेवाले युरोपियन विद्वान् नेपाल के इन

शिलालेखों का ठीक ठीक अर्थ समझ ही नहीं सकते। परंतु भारत में जहां संयुक्त परिवार का सिद्धांत अब तक जीता जागता और प्रचलित है ऐसे शिलालेखों का अभिप्राय सहज में समझा जा सकता है। ऐसी शासनप्रणाली केवल उसी देश में चल सकती थी जिसमें मिताक्षरावाला परिवार संबंधी सिद्धांत ठीक ठीक कार्य रूप में परिणत हो सकता था। जान पड़ता है कि संयुक्त संपत्ति और उसके संयुक्त भोग का यह कानूनी सिद्धांत राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रचलित कर दिया गया था और उसमें उसके अनुसार कार्य भी होने लगा था जिसके कारण शताब्दियों तक संघर्ष प्रतियोगिता तथा रक्तपात आदि से रक्षा हो सकती थी। नेपाल के इन राजवंशों में कोई रक्त संबंध नहीं था दोनों वंश एक ही पूर्वज की संतानों के नहीं थे। केवल इस प्रकार की शासनप्रणाली के कारण ही शासनकार्य में ये दोनों राजवंश संयुक्त हो गए थे। अर्थशास्त्र और आचारांग सूत्र में इसके संबंध में जो उल्लेख आए हैं उनसे सूचित होता है कि हिंदू भारत में इस प्रकार की शासनप्रणाली बहुत विरल नहीं थी।

अराजक या बिना शासकवाली शासनप्रणाली आदर्शवादियों की शासनप्रणाली थी जिसकी हिंदू भारत के राजनीतिक लेखकों ने बहुत हंसी उड़ाई है। इस शासनप्रणाली का आदर्श यह था कि केवल कानून या धर्मशास्त्र को ही शासक मानना चाहिए और कोई व्यक्ति शासक नहीं होना चाहिए। इसमें शासन का आधार नागरिकों का पारस्परिक निश्चय या सामाजिक बंधन माना जाता था। यह प्रजातंत्र प्रणाली की मानों चरम सीमा थी और बहुत से अंशों में इसका आदर्श टॉल्स्टाय के आदर्श के साथ बहुत कुछ मिलता जुलता था। महाभारत में जहां से उक्त विवरण लिया गया है इस शासनप्रणाली की हंसी उड़ाई गई है और कहा गया है कि जब इस व्यवस्था से काम नहीं चला और सब लोग कानून की अवज्ञा करने लगे तब इस प्रकार का कानून बनानेवालों को अपनी भूल मालूम हुई। जब केवल कानून से शासन न हो सका तब इस प्रकार की शासनप्रणाली में रहनेवाले नागरिकों ने एकराज अथवा राजकीय शासनप्रणाली का आश्रय लिया। मैं तो यही समझना चाहता था कि यह अराजक शासनप्रणाली हिंदू राजनीतिज्ञों की कपोलकल्पना मात्र है और मैं सोचता था कि उन हिंदू राजनीतिज्ञों ने प्रजातंत्र के सामाजिक बंधन और कानूनी शासनवाले सिद्धान्तों के विरुद्ध केवल तर्क करने के लिये ही इसकी कल्पना की होगी। परंतु जैन सूत्र इस बात के लिये विवश करता है कि हम इसे शासनप्रणाली का एक ऐसा प्रयोग मानें जिसका इस देश में अनेक बार अनुभव किया गया है। जैन सूत्र में इस शासनप्रणाली

का इस प्रकार उल्लेख है मानों यह उस समय प्रचलित थी । जिस वर्ग में इस शासनप्रणाली का उल्लेख है उसमें की सभी शासनप्रणालियां वास्तविक और ऐतिहासिक हैं । उसमें नीचे लिखी शासनप्रणालियां दी गई हैं :

क अराजक राज्य
ख गण द्वारा शासित राज्य
ग युवराज द्वारा शासित राज्य
घ द्वैराज्य
ङ वैराज्य और
च विरुद्ध रज्जाणि अथवा दलों द्वारा शासित राज्य ।

इनमें ग वर्ग के राज्य उसी प्रकार के जान पड़ते हैं जिस प्रकार के एक राज्य का शासनाधिकार खारवेल को उसके अभिषेक से पहले प्राप्त था । कानून के अनुसार इस प्रकार का शासनकाल दो राजाओं के शासन का मध्यवर्ती काल समझा जाता था । अनुमान से यह जान पड़ता है कि यह शासन उस दशा में होता था जब कि एक राजा मर जाता था और उसका उत्तराधिकारी दूसरा राजा बहुत छोटा या नाबालिग होता था और शासन कार्य किसी अभिभावक या निरीक्षक काउन्सिल या मंडल के हाथ होता था । च वर्ग के राज्य से ऐसे राज्य का अनुमान होता है जिसमें एक से अधिक दलों का राज्य होता था । उदाहरणार्थ अंधक वृष्णियों का राज्य ।

जैन सूत्र का कथन है कि ये सब राज्य श्रावकों और श्राविकाओं के लिये सुरक्षित नहीं है और उन्हें वहां न जाना चाहिए क्योंकि इन राज्यों के अधिकारी विदेशी या अपरिचित साधुओं को संदेह की दृष्टि से देखते हैं और उन्हें राजनीतिक गुप्तचर समझते हैं । अर्थशास्त्र से हमें पता चलता है कि गुप्तचर लोग साधुओं और संन्यासियों आदि के वेष में घूमा करते थे ।

अराजक राज्य के सिद्धांत पर शासित होनेवाले देश बहुत ही छोटे छोटे रहे होंगे । हिंदुओं में भी उस समय मेजिनी और टालस्टाय की कोटि के लोग रहे होंगे जिन्होंने इस प्रकार की कीर्तिशाली तथा बहुत से अंशों में असंभव शासनप्रणालियों का आविष्कार करके उन्हें समाज में प्रचलित किया होगा ।

जैन सूत्र में एक और वाक्य आया है जिसमें तीन प्रकार के शासक बतलाए गए हैं उग्र भोज

और राजन्य। पारिभाषिक अर्थ वा शासनप्रणाली की दृष्टि से राजन्य शब्द का जो कुछ महत्व है वह हम अभी देख चुके हैं। भोज के संबंध में भी हम जानते हैं। उग्र शासनप्रणाली का पता हमें वैदिक साहित्य से चलता है।

केरल भी उग्र कहलाता है। संभवत: केरल में किसी समय यही उग्र शासनप्रणाली रही होगी। केरल के संबंध में यह प्रसिद्ध है कि वहां किसी प्रकार की प्रजातंत्री शासनप्रणाली प्रचलित थी। अशोक के शिलालेखों में उसकी जो केरलपुतो उपाधि मिलती है वह शासन के किसी विशिष्ट प्रकार की सूचक हो सकती है। केरलपुतो केरल का शासक तो था परंतु उसका राजा नहीं था। अशोक के शिलालेखों में जो केरलपुतो का पड़ोसी सतियपुतो आया है वह भी इसी प्रकार का शासक रहा होगा। बिलकुल आरंभ में सात्वत् लोग दक्षिण के किनारे या सीमा पर थे और यह बहुत कुछ संभव है कि उनकी शाखाएं और भी अधिक नीचे या दक्षिण की ओर चली गई हों। जब कि सतियपुतो भोज था तब हम केरलपुतो को उग्र मान सकते हैं। परंतु जब तक और प्रमाण न मिलें तब तक यह निर्धारण बिलकुल ठीक नहीं माना जा सकता और इसमें संशोधन का स्थान बना ही रहेगा।

यहां यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि इन सब प्रकार की शासनप्रणालियों में शासक का अभिषेक बहुत ही आवश्यक समझा जाता था। जब तक अभिषेक नहीं होता था तब तक कानूनी दृष्टि से शासन या राज्य का अस्तित्व ही नहीं माना जाता था। परंतु ऐसा क्यों होता था। इसका कारण यही था कि शासकों को बहुत ही उत्तमता तथा धर्मपूर्वक शासन करने की शपथ लेनी पड़ती थी। यह पद्धति इतनी आवश्यक और महत्वपूर्ण थी कि जिन प्रजातंत्री राज्यों में सारा देश अथवा देश के समस्त निवासी शासक समझे जाते थे वहां एक विशिष्ट कृत्य के द्वारा सारे देश अथवा देश के समस्त निवासियों का अभिषेक होता था। लिच्छवियों में इस प्रकार का अभिषेक होता था और मल्लों का एक विशिष्ट निश्चित स्थान था जहां उनके शासक लोग शासनभार ग्रहण करने के समय राजमुकुट धारण किया करते। मुकुटबंधन या मुकुटधारण करना और मुकुट धारण करने से पहले अभिषेक होना आवश्यक होता है। हिंदू राजनीति में अनभिषिक्त शासक बहुत ही उपेक्षा या घृणासूचक पद है। यह इस बात का सूचक है कि कानून की दृष्टि से वह शासक शासक ही नहीं है। पुराणों में इस शब्द का व्यवहार विदेशी टोलियों के लिये हुआ है।

राज्यों के पारस्परिक सम्बन्ध और व्यवहार

सत्यकेतु विद्यालंकार

१ वैदिक और उत्तर वैदिक युग

प्राचीन समय में सम्पूर्ण भारत एक राजनीतिक सूत्र में संगठित नहीं था। यद्यपि इस देश के निवासियों में भारत को अपनी मातृभूमि और धर्मभूमि मानने की भावना विद्यमान थी और उनमें सांस्कृतिक एकता की भी सत्ता थी पर मौर्य गुप्त आदि कतिपय राजवंशों के शासन के अतिरिक्त अन्य समयों में इस देश में शासन सम्बन्धी एकता का प्राय: अभाव रहा। यहां बहुत से छोटे बड़े जनपद व राज्य विद्यमान रहे जो प्राय: पारस्परिक संघर्ष में व्यापृत रहते थे। अत: यह प्रश्न भी महत्त्व का है कि इन राज्यों के पारस्परिक सम्बन्ध का क्या स्वरूप था और वे परस्पर व्यवहार करते हुए किन नियमों का अनुसरण करते थे।

वैदिक काल में भारत में बहुत से जनपदों की सत्ता थी जिन्हें राष्ट्र कहते थे। इन राष्ट्रों को जीतकर एकराट् सम्राट् व अधिराज का पद प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। ऋग्वेद के एक मन्त्र में इन्द्र की स्तुति करते हुए कहा गया है तुम इस सम्पूर्ण भुवन के एकराट् होकर विराज रहे हो। ऋग्वेद के ही अन्य मन्त्रों में इन्द्र की सम्राट् के रूप से प्रार्थना की गई है। एक मन्त्र के अनुसार सम्राट् मघवान् इन्द्र अन्य पार्थिवों राजाओं से दक्षिणा ग्रहण करता है। केवल इन्द्र ही वैदिक युग में सम्राट् के रूप में प्रसिद्ध नहीं था त्रसदस्यु को भी एक मन्त्र में सम्राट् कहा गया है। एक मन्त्र में यह प्रार्थना की गई है कि जो हमारे शत्रु हैं उन्हें हम इन्द्र और अग्नि की सहायता से पराभूत करते हैं वसव: रुद्र आदित्य आदि देवता हमारे सर्वोपरि उग्र अधिराज का अतिक्रमण न करे। वैदिक साहित्य के ये निर्देश स्पष्ट रूप से सूचित करते हैं कि वैदिक काल में ही अन्य राजाओं को वशवर्ती बनाकर अधिराज सम्राट् व एकराट् बनने का विचार विकसित होना प्रारम्भ हो गया था। वेदों में त्रसदस्यु दिवोदास दैववात सुदास आदि कतिपय राजाओं का उल्लेख है जिन्होंने कि अन्य राजाओं को परास्त कर अधिराज आदि की स्थिति

प्राप्त कर ली थी । इन राजाओं ने प्रधानतया सिन्धु घाटी की सभ्यता के लोगों को परास्त करने में अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया था । भारत के इन आदि निवासियों के साथ युद्ध करते हुए ये आर्य विजिता किन्हीं ऐसे नियमों का पालन नहीं करते थे जिन्हें वर्तमान समय के अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुकूल समझा जा सके । वैदिक साहित्य में ऐसे निर्देश उपलब्ध होते हैं जिनमें विष से बुझे बाणों का प्रयोग भी सूचित होता है । सम्भवत: ये बाण आर्य भिन्न दस्यु जातियों के लिए ही प्रयुक्त किये जाते थे आर्यों के विरुद्ध नहीं ।

उत्तर वैदिक युग में आर्य जाति के विविध राष्ट्र व जनपद पारस्परिक संघर्ष में तत्पर रहे और इसके कारण अनेक शक्तिशाली राजा सम्राट् चक्रवर्ती या सार्वभौम का पद प्राप्त करने में समर्थ हुए । इन शक्तिशाली सम्राटों का उल्लेख हम पहले कर चुके हैं । अन्य राज्यों को जीत कर ये राजा वाजपेय और अश्वमेध यज्ञों का अनुष्ठान करते थे और सम्राट् पद को प्राप्त करते थे । शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में इन यज्ञों का विशद रूप से निरूपण किया गया है । पर प्राचीन भारत के ये सम्राट् अन्यराजाओं को परास्त का उनका मूलोच्छेद नहीं करते थे । वे अन्य राजाओं के राज पितर राजाओं के पितर या पालक या श्रेष्ठ बनकर ही सन्तुष्ट हो जाते थे । समुद्रपर्यन्त पृथिवी का एकराट् होना ये शक्तिशाली राजा अपना आदर्श समझते थे । सार्वभौम सम्राट् उसी को कहा जाता था जो आसमुद्र पृथिवी का एकराट् हो । वैदिक और उत्तर वैदिक युगों की राजनीति का यह एक महत्त्व था कि अन्य राजाओं का उच्छेद न किया जाए केवल उन से अधीनता ही स्वीकृत करा ली जाए । यही इन सम्राटों की आर्य मर्यादा थी ।

२ प्राग् बौद्धकाल

बौद्ध युग से पूर्व के भारत के इतिहास में राज्यों के पारस्परिक सम्बन्ध का क्या स्वरूप था इसका परिचय स्मृति ग्रन्थों महाभारत व सूत्रग्रन्थों से प्राप्त किया जा सकता है । इस युग में आर्यों और आर्य भिन्न जातियों के युद्धों की आवश्यकता नहीं रह गई थी । जो भी युद्ध होते थे वे आर्य जनपदों के पारस्परिक युद्ध ही थे । अत: इस युग के धर्मसूत्रों और स्मृतियों में युद्ध सम्बन्धी जो नियम प्रतिपादित हैं वे बड़े मृदु हैं । आपस्तम्ब धर्मसूत्र के अनुसार जो शत्रु शस्त्र विहीन हो गये हों या सिर के बाल खोले हुए व हाथ जोड़ कर दया की प्रार्थना करते हों या भाग रहे हों उन्हें नहीं मारना चाहिये । बौधायन सूत्र में लिखा है कि राजा को चाहिये कि शत्रु के विरुद्ध विष से बुझे हुए बाणों का प्रयोग न करे । इसी प्रकार युद्ध के समय बच्चों

स्त्रियों व वृद्धों पर प्रहार न किया जाए । गौतम धर्म सूत्र में लिखा है कि राजा और क्षत्रियों के लिए यह आवश्यक है कि वे युद्ध क्षेत्र में कभी मुंह न मोड़ें सदा अचल और निर्भय होकर युद्ध करें । युद्ध में शत्रु को मारना या घायल करना पाप नहीं है पर युद्ध में भी ऐसे व्यक्तियों का घात करना उचित नहीं है जिनके घोड़े मारे गये हों जो शस्त्रविहीन हो गये हों जो हाथ जोड़ कर खड़े हों जो सिर के बाल खोल कर भाग पड़े हों जो पीठ दिखाकर बैठ जाएं जो भाग कर वृक्षों या पर्वतों पर चढ़ जाएं और जो यह कहें कि हम ब्राह्मण या गाय हैं । गौतम के अनुसार विजयी योद्धाओं को रणक्षेत्र में पड़ा हुआ जो धन मिले वह उन्हीं का अपना होगा पर यदि युद्ध में विजय निरन्तर युद्धों के अनन्तर प्राप्त हुई हो तो शत्रु के धन में राजा का भी भाग होगा और शेष धन को योद्धाओं में विभक्त कर दिया जायगा । वाशिष्ठ सूत्र के अनुसार जो योद्धा युद्ध में मारे जाएं उनकी विधवाओं व सन्तान का पालन पोषण राजा को करना चाहिये ।

मनुस्मृति में भी युद्ध सम्बन्धी अनेक नियम प्रतिपादित किए गए हैं । मनु के अनुसार अन्य राज्यों के प्रति नीति के अंग निम्नलिखित हैं आसन यानसन्धि निग्रह द्वैधीभाव और संश्रय । जब राजा की शक्ति क्षीण हो तो उसे अपनी वर्तमान स्थिति को कायम रखने का प्रयत्न करना चाहिए । तब उसे युद्ध से बचना चाहिये इसी को आसन कहा गया है । अपने किसी मित्र राजा के अनुरोध से भी राजा आसन की नीति का अनुसरण कर सकता है । जब राजा शत्रु के विरुद्ध प्रक्रम करे तो उसे यान कहते थे । यह यान भी मित्र राज्य के साथ संहत सन्धिद्वारा सम्बद्ध होने के कारण हो सकता था या राजा स्वयं भी इसका उपयोग कर सकता था । अन्य राज्यों के साथ सन्धि या विग्रह युद्ध करना भी परराष्ट्रनीति के महत्त्वपूर्ण अंग थे । एक राजा से सन्धि करके अन्य के विरुद्ध युद्ध करने को द्वैध कहते थे । आत्मरक्षा के प्रयोजन से किसी शक्तिशाली राजा के सम्मुख अपने को अर्पित कर देने का नाम संश्रय था । अन्य राज्यों या राजाओं से बरतते हुए ये छः प्रकार की नीतियां ही प्रयोग में लाई जाती थीं । इन्हीं का नाम षाड्गुण्य भी था । मनु ने इनका संक्षेप के साथ प्रतिपादन किया है पर कौटलीय अर्थशास्त्र में इनका विशद रूप से निरूपण किया गया है ।

युद्ध के सम्बन्ध में मनु के जो विचार हैं वे उल्लेखनीय हैं । मनुस्मृति में लिखा है कि राजा साम दान और भेद की नीति का एक एक करके या सम्मिलित रूप से उपयोग करके अन्य राज्यों को जीतने का प्रयत्न करे युद्ध द्वारा नहीं युद्ध से प्राय: दोनों पक्षों का

ही नाश हो जाता है। पर मनु यह भी भली भांति समझते थे कि कतिपय परिस्थितियों में युद्ध अनिवार्य होता है। अत: जब आवश्यक हो तो नि:शंक होकर युद्ध का भी आश्रय लिया जाए यद्यपि यह युद्ध धर्मानुकूल सुयुद्ध होना चाहिये। युद्ध किस ढंग से लड़ा जाए और किस प्रकार व्यूह की रचना आदि की जाए इसका भी मनुस्मृति में निरूपण किया गया है। मनु शत्रु के प्रति किसी भी प्रकार की दया प्रदर्शित करने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने यहां तक लिखा है कि शत्रु राष्ट्र को भली भांति पीड़ित किया जाए और उसके अन्न जल व ईंधन तक को दूषित कर दिया जाए। पर जब शत्रु परास्त हो जाए तो उसके राजवंश का मूलोच्छेद कर देना मनु को भी अभीष्ट नहीं था। इसी कारण उन्होंने प्रतिपादित किया है कि पराजित राज्य के राजवंश के ही किसी व्यक्ति को राजगद्दी पर बिठाया जाए और उसके साथ सन्धि कर ली जाए। जिस ढंग से धर्मसूत्रों में शस्त्रविहीन या असावधान शत्रु के विरुद्ध लड़ने का निषेध किया गया है वैसा ही जिधान मनुस्मृति में भी विद्यमान है।

महाभारत में भी युद्ध के सम्बन्ध में इसी प्रकार के नियम प्रतिपादित हैं। शान्ति पर्व में लिखा है कि ऐसे शत्रु को नहीं मारना चाहिये जिसके प्राण निकलनेवाले हो जो सन्तानहीन हो जिसके शस्त्र टूट गये हों जो विपद्ग्रस्त हो जिसके धनुष की डोरी टूट गई हो व जिसके वाहन घोड़े आदि मर गये हों ऐसे शत्रु को या तो उसके घर पर पहुंचा देना चाहिए और या उसका इलाज करना चाहिये। जब वह स्वस्थ हो जाए तो उसे मुक्त कर देना चाहिये। महाभारत में इस बात पर बहुत जोर दिया गया है कि युद्ध धर्म के अनुसार ही लड़ना उचित है। वहां लिखा है कि राजा कभी अधर्म से पृथिवी के विजय की इच्छा न करे। अधर्म से जो विजय की जाती है वह न स्थायी रहती है और उसके कारण स्वर्ग की प्राप्ति भी संभव नहीं रहती। युद्ध के ये धर्मानुकूल नियम क्या हैं इनका भी महाधारत में निरूपण किया गया है। इनके अनुसार कवच पहन कर ऐसे योद्धा से नहीं लड़ना चाहिये जिसने कवच न पहना हुआ हो। अकेले योद्धा से सेना लेकर नहीं लड़ना चाहिये पदाति से अश्वारोही को नहीं लड़ना चाहिये और जिसका शस्त्र टूट जाए उससे शस्त्र के साथ नहीं लड़ना चाहिये॥

महाभारत के अनुसार युद्ध एक गौरव की बात है। क्षत्रिय का धर्म ही युद्ध करना है। शैय्या पर लेटकर या रोग से ग्रस्त होका मृत्यु को प्रात होना उसके लिए गौरव का कारण नहीं है पर उसे युद्ध धर्मपूर्वक ही करना है अधर्म से नहीं। महाभारत में अधर्मपूर्वक युद्ध को पाप कहा

है ।

३ साम्राज्य के विकासकाल में परराष्ट्र नीति

बौद्ध युग में भारत में महाजनपदों व साम्रान्यों का विकास प्रारम्भ हो गया था । पर ये महाजनपद भी विजय करते हुए परास्त राजा का मूलोच्छेद करना धर्म के विरुद्ध मानते थे । एक जातक कथा के अनुसार जब कोशल के राजा ने काशी पर आक्रमण करने की तैयारी की तो काशी के मन्त्री ने उसे समझाते हुए कहामहाराज आप डरिये नहीं आपका अनर्थ नहीं होगा आपका राज्य आपका ही रहेगा आपको केवल कोशल के राजा की अधीनता ही स्वीकार करनी होगी । पर मगध के सम्राटों ने अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए अन्य राजाओं का उच्छेद किया इसीलिए पुराणों में उन्हें अधार्मिक कहा गया है । महापद्मनन्द जैसे मागध सम्राटों ने जिस प्रकार अन्य राजाओं का उच्छेद कर अपने विशाल साम्राज्य का निर्माण किया था वह प्राचीन आर्यों की धर्ममर्यादा के विरुद्ध ही था ।

भारतीय इतिहास के साम्रान्यकाल की परराष्ट्रनीति का सुविशद रूप से परिचय हमें कौटलीय अर्थशास्त्र से मिलता है । वहां परराष्ट्र नीति सम्बन्धी षाड्गुण्य का बड़े विस्तार से निरूपण किया गया है । भारतीय विचारकों के अनुसार सन्धि विग्रह आसन यान संश्रय और द्वैधीभाव को षाड्गुण्य कहा जाता था । जब पण प्रतिज्ञा पूर्वक किसी अन्य राज्य से कोई सम्बन्ध स्थापित किया जाए तो उसे सन्धि कहते थे । दूसरे राज्य पर आक्रमण का नाम विग्रह था । उदासीन वृत्ति तटस्थता को आसन कहते थे । शत्रु के विरुद्ध तैयारी की यान संज्ञा थी । अपने को दूसरे अधिक शक्तिशाली राजा के अर्पण कर देने का नाम संश्रय था । एक के साथ सन्धि और दूसरे के साथ विग्रह की नीति को द्वैधीभाव कहते थे । कौटल्य ने लिखा है अन्य राज्यों में बरतते हुए निम्नलिखित नीति का अनुसरण किया जाए जब दूसरे राज्य की शक्ति अधिक हो तो उससे सन्धि कर ली जाए यदि अपने राज्य की शक्ति अधिक हो तो विग्रह किया जाए जब यह देखा जाए कि न दूसरा हमें परास्त कर सकता है और न हम दूसरे पर विजय पा सकते हैं तो आसन उदासीन नीति का उपयोग किया जाए जब अपने राज्य में पर्यात शक्ति हो तो युद्ध की तैयारी की ओर ध्यान दिया जाए यदि अपना राज्य शक्तिहीन हो तो किसी अन्य राज्य का संश्रय आश्रय लिया जाए और जब साध्य उद्देश्य के साधन के लिए किसी अन्य राज्य के सहाय की आवश्यकता हो तो उससे सन्धि करके दूसरे के साथ विग्रह इस प्रकार

द्वैधीभाव की नीति को अपनाया जाए। समय की परिस्थिति के अनुसार इनमें से जो भी नीति उपयुक्त हो राजा को उसी का अनुसरण करना चाहिए। किन परिस्थितियों में किस नीति का अनुसरण उपयोगी होगा इसका भी कौटल्य ने विशद रूप से विवेचन किया है। विजिगीषु राजा के लिए युद्ध की उपयोगिता अवश्य थी पर कौटल्य के मन्तव्य के अनुसार यदि सन्धि और विग्रह दोनों नीतियों से एक समान लाभ सम्भावित हो तो सन्धि की नीति अधिक उत्तम है क्योंकि युद्ध से शक्ति का क्षय धन का व्यय जनता का प्रवास आदि कितनी ही हानियां होती हैं। विजिगीषु राजा के लिए केवल युद्ध ही एकमात्र उपाय नहीं है परिस्थिति के अनुसार षाड्गुण्य के सभी उपायों का उसे प्रयोग करना चाहिए। जो अन्य राजा बल में अपने तुल्य व अपने से श्रेष्ठ हों उनके प्रति सन्धि की नीति उपयुक्त है। बल में अपने से हीनों के प्रति ही विग्रह करना चाहिए। यदि अपने से बलशाली के साथ युद्ध किया जायगा तो उसकी वही गति होगी जो पदाति के हस्ति से लड़ते हुए होती है। कच्चे बरतन जैसे परस्पर टकराकर टूट जाते हैं वैसे ही बराबर बल वाले राजा आपस में लड़कर नष्ट हो जाते हैं। अत: सन्धि की नीति का अनुसरण ही श्रेयस्कर है। ये सन्धियां अनेक प्रकार की होती हैं : १ निर्बल राजा बलवान राजा से आक्रान्त होने पर उसे धन सेना व अपनी भूमि देकर सन्धि कर सकता है। २ इस शर्त पर सन्धि करना कि विजेता को जब आवश्यकता होगी विनित राजा अपने सैनिकों की निश्चित संख्या को साथ लेकर उसकी सहायता के लिए प्रस्तुत हो जायगा। ३ इस शर्त पर सन्धि करना कि राजा स्वयं तो नहीं पर उसका सेनापति व राजकुमार सैनिकों के साथ विजेता की सहायता के लिए प्रस्तुत रहेंगे। इस शर्त पर संधि करना कि राजा स्वयं व उसकी सेना को जहां जाने का आदेश दिया जायगा वे वहां चले जाएंगे। ५ धन देकर संधि कर लेना। इस प्रकार की सन्धि में राजा धन देकर अपने राज्य के सब अंगों की रक्षा कर सकने में समर्थ होता है। ६ इतना अधिक धन देकर सन्धि कर लेना कि धन की सम्पूर्ण मात्रा की अदायगी सुगम न हो। ७ अपने राज्य की भूमि का एक भाग देकर सन्धि कर लेना। ८ राजधानी के अतिरिक्त सब भूमि को देकर सन्धि करना। ९ राज्य की आमदनी को अमानत के रूप में रखकर सन्धि करना। १० राज्य की आमदनी से भी अधिक प्रदान करने की बात के आधार पर सन्धि करना। ये विविध प्रकार की सन्धियां देश और काल की परिस्थिति के अनुसार की जाती थीं। नि:सन्देह कौटल्य के समय के विविध राजा आपस में बरतते हुए अपनी शक्ति के अनुरूप सन्धियां

करने में तत्पर रहते थे। इन सन्धियों के सम्बन्ध में कौटलीय अर्थशास्त्र में बहुत विस्तार के साथ विचार किया गया है पर उसे यहां लिख सकना सम्भव नहीं है।

युद्ध के सम्बन्ध में भी कतिपय सूचनाएं अर्थशास्त्र से प्राप्त होती हैं जिनका उल्लेख उपयोगी है। कौटल्य ने दो प्रकार के युद्ध लिखे हैं प्रकाशयुद्ध और कूटयुद्ध। जिस राजा की शक्ति हो जिसने अपने षड्यंत्रों द्वारा शत्रु पक्ष में प्रवेश कर लिया हो और जिसने अपने पक्ष की रक्षा की पूरी व्यवस्था कर ली हो उसे प्रकाशयुद्ध का प्रयोग करना चाहिए। जब राजा की स्थिति ऐसी सुदृढ़ न हो तो कूटयुद्ध का आश्रय लेना भी उचित है। कूटयुद्ध में शत्रु को धोखा देने का प्रयत्न किया जाता था। विजिगीषु राजा की पराजय हो रही है और शत्रु की विजय हो रही है यह प्रकट करने के लिए अनेक उपाय किये जाते थे ताकि शत्रु विजय के मद में असावधान हो जाए और फिर अचानक हमला करके उसे जीत लिया जाए। शत्रु के सैनिकों सेनापतियों और अन्य पुरुषों को भी अपने पक्ष में लाने के लिए अनेक उपाय प्रयुक्त किये जाते थे।

शुक्रनीति सार में भी धर्मयुद्ध और कूटयुद्ध में भेद किया गया है। धर्मयुद्ध में हाथीसवार को हाथी सवार से पदाति सैनिक को पदाति सैनिक से अश्वारोही को अश्वारोही से और रथी को रथी से ही युद्ध करना चाहिए। यही नहीं जिसके पास जो हथियार हो उसे उसी हथियार वाले से युद्ध करना उचित है। धर्मयुद्ध में इन लोगों का घात नहीं करना चाहिए भय से छिपकर बैठे हुए नपुंसक हाथ जोड़ते हुए जिसने सिर के बाल खोल दिए हों मैं तोरा हूं ऐसा कहने वाले सोये हुए कवच से विहीन नंगे निराश जो लड़ाई में सम्मिलित न हो जो केवल युद्ध को देख रहा हो जो किसी दूसरे से युद्ध कर रहा हो जो खापी रहा हो जो डरा हुआ हो व जो भाग रहा हो। साथ ही युद्ध के अवसर पर बालक वृद्ध व स्त्री की भी हत्या नहीं करनी चाहिए। पर शुक्र के अनुसार ये नियम केवल धर्मयुद्ध के लिए हैं। कूटयुद्ध का एकमात्र उद्देश्य जिस प्रकार भी सम्भव हो शत्रु का विनाश करना ही होता है। अत: उसमें सब प्रकार के उपायों का प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण देकर शुक्र ने बताया है कि राम और कृष्ण जैसे महापुरुषों ने भी बाली और यवन नमुचि का कूटनीति द्वारा घात किया था। इन प्रसंग में शुक्र ने कूटयुद्ध के अनेक उपायों का निर्देश किया है जिसमें धन का लोभ देना धोखा देना शत्रु सेना में फूट डालना आदि सम्मिलित हैं। कौटल्य ने भी कूटयुद्ध के इन्हीं उपायों का वर्णन किया है।

परास्त शत्रु के सैनिकों व अन्य व्यक्तियों को दास बनाने के सम्बन्ध में भी कतिपय निर्देश प्राचीन ग्रंथों में विद्यमान हैं । कौटलीय अर्थशास्त्र में विविध प्रकार के दासों का परिगणन करते हुए ध्वजाहृत दासों का भी उल्लेख है । ध्वजाहृत दास उन्हें कहते थे जिन्हें युद्ध में विजय के कारण दास बनाया गया हो । नारदस्मृति में पन्द्रह प्रकार के दासों का उल्लेख है जिनमें एक युद्ध में प्राप्त भी है । ध्वजाहृत दासों का उल्लेख सूचित करता है कि प्राचीन भारत में विजित राज्यों के निवासियों को दास बना लेने की प्रथा का भी सर्वथा अभाव नहीं था यद्यपि दासों का क्रयविक्रय प्रधानतया आर्यभिन्न म्लेच्छ जातियों में ही विद्यमान था ।

४ शान्ति के काल में राज्यों के पारस्परिक सम्बन्ध

युद्ध के समय विविध राज्यों में किस प्रकार का सम्बन्ध प्राचीन भारत में होता था यह प्रतिपादित करने के अनन्तर यह बताना भी आवश्यक है कि शांति के समय में वे परस्पर क्या सम्बन्ध रखते थे । अन्य राज्यों में अपने दूत रखने व भेजने की प्रथा प्राचीन भारत में भी विद्यमान थी । कौटल्य ने तीन प्रकार के दूतों का उल्लेख किया है निसृष्टार्थ परिमितार्थ और शा हर । जिसमें अमात्य के सब गुण विद्यमान हों और जो अमात्य की स्थिति रखता हो ऐसे दूत को निसृष्टार्थ कहते थे । निसृष्टार्थ का अर्थ है जिसे कतिपय कार्य सुनिश्चित रूप से सुपुर्द किये गए हों । परिमितार्थ दूतों की स्थिति अमात्यों से कुछ कम एक चौथाई कम मानी जाती थी और शासनहर दूत की स्थिति और भी हीन समझी जाती थी । निसृष्टार्थ दूत को अपने राजा की ओर से विवादग्रस्त विषय का निर्णय करने का पूरा पूरा अधिकार प्रात होता था । परिमितार्थ दूत केवल वही निर्णय कर सकता था जो उसे निर्दिष्ट किया गया हो और शासनहर दूत राजा का सन्देश व अधीनता स्वीकृत करने वाले राजाओं की सेवा में अधिपति राजा का शासन राजाज्ञा ले जाने और उसका उत्तर लाने का ही कार्य करता था । दूतों का यह कार्य भी था कि वे जिस राज्य में नियुक्त हों उसकी भौगोलिक दशा क्षेत्रफल सैन्य संगठन छावनी दुर्ग युद्ध के साधन उस राज्य की गुत बातों और निर्बल व सबल स्थितियों का भी पता करें और इन सब बातों से अपने राजा को सूचित करते रहें । इन बातों का परिचय प्राप्त करने के लिए दूत गुप्तचरों का भी प्रयोग करते थे । उन्हें जो कुछ इस प्रकार ज्ञात हो उसे वह गुप्त लिपि चित्र लेख्य संज्ञा द्वारा अपने राजा की सेवा में भेज देते थे । दूत तभी दूसरे राज्य की राजधानी में प्रवेश करता था जबकि वह अनुमति प्राप्त कर ले । अनुज्ञात होकर वह उस कार्य का निवेदन

करता था जिसके लिए उसकी नियुक्ति की गई हो। यदि दूत देखता था कि उससे मिलते हुए दूसरे देश के राजा की वाणी मुख आंख व हावभाव में प्रसाद गुण है उसका समुचित रीति से सत्कार किया गया है उससे कुशल प्रश्न किये गए हैं उससे दूत को भेजने वाले राजा व उसके सम्बन्धियों मित्रों आदि के सम्बन्ध में मंगलस्मरण की बातें पूछी गई हैं उसे राजसिंहासन के समीप आसन दिया गया है तो समझना चाहिए कि राजा सन्तुष्ट है। यदि यह अनुभव किया जाए कि राजा सन्तुष्ट नहीं है तो दूत को उससे कहना चाहिए दूत तो राजाओं के मुख के समान होता है। यदि उसके सामने शस्त्र भी उठा लिया जाए तो भी उसे राजा की बात कहनी ही पड़ती है। दूसरों की बात कहना ही दूत का धर्म है। उसके तो साथी भी अवध्य होते हैं उसकी तो बात ही क्या। जब तक दूत दूसरे राज्य में रहे उसे वहां प्राप्त होने वाले सत्कार से अपनी वास्तविक स्थिति को भूल नहीं जाना चाहिए। उसके लिए यह भी आवश्यक है कि वह मद्य और स्त्रियों से बचकर रहे अकेला सोये और दूसरे राज्य के राजा की शक्ति व वैभव के रोब में न आये। वर्तमान समय के समान प्राचीन भारत में भी दूत को अवध्य माना जाता था। रामायण और महाभारत में भी दूत को अवध्य कहा गया है। मनुस्मृति के अनुसार सन्धि आदि के कार्य दूतद्वारा ही किये जाते हैं अत: उसका महत्त्व अमात्य के ही समान है। परराष्ट्र नीति का प्रयोग प्राय: दूत के हाथों में ही होता है।

प्राचीन भारतीय इतिहास में दूतों की सत्ता के अनेक निदर्शन विद्यमान हैं। यवन राजा सैल्युकस ने मेगस्थनीज़ को अपना राजदूत बनाकर चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था। डायमेचस बिन्दुसार मौर्य के दरबार में यवन राजा के राजदूत के रूप में रहा था। मौर्य राजाओं ने भी अपने दूत यवन राज्यों में भेजे थे। तक्षशिला के यवन राजा अन्तलिखित ऐंटिअल्काइडीस ने हेलिओदोरस को अपना दूत बनाकर विदिशा के शुंगवंशी राजा भागभद्र की सेवा में भेजा था। समुद्रगुप्त के दरबार में सिंहल के राजा ने और चालुक्यराज पुलकेशी द्वितीय के दरबार में ईरान के राजा ने दूत भेजे थे। इसी प्रकार के अन्य भी अनेक उदाहरण प्राचीन इतिहास में विद्यमान हैं। पर ये दूत प्राय: विशेष प्रयोजनों से और कुछ निश्चित समय के लिए ही भेजे जाते थे। वर्तमान समय के दूतावासों के समान प्राचीन भारत में भी दूतावासों की सत्ता थी यह भली भांति स्पष्ट नहीं है यद्यपि कौटलीय अर्थशास्त्र में दूतों का जिस ढंग से वर्णन है उससे सूचित होता है कि वे अपने साथियों के साथ विभिन्न राज्यों में पर्याप्त समय के लिए निवास किया करते थे।

भारतीय समाजवादके मौलिक आधार

सम्पूर्णानन्द

समाजवादके साथ भारतीय विशेषण जोड़ना भ्रामक प्रतीत होता है। किसी सार्वभौम सिद्धान्तको भौगोलिक परिधिमें बांधनेका प्रयत्न करना उसकी सार्वभौमिकताका अपहरण करना है। हम ऐसा प्रयत्न नहीं करना चाहते। भारतीय कहना अधिकसे अधिक इस बातका सूचक है कि इस विचारधाराका उदय भारतमें हो रहा है। वस्तुत: इस बातको बतलाना भी उतना ही अनावश्यक है जितना कम्युनिज़्मको जर्मन समाजवाद कहना। हम केवल एक कारणसे विशेषण लगा रहे हैं। समाजवाद शब्दका व्यवहार मार्क्स सम्मत समाजवादके लिए रूढ़ि सा हो गया है। उससे व्यावर्तन करनेके लिए ही विशेषणसे काम लिया गया है। सम्भव है आगे चलकर कोई अच्छा अर्थबोधक नाम निकल आये।

कुछ दिनोंसे हमारे देशमें सर्वोदयवादका प्रचार हो रहा है। इसका आरम्भ तो महात्माजीके समयमें हुआ था परन्तु आचार्य विनोबा भावेने इसको अधिक बल दिया है। इसका लक्ष्य भी समाजवादसे मिलता जुलता है। सर्वोदयका अर्थ है सबका उदय और उदयमें सर्वांगीण भौतिक बौद्धिक आध्यात्मिक उन्नति विकास विहित हैं। सर्वोदय दर्शनमें दादा धर्माधिकारी कहते हैं कि सर्वोदयका उद्देश्य हैं: सर्वेपि सुखिन: सन्तु सभी सुखी हों। सर्वोदयवादी भी शोषणका अन्त करना चाहता है। परन्तु उसकी कार्यशैली कम्युनिस्टसे भिन्न है और शैलीका आधार भी भिन्न है। मेरी विचारधारा कई बातोंमें सर्वोदयवादसे मिलती है। फिर भी मैंने सर्वोदय नामका व्यवहार नहीं किया है। इसका कारण यह है कि यह शब्द कुछ दिनोंसे चल रहा है और सर्वोदय मतके अनुयायियोंका अपना समुदाय है। यह सम्भव है कि वह इस बातको पसन्द न करें कि उनका पारिभाषिक शब्द ऐसे अर्थमें व्यवहृत हो जो उनको पूर्णतया सम्मत न हो।

जिन बातोंमें मेरा मत कम्युनिज़्मसे नहीं मिलता उनमें से कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। उनका परिणाम यह है कि बाहरी कार्यक्रममें कुछ अंशोंमें समता होते हुए भी भारतीय समाजवाद

और कम्युनिज़्मके मार्ग पृथक् पृथक् हैं। इन बातोंपर गम्भीर मनन करना परमावश्यक है अन्यथा भारत अपनी खोजमें सफल न हो सकेगा और न दूसरोंका मार्ग प्रदर्शन कर सकेगा।

क जगत्का आधार

मार्क्सके पहले हीगेलने कहा था कि जगत्का आधार वह मूल पदार्थ जिससे यह विश्व विकसित हुआ है चिन्मय है। अपने स्वभावके कारण वह त्मक विधिसे परिवर्तित होता गया। मार्क्सने परिवर्तनकी ,त्मक विधिको तो स्वीकार किया परन्तु उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि आधारपदार्थ अचित् है। इसके लिए उन्होंने कोई पुष्ट प्रमाण नहीं दिया। उनको नित्य चेतन पदार्थकी सत्ता स्वीकार करनेमें कई अड़चनें देख पड़ती थीं। यदि चेतना अनादि है तो अनन्त भी होगी। इसका अर्थ यह हुआ कि जीव जन्मके पहले था और मरनेके बाद रहेगा। ऐसा माननेमें परलोक धर्म उपासना इन सबके लिए द्वार खुल जानेका डर था। इन चीज़ोंसे तो मार्क्सको लड़ना था। इनपर स विश्वास उठाना था इनको तोड़ना था और इनको नष्ट करके राजसत्ताको दुर्बल बनाना था इसलिए उन्होंने जड़ ही काट दी चेतन आत्माके लिए जगह रखी ही नहीं। परन्तु चेतनाकी प्रतीति तो होती है। कीड़ेसे लेकर विद्वान् तक सबमें चेतना है। इसके लिए उन्होंने यह माना है कि अचित् परमाणुओंके आकस्मिक संघातमें यह आनुषंगिक गुण उत्पन्न हो जाता है और संघातके बिखरनेपर लुप्त हो जाता है। जब हाइड्रोजन गन्धक और आक्सिजनके परमाणु विशेष रूपसे मिलते हैं तो गन्धकका तेजाब नामक द्रव्यकी सृष्टि होती है जिसमें दाहकता नामका विशेष गुण होता है। इन परमाणुओंके अलग हो जानेपर यह गुण तिरोहित हो जाता है। इसी प्रकार कार्बन हाइड्रोजन फ़ास्फ़ोरस नाइट्रोजन और आक्सिजनके विशेष प्रकारके योगसे एक द्रव्य बनता है जिसे प्रोटोप्लाज़्म सत्त्वमूल कहते हैं। उसमें चेतना नामका विशेष गुण प्रकट होता है। परमाणुओंके बिखर जानेपर चेतना भी लुप्त हो जाती है।

जड़वादसे मार्क्सको भले ही राजसंस्थान और धर्मसंस्थानसे लड़नेमें सुविधा मिली हो पर यह समीचीन नहीं है। जड़से चेतनकी उत्पत्ति समझायी नहीं जा सकती। संघातसे नये गुणोंका प्रकट होना ठीक उदाहरण नहीं है। वस्तुओंमें शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध गुण होते हैं। संघातसे मिलनेसे भले ही नये प्रकारके शब्दादि प्रकट हों परन्तु नया पुराने गुणका सजातीय है। गन्धक

आक्सिजन और हाइड्रोजनके मिलनेसे दाहकता प्रकट होती है जो अकेले इनमें नहीं होती परन्तु है वह स्पर्शका ही भेद विशेष और स्पर्श इनमें पहलेसे वर्तमान था । यदि सत्वमूलके अंगभूत हाइड्रोजन आदिमें चेतना किसी भी रूपमें कितनी भी प्रसुप्त मात्रामें पहलेसे रही होती तो उसका पीछेसे व्यक्त होना सम्भव होता पर यह मार्क्सके मतसे अमान्य है ।

हमारे मतमें जगत्का मूल तत्व चेतन था । यह अध्यात्म विषयकी पुस्तक नहीं है । अतः यहां अद्वैतवादके सूक्ष्म विवेचनकी आवश्यकता नहीं है । हम ऐसा मानते हैं कि जगत्का आधार पदार्थ एक अद्वय चिन्मय आनन्दस्वरूप था । एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं । चिन्मय शब्दका अर्थ चेतना और चेतन दोनों हो सकता है । जगत्का मूल वस्तुतः तो शुद्ध चेतना है । उस अवस्थामें उसे ब्रह्म कहते हैं । चेतन अवस्थामें उसीकी परमात्मा संज्ञा है । ब्रह्म परमात्मा कैसे हुआ यह विषय यहांके लिए अप्रासंगिक है । वही चिन्मय पदार्थ जब शरीरसे सम्बद्ध होता है चाहे वह शरीर कैसा भी हो तो उसे जीव कहते हैं ।

इस मतपर यह आक्षेप नहीं हो सकता कि चेतनसे जड़ कैसे उत्पन्न हुआ । हम ऐसा मानते हैं कि वस्तुतः जड़ अचेतन अनात्म कहीं है ही नहीं । दहकते कोयलेपर राख डाल देनेसे वह भले ही छिप जाये पर उसका अस्तित्व नहीं मिटता । कहीं चेतना पूर्णतया अभिव्यक्त है जैसे मनुष्यमें कहीं अर्धसुप्त सी है जैसे वनस्पतियोंमें कहीं अस्फुट है जैसे पत्थरमं जड़ चेतनमें बस इतना ही अन्तर है ।

ख पुरुषार्थ

साधारण बोलचालमें पुरुषार्थका अर्थ होता है पौरुष उद्यमशीलता साहस परन्तु इसका शास्त्रीय अर्थ है पुरुषका अर्थ अर्थात् मनुष्य जीवनका लक्ष्य । कुछ बातें तो ऐसी हैं जो मनुष्य और इतर प्राणियोंमें समान रूपसे पायी जाती हैं । प्रत्येक प्राणी जीवित रहना चाहता है । रहना चाहता है कहना चाहे यथार्थ न हो परन्तु सबमें ही अपने जीवनकी रक्षाकी प्रवृत्ति पायी जाती है । इस प्रकार सबमें ही सन्तति छोड़ जानेकी प्रवृत्ति विद्यमान है । मनुष्य सोचनेकी शक्ति रखता है इसलिए उसमें इन प्रवृत्तियोंका विस्तार पाया जाता है । इस समय जीवन निर्बाध चले ही आगे भी बाधा न पड़े । इसलिए भोज्य सामग्रीका घरका सवारीका धनका संग्रह किया जाता है । इसी प्रकार सन्तान उत्पन्न करके ही सन्तोष नहीं होता । सन्तानके जीवित रहने तथा सुखी

और सम्पन्न रहनेका भी प्रबन्ध किया जाता है। यह दोनों प्रवृत्तियां दोनों पुरुषार्थ सहज हैं विचारजन्य नहीं हैं। इनको क्रमात् अर्थ और काम कहते हैं। सभी अपना अपना अर्थ और काम चाहते हैं इसलिए जो वस्तुएं इन लक्ष्योंकी साधक हैं उनके लिए संघर्ष होना स्वाभाविक है। एक ही हिरनपर एक ही नौकरीपर घर बनाने योग्य एक ही स्थानपर एक ही युवतीपर दो पुरुषोंकी दृष्टि पड़ सकती है एक ही युवा दो स्त्रियोंको आकृष्ट कर सकता है। ऐसी दशामें झगड़े होते हैं। परन्तु समझदार मनुष्य यह देखता है कि सदैव अपने ही अर्थ और कामकी रट लगाये रहनेसे काम न चलेगा। दूसरोंकी इच्छाओंका लिहाज़ किये बिना अपनी इच्छाएं भी पूरी न होंगी। अतः वह अपने ऊपर नियन्त्रण करता है: समुदायके हितकी ओर ध्यान देता है। बीजरूपसे यह बात उन पशुओं में भी पायी जाती है जो झुण्ड बनाकर रहते हैं। मनुष्य यह भी सोचता है कि मैं अपने अर्थ और कामकी सिद्धि केवल अपने सामर्थ्यसे नहीं कर सकता। दूसरोंके सहयोगकी पदे पदे आवश्यकता पड़ती है। अतः वह अपनी ओरसे सहयोगकी ओर प्रवृत्त होता है। मुझे दूसरोंके प्रति ऐसा व्यवहार करना चाहिए इस भावका उदय होता है। पहले दोनों पुरुषार्थ भले ही भूल न जायें परन्तु उनका स्थान गौण हो जाता है। अपने कर्तव्यकी ओर मुख्यतया ध्यान रहता है। यदि सब अपने कर्तव्यका पालन करें तो सबको अर्थ और कामकी प्राप्ति निष्प्रयास हो जाये। इस प्रवृत्तिको जीवनके इस लक्ष्यको अपने कर्तव्योंको पूरा पालन करने जिस जिसकी संकल्पपूर्वक या असंकल्पपूर्वक सहायतासे हमारा हित साधन हो रहा है उनके प्रति अपने ऋणको चुकानेके लिए निरन्तर जागरूक रहनेको इस सतत भावनाको धर्म कहते हैं। यह मनुष्यका तीसरा पुरुषार्थ है।

मनुष्य सुखकी खोजमें रहता है परन्तु उसे स्थिर सुख नहीं मिलता। इतस्ततः दौड़ता रहता है। किसीने कहा है:

स्कन्धात्स्कन्धं नयन् भारं विश्रामं मन्यते यथा।
एवं दुःखान्तरं दुःखात् सुखं गत्वा हृष्यते॥

जो मनुष्य बोझ दो रहा है वह यदि कन्धा बदल लेता है तो आराम मिलता है यद्यपि बोझमें कोई कमी नहीं होती इसी प्रकार एक दुःखसे दूसरे दुःखका अनुभव होनेमें सुखकी प्रतीति होती है। इस निरन्तर दौड़ धूपका सुखकी अमिट भूखका कारण स्पष्ट है। जीव उस चेतन पदार्थसे अभिन्न है जो जगत्‌का मूल है। वह भी चिन्मय है आनन्द स्वरूप है परन्तु इस समय अपने सच्चे रूपका अनुभव

नहीं हो रहा है । अपनेमें कमीकी बराबर अनुभूति हो रही है । यह पता नहीं है कि मैं क्या ढूंढ़ता हूं परन्तु जैसा हूं वह सब कुछ नहीं है ऐसा लगता रहता है । अपने स्वरूपका ज्ञान नहीं है । और जहां अज्ञान है वहां अशक्ति है । अज्ञानसे छुटकारा पाना अपने स्वरूपमें स्थित होना जीवका चौथा और चरम पुरुषार्थ है । इसको मोक्ष कहते हैं ।

ग व्यक्तिका महत्त्व – ऐतिहासिक जड़वादका स्थान

अज्ञान कैसे दूर हो इसके उपाय तो ऋषि मुनियोंने धर्म प्रवर्तकोंने और प्रमुख दार्शनिकोंने बताये हैं । हमको उनपर यहां विचार नहीं करना है । हमने इस प्रश्नका चर्चा वहींतक किया है जहांतक उसका सामाजिक संघटनसे सम्बन्ध है । जब हम जानते हैं कि मनुष्यका स्वाभाविक लक्ष्य क्या है उसका झुकाव किधर है तो समाजका संघटन इसी दृष्टिसे होना चाहिए कि इस लक्ष्यकी सिद्धि हो । अन्यथा निरन्तर संघर्ष होता रहेगा । पुरुषको समाजके नियम बन्धन जैसे प्रतीत होंगे । वह असन्तुष्ट रहेगा और बेड़ियोंको तोड़नेके प्रयासमें लगा रहेगा । किसी मनुष्यका किसी दूसरेसे झगड़ा नहीं है फिर भी झगड़ते रहते हैं ईर्ष्या द्वेष असूयाके शिकार बने रहते हैं । यदि किसी अंधेरी कोठरीमें दस अन्धोंको बन्द कर दिया जाये तो बाहर निकलनेके प्रयत्नमें एक दूसरेसे टकराते रहेंगे यद्यपि किसी को किसीसे लड़नेका कोई कारण नहीं है ।

दूसरोंके साथ रहकर ही मनुष्य मनुष्य बन सकता है । मैत्री उदारता आत्म संयम परार्थसाधन क्षमा आदि गुणोंका समुदय एकाकी जीवनमें नहीं हो सकता और यही गुण मनुष्यको धर्म और मोक्षकी ओर ले जाते हैं । जो संठन – पारिवारिक सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक – इन गुणोंके विकासको प्रश्रय देगा वही स्थायी होगा ।

यदि प्राणीकी चेतना कोई आकस्मिक और नश्वर गुण होती तो ऐसा माना जा सकता था कि समाज और सभ्यताका विकास ऐतिहासिक जड़वादके सिद्धान्तके अनुसार द्वन्द्वात्मक प्रणालीसे हुआ है । यह हम नहीं कहते कि विकास द्वन्द्वात्मक ढंगसे नहीं होता यह भी हमारा कहना नहीं है कि आर्थिक कारण महत्त्व नहीं रखते । हमारा अनुरोध यह है कि इन सबसे बढ़कर महत्त्व जीवके स्वभावका है । उसके कुछ अपने सहज प्राकृतिक अनुच्छेद्य गुण हैं वह ज्ञानतः एक विशेष दिशामें जाना चाहता है और उधर जानेसे रोका नहीं जा सकता । जगत्में जो शक्तियां काम कर रही हैं उनमें जीवकी अपनी प्रवृत्तियां मूर्धन्य हैं । आर्थिक शक्तियां काम करती हैं । वह

बलवती हैं। जीव उनसे बंधता है और उनसे बहावमें बहता है। परन्तु क्या आर्थिक और क्या दूसरी शक्ति किसीमें यह सामर्थ्य नहीं है कि जीवको पूर्णतया बहा ले जाये। वह उन शक्तियोंको भी मोड़ता है। यों कह सकते हैं कि प्रत्येक क्षणमें मानवजगत्में जो गति हो रही है वह जीवकी मोक्षप्रवृत्ति और आर्थिक तथा दूसरी बाहरी शक्तियोंका गणित शास्त्रके अनुसार परिणाम है।

किसी क्षणविशेषमें सभी जीव या जीवोंके सभी समुदाय समान अवस्थामें नहीं होते अत: बाह्य शक्तियोंका उनपर भिन्न भिन्न प्रभाव पड़ता है। कोई मार्क्सवादी यह नहीं कहता कि मनुष्य केवल आर्थिक प्रेरणाओंके अनुसार काम करता है। वह भी यह मानता है कि मनुष्यको नैतिक स्तरसे स्फूर्ति मिलती है। हमारा और मार्क्सवादका अन्तर इस बातमें है कि हम कुछ गुणोंको कुछ नैतिक प्रवृत्तियोंको मनुष्यके स्वतन्त्र नित्य स्वभावकी अभिव्यक्ति मानते हैं मार्क्सके अनुसार वह सब आर्थिक परिस्थितियोंके ही परिणाम हैं। मार्क्सवादीके अनुसार किन्हीं गुणोंकी उत्कृष्टताकी कसौटी यह है कि वह उस दिशामें बढ़नेमें सहायक होते हैं जिधर आर्थिक शक्तियां मनुष्यको ले जा रही हैं। हमारा यह कथन है कि कुछ गुण जीवके स्वभावसे वैसे ही अच्छेद्य हैं जैसे आगसे जलन। उनकी उपादेयता इसी बातमें है चाहे वह भौतिक उत्कर्षकी ओर ले जायें या न ले जायें। हमारा यह विश्वास निश्चय ही है कि उनका प्रभाव आर्थिक जीवनपर भी सर्वथा अच्छा पड़ेगा।

घ व्यक्ति समाज और राज

मोक्षके जो भी साधन होते हों उनको उपलब्ध करना समाजके बस की बात नहीं है। इस मार्गपर तो अलग ही चलना होता है ऐसा उन सब लोगोंने कहा है जो इस विषयके जानकार थे और हैं। परन्तु व्यक्तिको समाजमें रहना है अत: समाजको वह परिस्थिति उत्पन्न करनी चाहिए जिसमें व्यक्तिके पथमें अड़चनें कमसे कम पड़ें संघर्षके अवसर कमसे कम आवें। प्रबन्ध ऐसा होना चाहिए कि व्यक्तिको हीनताका अनुभव न हो उसको पदे पदे इच्छाभिघातका अनुभव न हो। इसके लिए उचित शिक्षा की बहुत बड़ी आवश्यकता है। यदि मनुष्यके सामने भौतिक अभ्युदय वैभव विपुल धन अधिकार को आदर्श रखा गया तो व्यक्ति व्यक्तिमें समूह समूहमें राष्ट्र राष्ट्रमें संघर्ष अवश्यम्भावी है।

समाजके हितका बहुत चर्चा होता है परन्तु व्यक्तिके हितसे पृथक् समाजका कोई हित नहीं हो सकता। व्यक्तिके उत्कर्ष उसकी लक्ष्यसिद्धिके उपकरणोंको एकत्र करना ही समाजका काम है

इसीमें समाजका हित है। राज समाजका अंगमात्र है। अपने कार्य संचालनके लिए समाज कई संस्थानोंसे काम लेता है। पाठशाला न्यायालय राज – यह समाजके भिन्न भिन्न कामोंके लिए उपकरण औज़ार हैं। जब समाजका ही व्यक्तिसे पृथक् कोई हित नहीं है तो यह कहना निरर्थक है कि उसके किसी अंगका अपना कोई पृथक् हित हो सकता है। राज भले ही सबसे महत्त्वपूर्ण उपकरण हो परन्तु उसका पद समाजसे ऊंचा नहीं हो सकता। यह कहना ग़लत है कि व्यक्तिके कोई नैसर्गिक अधिकार नहीं हैं जो अनुमति राज्य दे दे वही अधिकार है। व्यक्ति अपने जीवस्वरूपको अपने स्वभावको छोड़ नहीं सकता। यह स्वभाव उसको राज या समाजने नहीं दिया है। इसी स्वभावमें उसके नैसर्गिक अधिकार निहित हैं। व्यक्तिकी कृत्स्नता उसकी पूर्णता अपने शुद्ध स्वरूपमें स्थित होनेमें है राजकी इच्छाके अनुसार काम करनेमें नहीं। आपसी संघर्षको मिटानेके लिए तथा सबके हितके प्रबन्धके लिए व्यक्तिने काम करनेकी कुछ सुविधाएं राजको दे रखी हैं अपने ऊपर कुछ नियन्त्रण स्वीकार कर लिया है। इसी स्रोतसे राज्यको व्यक्तिके ऊपर अधिकार प्राप्त होते हैं परन्तु यह अधिकार व्यक्तिके नैसर्गिक अधिकारोंका लोप नहीं कर सकते।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे मतसे सामुदायिक संव्यूहन और विकासका केन्द्रबि केन्द्रबिन्दु व्यक्ति है। राज्य और समाज व्यक्तिके लिए हैं व्यक्ति उनके लिए नहीं है। व्यक्तिसे आशा की जाती है कि वह इस प्रकार काम करेगा कि उसका प्रेरक स्वार्थ नहीं परार्थ हो। इससे उसकी धर्म प्रवृत्तिकी तुष्टि होती है और उसकी आत्माका विकास होता है। अपनेसे बड़ी वस्तुके साथ तादात्म्य करनेसे अपना स्व क्षुद्रबन्धनोंके ऊपर उठता है और अपने सच्चे रूप अपने स्वरूपके निकट आता है।

ङ उपासना

मार्क्सवादमें किसी प्रकारकी उपासनाके लिए जगह हो ही नहीं सकती। जब न ईश्वर है न जीव है तो कौन किसकी उपासना करे और क्यों करे। मृत्युके बाद कुछ है नहीं इसलिए परलोकका प्रश्न नहीं उठता। हमारे मतके अनुसार ईश्वर भी हो सकता है जीव है ही मरनेके बाद जीवकी कोई अवस्था तो होती ही होगी उसको परलोक कहें या कुछ और। मेरे जैसे कुछ लोग पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्तको भी मानते हैं। इस शरीरसे जो कुछ किया जाता है उसका

प्रभाव शरीरके साथ ही समाप्त नहीं होता । हमारा प्रत्येक काम पुरुषार्थसिद्धिमें साधक या बाधकरूपसे प्रभाव डालता है । परन्तु इन प्रश्नोंपर इस पुस्तकमें विचार करना अप्रासंगिक समझकर छोड़ देता हूं । यदि मनन करनेके बाद किसीकी बुद्धि किसी प्रकारकी उपास्य सत्ताके अस्तित्वको स्वीकार करती है तो उस व्यक्तिको उपासना करनेका पूरा अधिकार है । उपासना समाजवादी विचारधाराके सर्वथा अनुकूल है ।

तटस्थता और विश्वशांति

श्रीमन्नारायण

भारत का समाजवाद तटस्थता और पंचशील की नीति के द्वारा विश्वशांति और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की स्थापना के लिए सच्चाई से काम कर रहा है। तीसरी पंचवर्षीय योजना की पहली वाक्यावली में ही कहा गया है भारत के विकास का बुनियादी लक्ष्य विश्वशांति के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है और उसी पर निर्भर करता है। आधुनिक शस्त्रास्त्रों की मदद से लड़ा गया युद्ध न केवल प्रगति की आशाओं को समाप्त कर देगा बल्कि मानव जाति के अस्तित्व को भी खतरे में डाल देगा। इसलिए राष्ट्रीय प्रगति के लिए शांति का कायम रहना निहायत जरूरी और आवश्यक शर्त है।

भारत की तटस्थता अथवा गुटों से अलग रहने की नीति उसकी अहिंसा और विश्व बंधुत्व की प्राचीन परंपराओं के अनुकूल है। वह भगवान् बुद्ध की महान् शिक्षाओं सम्राट अशोक के आदेशों और महात्मा गांधी के आदर्शों के अनुसार है। नेहरूजी दोनों शक्ति गुटों के सैनिक गठबंधनों से बिल्कुल अलग रखकर तटस्थता अथवा शांतिमय सहअस्तित्व की नीति के शानदार निर्माता थे। जिस अटूट श्रद्धा और दृढ़ता के साथ भारत इस नीति का अनुसरण कर रहा है इससे एशिया और अफ्रीका के अनेक नवोदित स्वतंत्र राष्ट्रों को प्रेरणा मिली है। यद्यपि हमारी नीति को अनेक पश्चिमी लोकतंत्री देशों ने शंका और संदेह की दृष्टि से देखा था किंतु चीनी आक्रमण से उत्पन्न स्थिति ने उसकी उपयुक्तता और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता को पर्याप्त मात्रा में प्रमाणित कर दिया है। यह बड़े संतोष का विषय है कि अमरीका और रूस दोनों ही हमसे इस कठिन स्थिति का सामना करने के लिए अब तटस्थ बने रहने का आग्रह कर रहे हैं। कारण वे दोनों ही अनुभव करते हैं कि भारत यदि किसी शक्ति-गुट में प्रत्यक्ष रूप में शामिल हुआ तो विश्व युद्ध हो जायगा। श्री [illegible] गेट्स्कल के शब्दों में अनेक एशियाई देशों की तटस्थतावादी नीति के मूल में यह भावना है कि उन्हें अपनी अर्थ व्यवस्थाओं का विकास करने में अपनी सब शक्ति लगानी

चाहिए और रक्षा पर भारी व्यय नहीं करना चाहिए। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम भारत और मानवता के हित में तटस्थता की नीतिपर नई श्रद्धा के साथ डटे रहें। यह कुछ अजीब सा लगता है कि हमारे देश में अब भी कुछ ऐसे व्यक्ति और समूह हैं जो भारत के पश्चिमी गुट में शामिल होने की जोरों से हिमायत करते हैं। चीनी आक्रमण से उत्पन्न संकट के समय अमरीका ब्रिटेन और अन्य देशों ने जिस तत्परता से हमारी सहायता की उसके लिए हम उनके आभारी हैं किंतु हमको बिना किसी शंका के यह समझना होगा कि भारतद्वारा तटस्थता की नीति को त्यागने का विचार न केवल विश्वशांति की दृष्टि से खतरनाक होगा बल्कि भारत की स्वतंत्रता और समृद्धि के लिए भी आत्मघातक होगा।

विज्ञान और अहिंसा

विज्ञान के इस युग में अगर कोई राष्ट्र हिंसा और अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष का मार्ग अपनाता है तो उसके फलस्वरूप सर्व संहारकारी विश्वयुद्ध छिड़ जायगा। गांधीजी ने अणुबम के लिए कहा था कि यह विज्ञान का अत्यंत राक्षसी उपयोग है और उन्होंने राष्ट्रों के आपसी मतभेदों को अहिंसा के जरिये हल करने की हिमायत की थी। विनोबाजी बार बार यह प्रत्यक्ष किंतु अक्सर भूली हुई बात दोहरा रहे हैं कि विज्ञान के साथ अहिंसा के योग से विश्वशांति स्थापित होगी और यदि उसका हिंसा के साथ गठबंधन हो गया तो वह विश्वव्यापी विनाश का जनक हो जायगा। आणविक शक्ति के विकास ने दुनिया के देशों को अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए सही चुनाव करने को विवश कर दिया है। गांधी शांति प्रतिष्ठान ने जून १९६२ में नई दिल्ली में आणविक अस्त्र विरोधी सम्मेलन का आयोजन करके बहुमूल्य सेवा की थी। उसके द्वारा भारत ने आणविक युद्ध से होनेवाले महाविनाश के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद की और दुनिया की महान् शक्तियों से अपील की कि वे अपने कदम पीछे हटा लें और मानव जाति को और आनेवाली पीढ़ियों को अकल्पनीय महासंकट से बचा लें। नेहरूजी ने इस सम्मेलन में भाग लिया था और आणविक अस्त्रों के परीक्षणों को न केवल स्थूल रूप में बंद करने की अपील की थी बल्कि उन अणुबमों से भी छुटकारा पाने का आग्रह किया था जो हमारे दिलों और दिमागों में निरंतर रोपे जा रहे हैं॥

यह अत्यधिक संतोष का विषय है कि भारत सरकार ने युद्ध कार्यों के लिए आर्थिक शवित का दृढ़ निश्चय किया है। यह निश्चय केवल नैतिक भावना से नहीं बल्कि व्यावहारिक आवश्य

कतावश किया गया है। भारतीय वाणिज्य और उद्योग मंडल की सभा में बोलते हुए नेहरूजी ने कहा था हथियार नित्य बदल रहे हैं और आधुनिकतम हथियार करीब करीब कुछ राष्ट्रों के एकाधिकार में ही हैं। वही उनका उत्पादन करते हैं और उपयोग भी कर सकते हैं। भारत अपने सब साधन विशेष प्रकार के हथियारों के निर्माण में नहीं खर्च कर सकता। हम वर्तमान में यह नहीं कर सकते और मैं नहीं चाहता कि भविष्य में भी ऐसा किया जाय। लोकसभा में भी नेहरूजी ने आणविक शस्त्रों का निर्माण न करने की नीति पर चलते रहने के भारत के संकल्प को दोहराया। प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का भी यही विचार है कि भारत को फिलहाल अणुबम नहीं बनाना चाहिए।

दुनिया के भविष्य के लिए यह शुभ चिह्न है कि अमरीका रूस और ब्रिटेन ने आणविक परीक्षणों को रोकने की सीमित संधि पर हस्ताक्षर कर आणविक शस्त्रों की समस्या को रचनात्मक दृष्टि से हल करने का प्रयास किया है। यदि इस कदम पर सही भावना से चला गया तो यथा समय आम निश्शस्त्रीकरण की पूरी संधि की जा सकेगी। अबतक स्पुतनिक मानव की उपलब्धि और उसकी हताशा के प्रतीक रहे हैं। लंदन के इकोनोमिस्ट पत्र के शब्दों में यह इसका कारण है कि अंतरिक्ष को जीतने की वैज्ञानिक दौड़ सहयोग की भावना से नहीं बल्कि शंका और विरोधी प्रतियोगिताओं से प्रेरित रही है। यह महत्व की बात नहीं कि अमरीका अथवा रूस कौन सबसे पहले चन्द्रमा अथवा अन्य नक्षत्रों पर पहुंचने में सफल होता है। किंतु यह शत प्रतिशत निश्चित है कि यदि आधुनिक विज्ञान और अंतरिक्ष विद्या का सैनिक क्षेत्र में उपयोग किया गया तो मानव जाति के विनाश की घंटी बज जायगी। अंतिम निष्कर्ष यह है कि राजनीतिक क्षितिज पर से युद्ध की छाया तभी हटाई जा सकती है जब घृणा के समस्त चिह्न मिटा दिये जांय। प्रोफेसर टौयनबी कहते हैं कि वैज्ञानिक शोध के दुरुपयोग का मूल कारण यह है कि प्रकृति पर मनुष्य की विजय के साथ वैज्ञानिक स्वयं पर विजय पाने में असमर्थ रहा है। प्रोफेसर डेवी की राय है कि असली युद्ध क्षेत्र हमारे और हमारी संस्थाओं के भीतर है। श्री ममफोर्ड कहते हैं कि प्रकृति पर नियंत्रण पाने की कोशिश में आत्म नियंत्रण करने की हमारी बुद्धि और इच्छा लुप्त हो गई है और हमने जिस मशीन का निर्माण किया है उसके हम बेबस पुर्जे बन गए हैं।

युद्ध कला की अर्थ व्यवस्था

ब्रिटिश दार्शनिक बर्टरंड रसेल ने आधुनिक युद्ध कला की अर्थ व्यवस्था के बारे में कुछ आंखें

खोल देनेवाले अंक प्रकाशित किये हैं। उन्होंने अनुमान लगाया है कि दुनिया के विमिन्न राष्ट्र सुरक्षा तैयारियों पर ५० करोड़ रुपया प्रतिदिन खर्च कर कहे हैं। प्रमुख अर्थशास्त्रियों ने भी यह अनुमान लगाया है कि दुनिया के अल्पविकसित देशों में करीब ५० करोड़ इन्सान भूख और अल्प पोषण के शिकार हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि निकसित राष्ट्र यदि सुरक्षा व्यय में थोड़ी बचत करें तो काफी रुपया बच सकता है और विकासोन्मुख देशों को अपना कृषि और औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने और अपने करोड़ों अधभूखे और अध नंगे लोगों को खाना और जीवन की अन्य आवश्यकताएं सुलभ करने में उस रुपये का आर्थिक सहायता के रूप में उपयोग किया जा सकता है। अमरीका की राष्ट्रीय आयोजन संस्था के हाल के प्रकाशन में बताया गया है कि अभी से लगा कर सन् १९७० तक बड़े राष्ट्र हथियारों और आणविक शास्त्रों पर करीब २०० खर्ब डालर खर्च कर चुकेंगे। जबतक इस संख्यातीत विनाशक व्यय को सारी दुनिया के जीवन मान को ऊंचा उठाने के लिए उत्पादक और रचनात्मक कामों पर खर्च नहीं किया जाता तबतक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में समाजवादी समाज की कल्पना करना बेकार होगा।

उत्पादन के तकनीक

प्रोफेसर बर्नल ने बड़े परिश्रम के साथ यह बताया है कि जितना विज्ञान हम जान चुके हैं उसका प्रयोग कर जितनी संपत्ति हम प्राप्त कर सकते हैं वह उस संपत्ति से कहीं अधिक होगी जो हम अत्यंत उपजाऊ प्रदेशों की जीत से हासिल कर सकेंगे। जिन भौतिक लक्ष्यों के लिए राष्ट्र सदियों लड़ते रहे हैं और जिनके लिए लड़ने को तैयार हैं वे उन लक्ष्यों की तुलना में बिल्कुल तुच्छ हैं जो शांतिकाल में अधिक तेजी के साथ उतने ही परिश्रम से प्राप्त किये जा सकते हैं।

औद्योगिक कच्चामाल तेल और कोयला पाने के लिए नये प्रदेश जीतने की कोशिश करने के बजाय डा० बर्नल बताते हैं कि किस प्रकार आणविक और हवा पानी और सूरज की किरणों जैसे प्राकृतिक साधनों से प्रचुर शक्ति पैदा की जा सकती है। कृषि के क्षेत्र में उपयुक्त और अधिक उपज देनेवाले पौधे उगाये जा सकते हैं और प्रतिरोधक किस्मों को पैदा और विकसित करने के नव आविष्कृत तरीकों से प्रति एकड़ अतिरिक्त उपज हासिल की जा सकती है। यह अब व्यापक रूप में स्वीकार किया जाता है कि कृषिविषयक आधुनिकवैज्ञानिक खोज से ऐसी काफी संभावनाएं उत्पन्न हुई हैं कि अभी की अपेक्षा दूनी तिगुनी जन संख्या का भरण पोषण किया जा सके। उत्पादन के क्षेत्र में ऐसी असीम संभावनाओं के होते हुए नये उपनिवेश या प्रभाव क्षेत्र हासिल करने

के लिए राष्ट्रों के बीच संघर्ष होना बिल्कुल अर्थ शून्य होगा। ऐसे संघर्षों को आत्मघाती पागलपन की संज्ञा देनी पड़ेगी।

विश्व खाद्य कांग्रेस के सम्मुख ५ जून १९६३ को बोलते हुए अमरीका के कृषि मंत्री श्री आरविली फीमैन ने कहा था यह शंकास्पद है कि इस पृथ्वी पर बसा हुआ राष्ट्र समूह अधिक समय तक अधभूखा और अधनंगा रह सकेगा। उन्होंने आगे कहा दुनिया के सामने एक सर्वाधिक भाग्यशाली ऐतिहासिक संयोग उपस्थित है। विकासोन्मुख राष्ट्र आत्मनिर्भरता की दिशा में बढ़ रहे हैं। एक ओर उन्हें खाद्य सामग्री की बेहद जरूरत है और दूसरी ओर विकसित राष्ट्र इतना प्रचुर उत्पादन कर सकते हैं कि जो उनके लिए परेशानी का कारण होता है।

वास्तव में आधुनिक दुनिया में समाजवाद की कल्पना उस समय तक अधूरी रहेगी जबतक कि उसमें सभी देशों का समावेश नहीं होगा। नेहरूजी का यह दृढ़ विश्वास था कि पहले तो राष्ट्रों की सीमाओं के भीतर और अनंतर सारी दुनिया में समाजवाद की स्थापना होनी चाहिए और उसके साथ ही साथ सार्वजनिक हित में संपत्ति का उत्पादन और वितरण होना चाहिए। चौथाई शताब्दी पूर्व ही उन्होंने लिखा था भारत किधर जा रहा है। निश्चय ही वह सामाजिक और आर्थिक समानता के महान मानव कल्याण की ओर एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र और एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के शोषण मात्र को समाप्त करने की ओर तथा अंतर्राष्ट्रीय सहकारी समाज वादी विश्व संघ के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वतंत्रता की ओर जा रहा है।

समानता की क्रांति

किंतु यह आवश्यक है कि विश्व समृद्धि लाने और विकासोन्मुख राष्ट्रों को गरीबी भूख और बेकारी के दलदल से बाहर निकालने के इस महान् अभियान में विकसित देशों को बिना किसी शर्त अथवा संकीर्ण हेतुओं के सहायता का हाथ आगे बढ़ाना चाहिए। आधुनिक समाजवाद की कल्पना अधूरी रहेगी यदि वह सब अल्पविकसित देशों को स्पर्श नहीं करेगी तथा अमीर और गरीब राष्ट्रों के बीच की चौड़ी खाई को नहीं पाटेगी। श्री बारबरा वार्ड ने बड़े शक्तिशाली रूप में कहा है कि आधुनिक दुनिया की सब से अर्थ सूचक क्रांति समानता की मनुष्य की समानता और राष्ट्रों की समानता की क्रांति है। हरेक विकासोन्मुख देश करोड़ों लोगों की सामाजिक और आर्थिक दशा तेजी से सुधारना चाहता है ताकि प्रचुरता की अर्थ व्यवस्था का लक्ष्य सिद्ध हो सके। इसलिए यह निहायत जरूरी है कि एशिया अफ्रीका और लेटिन अमरीका के देशों की समृद्ध

राष्ट्र सक्रिय मदद करें ताकि वे गरीबी की लक्ष्मण रेखा को लांघ सकें और अंतर्राष्टीय सहकारी राष्ट्रमंडल गठित करने के महान् काम में करीब करीब बराबरी के साझीदार बन सकें । वर्तमान में ये देश न केवल आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं बल्कि निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या की जटिलता भी उन्हें परेशान कर रही है ।

जिस विश्व समाज में समृद्धि और गरीबी साथ साथ रहने दी जायगी वह शांति और समृद्धि का युग लाने की कभी आशा नहीं कर सकता । इस दृष्टि से हर प्रकार का उपनिवेशवाद और शोषण समाप्त होना चाहिए । शक्तिशाली सैनिक सुरक्षा योजनाओं से साम्यवाद की चुनौती का सफल मुकाबला नहीं किया जा सकता । पश्चिम को साम्यवाद का मुकाबला करने के लिए नीति के बजाय नीति विचार के बजाय विचार और आदर्श के बजाय आदर्श से काम लेना होगा । डा० फाम ने कहा है वर्तमान संघर्ष मनुष्य के दिमागों पर विजय पाने का संघर्ष है इस संघर्ष में कोरे नारों और प्रचार की चालों से विजय हासिल नहीं की जा सकती । सैनिक खतरे पर ध्यान केंद्रित करके और हथियारों की दौड़ में शामिल होकर हम विजय का एक अवसर खो देते हैं । हमें यह सिद्ध करना चाहिए कि अपने देश में और एशिया अफीका और लेटिन अमरीका में आर्थिक प्रगति और व्यक्तित्व की रक्षा आर्थिक और सामाजिक आयोजन और लोकतंत्र संभव हो सकता है । प्रोफेसर कोल ने दो शक्तिगुटों के बीच आदर्शगत आधार पर शीत युद्ध जारी रहने पर गहरी निराशा प्रकट की है । वह कहते हैं मैं इस दुनिया में अपने को अकेला और करीब करीब निराशा की स्थिति में पाता हूं कारण है जिन्हें समाजवादी मूल्य समझता हूं वे दो भारी भरकम चक्की के पाटों के बीच निर्दयतापूर्वक कुचले जा रहे हैं । एक ओर साम्यवाद की निरंकुश केंद्रवादी सत्ता है और दूसरी ओर संपत्ति और विशालता की अमरीकी अंधपूजा है । यह पूजा अपनी ही खातिर की जा रही है मानव बंधुत्व की वह माध्यम नहीं है जो कि समाजवादी श्रद्धा का मूल आधार है ।

समाजवादी देशों में असमानताएं

हमें विश्व राजनीति के एक नये और कुछ अजीब लक्षणों पर भी ध्यान देना चाहिए । वह यह है कि स्वयं समाजवादी देशों में असमानता की खाई बढ़ रही है । मोशी टांगानीका में अफीकी एशियाई एकता सम्मेलन में राष्ट्रपति नियरेरे ने कहा था समाजवाद का मूल आधार ही यह है कि वह संपत्ति का शक्ति या प्रतिष्ठा के प्रतीक रूप में उपयोग करने से इन्कार करता है ।

किंतु समाजवादी देशों में वर्ग और श्रेणियां सतत बढ़ रही हैं। अब यहां केवल समृद्ध पूंजीवादी देश ही नहीं है बल्कि गरीब समाजवादी देश भी हैं। और समाजवादी देश स्वयं राष्ट्रों के बड़े समाज की एक इकाई के रूप में अब वही गलती कर रहे हैं जो पहले पूंजीवादी देशों ने की थी। राष्ट्रपति नियेरेरे का कहना है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वे समाजवादी देश पूंजीवादी कार्यों के निमित्त सत्ता और प्रभाव हासिल करने के लिए संपत्ति का उपयोग कर रहे हैं। उनकी इस चेतावनी पर उन सभी लोगों को गंभीरता से विचार करना चाहिए जो विश्व समाजवादी समाज कायम करना चाहते हैं।

विश्व नागरिकता

जब हम विश्व संगठन की बात सोचने लगेंगे तभी दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों में सच्ची आर्थिक और राजनीतिक समानता कायम कर सकेंगे। इंग्लैंड के मजदूर नेता श्री एन्यूरिन बेविन ने कुछ वर्षों पहले कहा था राष्ट्रीय सार्वभौमिकता ऐसा शब्द है जिसे इतिहास अर्थ हीन बना रहा है। इस आणविक युग में एकमात्र व्यावहारिक हल यही हो सकता है चाहे वह इस समय कितना ही कठिन क्यों न प्रतीत हो कि विश्व सरकार के अंतिम लक्ष्य के हित में अथवा जैसा कि कवि टेनीसन ने अनेक वर्षों पहले कहा था मानव की पार्लमेंट की खातिर राष्ट्रीय हितों को गौण स्थान दिया जाय। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि कोई भी भावी युद्ध जो आज के घातक शस्त्रास्त्रों से लड़ा जायगा अपने पीछे विजेता नहीं बल्कि पराजित ही छोड़ेगा। जब प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० आइंस्टीन से तीसरे विश्वयुद्ध के शस्त्रास्त्रों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया मैं नहीं जानता। किंतु मैं जानता हूं कि चौथे विश्वयुद्ध के शस्त्रास्त्र क्या होंगे चट्टानें।

लंबे चलनेवाले सम्मेलनों और शिखर सम्मेलनों से विश्व संगठन कायम नहीं किया जा सकेगा। अंतत: जब राष्ट्र राष्ट्रवाद की उदार कल्पना का विकास करेंगे और विश्व संस्था के अनुशासन को राजीखुशी से स्वीकार करेंगे तभी शांति और सहयोग का वातावरण पैदा हो सकेगा। ११ जून १९६३ को संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा के विशेष अधिवेशन में बोलते हुए डा० राधाकृष्णन् ने कहा था कि राष्ट्रों को विश्व व्यवस्था के लिए अपनी प्रभुसत्ता का एक अंश छोड़ना चाहिए और अपने मतभेदों का समाधान संधि चर्चा द्वारा करना चाहिए। इसलिए हर देश के नागरिकों को अब दूसरे प्रकार की विश्वनागरिकता का विकास करना चाहिए जिसके

अनुसार प्रत्येक राष्ट्र एक से अधिक राष्ट्रों से संबंध रखनेवाले मामलों में अंतर्राष्ट्रीय संगठन के अनुशासन को मानने के लिए तैयार होगा । हम आशा करते हैं कि भविष्य में दुनिया के प्रमुख राष्ट्र ऐसी विश्व सरकार की रूपरेखा बनायेंगे जो स्थायी शांति का मार्ग प्रशस्त करेगी और मानवता को नये युद्ध के भय से मुक्ति प्रदान करेगी ।

राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीयवाद

जब हम अंतर्राष्ट्रीयवाद और विश्वशांति की चर्चा करते हैं तो इसका यह अर्थ नहीं कि हम राष्ट्र के रूप में सोचना बंद कर देते हैं । जैसा कि बार बार कहा गया है भारत में हमको ऐसा उदार राष्ट्रवाद विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए जो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के अनुकूल होगा । नेहरूजी ने कहा है राष्ट्रवाद का हर देश में स्थान है और उसे पुष्ट किया जाना चाहिए । किंतु वह आक्रामक नहीं होना चाहिए और अंतर्राष्ट्रीय विकास के मार्ग में बाधक भी नहीं होना चाहिए । राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने अपने गणराज्य दिवस के संदेश में कहा है हमारे सामने यह विकल्प नहीं है कि हम राष्ट्रवाद अथवा अंतर्राष्ट्रीयवाद दोनों में से किसको स्वीकार करें । अंतर्राष्ट्रीयवाद बड़ा आदर्श है जो हमारी राष्ट्रवाद की कल्पना से मेल खाता है । महात्मा गांधी ने इसी विचार को अपने ही अर्थभरे शब्दों में यों प्रकट किया है मैं अपने घर के चारों ओर दीवारें खड़ी नहीं करना चाहता और न अपनी खिड़कियों को बंद करना चाहता हूं । मैं चाहता हूं कि सब देशों की संस्कृतियों की वायु पूरी स्वतंत्रता के साथ मेरे घर के आस पास बहे । किंतु मैं उनमें से किसी को अपने पांव नहीं उखाड़ने दूंगा ।

समाजवाद और युद्ध

यह वास्तव में दुःखजनक है कि जब अमरीका और रूस सहित सारी दुनिया एक विश्व की ओर आम निश्शस्त्रीकरण तथा आणविक युद्ध को समाप्त करने के बारे में गंभीरता से सोच रही है उस समय चीनी नेता साम्यवाद अथवा समाजवाद के प्रसार के लिए युद्ध अनिवार्य है इस सिद्धांत की जोरों से हिमायत कर रहे हैं । वे समाजवादी जगत और साम्राज्यवाद के बीच क्रांतिकारी संघर्ष द्वारा आमूल चूल तस्फिया कर लेना चाहते हैं । रूस के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री ख्रुश्चेव और पूर्वी यूरोप के करीब करीब सभी साम्यवादी देशों के नेताओं ने चीनी नेताओं की कड़ी आलोचना की थी । श्री ख्रुश्चेव ने क्यूबा के प्रधान मंत्री श्री कास्ट्रो के सम्मान में क्रेमलिन में

आयोजित समारोह में कहा था अगर कोई कहता है कि क्रांति के लिए युद्ध जरूरी है तो उसका उत्तर यह होगा कि युद्ध में श्रमिक ही सबसे अधिक मरते हैं। यह पागलों का प्रलाप है। मार्क्सवाद लेनिनवाद के साथ उसका कोई सरोकार नहीं है। रूसी और चीनी नेताओं में मतभेद की खाई आज भी उतनी ही चौड़ी है। यह अर्थ सूचक है कि मार्क्स और एंजेल्स भी मानते थे कि युद्ध आंतरिक क्रांतिकारी आंदोलनों के विकास में बाधक होता है और आंतरिक प्रगतिशील क्रियाओं पर रोक लगाता है। वे युद्ध विरोधी और निशस्त्रीकरण पक्षपाती संघर्ष को लोकतंत्र और समाज वाद के लिए होनेवाले संघर्ष का मूलभूत अंग मानते थे।

चीन ने भारत पर जो अकारण आक्रमण किया उससे सारी दुनिया के अंतःकरण को आघात पहुंचा। हिंसा और युद्ध के द्वारा उसकी विस्तारवादी नीति का साम्यवादी नेताओं तक ने कड़ी और स्पष्ट भाषा में खंडन किया है। यह खेद का विषय है कि चीन की नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और उसने हाल के भारत पाक संघर्ष में टांग अड़ाने और स्थिति को पेचीदा बनाने की कोशिश की थी। चीन चाहता है कि एशिया के इस भाग में गड़बड़ी और उथल पुथल हो ताकि उसे अपना प्रभाव बढ़ाने का अवसर मिले। और इस प्रकार चीन विश्वाशांति और विश्व मैत्री के लिए खतरा बना हुआ है। किंतु हम आशा करते हैं कि अंत में चीनी नेताओं में सुबुद्धि का उदयहोगा और वे समाजवाद के हित में उलटी राह का परित्याग कर देंगे।

समाजवाद से सर्वोदय की ओर

जयप्रकाश नारायण

मैं जब पूना में तीन सप्ताह का उपवास कर रहा था उसी समय यद्यपि राजनीति से नहीं मार्क्सवाद से मेरा पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद हो गया । रूस की नृशंस हत्याओं के कारण शंकाओं की जो एक लम्बी प्रक्रिया आरंभ हो गयी थी अब उसका अन्त हो गया । यह साफ मालूम हो गया कि तात्त्विक दृष्टि से भौतिकवाद में न तो नैतिक व्यवहार के लिए कोई आधार है और न अच्छा बनने के लिए कोई प्रेरणा या अभिक्रम ही ।

मनुष्य उसकी चेतन शक्ति समाज और संस्कृति जिसका उसने निर्माण किया है यदि ये सब भूत द्रव्य की फिर वह द्वन्द्वात्मक दृष्टि से चाहे कितना ही सक्रिय क्यों न हो अभिव्यक्ति मात्र है तो मैं नहीं समझता कि क्यों किसी व्यक्ति को अच्छा बनने अर्थात् उदार दयावान् और निःस्वार्थी बनने की कोशिश करनी चाहिए । तब किसी दुर्बल दीन और दुःखी के प्रति किसीको सहानुभूति क्यों होनी चाहिए । मृत्यु के उपरान्त जो भूत द्रव्य है वह भूत द्रव्य में विलीन हो जायगा । अतएव नैतिक व्यवहार के लिए उससे क्या प्रेरणा मिल सकती है । सत्ता या संपत्ति की भोग वासना या जनता से जयजयकार कराने अथवा अपने समकक्षियों से आदर पाने की आकांक्षा उसके सामने काम करने के लिए ये ही प्रलोभन हो सकते हैं । किन्तु ऐसे प्रलोभनों क का सही या गलत मूल्यांकन से कोई सम्बन्ध नहीं रह सकता । नैतिक आदर्शों का निःसन्देह एक इतिहास है उनका एक सामाजिक हेतु है । किन्तु जब मनुष्य अपने परम्परागत आचार व्यवहार केसिद्धान्तों में ही शंका करने लगता है और अपने से पूछता है कि मैं नैतिक नियमों के अनुसार आचरण क्यों करूं तो भौतिकवाद के पास उसके लिए कोई जवाब नहीं मिलता । समाज सेवा त्याग स्वतन्त्रता समानता और अन्य सब आदर्शों को लेकर किसीने बहुत समय बिताया हो किन्तु बाद में यदि वह अपने से पूछने लगे कि मैं इन आदर्शों को बिलकुल ही स्वीकार क्यों करूं और इनकी वजह से नाहक परेशानी और घाटा क्यों सहूं तो भौतिकवादी तत्त्वज्ञान द्वन्द्वात्मक या

अन्यथा उसे कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सकता । मैं यह नहीं कहता कि तात्विक भौतिकवादियों में ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण नहीं हैं जिन्होंने उच्च आदर्शों के लिए महान् त्याग किये हैं । मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि उनका वह कार्य उनके तत्वज्ञान से मेल नहीं खाता ।

इस संकट से मुक्त होने का एक रास्ता यह मान लेना हो सकता है कि मनुष्य एक यंत्र है उसकी गतिविधि यथानिश्चित रहती है और उसे संकल्प स्वातन्त्र्य नहीं होता । यह मान लेने पर जरूर मार्क्स और लेनिन को दुनियाभर के शोषितों के लिए काम करने और कष्ट झेलने ही पड़ते । किन्तु मैं नहीं मानता कट्टर से कट्टर मार्क्सवादी भी मनुष्य को एक जड़ यंत्र बनाकर रखने को कभी तैयार होगा । कौन पहले आया यह प्रश्न नहीं है । दरअसल बात यह है कि आज सृष्टि में जितने प्रकार हैं उनका वर्णन जड़ या चेतन के रूप में हो सकता है । मार्क्सवाद की गलती यह कल्पना कर लेनी थी कि उसका आदि कारण कुछ भी हो चैतन्य का ज्ञान उसी तरह हो सकता है जैसे जड़ का । उन्हें यह नहीं सूझा कि जड़ के नियम चैतन्य के क्षेत्र में लागू नहीं हो सकते ।

जड़ का अध्ययन एक वस्तु आधारित अन्वेषण है जब कि चैतन्य का अध्ययन है एक आन्तरिक अनुभूति । जड़ पदार्थ का अध्ययन यानी वस्तु आधारित अन्वेषण संक्षेप में विज्ञान लाजमी तौर पर नीतिनिरपेक्ष होता है । चेतन शक्ति को जड़ पदार्थ का एक व्यवहार मात्र बताकर मार्क्सवादियों और सामान्यतया भौतिकवादियों ने नैतिकता की बुनियाद ही खतम कर दी है । इसमें शक नहीं कि वे क्रान्तिकारी नैतिक मूल्यों के बारे में बहुत बातें करते हैं किन्तु वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कैसे भी साधनों का प्रयोग किया जाय इस प्रमेय का एक निकृष्ट प्रयोग मात्र है । एक बार किसी व्यक्ति ने सचाई के साथ या यों ही अपने मन को समझा लिया कि वह क्रांति के पक्ष में है अथवा एक दल या जनता के पक्ष में है तो फिर वह कुछ भी बुरे कर्म करने के लिए स्वतन्त्र हो जाता है ।

मार्क्सवादी और भौतिकवादी ही नहीं बल्कि वे भी जो तात्विक दृष्टि से उनसे मतभेद रखते हैं चेतन शक्ति को विज्ञान के तरीकों से समझना चाहते हैं । इसलिए मनोविज्ञान भी नैतिक मूल्यों का कोई आधार नहीं हो सकता । विज्ञान के लिए भी चेतन शक्ति को समझ पाना संव नहीं है क्योंकि वह एक अन्तरानुभूति की चीज है । अन्तरानुभूति अपने गुण के कारण ही भौतिक उपकरणों के द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती । इसलिए सारे वेदान्तियों या सूफियों और

योगियों को जिन्हें आत्मा की यथार्थता या पूर्णब्रह्म की अनुभूति थी किसी भाषा में उसे व्यक्त करना संभव नहीं हुआ । जैसा कि रोजर गार्डेल ने कहा है : तत्वज्ञानी अपने तत्व चिंतन में मग्न रहता है सन्त या सूफी का जीवन ही उसका सदुपदेश होता है ।

आधुनिक विज्ञान एक ऐसे स्थल पर पहुंच गया है जहां भूत द्रव्य और चेतन शक्ति का द्वैत इतना झीना पड़ गया है कि द्वैत मालूम ही नहीं होता ।

विज्ञान इस द्वैत की पूर्ण व्याख्या नहीं कर सकता क्योंकि किसी बाह्य पदार्थ के अध्ययन में द्रष्टा और दृश्य भिन्न रहेंगे ही भले ही वे एक दूसरे में खूब गुंथे हुए और हिले मिले हों । केवल अन्तिम आध्यात्मिक अनुभूति में ही यह द्वैत नष्ट होता है जब द्रष्टा एवं दृश्य एक हो जाते हैं ।

मनुष्य जब सृष्टि के समष्टिरूप को समझने या उसके साथ आत्म साक्षात्कार करने का प्रयास करता है तो नैतिक मूल्य पैदा होते हैं । इस समष्टि का जिसे अनुभव हो गया है उसके लिए नैतिक मूल्यों के अनुसार आचरण करना उतना ही सहज और स्वाभाविक हो जाता है जितना सांस लेना ।

कुछ लोगों को राजनीतिक और आर्थिक संघर्ष के संदर्भ में यह बात असंगत लग सकती है । मैं बड़ी नम्रता से उनके साथ अपनी असहमति प्रकट करता हूं । सारे कारोबार व्यक्तिगत सामाजिक राजनैतिक आर्थिक या दूसरे सबका एक समष्टिरूप होना चाहिए और इस समष्टि का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए जीवन का तत्वज्ञान ।

इससे मेरा ध्यान एकदम सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण के उस पहलू की ओर खिंच जाता है जिसकी समाजवादी और साम्यवादी दोनों ने उपेक्षा की है । समाजवादी और साम्यवादी दोनों का बहुत जोर भौतिक समृद्धि उत्पादन की उत्तरोत्तर वृद्धि और जीवन स्तर के अधिकाधिक ऊंचा उठाने पर रहता है । इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की यथोचित पूर्ति होनी चाहिए । जब यह देखते हैं कि समाजवादी और साम्यवादी हमेशा गरीब और पद दलितों की वकालत करते हैं भौतिक उन्नति और सुख के ऊपर उनका जोर देना समझ में आता है । यह भी सत्य है कि भारत जैसे गरीब और पिछड़े हुए देश में सामाजिक पुनर्निर्माण का मुख्य काम ही जन साधारण के जीवनस्तर को काफी ऊंचा उठाना है । किन्तु भौतिक समृद्धि को देवता तुल्य बना देने और भौतिक पदार्थों की अक्षुण्ण भूख को शान्त करनेवाली जीवन दृष्टि को प्रोत्साहित करने से न तो यहां काम चलेगा और न कहीं

अन्यत्र ही । यदि लगातार वह भूख उनको सताती रही तो न लोगों के दिल और दिमाग में शान्ति रहेगी और न एक दूसरे के बीच आपस में ही शान्ति रहेगी । उससे व्यक्तियों दलों और न एक दूसरे के बीच आपस में ही शान्ति रहेगी । उससे व्यक्तियों दलों और राष्ट्रों के बीच अवश्य ही एक अनियंत्रित स्पर्धा खड़ी हो जायगी । प्रत्येक व्यक्ति अपने पड़ोसी से आगे बढ़ने की कोशिश करेगा और प्रत्येक राष्ट्र केवल दूसरे राष्ट्रों को पकड़ने की ही नहीं बल्कि उन सबको पीछे छोड़ जाने की कोशिश करेगा । इस प्रकार के असन्तुष्ट समाज में हिंसा और युद्ध उसकी एक खासियत हो जाते हैं । जीवन के समस्त मूल्य और चाहिए और चाहिए की सर्वोपरि इच्छा के अधीन हो जायेंगे । धर्म कला दर्शन विज्ञान सबको अधिक चाहिए और भी अधिक चाहिए जीवन के इस एक लक्ष्य की पूर्ति में लग जाना पड़ेगा । समता स्वतन्त्रता बन्धुत्व सब के सबको भौतिकवाद की सार्वभौमिक बाढ़ में डूब जाने का खतरा पैदा हो जायगा । मानव जीवन में कोई अन्य सहारा कोई सच्चा सन्तोष नहीं रहेगा क्योंकि जितना ही अधिक किसीके पास होता है उतनी ही अधिक उसकी भूख बढ़ती है ।

मैं जानता हूं काफी समाजवादी हो गये हैं और आज भी हैं जो जीवन के शुद्ध भौतिकवादी दृष्टिकोण के खतरे से परिचित हैं । फिर भी समाजवाद का खास सम्पर्क जीवन के भौतिकवादी पहलुओं से था और है समाजवादी या मजदूर दल और ट्रेड यूनियन लोगों को जीवन के सन्तुलित या पूर्ण स्वरूप का शिक्षण नहीं देते । यदि समाजवादी आन्दोलन मैं जिस मुद्दे को उठा रहा हूं उसकी ओर ध्यान दे तो विज्ञान औद्योगीकरण और सामाजिक संगठन तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध सबके बारे में उसका दृष्टिकोण क्रान्तिकारी हो जाय ।

नैतिक जीवन और मानवीय व्यक्तित्व के विकास तथा समस्त मानवीय गुणों और मूल्यों के फूलने फूलने के लिए शारीरिक क्षुधाओं पर नियंत्रण रखना अनिवार्य है । खास तौर से समाजवादी मूल्यों के सम्बन्ध में यह बात सही है । सबके सामान्य प्रयत्न से जो अच्छी चीजें उपलब्ध हों उन्हें एक दूसरे के साथ बांटकर खाने का तरीका ही समाजवादी जीवन मार्ग है । जितनी ही स्वेच्छा और सम्मति से बांट लेने का यह काम होता है उतना ही समाज में कम तनाव और दबाव होगा और उतना ही अधिक समाजवाद उसमें होगा । मैं समझता हूं कि जब तक समाज के सदस्य अपनी आवश्यकताओं पर नियंत्रण रखना नहीं सीखते स्वेच्छा से चीजों को बांट लेना यदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य होगा । समाज निश्चय ही दो टुकड़ों में बंट जायगा : एक उन

लोगों का जो दूसरों को अनुशासित करने का प्रयत्न करते होंगे और दूसरा बाकी बचे हुए सब लोगों का । समाज की इस प्रकार की व्यवस्था में एक प्रश्न हमेशा सामने रहता है अनुशासित करनेवालों पर अनुशासन कौन रखेगा राज्य करनेवालों पर राज्य कौन करेगा । साम्यवादी देशों के उदाहरण और समाजवादी सरकारों के अनुभव से यह प्रकट है कि इस नित्य प्रश्न का उत्तर देना बहुत ही कठिन है । इसका एक ही हल मालूम होता है और वह यह कि ऊपर से अनुशासन करने की आवश्यकता और उसके क्षेत्र को जितना अधिक से अधिक संभव हो संकुचित और सीमाबद्ध किया जाय । यह हो सकेगा इस बात का इतमिनान दिलाने पर कि समाज का प्रत्येक सदस्य आत्मानुशासन से काम करता है समाजवादी मूल्यों के अनुरूप आचरण करता है और दूसरी चीजों के साथ साथ अपने साथियों के बीच स्वेच्छापूर्वक बांट बांटता और सहयोग करता है ।

इससे मैं सर्वोदय और समाजवाद दल और सत्ता से बंधी हुई राजनीति तथा दल और सत्ता से मुक्त राजनीति या राजनीति और जिसे विनोबा केवल लोकनीति कहते हैं इस समस्या की तह तक पहुंच गया ।

मैंने दल और सत्ता की राजनीति से अलग होने का निश्चय इसलिए नहीं किया कि मैं उससे ऊब गया या निराश हो गया था बल्कि इसलिए किया कि मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि राजनीति से काम नहीं बनेगा । उद्देश्य तो वही पुराना समता स्वतन्त्रता बन्धुत्व और शान्ति की स्थापना है ।

किन्तु क्या राजनीति का कोई विकल्प है । क्या राज्य के माध्यम को छोड़कर समाज को बदलने और उसके पुनर्निर्माण का और भी कोई रास्ता हो सकता है । राजनीति केवल राज्य या सत्ता का विज्ञान है ।

एक विकल्प था । उसे महात्मा गांधी ने हमारे सामने रखा था । किन्तु मुझे स्वीकार करना चाहिए वह मुझे स्पष्ट नहीं हुआ था ।

स्वतन्त्रता की हमारी लड़ाई के समय गांधीजी ने सशस्त्र संघर्ष का एक विकल्प दिखाया था और हमने उनका अनुकरण किया । अनुकरण इसलिए नहीं किया कि हमें उस पर पक्का विश्वास हो गया था बल्कि इसलिए कि उनका नुसखा कारगर साबित हुआ था ।

कहावत है सफलता की तरह कोई सफल नहीं होता ।गांधीजी के आन्दोलन लोगों को जाग्रत करने और आन्दोलन में कूद पड़ने की प्रेरणा देने में जैसा पहले कोई भी आन्दोलन नहीं कर

पाया था सर्वोच्च सफलता प्राप्त कर रहे थे। सारे प्रतिस्पर्धी कार्यक्रमों और विचारधाराओं को हार मानकर पीछे हटना पड़ा था।

किन्तु गांधीजी को अवसर ही नहीं मिला कि वे समाज को बदलने और उसके पुनर्निर्माण की अपनी अहिंसक पद्धति का दर्शन करा सकते। इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने इस सम्बन्ध में काफी कहा और लिखा है। किन्तु इसके पूर्व कि वे इस पर अमल करते बड़ी क्रूरता के साथ उन्हें हमारे बीच से छीन लिया गया। पीछे की ओर देखते हैं तो अब इसमें सन्देह नहीं मालूम होता कि उन्होंने अपने भावी कार्यक्रमों की बुनियाद डालना उसी समय शुरू कर दिया था। किन्तु वे जो कुछ कर रहे थे उसका आशय जैसा और भी बहुत से लोगों की समझ में उस समय नहीं आया था मैं भी समझ नहीं पाया। उदाहरण के लिए उन्होंने स्वतन्त्रता के संग्राम में इतनी अद्भुत सफलता प्राप्त की किन्तु अपने आदर्श के अनुरूप देश के पुनर्निर्माण में उपयोग करने के लिए सत्ता अपने हाथ में नहीं ली इस घटना का अभिप्राय समझने में भी मैं बिल्कुल चूक गया। उसी प्रकार जब उन्होंने यह प्रस्ताव किया कि कांग्रेस को राजनीतिक क्षेत्र से हट जाना चाहिए और अपने को जिसे उन्होंने लोक सेवक संघ कहा था उसमें समेट लेना चाहिए। इस अद्वितीय प्रस्ताव के तात्पर्यार्थ से फिर मैं वंचित रह गया। देश को ही उस प्रस्ताव पर शान्तिपूर्वक विचार करने का अवसर नहीं मिला। सारा देश दु:ख और क्षोभ में ऐसा डूबा हुआ था कि मुक्त चिन्तन संभव नहीं था। इसके अतिरिक्त सबकी आंखें उनकी ओर लगी थीं जिनसे नैया के इस खेवैया की अनुपस्थिति में उसे सुरक्षित स्थान तक ले चलने की आशा थी और उनकी ओर से राष्ट्रपिता की अन्तिम इच्छा और वसीयत क्या थी इसके सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं सुनाई पड़ा। इसके भी आगे जब यह देखा गया कि गांधीजी के प्रत्येक राजनैतिक सहयोगी ने राजनीति का परम्परागत मार्ग अपना लिया है इस बात का सन्देह तक नहीं हो सका कि गांधी विचार में दल और सत्ता की पद्धति का कोई विकल्प भी है।

यहां यह एक प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि गांधीजी के सम्बन्ध में जिन्होंने अपना सारा जीवन राजनीति में बिताया यह शंका ही क्यों की जाती है कि उन्हें इसके विकल्प की भाषा में सोचना चाहिए था। मेरी विनम्र राय में गांधीजी को राजनीति के जिस अर्थ का यहां मैं विचार कर रहा हूं उस अर्थ से कभी कोई वास्ता नहीं रहा। गांधीजी ने स्वतन्त्रता का जो आन्दोलन चलाया वह इसी अर्थ में राजनीतिक था कि उसका लक्ष्य भारत की राष्ट्रीय

स्वाधीनता था किन्तु वह किसी दल के लिए सत्ता का आन्दोलन हो इस अर्थ में राजनीति नहीं था । यदि उसका लक्ष्य सत्ता था तो वह सत्ता पूरे भारतवर्ष की जनता के लिए थी । इसमें वे लोग भी सम्मिलित थे जो पाकिस्तान बनाने के लिए अलग हुए और दोनों हिन्दुस्तानों में जितने दल मौजूद थे वे और भविष्य में जो बनेंगे वे भी सम्मिलित थे । गांधीजी किसी दल के नेता नहीं थे जो अपने दल की सत्ता के लिए लड़ते और दांव पेंच खेलते । यदि ऐसा होता तो उनके मन में कांग्रेस को सत्तावादी राजनीति छोड़ने की बात कहने का कभी विचार ही न आता । वे एक राष्ट्रीय नेता थे अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे थे न केवल इतना वे मानवता के एक विश्व नेता थे और अपने सजातीय मानवमात्र की बन्धन मुक्ति के लिए कार्य कर रहे थे । भारतीय स्वतन्त्रता का आन्दोलन एक सर्वांगीण जन आन्दोलन था । वह राजनीति यानी राज्य की राजनीति नहीं थी बल्कि लोक नीति यानी जनता की राजनीति थी ।

जो भी हो राजनीति ने जो प्रश्न पैदा किये वे मेरे दिमाग में गूंजते रहे । मैं सन्तुष्ट नहीं हुआ और एक विकल्प खोजने के लिए विवश हो गया । दलीय राजनीति का परम्परागत स्वभाव है सत्ता के लिए उसमें सब तरह से निर्बल और दूषित कर देनेवाले संघर्ष होते ही हैं यही बात मुझे और अधिक चिन्तित करने लगी । मैंने देखा : धन संगठन और प्रचार के साधनों के बल पर विभिन्न दल कैसे अपने को जनता के ऊपर लाद देते हैं कैसे जन तंत्र यथार्थ में दलीय तंत्र बन जाता है कैसे दलीय तंत्र अपने क्रम से स्थानिक चुनाव समितियों और निहित स्वार्थों से सम्बद्ध गुटों का राज्य बन जाता है किस प्रकार जन तंत्र केवल मतदान में सिमिट और सिकुड़ कर रह जाता है किस प्रकार मत देने का यह अधिकार तक उन शक्तिशाली दलों के द्वारा अपना उम्मी उम्मीदवार खड़ा करने की पद्धति के कारण बुरी तरह सीमित हो जाता है क्योंकि काम चलाने के लिए मतदाताओं को केवल उन्हींमें से किसीको चुनना पड़ता है किस प्रकार यह सीमित निर्वाचनाधिकार तक अवास्तविक हो जाता है क्योंकि निर्वाचक गण के समक्ष जो मुद्दे रखे जाते हैं वे बहुत अधिक तो उनकी समझ के बाहर होते हैं ।

दलीय पद्धति को जैसा मैंने देखा वह लोगों को डरपोक और नपुंसक बना रही थी । इसने इस तरह से काम नहीं किया कि जनता की शक्ति और अभिक्रम बढ़ें या उन्हें स्वराज्य स्थापित करने और अपनी व्यवस्था अपने आप संभालने में सहायता मिले । दलों को तो केवल इससे मतलब था कि सत्ता उनके हाथ में आये और वे जनता के ऊपर बिला शक जनता की सलाह से राज्य कर

सकें । मैंने ऐसा अनुभव किया कि दलीय पद्धति लोगों को भेड़ों की स्थिति में ला देना चाहती है जिनका एकाधिकार केवल नियत समय पर गड़ेरियों को चुन लेना है जो उनके कल्याण की चिन्ता करेंगे । मुझे इसमें स्वतन्त्रता का दर्शन नहीं हुआ उस स्वतन्त्रता या स्वराज्य का जिसके लिए मैं लड़ा था और इस देश के लोग जिसके लिए लड़े थे ।

अवश्य ही जनतांत्रिक समाजवादियों में सत्ता के विकेन्द्रीकरण चौखम्बा राज्य तथा इसी प्रकार की अन्य धारणाओं के सम्बन्ध में अस्पष्ट चर्चाएं होती थीं । किन्तु अमल में मैंने देखा उनका एकमात्र ध्येय जैसा अब भी है सत्ता पर कब्ज़ा करना था । लगता है उनका विश्वास था कि सत्ता का विकेन्द्रीकरण भी पहले सत्ता के वर्तमान केन्द्रों को जीतर अपने कब्ज़े में कर लेने के उपरान्त ही संभव होगा क्योंकि उस समय विकेन्द्रीकरण और संस्था विघटन कानून बनाकर हो सकता है । वे इस प्रक्रिया की निरर्थकता को नहीं देखते । ऊपर से लोगों के हाथ में सत्ता बांटकर विकेन्द्रीकरण नहीं किया जा सकता खास तौर से जब लोग राजनीतिक दृष्टि से बिल्कुल कुचल दिये गये हों और दल प्रथा तथा चोटी पर सत्ता के केन्द्रित होने के कारण स्व शासन की जिनकी शक्ति यदि नष्ट नहीं तो सर्वथा छिन्न भिन्नकर दी गयी हो । आज विधानसभा में बने हुए नियमों के अनुसार ग्राम पंचायतों का संगठन हो रहा है । ये सच्ची पंचायतें नहीं हैं । गांधीजी जिसे ग्रामराज्य कहते थे वह ये नहीं हैं । गांधीजी के सारगर्भित शब्दों में पंचायत अपने ही बनाये हुए कानूनों के अनुसार काम कर सकती है । समाज के जीवन को आत्म नियंत्रित रखने की यह शवित पैदा की जानी चाहिए विकेन्द्रीकरण के नाम पर ऊपर से बख्शी नहीं जानी चा चाहिए । स्वराज्य और आत्म व्यवस्था के कार्यक्रम जनता के सामने रखे जाएं और विधायक और अदलीय दृष्टि से उनकी सहायता की जाय ताकि वे उन्हें व्यवहार में ला सकें । अब यह स्पष्ट हो गया कि गांधीजी राष्ट्रीय पैमाने पर इस कार्यक्रम को चलाने की दृष्टि से ही कांग्रेस को एक अदलीय लोक सेवक संघ में परिवर्तित करने की बात सोच रहे थे । बिल्कुल यही काम विनोबाजी कर रहे हैं । स्वाभाविक है उस दौड़ में गांधीजी जितना आगे बढ़ सकते थे विनोबाजी नहीं बढ़ सके । किन्तु छह वर्ष की अल्प अवधि में उन्होंने सफलतापूर्वक नीचे से सामाजिक क्रान्ति और सामाजिक पुर्निर्माण का आन्दोलन खड़ा कर दिया साथ ही इस आन्दोलन में मदद करने के लिए लोक सेवकों का एक नया दल तैयार कर लिया यह एक अद्भुत घटना है ।

दल प्रथा के दोषों और असफलताओं से छुटकारा पाने के लिए मैं कुछ दिनों तक प्रतिस्पर्धी के स्थान में सहयोगी दल प्रथा की कल्पना में मग्न रहा । आखिरकार मैंने यह देखा कि अव्वल तो ऐसे राजनीतिक प्रयोग के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं है । दूसरे सत्ता के लिए संघर्ष और वर्तमान संसदीय गणतंत्र प्रणाली के प्रस्तुत ढांचे के रहते हुए सिवा किसी विशेष निमित्त और विशेष अवसर के यह प्रयोग सफल नहीं हो सकता । फिर भी मेरा विश्वास है कि यदि इसके लिए मनोवैज्ञानिक वातावरण तैयार हो जाय तो इस प्रकार का राजनीतिक प्रयोग आज भी किया जा सकता है । किन्तु उसके लिए आज के ढांचे को संसदीय गणतंत्र से भिन्न किसी दूसरे रूप में बदलना ही पड़ेगा । जो भी हो दल प्रथा से मेरी विरक्ति मुझे बराबर उसके किसी अच्छे पर्याय को खोजने के लिए विवश कर रही थी । जनता के स्वशासन की ओर गांधीजी की जो निर्दलीय विधायक दृष्टि थी उसमें अन्वेषण का एक आशाजनक मार्ग दिखलाई दिया ।

राजनीति के सम्बन्ध में जो शंकाएं थीं वे चूंकि दल प्रथा तक ही सीमित नहीं थीं मेरे मन में कुछ बुनियादी प्रश्न उठे । खास तौर से सामाजिक जीवन के जो लक्ष्य मेरे पूर्व ही स्थापित हो चुके थे उनको ध्यान में रखते हुए मैं सोचने लगा कि मानव समाज में राज्य का स्थान और कार्य क्या होगा । कदाचित् सत्ताहीन समाज के आदर्श से युक्त मार्क्सवाद के मेरे अध्ययन ने इन प्रश्नों को अधिक तीव्र और कष्टकारक बना दिया । यद्यपि मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धान्तों को मैंने छोड़ दिया था क्योंकि उनसे मुझे अपने लक्ष्य तक पहुंचने की आशा नहीं थी । मैं यह जरूर दृढ़ता के साथ मानता रहा कि मानव स्वतन्त्रता की पूरी और सम्पूर्ण अनुभूति केवल सत्ताहीन समाज में ही हो सकती है मुझे न यकीन था और न है कि राज्य व्यवस्था कभी भी पूर्ण रूप में खतम हो सकती है । किन्तु मुझे यकीन है लोगों को यह विश्वास करा देना कि राज्य की सत्ता व्यवहार और क्षेत्र को जहां तक संभव हो सकता था संकुचित और सीमित कर दिया गया है एक अति उच्च लक्ष्य है जिसकी सिद्धि के लिए समाज को प्रयत्न करना चाहिए । इस समय गांधीजी के इस सूत्र वाक्य में मेरा पक्का विश्वास हो गया था और आज भी है कि वही सरकार सर्वोत्तम होती है जो न्यूनतम शासन करती है । मनुष्य जब बिना किसी प्रकार के बाह्य दबाव या अंकुश के अपने साथियों में बन्धुत्व व्याय और सहयोग के साथ रहने योग्य हो जायगा मैं समझूंगा कि उसका [illegible] विकास हो गया है । मैंने मनुष्य के विकास की कसौटी बिना किसी प्रकार का बाह्यदबाव या अंकुश के अपने साथियों के बीच बन्धुत्व न्याय और सहयोग की

भावनासे उसके रह सकने की योग्यता को माना है। यही कारण है कि मैंने मनुष्य और समाज की समस्या को मूलत: एक नैतिक समस्या माना है।

मेरे चिन्तन के पीछे समाज में राज्य के स्थान और कार्यक्षेत्र की जो कल्पना रही है उससे आप यह समझ सकते हैं कि मैं राज्य की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई प्रतिष्ठा को कितनी गहरी आशंका और भय की दृष्टि से देखता रहा हूं। गणतांत्रिक समाजवादी साम्यवादी तथा कल्याणवादी फासिस्टों की तो कहें ही क्या सब के सब राज्यवादी हैं। वे सब पहले हाथ में सत्ता लेकर और तत्पश्चात् राज्य के अधिकारों औरकार्यक्षेत्रों में वृद्धि करके अपने ही ढंग का सत्ययुग निर्माण करना चाहते हैं।

बुर्जुआ राज्य का राजनीतिक सत्ता पर एकाधिकार था। समाजवादी राज्य में उसके साथ आर्थिक एकाधिकार के जुड़ने का भय रहता है। सत्ता के इतने बड़े केन्द्रीकरण को नियंत्रित और संयमित रखने के लिए उससे अधिक भी नहीं तो उतनी शक्ति तो चाहिए ही। समाजवादी समाज में इस प्रकार की कोई शक्ति समीप नहीं रहेगी। कागजी संविधानों से नागरिकों की स्वतन्त्रता और प्रभुता के आश्वासन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आर्थिक और राजनीतिक अफसरशाही इतनी शक्तिशाली हो जायगी और इतने महत्त्वपूर्ण स्थान उसके हाथ में होंगे कि जनता की स्वतन्त्रता और स्वाधिकार के साथ ही उसकी रोजी रोटी भी सर्वथा उसकी दया पर निर्भर करेगी।

मैं जानता हूं कि गणतांत्रिक समाजवादी इन खतरों से परिचित हैं और वे इन्हें संयमित और सन्तुलित रखने के उपाय खोज रहे हैं। स्वतन्त्र ट्रेड यूनियनों को आजादी का एक बड़ा किला समझा जाता है यद्यपि यह सर्वविदित है कि बड़े ट्रेड यूनियन भी स्वत: नौकर शाही से लदे हुए हैं। औद्योगिक गणतन्त्र और सरकारी उद्योगों को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाने की योजनाएं बनी हैं। उपभोक्तासंघ और सब प्रकार की सहकारी समितियां सचमुच सन्तुलन और संयम कायम करने के साधन समझे जाते हैं। समाजवादी विचारधारा में आगे चलकर तो शक्ति और कार्यक्षेत्र के विकेन्द्रीकरण का भी समावेश हो गया है। किन्तु यह सब कुछ कहने सुनने के बाद भी गणतांत्रिक समाजवादी राज्य आखिर एक दैत्य जैसा ही है जो जनता की स्वतन्त्रताओं के ऊपर जमकर सवार हो जायगा।

जहां तक मैं सोच सकता था इससे मुक्त होने का केवल एक ही उपाय मिला और वह मुझे

राजनीति से और भी दूर खींचकर सर्वोदय की ओर ले आया । जैसा आन्तर और बाह्य अनुशासन के प्रसंग में ऊपर मैंने कहा है जाहिर तरीका यह है कि जहां तक व्यावहारिक हो सके जनता के लिए राज्य के बिना काम चलाना और अपनी व्यवस्था प्रत्यक्ष रूप में अपने आप करना संभव बनाया जाय । समाजवाद की भाषा में बोलना हो तो मैं इस प्रकार कहूंगा वह तरीका यह है कि राज्यसत्ता का इस्तेमाल करके समाजवाद कायम करने के बजाय जनता के स्वैच्छिक प्रयत्नों द्वारा समाजवादी जीवन के स्वरूपों की सृष्टि और विकास किया जाय । दूसरे शब्दों में उपाय यह है कि राज्यवादी समाजवाद के स्थान पर जनता का समाजवाद कायम किया जाय । सर्वोदय जनता का समाजवाद है । प्रत्येक समाजवादी सर्वोदय से सहमत हो या न हो इतना उसे मानना चाहिए कि जितना ही जनता का अथवा स्वैच्छिक समाजवाद अधिक होगा और राज्य से लादा हुआ समाजवाद कम होगा उतना ही अधिक पूर्ण और यथार्थ समाजवाद बनेगा । दुर्भाग्य से बहुत ही कम समाजवादी हैं जो जनता के समाजवाद की ओर अधिक ध्यान दे रहे हैं । बरतानिया के समाजवादियों के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए श्री जैक बेली बरतानिया के कोआपरेटिव नेता ने कहा है : बरतानिया में अधिकांश समाजवादियों का ध्यान राजसत्ता पर अधिकार करके उसका उपयोग करने की ओर इतना अधिक केन्द्रित हो गया है कि उन्हें समाजवाद के अशासकीय रूपों की सार्थकता दिखलाई ही नहीं पड़ती । बरतानिया की सी ही स्थिति सारे विश्व की है । समाजवाद के अशासकीय रूपों को खड़ा करने की दृष्टि से यह बात स्पष्ट है कि किसी को भी दल बनाकर काम करने या सत्ता पर अधिकार जमाने के लिए संघर्ष में भाग लेने की कोई आवश्यकता नहीं है । इस संदर्भ में दल और सत्ता दोनों आवश्यक हो जाते हैं । जरूरत है नि:स्वार्थ काम करनेवाले लोगों के दल की जो जनता के बीच रहकर काम करने के लिए तैयार हों और जो स्वावलम्बन और स्वशासन के आधार पर उनके जीवन का पुनर्गठन करने में जनता की सहायता कर सकें । इस प्रसंग में बरबस गांधीजी के लोकसेवक संघ का फिर से स्मरण हो जाता है ।

अब प्रश्न यह आता है कि उस समाज का रूप क्या होगा जिसमें जनता के लिए अपने सामाजिक जीवन का स्वयं संचालन करना और जीवन के उन समस्त मूल्यों का विकास करना होगा जो सहकार आत्मानुशासन उत्तरदायित्व की भावना आदि के रूप में समाजवादी समाज की विशेषताएं हैं । यह ऐसा प्रश्न है जिसकी ओर समाजवादियों ने अब तक कम से कम ध्यान दिया

है। मानव समाज कुछ इस तरह विकसित हुआ है कि उससे आज की पेचीदा औद्योगिक सभ्यताएं ही निकली हैं। इनमें शहर कहलानेवाले मनुष्यों के बड़े बड़े जंगल हैं आर्थिक और सामाजिक सम्बन्ध सर्वथा अवैयक्तिक और निष्प्राण हैं कार्य प्रणाली कष्टसाध्य और आनन्द एवं सृजन शक्ति की अभिव्यक्ति के अवसरों से वंचित है और केवल उत्पादन शक्ति और कार्यक्षमता के आधार पर ही मान्यता मिलती है। विज्ञान ने अखिल विश्व को सिकोड़कर एक पड़ोस बना दिया है। किन्तु मनुष्य ने एक ऐसी सभ्यता का निर्माण कर लिया है कि पड़ोसी भी अपरिचित बन गये हैं। इस प्रकार का पेचीदा और ऊपर से बोझिल समाज अफसरशाहों व्यवस्थापकों यंत्रज्ञों और अंकशास्त्रियों के लिए स्वर्ग बन जाता है। इस प्रकार का समाज एक घर नहीं बन सकता जहां भाई भी भाई भाई की तरह एक साथ रह सकें।

समाजवादियों ने विज्ञान उत्पादन कार्यक्षमता जीवन स्तर तथा ऊंचे ऊंचे आदर्शवाले दल के नारों के नाम पर समाज के इस भस्मासुर को बिल्कुल ज्यों का त्यों ले लिया है और अब वे आशा करते हैं कि इसमें सार्वजनिक स्वामित्व या जनता की मालिकी जोड़कर इसे समाजवादी बनायेंगे। मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि इस प्रकार के समाज में समाजवाद सांस भी नहीं ले सकता। यदि मनुष्य छोटे छोटे समुदायों में रहे तो स्व शासन स्व व्यवस्था पारस्परिक सहकार और समानता स्वतन्त्रता बन्धुत्व इन सबका प्रयोग और विकास बेहतरी के लिए हो सकता है। में भी दूर दृष्टिवाले विचारकों को अब ऐसा लगने लगा है।

इसके अतिरिक्त मनुष्य प्रकृति और संस्कृति दोनों की उपज है। इसलिए उसके सन्तुलित विकास के लिए यह आवश्यक है कि दोनों के बीच मधुर समरसता पैदा की जाय। लेकिन पार्कों और हरे भरे मार्गों के होते हुए भी लन्दन पेरिस मास्को जैसे आधुनिक सभ्यता के केन्द्रों में इस प्रकार की समरसता कायम करना संभव नहीं। इसीका परिणाम है कि आधुनिक मनुष्य का विकास विकृत और एकांगी हो गया है। प्रकृति और संस्कृति का सरस सम्मिश्रण अपेक्षाकृत छोटे छोटे समुदायों में ही संभव हो सकता है।

इन्हीं कारणों से गांधीजी इतना जोर देकर कहते थे कि भारतीय ग्राम और ग्राम स्वराज्य ग्रामराज ही उनके भावी समाज को बुनियाद हैं। भाइयों की तरह शान्तिपूर्वक रहनेवाले स्वतन्त्र और समान व्यक्तियों के समाज से ही यहां गांधीजी का अभिप्राय है।

छोटी छोटी बस्तियों में रहने और अधिकांश अपने लिए या स्थानिक उपयोग के लिए छोटे

छोटे यंत्रों पर उत्पादन करने को लोग विज्ञान की सूई को पीछे घसीटना कह सकते हैं । लोग समझते हैं विज्ञान एवं बड़े पैमाने पर केन्द्रित उत्पादन और मनुष्यों की घनी घनी बस्तियां अनिवार्य रूप से साथ साथ रहेंगी । इससे अधिक बेमानी बात और क्या हो सकती है ।

विज्ञान दो तरह का है : १ शुद्ध विज्ञान २ उपयोगी विज्ञान । मैं केवल शुद्ध विज्ञान को ह ही विज्ञान कहूंगा दूसरा तो यंत्र कला है । फिर विज्ञान का उपयोग स्वतः विज्ञान पर निर्भर नहीं करता बल्कि समाज की प्रवृत्ति और गठन पर निर्भर करता है । बड़ी बड़ी मशीनों के द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादन करना रुपया कमानेवालों के लिए लाभदायक था इसलिए यंत्र कला ने उस विशिष्ट प्रकार के उत्पादन का मार्ग अपनाया । समाज में पैसा कमानेवाले पूंजीपतियों का प्रभाव था इसलिए उनके मन की बात होने ही वाली थी । सरकारों ने भी अपने आदर्शों की चिन्ता न करते हुए केन्द्रित और बड़े पैमाने पर उत्पादन को पसन्द किया । क्योंकि युद्ध करने के लिए अथवा आप चाहें तो संरक्षण के लिए भी कह सकते हैं उसकी आवश्यकता थी ॥ इसलिए भी उसका महत्त्व था कि उसके द्वारा सारी आर्थिक और इसलिए राजनीतिक सत्ता उनके हाथों में केन्द्रित हो गयी थी । इस प्रकार सरकारों और मुनाफाखोरों ने मिलकर आधुनिक समाज के भस्मासुर को पैदा किया है । बेचारे विज्ञान का इस मामले में कोई नहीं था । इतना ही नहीं वैज्ञानिकों का बस चलता तो वे उत्पादन और विनाश के बहुत से इंजनों को जिन जिनके निर्माण में उनके अनुसन्धान से सहायता मिली है चकना चूर करके प्रसन्न होते । किन्तु समाज ने यदि सत्ता मुनाफा और युद्ध के लक्ष्यों को न अपनाकर शान्ति सद्भावना सहकार स्वतन्त्रता और बन्धुत्व के लक्ष्यों को अपनाया होता तो निश्चित ही यन्त्र कला का तदनुरूप विकास करने में विज्ञान का उतना ही उपयोग हुआ होता । वह विज्ञान की अवनति नहीं कही जाती बल्कि विनाश के बदले निर्माण की दिशा में उसकी प्रगति ही कही जाती । यह बता देना चाहिए कि आणविक शक्ति ने उत्पादन के व्यापक वितरण और लघुउद्योगों के विकास को पहले की अपेक्षा अधिक संभव कर दिया है ।

उसकी समस्त समस्याओं पर विचार हो चुका है और उनका हल ढूंढ़ लिया गया है । उदाहरण के तौर पर क्या ये छोटी छोटी स्वाश्रयी और स्वशासित बस्तियां आपस में एक दूसरे से सम्बद्ध रहेंगी यह एक बड़ा सवाल तुरन्त मेरे मन में उठता है । हां इस सम्बन्ध में गांधीजी की महान् कल्पना हमारे समक्ष है ।

असंख्य देहातों से संयुक्त इस ढांचे में निरन्तर फैलाववाले वर्तुल होंगे चढ़ाववाले कभी नहीं। जीवन एक शुंडाकार स्तम्भ की तरह नहीं होगा जिसमें चोटी का भार तली पर रहता है। यह एक समुद्रीय वर्तुल जैसा होगा जिसका केन्द्र बिन्दु होगा व्यक्ति। जिस प्रकार तालाब में ढेला मारने पर पहले एक गढ़ा बनता है फिर क्रमश: एक के बाद दूसरी वर्तुलाकार तरंगें उठती हैं और अन्त में सारा तालाब तरंगित हो जाता है उसी प्रकार व्यक्ति सदैव ग्राम में विलीन होने को तैयार रहेगा ग्राम दूसरे ग्राम मंडल में जब तक कि अन्त में सम्पूर्ण सृष्टि व्यक्तियों से निर्मित एक जीवन नहीं बन जाता। ये व्यक्ति अपनी उद्दंडता से कभी आक्रमणकारी नहीं होंगे बल्कि समुद्रीय वर्तुल की तरह जो असंख्य गांव फैले हुए हैं जिनकी वे स्वयं अविभाज्य इकाइयां हैं उनकी समृद्धि और गौरव का बड़ी नम्रता के साथ हिल मिलकर उपयोग करेंगे।

गांधीजी के शब्द हमारा मार्ग दर्शन करते हैं किन्तु उस चित्र को और अधिक स्पष्ट करने के लिए काफी चिन्तन और अनुभव की आवश्यकता होगी। फिर भी एक चेतावनी देने की आवश्यकता है। यद्यपि यह बात निश्चित है कि छोटी छोटी बस्तियों में व्यक्तिगत सम्बन्धों को अवकाश और प्रोत्साहन देते हुए जो जीवन बनेगा वह सर्वोदय के आदर्शों की स्थापना के लिए अधिक उपयुक्त और अनुकूल होगा। फिर भी यह नहीं सोचना चाहिए कि केवल आकार में छोटे होने के कारण ही छोटी छोटी बस्थियां सर्वोदय बस्तियां हो जायंगी। यदि ऐसा होता तो आज भारतवर्ष के प्रत्येक गांव में हमें सर्वोदय का साक्षात्कार हुआ होता। जीवन के बाह्य रूपों का तभी कुछ महत्त्व होता है जब अन्दर भी कोई तथ्य होता है। लोगों को पहले जीवन की सर्वोदय दृष्टि को समझ लेना चाहिए और स्वीकार कर लेना चाहिए तभी कैसे वातावरण और कैसे सामाजिक ढांचे में वे उस जीवन को सबसे अच्छी तरह बिता सकते हैं इसकी खोज की जा सकती है।

प्राय: यह आशंका व्यक्त की जाती है कि स्वाश्रयी और स्वशासित बस्तियां एक दूसरे से मिलकर रहेंगी और राष्ट्र की एकता और स्थिरता टिक सकेगी। सर्वोदयी विश्व समाज में वर्तमान राष्ट्रों के क्रम से बने हुए राज्यों का कोई स्थान नहीं होगा। सर्वोदय दृष्टि विश्व दृष्टि है और गांधीजी के समुद्रीय वर्तुल के केन्द्र में खड़ा हुआ व्यक्ति विश्व नागरिक है। किन्तु फिलहाल सर्वोदय के विश्वरूप को हम छोड़ दें। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि स्वशासित छोटी छोटी बस्तियां एक दूसरे के प्रति शत्रुता का भाव रखेंगी या अपने एक दूसरे के

साथ सम्बन्ध में पृथक्तावादी या स्वार्थी हो जायंगी । यदि किसी बस्ती का अन्तर जीवन ठोस बुनियाद पर आधारित है तो उसका बाह्य जीवन भी उतना ही ठोस होकर रहेगा ।

भारत में अतीत में औद्योगीकरण

डा० बी एन गुप्ता

भारतीय उद्योगों का अतीत

भारतीय उद्योगों का अतीत अत्यन्त ही गौरवपूर्ण रहा है। प्राचीन काल में भारतीय अर्थ व्यवस्था में कृषि तथा तत्कालीन प्रचलित पद्धतियों पर आधारित उद्योगों का समन्वय था तथा दोनों ही क्षेत्रों में पूर्ण समृद्धि पायी जाती थी। अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक औद्योगिक क्षेत्र में भारत संसार का अग्रणी देश था तथा भारत को संसार की वर्कशाप कहा जाता था। उस सम समय जबकि वर्तमान औद्योगिक प्रणाली के जन्म स्थान पश्चिमी यूरोप में असभ्य कबीले बसे हुए थे भारत अपने शासकों के धन सम्पत्ति तथा अपने कारीगरों की कलापूर्ण चातुरी के लिए प्रसिद्ध था। एडवर्ड थार्नटन ने भी इसी प्रकार विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि जब मिस्त्र के पिरामिड नील नदी की घाटी की ओर नीचे को झांक रहे थे जब यूनान और इटली जो कि यूरोपीय सभ्यता के जन्म स्थान हैं जंगली किसानों के निवास स्थान थे भारत धन धान्य तथा वैभव का उद्गम स्थान था। भारत के बने माल का निर्यात संसार के कोने कोने में किया जाता था।
इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासज्ञ डाक्टर राबर्टसन ने १८१७ ई० में लिखा था हर युग में सोना और चांदी विशेषकर चांदी दूसरे मुल्कों से हिन्दुस्तान में भेजी जाती थी जिससे हिन्दुस्तान को बहुत बड़ा लाभ था। पृथ्वी का कोई और भाग ऐसा नहीं है जहां के लोग अपने जीवन की आवश्यकताओं या अपने ऐशआराम की चीजों के लिए दूसरे देशों पर इतना कम निर्भर हों। ईश्वर ने भारतवासियों को अत्यन्त उपयुक्त जलवायु दिया है उनकी भूमि अत्यन्त उपजाऊ है और इस पर वहां के लोग अत्यन्त दक्ष कारीगर हैं इन सब बातों के कारण हिन्दुस्तानी अपनी समस्त इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं। नतीजा यह है कि बाहरी संसार के साथ उनकी सदा एक ही ढंग की तिजारत होती रही है और उनके यहां के अद्भुत प्राकृतिक और हाथ के बने माल के बदले में कीमती धातुएं उन्हें मिलती रही हैं।

यही लेखक एक अन्य स्थान पर लिखते हैं कि हजरत ईसा के जन्म के समय से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के शुरू तक भारत के साथ दूसरे देशों का व्यापार बराबर इस ढंग का बना रहा । अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक इंगलिस्तान के उद्योग धन्धे भारत के उद्योग धन्धों के मुकाबले में बहुत ही पिछड़े हुए थे । इंगलिस्तान के जुलाहे और दूसरे कारीगर सुन्दरता मजबूती सस्तेपन या निकासी किसी बात में भी अपने माल की तुलना भारतीय माल के साथ न कर सकते थे । उस समय तक जो युरोपियन व्यापारी भारत पहुंचे उन सबका उद्देश्य केवल भारत का बना माल अपने देशों में ले जाना होता था । यही उद्देश्य ईस्ट इंडिया कम्पनी का भी था ।

भारतीय इतिहास गौरवपूर्ण अतीत के प्रमाणों से भरा पड़ा है । कौटिल्य के अर्थशास्त्र जातक कथाओं विदेशी यात्रियों द्वारा लिखित यात्रा वर्णनों तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में प्राचीन भारत के उद्योगों की उन्नति की झलक मिलती है । हीरोडोट्स नामक यूनानी लेखक का कथन है कि भारत में उत्तम कोटि की कपास जो भेड़ की ऊन से भी श्रेष्ठ है भारतीय वस्त्रों के निर्माण में प्रयोग की जाती है । फ्रांसीसी यात्री बरनियर ने लिखा है कि यह भारत एक ऐसा अथाह गड्ढा है जिसमें संसार का अधिकांश सोना और चांदी चारों तरफ से अनेक रास्तों से आकर जमा होता है और जिसके बाहर निकलने का उसे एक भी रास्ता नहीं मिलता ।

इन कथनों से भारत के अतीत काल में स्थापित औद्योगिक प्रभुत्व का पता चलता है । उस युग में भारत में कपड़ा लोहा कागज कांच जहाजरानी और कलात्मक वस्तुओं का उत्पादन करने वाले उद्योग थे । भारतीय सूती वस्त्र उद्योग तो अपनी कला की चरम सीमा पर पहुंच गया था । ढाका की मलमल तो इतिहास प्रसिद्ध वस्तु है । वह गौरवपूर्ण कला का एक सुन्दर नमूना था । बुकेनन के शब्दों में ढाका की मलमल जिसे बुनी हवा कहते थे ४०० से अधिक काउण्ट्स की बनती थी तथा एक पूर्ण विकसित युवती के लिए बड़ी साड़ी एक अंगूठी के अन्दर से निकाली जा सकती थी । ईसा से २००० वर्ष पूर्व के मिस्त्र के मसाला लगे हुए शव बढ़िया किस्म की भारतीय मलमल में लिपटे हुए मिले हैं । ढाके की मलमल के बारे में अनेक बातें कही जाती हैं जैसे २० गज लम्बे तथा १ गज चौड़े थान का अंगूठी में से निकलना बांस की १ फुट की नली में इतनी मलमल आ जाना जो एक बड़े हाथी को पूरी तरह ढक ले औरंगजेब का अपनी पुत्री को डांटना जो मलमल पहने नग्न मालूम पड़ रही थी यद्यपि वह आठ तह लपेटे थी आदि । मानचेस्टर के एक

व्यापारी ने तो उसे अतिरिक्त बनारस चन्देरी कोटा अर्नी आदि स्थान वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध थे। इन केन्द्रों पर अत्यन्त ही सुन्दर कपड़े बनते थे। भारतीय वस्त्र कला विकास का पता अनेक धार्मिक ग्रन्थों के अवलोकन से चलता है। राज्यश्री के विवाह के लिए तैयार किये गये वस्त्रों का उल्लेख करते हुए बाण ने लिखा है कि रेशम रुई ऊन के सांप की केंचुली के समान महीन श्वास से उड़ जाने वाले स्पर्श से ही अनुमेय और इन्द्रधनुष से रंग वाले कपड़ों से घर भर गया। इन स्थानों के अतिरिक्त भारत में बनी कपड़े की छींटें विदेशों में बहुत पसन्द की जाती थीं। डेनियल डैफो के मतानुसार इंगलैण्ड के हर घर में भारतीय वस्त्र का प्रवेश हो गया था। भारत के छींट के कपड़े हरएक महिला के पेटीकोट के लिए प्रयुक्त होने लगे थे। स्वयं महारानी भी कैलिको के कपड़े पहनकर प्रसन्न होती थीं। पर्दों गद्दियों और कुर्सियों के गिलाफों आदि के लिए भारतीय वस्त्र ही उपयोग में लाये जाते थे।

सूती वस्त्र के पश्चात् रेशमी कपड़े का उद्योग प्रमुख था। बनारस अहमदाबाद सूरत बड़ौदा रायचूर तंजौर त्रिचनापल्ली आदि रेशमी वस्त्र उद्योग के प्रमुख केन्द्र थे। रेशमी कपड़े पर सोने व चांदी के तारों से काम करना यहां की विशेषता थी। ऐसे कपड़े राजघरानों तथा धनवान व्यक्तियों के उपभोग के लिए बनाये जाते थे। बंगाल में माल्दा राजशाही वर्द्वान मुर्शिदाबाद रेशमी कपड़े के लिए प्रसिद्ध थे।

इन उद्योगों के अतिरिक्त तांबा पीतल एवं कांसे के बने बर्तनों के लिए बनारस पूना नासिक हैदराबाद विशाखपत्तम तथा तंजौर प्रसिद्ध थे। राजपूताने में पत्थरों की खुदाई तथा रत्नों पर मीनाकारी का सुन्दर काम होता था। संगमरमर के काम के लिए आगरा प्रसिद्ध था। लौह व इस्पात उद्योग भी उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच गया था जिसके प्रतीकस्वरूप देहली का लौह स्तम्भ आज भी मौजूद है। स्टील बनाने कला अति प्राचीन काल से विद्यमान थी। श्री रानाडे के शब्दों में लोहे के कारखानों ने न केवल स्थानीय सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति की बल्कि विदेशों को निर्यात के अवसर भी भारत को दिये। फारस के व्यापारी हमारे देश से लोहे की वस्तुएं खरीदकर एशिया के अन्य भागों में निर्यात करते थे। यहां के इस्पात की मांग इंगलैण्ड में चाकू कैंची आदि कटलरी की वस्तुएं बनाने के लिए बहुत थी। इसके अतिरिक्त हाथी दांत का काम कांच का सामान चमड़े की वस्तुएं कागज आदि के उद्योग भी पर्याप्त विकसित थे। एम० मार्टिन ने इसीलिए औद्योगिक कला में दक्ष भारत के बारे में विचार व्यक्त किया है कि

हवा में उड़ने वाले मकड़ी के महीन जाले की भांति ढाका की मलमल काश्मीर की सुन्दर शालों तथा दिल्ली के जरी के रेशमी कपड़ों में जारों के दरबारों की सुन्दरियों को उस समय सुशोभित किया जबकि ब्रिटेन वासियों को जंगली माना जाता था। धातुओं पर खुदाई व मीना का काम हाथी दांत आबनूस व चन्दन पर सुन्दर कारीगरी सुन्दर रंगों की छींटें मोती व हीरा जवाहरातों के जेवर कढ़ी हुई मलमल व दरियां सुन्दर चीनी मिट्टी के बर्तन तथा पूर्ण जहाजरानी आदि का सभ्य जगत में बड़ा मान था। लन्दन को इतिहास में स्थान मिलने से पूर्व ही भारत दुनिया का सबसे धनी बाजार था। सोलोमन राजा के राज्य के पहले से ही भारत के मसाले इत्र मोती तथा अन्य सामान सभ्य देशों को भेजे जाते थे। इन सब बातों से पता चलता है कि भारत में उद्योगों का विशेष महत्त्व था और अतीत में वे चरमोत्कर्ष पर पहुंच गये थे।

अतीत के उद्योगों के पतन के कारण

भारतीय उद्योगों की यह गौरवपूर्ण स्थिति सदा ही नहीं बनी रही। अनेक कारणों ने मिलकर अतीत के इन उद्योगों के विनाश में योग दिया और भारतीय कला कौशल का अन्त हो गया। ये कारण निम्नलिखित थे :

१ इंगलैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति अठारहवीं शताब्दी में हुई इंगलैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति का भारतीय उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। शक्ति करघे तथा भाप के इंजन के आविष्कार का उपयोग उद्योगों में होने से उत्पादन प्रक्रियाओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों के कारण मशीन निर्मित सस्ती वस्तुएं बनने लगीं तथा भारत में बनी वस्तुएं उनकी तुलना में महंगी पड़ने लगीं। इसी अवधि में इंगलैण्ड का राजनीतिक प्रभुत्व संसार में फैला तथा संसार का धन इंगलैण्ड में जाने लगा। इससे वहां के उद्योग धन्धे तेजी से उन्नति करने लगे। सभी प्रकार के कारणों ने इंगलैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति को योग दिया। इंगलैण्ड के कारखानों में सुधरी उत्पादन क्रियाओं से एक बड़े पैमाने पर माल बनने लगा जिसको खपाने के लिए व्यापक बाजारों की आवश्यकता थी। अतः भारतीय माल को मंगा कर बेचने की अपेक्षा इंगलैण्ड में ही बने माल को बाहर बेचने के प्रयत्न किये जाने लगे।

२ राजा व नवाबों का अन्त कलात्मक तथा विलासिता की वस्तुओं का निर्माण करने वाले उद्योग अधिकतर नगरों में केन्द्रित थे। ये उद्योग राजा व नवाबों के उपभोग के लिए वस्तुओं का निर्माण करते थे। इसका कारण यह था कि इन उद्योगों में निर्मित वस्तुएं महंगी

होती थीं इस कारण धनीमानी व्यक्ति ही उनको खरीद सकते थे । ईस्ट इंडिया कम्पनी के पास राजनीतिक सत्ता जाने से भारतीय राजाओं व नवाबों की स्थिति बिगड़ गयी । जैसे जैसे देशी राजाओं का अन्त होने लगा उन केन्द्रों पर स्थित उद्योग धीरे धीरे पतन की ओर अग्रसर होने लगे । कालिन ने लिखा है कलात्मक उद्योग देशी राजाओं की छत्रछाया में उन्नतिशील थे तथा उनके अन्त के साथ साथ उद्योग भी समाप्त हो गये । आधुनिक राजाओं ने देश में बनी हुई कलात्मक वस्तुओं की तुलना में विदेशी उत्पादन को पसन्द किया तथा देशी कारीगरों ने अपने आपको नयी परिस्थितियों के अनुसार नहीं ढाला ।

३ नये वर्गों की रुचि भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना तथा विदेशी सभ्यता के प्रचार के कारण भी भारतीय उद्योगों का अन्त हो गया था । प्राचीन राजाओं व नवाबों की सत्ता समाप्त हो जाने पर एक नये वर्ग का उदय हुआ । इस नये वर्ग ने अंग्रेजों की नकल करने में ही अपना गौरव समझा । इस वर्ग के लोगों ने विदेशी रहन सहन के ढंग को अपनाया जिससे विदेशी वस्तुओं का प्रयोग अधिक होने लगा । श्री ब्लण्ड ने लिखा है पश्चिमी सभ्यता के प्रचार के साथ साथ भारतीय व्यक्ति यूरोपियन ढंग से रहना पसन्द करने लगा । इस ढंग को पसन्द करने वाले व्यक्तियों ने भारतीय कलात्मक उद्योगों की उपेक्षा की तथा उनके प्रति कमजोरी दिखायी जिससे वे लोग जिनकी उन्होंने नकल की है असभ्य मानने लगें । यूरोपियन फैशन को सभ्यता का प्रतीक माना जाने लगा । रेशमी कपड़ों की अपेक्षा विदेशी मिलों के बने कपड़े पसन्द किये जाने लगे । कढ़े हुए जूतों की अपेक्षा विदेशी ढंग के जूते पसन्द किये जाते थे । हथियारों के रखने पर प्रतिबन्ध लग जाने से तलवार आदि बनाने के उद्योग समाप्त हो गये ।। इस प्रकार कलात्मक तथा मौलिक वस्तुओं का उत्पादन करने वाले उद्योग एक के बाद एक समाप्त होने लगे ।

४ भारत को ब्रिटेन का उपनिवेश माना गया भारत पर राजनीतिक आधिपत्य हो जाने के पश्चात् इंगलैण्ड ने इस बात का प्रयत्न किया कि भारत में कच्चे पदार्थों का ही उत्पादन किया जाय । भारत से कच्चे माल को ले जाकर इंगलैण्ड में मशीनों की सहायता से वस्तुओं का निर्माण किया जाय और फिर उन निर्मित वस्तुओं को भारत में बेचा जाय । भारत की अर्थ व्यवस्था को इंगलैण्ड की अर्थ व्यवस्था का सहायक बनाने का प्रयत्न किया गया । भारत की पराधीनता से अंग्रेजों ने पूरा पूरा लाभ उठाया । एक अंग्रेज लेखक ने १८८५ ई० में यह स्पष्ट किया है हिन्दुस्तान हमारे हाथ से निकल गया तो न सिर्फ हिन्दुस्तान की ही मंडियां हमारे

लिए बन्द हो जायेंगी और ऐसी पूरी तरह बन्द हो जायेंगी जैसी कि मध्य एशिया की मण्डियां इस समय हमारे लिए बन्द हैं बल्कि इसके साथ साथ जिस भारत में कच्चा माल खूब पैदा होता है और जिसके रहने वाले अत्यन्त प्राचीन समय से बड़े कुशल दस्तकार हैं वह भारत बहुत जल्दी उद्योग धन्धों की दृष्टि से फिर संसार के बड़े से बड़े देशों की पंक्ति में आ जायेगा। ज्योंही हिन्दुस्तानियों को विदेशियों के मुकाबले से अपने उद्योग धन्धों की रक्षा करने का मौका मिला अपने यहां की सस्ती मजदूरी और कच्चे माल की बहुतायत की मदद से हिन्दुस्तान का बना माल एशिया भर की मण्डियों से हमारे माल को निकालकर बाहर कर देगा और उसकी जगह खुद ले लेगा। लार्ड डफरिन ने एक वक्तव्य में कहा था कि यदि भारत के साथ हमारे राजनीतिक सम्बन्ध में थोड़ा बहुत भी फर्क पड़ा तो हमें एक ऐसी असाध्य विपत्ति का सामना करना पड़ेगा जिसके घातक नतीजों से ग्रेट ब्रिटेन भर में या कम से कम देश के उन भागों में जहां बड़े बड़े कल कारखाने हैं एक कुटिया भी न बच सकेगी।

५ भारतीय माल पर प्रतिबन्धात्मक कर भारतीय उद्योग धन्धों को नष्ट करने के लिए इंगलैण्ड के अन्दर भारत के बने हुए माल पर भारी कर लगा दिया जाता था जिससे भारत का माल इंगलैण्ड में वहीं के बने हुए माल से सस्ता न बिक सके। सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ लैकी लिखते हैं कि भारत के बने हुए कपड़े उन दिनों इतने सुन्दर सस्ते व मजबूत होते थे कि १८वीं शताब्दी के शुरू में इंगलैण्ड के कपड़ा बुनने वालों को भारत के कपड़ों के मुकाबले में अपने रोजगार के नष्ट हो जाने का डर हो गया था। उसी समय से इंगलैण्ड की पार्लियामेण्ट ने कानून बनाकर कई तरह के भारतीय कपड़ों का इंगलैण्ड में आना बन्द कर दिया और दूसरे कई तरह के कपड़ों पर भारी महसूल लगा दिये। यह उपाय भी जब अधिक प्रभावशाली सिद्ध न हुआ तब इंगलैण्ड के अन्दर अंग्रेज महिलाओं द्वारा भारतीय कपड़े की पोशाक पहनने पर कानूनन सज़ा दी जाने लगी थी। इसका एक उदाहरण भी मिलता है। जब एक अंग्रेज महिला ब्रिटिश सभागृह में गयी तब उसके पास भारतीय कैलिको का रूमाल था जिसके लिए उसे ५० पौण्ड का आर्थिक दण्ड दिया गया था। भारतीय माल के आयात को रोकने के लिए बहुतों पर १०० प्रतिशत से भी अधिक कर वसूल किया जाता था कई पर ६०० प्रतिशत तक कर लगाया जाता था। रिचार्ड नामक एक अंग्रेज ने १८३२ की पार्लियामेण्ट की कमेटी के सामने एक बयान में कहा था कि किसी किसी वस्तु पर ३००० प्रतिशत तक कर लिया जाता था। सारांश यह है कि जब एक ओर इंगलैण्ड के बने माल

पर भारत में अधिक से अधिक २१ फीसदी कर लिया जाता था और बहुत सा माल बिना कर आने दिया जाता था तो दूसरी ओर इंग्लैण्ड के अन्दर भारत के माल पर भयंकर कानूनी और सामाजिक बहिष्कार जारी था। यदि इस प्रकार के प्रतिबन्धात्मक कर व कानून न होते तो पास्ले व मानचेस्टर की मिलें शुरू में ही बन्द हो जातीं तथा उन्हें दुबारा स्टीम शक्ति से भी चलाना कठिन हो जाता। उनका निर्माण भारतीय उत्पादकों के त्याग पर किया गया था।

६ ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एजेण्टों द्वारा अत्याचार ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारत में आगमन से ही भारत के दुर्भाग्यपूर्ण दिन शुरू हो गये थे। प्रारम्भ में यह कम्पनी भारतीय माल को खरीदकर विदेशों में निर्यात करती थी धीरे धीरे इस नीति में परिवर्तन होने लगा। कम्पनी द्वारा राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के पश्चात् भारत में वस्तुओं के निर्माण को हतोत्साहित करने के प्रयत्न जानबूझकर किये जाने लगे। १७ मार्च १७६६ के पत्र में कम्पनी संचालकों ने यह आदेश दिये कि बंगाल में कच्चे रेशम के उत्पादन को प्रोत्साहन दिया जाय तथा रेशमी कपड़े के उत्पादन को हतोत्साहित किया जाय। रेशम बुनने का काम कम्पनी की फैक्टरियों में कराया जाय तथा कारीगरों को अपने घरों में काम करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय। बोल्ट्स नामक एक प्रसिद्ध अंग्रेज ने जिसकी पुस्तक प्लासी के युद्ध से केवल दस वर्ष बाद प्रकाशित हुई थी लिखा है कि भारत के निर्धन कारीगरों और मजदूरों के ऊपर इस तरह के अत्याचार और अन्याय किये गये हैं जिनका अनुमान तक नहीं किया जा सकता। वास्तव में इन कारीगरों और मज़दूरों के ऊपर कम्पनी ने इस तरह अपना अनन्य अधिकार जमा रखा है मानो वे सब कम्पनी के खरीदे हुए गुलाम हैं। गरीब जुलाहों को सताने के अनेक और असंख्य तरीके हैं और देश के अन्दर कम्पनी के एजेण्ट और गुमाश्ते इन तरीकों का आये दिन उपयोग करते रहते हैं। उदाहरण के लिए जुर्माने करना कैद करना कोड़े मारना जबरदस्ती बनुबन्ध लिखवा लेना आदि। यदि कोई बुनकर अपना माल किसी दूसरे को बेचने का साहस करता है और दलाल या पैकार इस तरह की बिक्री में मदद करता है तो कई बार ऐसा हो चुका है कि कम्पनी के एजेण्ट उन सबको पकड़कर कैद कर लेते हैं उनके बेड़ियां या हथकड़ियां डाल देते हैं और अत्यन्त लज्जाजनक तरीकों से उनसे वह चीज भी छीन लेते हैं जिसे वे सबसे अधिक मूल्यवान समझते हैं यानी उन्हें धर्म भ्रष्ट कर देते हैं। इन्होंने ही एक अन्य स्थान पर लिखा है यदि भारतीय जुलाहे उतना काम पूरा नहीं कर सकते जितना कम्पनी के गुमाश्ते उन पर मढ़ देते हैं तो कमी को पूरा

करने के लिए उनका माल-असबाब लेकर उसी जगह नीलाम कर दिया जाता है और कच्चे रेशम के लपेटने वालों के साथ इतना अधिक अन्याय किया गया है कि इस तरह के उदाहरण हैं जिनमें उन्होंने स्वयं अपने अंगूठे तक काट डाले ताकि फिर कोई उन्हें रेशम लपेटने के लिए विवश न कर सके। अत्याचार की सीमा यहां तक पहुंच गयी थी कि अनेक बच्चों को बेच डालें या देश छोड़कर भाग जायं। हरबर्ट स्पेन्सर ने स्वयं स्वीकार किया है कि इससे बढ़कर अन्याय और अत्याचार कभी किसी देश या किसी जमाने में न आये होंगे।

७ अंग्रेजी व्यापारिक नीति   सन् १८१३ के ब्रिटिश अधिनियम के अन्तर्गत व्यापार करने का कम्पनी का एकाधिकार समाप्त कर दिया गया और भारत के साथ व्यापार करने का दरवाजा प्रत्येक अंग्रेज व्यापारी के लिए खोल दिया। इसके अतिरिक्त १८१३ में ही पहली बार यह तय हुआ कि भारतीय उद्योग धन्धों को समाप्त कर इंगलैण्ड के उद्योगों को विकसित किया जाय और इंगलैण्ड का बना हुआ माल भारतवासियों के सिर मढ़ा जाय। जिस समय ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में इस मामले पर बहस हो रही थी पार्लियामेण्ट के एक सदस्य श्री टीरने ने स्पष्ट कहा था अब से सामान्य सिद्धान्त यह होगा कि इंगलैण्ड अपने यहां का बना हुआ माल जबरदस्ती जबरदस्ती भारत में बेचे और उसके बदले में भारत की बनी हुई एक भी चीज न ले। यह सच है कि हम रुई अपने यहां आने देंगे किन्तु जब हमें यह पता लग गया है कि हम मशीनों की सहायता से भारत की अपेक्षा अधिक सस्ता कपड़ा बुन सकते हैं तो हम उनसे यह कहेंगे कि तुम बुनने का काम छोड़ दो हमें कच्चा माल दो और हम तुम्हारे लिये कपड़ा बुन देंगे।

८ मशीन निर्मित सस्ते माल से प्रतियोगिता   इंगलैण्ड के कारखानों में बना सस्ता माल पर्याप्त मात्रा में भारत आने लगा। भारतीय उद्योगों का बना माल महंगा पड़ता था अत: सामान्य जनता विदेशी माल की ओर आकर्षित होने लगी। विदेशी माल सस्ता होने के कारण सामान्य जनता थोड़ी लागत पर ही सुख सुविधाओं का उपभोग कर सकती थी।

९ भारतीय अर्थ व्यवस्था को कृषि की ओर मोड़ देना   अबन्ध नीति के पालन के कारण भारतीय उद्योगों को पतन की ओर जाने से रोकने के लिए कोई सरकारी कार्य नहीं किया गया। यह नीति ब्रिटिश हितों के अनुकूल थी तथा भारतीय परिस्थितियों के बिल्कुल प्रतिकूल थी। भारत के प्रति सरकार की नीति देश को इंगलैण्ड का कृषि फार्म बना देना था। भारत को एक कृषि प्रधान देश की संज्ञा दी गयी और कृषि उत्पादन में ही विशिष्टता प्राप्त करने पर जोर

दिया गया ।

१० व्यापारिक गिल्ड्स का पतन भारतीय उद्योगों की गिल्ड्स जो सम्बन्धित उद्योगों में माल की किस्म मूल्य श्रमिकों के काम के घण्टे तथा अन्य शर्तों पर नियन्त्रण करती थीं शिथिल पड़ने लगीं । कच्चे पदार्थों में मिलावट तथा खराब बने माल को रोकना असम्भव हो गया था । इससे बाजार में साख समाप्त हो गयी अत: उद्योगों का विनाश भी शीघ्रता से होने लगा ।

११ यातायात के साधनों का विकास इस युग में यातायात व सन्देशवाहन के साधनों में उल्लेखनीय उन्नति हुई । स्वेज नहर के निर्माण से यूरोपीय देश भारत के बहुत निकट आगये थे । इससे यातायात व्यय में पर्याप्त कमी हो गयी थी । भारत के अन्दर भी रेल व सड़क यातायात का विकास होने लगा था । इससे इंगलैण्ड का बना माल भारत के कोने कोने तक जाने लगा ।

१२ कारीगरों की उदासीन प्रवृत्ति भारतीय कारीगर अपने आपको बदलती परिस्थितियों के अनुसार नहीं बना सके । यदि नवीन पद्धतियों का वे भी अनुसरण करते तो शायद उद्योगों की अवनति के स्थान पर उन्नति होने लगती । उन्होंने अपनी कलाओं का प्रचार भी सामान्य जनता में नहीं किया और उस पीढ़ी के साथ ही उनकी कला का भी अन्त हो गया ।

इन सब कारणों से भारत के अतीत के उद्योग एक के बाद एक समाप्त होने लगे और वे केवल इतिहास मात्र रह गये । जो देश एक सम्पन्न देश माना जाता था वह निर्धन देश बन गया और भारत ब्रिटिश शासन का एक कृषि उपनिवेश बन गया ।

गाय और राष्ट्र निर्माण

गाय औ परमेश्वरी गुप्त निर्माण

भारतवर्ष में वैदिक एवं पौराणिक काल में अशोक के समय तथा उसके बाद के समस्त हिन्दू काल में जनसाधारण की समृद्धि तथा सम्पंनता पशुओं की उन्नति से मापी जाती थी । इसलिए गाय को माता के समान आदर प्रात था । मुस्लिम काल में भी पशुओं की उपयोगिता पहले की ही भांति बनी रही और जन जीवन की अर्थ व्यवस्था में उनसे अटूट संबंध बना रहा । चूंकि उस समय उनके पालन रक्षा एवं विकास की सुविधाएं प्राप्त थीं इस कारण उनकी नस्ल में सुधार भी हुआ । ब्रिटिश काल में अंग्रेजों की भोजन एवं अर्थ व्यवस्था तथा शासन संबंधी नीति के परिणामस्वरूप उनकी स्थिति में परिवर्तन हुआ । खेती की उपज के तरीके में बदल हुई । जो भूमि घास चारा उगाने और पशुओं को चराने के काम में लाई जाती थी उसे धीरे धीरे खेती के काम में लाया जाने लगा । इस कारण चारे एवं चरागाहों का बहुत अभाव हो गया । अच्छे चारे की कमी के कारण एक तरफ पशुओं की नस्ल बिगड़ती गई और दूसरी तरफ दूध की जरूरत क को पूरा करने के लिए तथा अधिक से अधिक जमीन जोतने के वास्ते बैलों की कमी पूरी करने के लिए पशुओं की संख्या बढ़ती गई । जितनी अधिक उनकी संख्या बढ़ती गई खुराक की कमी के कारण वे उतने ही कमजोर होते और बिगड़ते गये । अन्त में स्थिति यहां तक बिगड़ गई कि बढ़ती हुई आवश्यकताएं बावजूद उनकी संख्या बढ़ते रहने के भी पूरी न हो सकीं तथा कृषि उत्पादन एवं जन स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने लगा । तो भी राष्ट्रीय आय में कृषि आय के उपरान्त पशु धन का सबसे बड़ा योग है । वास्तव में कृषि उवं पशु पालन दो भिन्न-भिन्न चीज़ें नहीं हैं । ये दोनों एक दूसरे पर इतने अधिक अवलम्बित हैं कि एक के बिना दूसरे की उनति एवं समृद्धि असम्भव है ।

आजकल राष्ट्र निर्माण एवं आर्थिक विकास के लिए योजनाएं बनाई और क्रियान्वित की जो रही हैं । यदि इस अवसर पर इससे पशु पालन संबद्ध सभी साधनों तथा मुख्य विषयों बातों

पर बारीकी से विचार तथा अनुसन्धान न किया गया तो हमारी यह योजनाएं व्यर्थ एवं निष्फल हो जायंगी। राष्ट्रीय आय किसी देश की आर्थिक व्यवस्था कितनी सफलता से चल रही है इसका फल कही जा सकती है। भारत की राष्ट्रीय आय बढ़ानेवाले सभी साधनों पर सावधानी से विचार किया जाय तो हम देखेंगे कि खनिज पदार्थ कच्चे माल की तैयारी व्यवसाय व्यापार आयात निर्यात यातायात तथा दूसरे व्यवसाय जैसे निजी कारीगरी सरकारी और गैरसरकारी नौकरियों तथा मकान और जायदादों की आयों में नगरों और ग्रामीण क्षेत्रों की सभी आयों में कृषि तथा पशु पालन का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

दस हजार करोड़ रुपये की कुल राष्ट्रीय आय में लगभग पचास प्रतिशत आय कृषि तथा पशु पालन से होती है। कृषि तथा पशु पालन एक दूसरे से इतने गुंथे हुए हैं कि राष्ट्रीय आय कमेटी भी इनका पृथक्पृथक् मूल्यांकन नहीं कर सकी। वास्तव में कृषि उत्पादन का एक बहुत बड़ा भाग पशुओं के उपयोग में आता है और पशुओं से जो पदार्थ प्राप्त होते हैं उनमें से बहुत से पदार्थ खेती के काम में आते हैं। खेती से उत्पन्न चारा घास दाना आदि पशुओं के काम में आता है और बैल की शक्ति खाद आदि का कृषि में उपयोग होता है। इनके अलावा दोनों के मनुष्य उपयोगी पदार्थ मनुष्य के काम में आते हैं। इन दोनों का उत्पादन बढ़ाने में मनुष्य का महत्वपूर्ण योग है। कृषि पशु पालन और मनुष्य की योग्यता इन तीनों के मेल पारस्परिक संतुलन और समन्वय के बिना और किसी भी एक के अभाव में अपेक्षित विकास असम्भव है। मुख्य रूप से मनुष्य तथा पशुओं की आवश्यकताओं पशु और कृषि की उत्पादन शक्ति इन सबमें मेल और संतुलन कायम रखने से ही सफलता मिल सकती है।

जन समुदाय के लिए खाद्य संबंधी आवश्यकताओं को शीघ्र पूरा करने के लिए और अधिक अ पैदा करना जरूरी है। पर्याप्त और यथोचित खुराक में अन्न के साथ साथ पर्याप्त प्रोटीन तथा अन्य शक्तिवर्धक पदार्थ और खुराक को पूरा करनेवाले रक्षक तत्व भी उचित मात्रा में होने आवश्यक हैं। कृषि तथा खुराक की उत्पत्ति गाय बैल आदि पशुओं पर निर्भर करती है। आज भी भारतवर्ष में बैलों से ही कृषि कार्य के लिए १७ प्रतिशत से अधिक चालक शक्ति प्राप्त होती है और ऐसी स्थिति है कि बिना बैल की सहायता के खेती का कार्य तमाम देश में असम्भव है। यद्यपि पशुओं का सम्पूर्ण मल मूत्र खाद के काम में नहीं लाया जाता तथापि जितना भी पशुओं का मल मूत्र खाद के काम में लाया जाता है वही खेतों को उपजाऊ बनाने तथा जमीन की उत्पादक

शक्ति की क्षति कमी को पूरा करने का मुख्य साधन है। इसके अतिरिक्त भूमि के ऊपर और अंदर हवा नमी कीटाणु आदि की प्राकृतिक क्रियाओं पर भी भूमि की उपजाऊ शक्ति निर्भर करती है। इस साधन को प्राप्त करने के लिए पुनः बैलों पर निर्भर होना पड़ता है।

यदि कृषि उत्पादन में वृद्धि की संख्या १०० मान लें तो इस वृद्धि के कारणों का जहांतक निश्चय किया जा सकता है भारत में नीचे लिखे अंक प्रति एकड़ उपज के साधनों या क्रियाओं से सम्बद्ध महत्त्व के प्रतीक कहे जा सकते हैं !

		एक सौ में :-
१.	मिट्टी में यथोचित नमी का रखना	२५·००
२.	जमीन की अच्छी तैयारी	२५·०
३.	जमीन में कमी को पूरा करनेवाले प्राकृतिक तथा अन्य साधनों तथा खादों का सदुपयोग	२५·०
४	सभी कृषि कार्यों या कियाओं को ठीक समय पर रा करना	१२·५
५	उन्नत किस्म के बीजों का बढ़िया चुनाव और अधिक इस्तेमाल	७·५
६	फसल को नुकसान पहुंचानेवाले जीवों तथा अन्य नाशकों का विरोध करने के लिए उचित साधनों का अधिक अच्छी तरह काम में लाना	५·०

यदि हम खेती के कार्य के विभिन्नविभागों की विशेषता या महत्त्व का बारीकी से तुलनात्मक अध्ययन करें तो हम देखेंगे कि बैलों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि हम प्रथम मद के संबंध में विचार करें तो देखेंगे कि सिंचाई या वर्षा का पानी पर्याप्तमात्रा में प्राप्त होने पर भी बिना अच्छी तरह जुताई किये जमीन में बराबर इतनी तरी नहीं रहती कि समस्त रासायनिक सूक्ष्म जीव तथा कीटाणु सम्बन्धी तथा कोलायडल क्रियाएं हो सकें और जड़ें जमीन से खुराक चूस चूसकर पौधों को पहुंचा सकें। दूसरी मद तो पूर्णतया उस चालक शक्ति पर निर्भर करती है जो भारत में आमतौर से बैलोंद्वारा प्रात होती है। बनावटी खाद के प्रयोग के सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते और यह नहीं कहा जा सकता कि बिना काथ में काफी सेन्द्रिय खाद के इसका खेत में निरन्तर प्रयोग करना उचित है। उपज होने से जो क्षति कमी हुई है उसे पूरा करनेवाले साधनों को अपना कार्य कुशलता से करने के लिए बार बार मिट्टी को उलटते पलटते रहना आवश्यक है। बिना पर्यात चालक शप्ति के यह कार्य नहीं हो सकता। चौथी मद तो

अधिकतर चालक शक्ति पर ही निर्भर करती है जो वर्तमान समय में मुख्यतया बैलोंद्वारा प्राप्त होती है । अत: यह स्पष्ट है कि भारतवर्ष में कृषि कार्य का विकास और प्रति एकड़ उपज में वृद्धि मुख्य रूप से बैलों पर ही निर्भर करती है ।

मानव जाति के विकास के समय से दूध और उससे बने हुए पदार्थों का स्थान मनुष्य की खुराक में सदा महत्वपूर्ण रहा है । मनुष्य आदिकाल से उत्तमोत्तम तथा रुचिकर खुराक क्या है यह जानने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहा है । उसे समय समय पर भिन्न भिन्न स्थानों में भिन्न भिन्न परिणाम प्राप्त हुए हैं । वास्तव में कोई एक ऐसी खुराक नहीं हो सकती जो हमेशा हरेक स्थान में सब मनुष्यों के लिए ठीक हो । स्थान वातावरण रहन सहन एवं कार्य इन सबको दृष्टि में रखकर ही खुराक का निश्चय किया जाता है । प्रत्येक युग स्थान तथा जलवायु में हर जगह मनुष्य के भोजन में आमतौर से दूध पानी अनाज मांस और चिकनाई घी तेल मुख्य रूप से होती है । परन्तु समस्त देशों के मनुष्यों के लिए चाहे वे शाकाहारी हों या मांसाहारी उनकी खुराक में इन चीज़ों में दूध का मुख्य एवं महत्वपूर्ण स्थान है । फलत: इसकी प्राप्ति के लिए प्रबन्ध करना परमावश्यक है । भारत में अधिकतर मनुष्यों को अंडा मछली मांस आदि नहीं मिलता । इसलिए भारतवर्ष में खुराक में दूध का होना अत्यन्त आवश्यक है ।

खुराक के सम्बन्ध में विचार करते समय हमें उसकी पूर्ण अनुरूपता का ध्यान रखना होगा । भोजन में ऐसे पोषक पदार्थ होने चाहिए जो कार्य करने में नष्ट हुई शक्ति को पूरा कर सकें और शरीर को स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट बनाये रखें और जो स्वादिष्ट होने के साथ साथ मधुर रुचिकर तथा सुपाच्य सरलता से पचनेवाले होने चाहिए । ये पदार्थ साधारण कम से कम कीमत पर आसानी से प्राप्य होने चाहिए । यदि ये पदार्थ कच्ची अवस्था में प्राप्त होते हैं तो यह शीघ्र पकने उबलने वाले तथा जबतक इनका उपयोग न किया जाय तबतक जहांतक हो सके न सड़ने और न खराब होनेवाले होने चाहिए । जब उपयुक्त खुराक के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन किया जाय या निश्चय किया जाय तब उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखना होगा ।

मनुष्यजाति को यथोचित खुराक प्रदान करने में जल थल कृषि बागवानी पशु पक्षियों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । अत: उपर्युक्त पदार्थों के उत्पादन की क्षमता का मनुष्यों की आवश्यकताओं के साथ सामञ्जस्य मेल होने पर ही उपर्युक्त प्रकार की खुराक का निश्चय करने में सफलता प्राप्त हो सकती है ।

भारतवर्ष में संतुलित खुराक की दृष्टि से खाद्य पदार्थों का उपभोग

नाम	प्रति व्यक्ति की उपभोग के लिए संतुलित खुराक बनावट	भारतवर्ष में उपभोग के लिए प्राप्ति का अनुमान १८५६ ५७
	प्रति व्यक्ति प्रतिदिन का खाद्य औंस में	
अनाज	१४	१५·४
दालें	३	२·८
पत्तेवाली सब्जियां	४	२·६
अन्य सब्जियां	६	—
घी और वनस्पति घी	२	०·३८
दूध तथा दूध से बने हुए पदार्थ	१०	४·५
मांसमछली और अंडे	४	०·४
फल और मेवे	३	२·०
शक्कर और गुड़	२	१·६

जहांतक मनुष्यों लिए भोजन का संबध है इस समय प्रति व्यक्ति के उपभोग के लिए अन्न की पैदावार बढ़ाने पर ही जोर नहीं देना चाहिए बल्कि ऐसे खाद्य पदार्थों के उपभोग और उत्पादन को बढ़ाना चाहिए जो एवं वांछित आवश्यकतानुसार मात्रा में प्रोटीन और जो शरीर के लिए संरक्षण प्रदान करते हैं पौष्टिक होते हैं । इस समय यह बहुत कम मात्रा में प्रात होते हैं । अत: ऐसा प्रयत्न होना चाहिए जिससे वे आवश्यकतानुसार मिल सकें । इसके लिए हमें ऐसे खाद्य पदार्थों के उत्पादन को बढ़ावा देना होगा जो बहुद्देशीय हों और जिनसे साधारण मनुष्य भी अनेक लाभ उठा सकें क्योंकि बिना ऐसा किये हुए जन साधारण का स्तर शीघ्रातिशीघ्र ऊंचा न उठ सकेगा ।

आजकल भारतवर्ष में प्रोटीन मुख्यतया दूध से ही प्राप्तहोता है । भारतीय गाय औसत ४००-५०० पौंड तक और भैंस १०००-१२०० पौंडतक दूध प्रति वर्ष देती है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि मांस मछली घरेलू मुर्गी बत्तख आदि से भी कुछ अंश में प्रोटीन प्राप्त होता है ; परन्तु

अंडों के अतिरिक्त उनसे प्राप्त होनेवाला प्रोटीन इतना पाच्य नहीं होता जितना दूध से प्राप्त होनेवाला प्रोटीन होता है। भारतवर्ष में दूधद्वारा प्राप्त होनेवाले खाद्य पदार्थ गुण तथा सुविधापूर्वक पाचन की दृष्टि से सर्वोत्तम होते हैं। भेड़ बकरी सुअर मछली पालतू बत्तख मुर्गी तथा अंडे इन सबसे जितना प्रोटीन प्राप्त होता है उसकी अपेक्षा दूध से दुगुना प्रोटीन प्राप्त होता है जो उसकी अपेक्षा शीघ्र पचनेवाला होता है और उसमें नौगुना शक्ति प्रदान करनेवाले तत्व मिलते हैं।

आहार विशेषज्ञों की सिफारिश के अनुसार भारत में प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन दालोंसहित १७ औंस अन्न मिलना चाहिए। दूसरी पंचवर्षीय योजना में प्रत्येक व्यक्ति को १८ औंस और तीसरी में और भी अधिक बढ़ा देने की सिफारिश की जा रही है। यह समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों किया जा रहा है। जहांतक मनुष्य के लिए आहार का प्रश्न है प्रत्येक व्यक्ति के लिए अन्न के उपभोग को बढ़ाने की अपेक्षा शीघ्र पाचनशील प्रोटीन और रक्षक खाद्यपदार्थ के उत्पादन एवं उपभोग को बढ़ने पर जोर देना चाहिए क्योंकि आजकल उनकी बहुत कमी है। अन्न के उपभोग को बढ़ा देने से राष्ट्र की शक्ति एवं स्वास्थ्य न तो स्थिर रह सकेगा और न उसमें कोई सुधार होगा। अतः भारत में जहांतक मनुष्यों के लिए भोजन का संबंध है हमें अधिक तथा अच्छी खुराक पैदा करने और उसे संतुलित करने के लिए दूध पर विशेष रूप से निर्भर होना पड़ेगा।

अन्य पदार्थों की अपेक्षा दूध का उत्पादन बढ़ाये जा सकने की अधिक सम्भावना है। अतः दूध के उत्पादन को अधिक से अधिक बढ़ाने पर ही हमारा ध्यान केन्द्रित होना चाहिए। परन्तु केवल दूध का उत्पादन बढ़ने से हमें उस समय तक लाभ न होगा जबतक कि सभी स्थानों के समस्त वर्गों के सभी मनुष्यों के पोषण के लिए इसके उपभोग एवं वितरण का प्रबंध न हो।

जब हम दूध के संचय और उसके विनियोग की बात करते हैं तो हमारी दृष्टि कस्बे और बड़े बड़े नगरों की ओर ही रहती है और देहाती इलाकों को हम बिलकुल ही भूल जाते हैं परन्तु यह गलत धारणा है। वास्तव में इसकी प्राप्ति दोनों स्थानों के निवासियों को ही होनी चाहिए। भारतवर्ष में मनुष्यों की आवश्यकता के अनुसार दूध की प्राप्ति उत्पादन नहीं हो सकी है। यहांपर दूध के संचय और इसके विनियोग की समस्या बहुत जटिल हो गई है और इसे संरक्षण प्रदान करनेवाले खाद्य पदार्थों के संचय एवं विनियोग की समस्या के साथ जोड़ दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहनेवाले मनुष्य पर्याप्त मात्रा में न तो मांस मछली और अंडे ही खा पाते हैं और न उन्हें ताजी सब्जियां ही पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं क्योंकि यह वस्तुएं आमतौर

से उन्हें नहीं मिलतीं और न साधन सुलभ ही हैं। ग्रामों में जो कुछ उत्पन्न किया दूध के संचय विनियोग एवं उपभोग के संबंध में तो ग्रामवासी एकदम ही उपेक्षित हैं। अत: दूध के संचय विनियोग एवं उपभोग का इस प्रकार प्रबन्ध होना चाहिए जिससे ग्रामवासी भी अत्यन्त महत्वपूर्ण पूरक एवं पौष्टिक भोजन को अब मात्रा में अपनी खुराक को संतुलित करने के लिए प्राप्तकर सकें।

यद्यपि दूध से बनी हुई १५ वस्तुएं ग्रामीण क्षेत्रों से उत्पन्नहोती हैं और कस्बों तथा नगरों में उत्पन्न होती हैं तथापि इन वस्तुओं के ४० भाग का उपभोग नगरों तथा कस्बों में होता है। यह स्थिति बहुत दिनों से चली आ रही है। इससे स्पष्ट है कि कस्बे और नगर के लोग अपनी जरूरतों को पूरा करने में ग्रामीणों की अपेक्षा ज्यादा चतुर और समर्थ हैं। उनमें खरीदने की क्षमता ग्रामीणों की अपेक्षा अधिक है। भारतवर्ष में दूध के संचय और विनियोग के संबंध में ग्रामीणों की आवश्यकता और हित को नहीं भुलाया जा सकता। ग्रामीणों के रहन सहन का स्तर उठाने का प्रयत्न किया जा रहा है। यदि इसके साथ साथ उनके भोजन के स्तर को नहीं उठाया गया तो इस दिशा में लिये गए सारे प्रयत्न अधूरे और बेकार साबित होंगे। इसका यह मतलब नहीं है कि कस्बों और नगरों में रहनेवालों के लिए संचय और विनियोग कम किया जाय बल्कि दूध एवं उससे बने हुए पदार्थों का उत्पादन इस माफिक हो जिससे कस्बों और नगरों में रहनेवालों के साथ साथ ग्रामों में रहनेवाले मनुष्य भी स्वस्थ साहसी एवं आनन्ददायक जीवन बिता सकें। अत: यह भी वांछनीय है कि दूध कीलागत ग्रामीणों की खरीदने की शक्ति से अधिक न बढ़ने पाये। इससे वे अपनी खुराक में दूध का भी पूरा लाभ उठा सकेंगे। इससे यह स्पष्ट है कि समस्त देश के हरेक भाग में दूध आवश्यकतानुसार प्रात होना चाहिए और ग्रामीण क्षेत्रों में इसके संचय और विनियोग को बढ़ावा मिलना चाहिए। यह तब ही संभव हो सकता है जब दूध की अधिक उत्पत्ति के साथ उसकीलागत भी कम हो।

दूध का संचय और विनियोग अच्छे दुधारू पशुओं और उनके लिए चारे की प्राप्ति पर हो पूर्ण रूप से निर्भर करता है। इसके लिए पशु कैसे किस जाति के हों इसके निश्चय करने में हमें बहुत सावधानी से काम लेना होगा। भारतवर्ष में हमें एक सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमें ऐसे दुधारू पशुप्राप्त हैं जिनकी मादा सन्तति दूध देती है और नर सन्तति चालक शक्ति के काम आती है जिनका बैलों के रूप में उपयोग होता है। वेहमारी उपर्युक्त दोनों आवश्यकताओं को बहुत अच्छी तरह कर सकते हैं। इस प्रकार गौ के पालन में जो खर्च होता है वह नर और मादा

दोनों सन्ततियों पर बंट जाता है और दूध पर लागत कम हो जाती है। नगरों और कस्बों के साथ साथ ग्रामों में भी दूध पर्याप्तमात्रा में सुविधापूर्वक उचित लागत पर मिल सकता है क्योंकि वहां बैलों को अधिक संख्या में प्राप्त करने के लिए गौओं को बहुतायत से पालना होगा। इस समय गायों से बहुत कम दूध की प्राप्ति होती है परन्तु अच्छे चारे दाने और अच्छे प्रबंध द्वारा इसके उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। भारतवर्ष में वर्तमान काल में गाय के द्वारा दूध का जितना उत्पादन बढ़ाया जा सकता है इतना किसी अन्य किस्म के पशु से नहीं बढ़ाया जा सकता। इस समय हमारे पशु पोषण के लिए चारे और कृषि द्वारा उत्पन्न होनेवाली तिलहन और अनाज की उपज के बाइप्रोडक्टस भूसा खल चूरी चोकड़ इत्यादि और चराई पर ही निर्भर करते हैं। अब हमें अपने दुधारू पशुओं के लिए उचित लागत पर और उचित मात्रा में पोषक तत्वों से युक्त चारा काफी मात्रा में पैदा करना होगा। जैसे जैसे हमारे चारे का उत्पादन और कृषि उत्पादन प्रति एकड़ बढ़ता जायगा चारा और दूध सस्ता होता जायगा।

ग्राम वलीदपुर में आर्थिक प्रगति

पूरनचन्द्र जोशी

वलीदपुर ज़िला मेरठ उत्तर प्रदेश एक प्रगतिशील गांव है। यह गांव मेरठ ज़िले के सारधना तहसील में मेरठ शहर से १० मील दूर मेरठ रुड़की सड़क पर बसा है। इस गांव को रेल और मोटर परिवहन की सुविधाएं प्राप्त हैं। इस गांव के पास दो महत्त्वपूर्ण बाज़ार दौराला २ मील और खटौली १० मील है। दौराला में एक साप्ताहिक पैंठ लगती है। दौराला में चीनी की मिल होने और उसके एकदम नज़दीक होने के कारण उसका गांव के आर्थिक जीवन के लिए बहुत महत्त्व है।

वलीदपुर बहुत पुराना गांव है। गांव में रहने वाली मुख्य जातियां या सामाजिक समुदाय हैं जाट ३८ परिवार चमार ९६ परिवार और मुसलमान ३३ परिवार। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि गांव के सामाजिक और आर्थिक जीवन में जाटों का बोलबाला है। गांव में एक समृद्ध खेतिहर मुसलमान परिवार भी है। यह परिवार गांव के राजनीतिक अ और सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण है।

गांव की अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएं

सर्वेक्षण के समय गांव में १९६ परिवार थे। वे निम्नलिखित पेशों में लगे थे

क	खेती	५८ परिवार
ख	श्रमिक : खेतिहर और ग़ैर खेतिहर	५० परिवार
ग	मिल मज़दूर मौसमी और स्थायी	५० परिवार
घ	दस्तकार बुनकर	१५ परिवार
ङ	परम्परागत ग्रामीण कर्मचारी	१० परिवार
च	अन्य	१३ परिवार

पेशे की दृष्टि से गांव के लोग दो भागों में बंटे थे किसान और मज़दूर। मज़दूर मोटे

तौर पर दो प्रकार के थे गांव में काम करने वाले खेतिहर और ग़ैर खेतिहर मज़दूर और गांव के बाहर काम करने वाले मिल मज़दूर । मिल मज़दूर गांव की अर्थव्यवस्था से कई तरह जुड़े थे । मौसमी मिल मज़दूर छुट्टी के समय खेतिहर मज़दूर के रूप में काम करने के अलावा मवेशी पालन तथा दूध बेचने का काम करते थे ।

सिर्फ़ ३० प्रतिशत परिवार ही खेती पर निर्भर थे । क़रीब ५० प्रतिशत परिवारों की जीविका का मुख्य आधार मज़दूरी था । खेती के दायरे के बाहर रोज़गार के अवसर होने के कारण अन्य भारतीय गांवों की तरह इस गांव में ज़मीन पर निर्भरता अधिक नहीं थी । गांव के खेती करने वाले प्रत्येक परिवार के पास औसतन ६ एकड़ ज़मीन थी । स्पष्ट है कि गांव की समृद्धि का मुख्य कारण गांव के भूमिहीनों को गांव के भीतर और बाहर ग़ैर खेतिहर रोज़गार की प्राप्ति थी । पड़ोस की चीनी मिल वरदानस्वरूप थी । बड़े बूढ़ों के अनुसार चीनी मिल की स्थापना के पूर्व गांव में कुल खेती की जाने वाली भूमि के एक चौथाई से अधिक में गन्ने की खेती नहीं होती थी । गन्ने का इस्तेमाल गुड़ बनाने के लिए होता था । नहर के अतिरिक्त सिंचाई का दूसरा साधन चरस था । आधुनिक औज़ारों तौर तरीकों उन्नत बीज और खाद इत्यादि का इस्तेमाल नगण्य मात्रा में होता था । स्थायी खेतिहर मज़दूरों को प्रति मज़दूर हर महीने १० रूपए के अतिरिक्त साल में ढाई मन अनाज और रोज़ एक शाम का खाना मिलता था ।

चीनी मिल की स्थापना १९३२-३३ में हुई । चीनी मिल की स्थापना के परिणामस्वरूप गांव का आर्थिक जीवन काफ़ी बदल गया । चीनी मिल के आसपास के गांवों में विशेष प्रोत्साहन और सुविधाएं मिलीं जिसके फलस्वरूप उन्हें कृषि को उन्नत करने और समृद्धि प्राप्त करने के अवसर मिले ।

फसलों का सिलसिला बदल गया है । अभी गन्ना और गेहूं गांव की मुख्य फसलें हैं । खेती की जाने वाली कुल ज़मीन के ५५ प्रतिशत में गन्ना बोया जाता है । गन्ने का उत्पादन चीनी मिल को बेचने के लिए होता है । बहुत थोड़े से लोग अपने उपभोग के लिए थोड़ा बहुत गुड़ बना लेते हैं । खाद्यान्न का उत्पादन मुख्य रूप से अपने उपभोग के लिए किया जाता है । एक दो परिवार थोड़ा बहुत गेहूं बाज़ार में बेचते हैं । कुछ किसान अपने खाने के लिए अनाज बाज़ार से खरीदते हैं । कपास का उत्पादन भी अपने इस्तेमाल के लिए होता है ।

बड़े पैमाने पर गन्ने की खेती का कारण मिल द्वारा नियमित और निश्चित मांग है तथा

विक्रय और परिवहन सम्बन्धी सुविधाएं हैं। गांव की ज़मीन भी गन्ने के उत्पादन के उपयुक्त है। चीनी मिल के अधिकारियों ने मिल के इर्द गिर्द ५ मील के भीतर आने वाले गन्ना उत्पादक गांवों के लिए सड़क की सुविधाएं दी हैं। उन्नत कृषि के लिए और वित्तीय साधन प्रदान किए हैं।

चीनी मिल पड़ोस में होने तथा परिवहन की सुविधाएं उपलब्ध होने के कारण गांव से चीनी मिल तक गन्ना ले जाने में बहुत कम परिवहन व्यय पड़ता है। आम तौर पर किसानों के पास अपनी डनलप गाड़ियां हैं जिनको भैंसे खींचते हैं। चीनी मिल ने गन्ना विकास समिति द्वारा भी परिवहन की सुविधाएं प्रदान की हैं और जीप गाड़ी चलने लायक सड़कें बनाई हैं।

कृषि विकास में विशेषकर गन्ना उत्पादन की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण योगदान गन्ना सहकारी समिति दौराला का रहा है। वलीदपुर में ऋण और अन्य सुविधाएं देने के लिए दूसरी कोई सहकारी समिति नहीं है। दौराला में एक केन्द्रीय गन्ना सहकारी समिति है जिससे गन्ना उत्पन्न करने वाले बहुत सारे गांव सम्बद्ध हैं। यह समिति १९३८ से काम कर रही है यद्यपि इसका पंजीयन १९४० में हुआ। समिति अपने सदस्यों को उन्नत खाद और उर्वरक गन्ने का बढ़िया बीज और नकद ऋण प्रदान करती है। गन्ने को बीमारियों से बचाने में सहायता देती है। मवेशी खरीदने और नल कूप लगाने तथा सिंचाई के लिए कच्चा या पक्का कुआं बनाने में सहायता करती है। समिति खाद और उर्वरक ६:२५ प्रतिशत प्रतिवर्ष सूद पर प्रदान करती है और किसान को मिल से गन्ने की मिलने वाली कीमत से वसूल कर लेती है। गांव के क़रीब क़रीब सब बड़े छोटे गन्ना उत्पादक समिति के सदस्य हैं। दौराला में कृषि विभाग द्वारा संचालित एक सहकारी बीज भण्डार भी है। इस बीज भण्डार से किसानों को खाद्यान्नों के बीज मिलते हैं और यह समिति उन्हें फसलों को बीमारी कीड़े वग़ैरह से बचाने में मदद करती है।

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होने वाली सुविधाओं का किसानों ने पूरा उपयोग किया है। गांव के कुल ५८ किसान परिवारों में ८ परिवार प्रगतिशील और समृद्ध किसानों के हैं जिनके पास अपेक्षाकृत अधिक ज़मीन है। इन परिवारों ने उन्नत तरीकों को अपनाकर गन्ने का उत्पादन बढ़ाया है और इसका अन्य किसानों पर काफ़ी असर पड़ा है। इनमें से एक परिवार ने कई वर्षों तक गन्ने का प्रति एकड़ सर्वाधिक उत्पादन कर राज्य और केन्द्रीय सरकारों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त किए। १९५२ में इस किसान को कृषि पंडित की उपाधि

मिली। १९५९-६० में अपने डिमान्स्ट्रेशन प्लाट में २००४ मन प्रति एकड़ उत्पादन कर उसने अखिल भारतीय गन्ना प्रतियोगिता उत्तरी क्षेत्र में प्रथम पारितोषिक प्राप्त किया। दौराला में गन्ने का प्रति एकड़ औसत उत्पादन क़रीब ५०० मन है। जानकार सूत्रों के अनुसार चीनी मिल की स्थापना के पूर्व गन्ने का उत्पादन प्रति एकड़ ३०० मन था।

उन्नत बीज रासायनिक और उर्वरक उन्नत औज़ार और खेती करने की उत्तम विधियां गांव के प्रगतिशील और समृद्ध किसानों के बीच काफ़ी लोकप्रिय हैं। किसान कल्टीवेटर्स लोहे के हल उन्नत देशी हल और मिल में गन्ना ले जाने के लिए डनलप गाड़ी का इस्तेमाल करते हैं। कल्टीवेटर का इस्तेमाल निकौनी और जुताई के लिए होता है। इससे किसान समय और श्रम दोनों की बचत कर पाते हैं। परम्परागत खादों के अतिरिक्त रासायनिक उर्वरकों अमोनियम सल्फ़ेट और कुछ खेतों में सुपर फ़ास्फ़ेट मूंगफली की खली और हरी खाद सनीमूंग ढैंचा लोबिया ग्वार का इस्तेमाल भी हो रहा है। प्रगतिशील किसानों ने खाद बनाने के लिए कम्पोस्ट गड्ढे भी बनाए हैं। गन्ना निरन्तर उपजाने से ज़मीन की उर्वरता में होने वाले ह्रास को पर्याप्त मात्रा में उर्वरक और हरी खाद के द्वारा पूरा कर लिया जाता है। खेती करने की महत्त्वपूर्ण उन्नत विधियां हैं अधिकांश फसलों को पंक्तियों में बोना खाइयों में गन्ना बोना और कल्टीवेटर की सहायता से निकौनी एवं जुताई। कई फसलों को एक साथ बोने की तरफ किसान बड़ी संख्या में उन्मुख हो रहे हैं। उदाहरण के तौर पर गन्ना और चना चना और गेहूं उड़द और ज्वार मकई और उड़द ज्वार और ग्वार मुख्य रूप से चारे के लिए लोबिया और ज्वार चारे के लिए और कुछ जगहों में सावां और उड़द साथ बोने की प्रथा है।

इस गांव की उन्नत कृषि का एक और महत्त्वपूर्ण कारण है निजी और सरकारी दोनों सोतों से सिंचाई की व्यवस्था। किन्तु नहरी सिंचाई में सुधार करने की अभी काफ़ी ज़रूरत है। पहले गांव में पांच कुलाबा थे अब उनकी संख्या सिर्फ़ तीन रह गई है।

गांव में खेती होने वाली सम्पूर्ण भूमि के लिए सिंचाई की व्यवस्था है करीब आधी ज़मीन की सिंचाई नहर द्वारा होती है। गांव में तीन नलकूप हैं। उनमें से एक हाल में ही प्रगतिशील किसान ने लगाया है और इस पर उसी का एकमात्र अधिकार है। वह डीज़ल इंजन से चलता है। अन्य दो में से एक पर तीन किसानों और दूसरे पर सात किसानों का सामूहिक अधिकार है। इन दोनों का संचालन विद्युत शक्ति द्वारा होता है। गावं में किसानों द्वारा

सामूहिक रूप से संचालित १५ परशियन ह्वील हैं ।

उन्नत कृषि से गांव के स्थायी और कभी कभी काम करने वाले मज़दूरों को रोज़गार के लिए अपेक्षाकृत अधिक अवसर मिले हैं । उन्नत तरीक़ों से गन्ने की खेती करने के कारण श्रम की मांग बढ़ी है ।

गन्ने की खेती से सम्बद्ध प्रक्रियाओं उदाहरण के लिए खाद पटाना परशियन ह्वील का इस्तेमाल निकौनी जुताई गन्ने की जड़ पर मिट्टी चढ़ाना गन्ने को काटना ढुलाई की व्यवस्था करना और गाड़ियों पर गन्ना लादना उतारना के कारण स्थायी रोज़गार के अवसर बढ़े हैं । खाधान्न उत्पादन में ऐसा सम्भव नहीं था । मिल में सीजन के दौरान काम करने वाले मज़दूरों में से अधिकांश ने मवेशी पालना और दूध बेचना आरम्भ कर दिया है । पूरक आय और रोज़गार का यह मुख्य स्रोत है । मुख्य रूप से भैंसें पाली जा रही हैं । इनका पालन मज़दूर बटाई के आधार पर करते हैं । आमतौर पर दूध देने वाले जानवर उनके अपने हैं । अधिकांश चारा मुफ़्त किसानों से मिल जाता है । खेतिहर मज़दूरों के लिए किसानों से चारा प्राप्त करना आसान है । गन्ने के मौसम में गन्ना काटने के काम में मज़दूरों व ख़ासकर औरतों को रोज़गार मिलता है । मज़दूरों को गन्ने का किरा मज़दूरी के रूप में मिलता है । इसका इस्तेमाल मवेशियों के लिए चारे के रूप में होता है । स्थायी खेतिहर मज़दूर की मज़ूरी प्रतिमाह १५ रुपए है । इसके अतिरिक्त उसे साल में गेहूं चना और मटर सहित साढ़े चार मन अनाज १ मन गुड़ जाड़े के लिए एक जैकेट और प्रतिदिन एक शाम का भोजन मिलता है ।

गांव के १९६ परिवारों में से सिर्फ़ १५० परिवारों का ही गांव से किसी प्रकार का पैतृक सम्बन्ध है या गांव में किसी प्रकार की पैतृक सम्पत्ति है । बाकी परिवार बाहर से चीनी मिल की स्थापना के बाद रोज़गार की तलाश में गांव में आए । उन्हें घर बनाने के लिए मुफ़्त ज़मीन मिल गई और धीरे धीरे वे गांव के ही हो गए । बाहर से आने वाले इन परिवारों में १५-२० चमार थे । वे दूसरे गांव से आए क्योंकि उस गांव में जीविकोपार्जन बहुत कठिन था । इस गांव में उनके कई रिश्तेदार हैं ।

गांव के लोगों की आवश्यकताएं

गांव के लोगों खासकर किसानों के अनुसार उनकी निम्नलिखित मुख्य आवश्यकताएं हैं:

१ यद्यपि गांव में खेती की जाने वाली पूरी ज़मीन सिंचित है पर गन्ना उत्पादकों की

ज़रूरतों को देखते हुए नहर से पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिलता । किसानों की मांग है एक नहर से मिलने वाले पानी की मात्रा बढ़ाई जाए ।

२ उनके अनुसार विभिन्न एजेंसियों से मिलने वाले उर्वरकों और अच्छे बीज अधिक कीमती होने के कारण सिर्फ़ समृद्ध किसान ही उनसे फायदा उठा सकते हैं । एक बीघा सिंचित भूमि के लिए १ बोरी मूंगफली की खली की आवश्यकता होती है उसकी कीमत अभी २६ रुपए है जबकि आज से ५ साल पहले उसकी कीमत क़रीब १० रुपए थी । यह सही है कि ऋण विभिन्न एजेन्सियों से मिलते हैं लेकिन ऋण मुख्य रूप से गन्ना उत्पादकों को ही प्राप्त होते हैं । अन्न की फसल उगाने तथा खेती की आम ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वित्तीय साधन देने की कोई व्यवस्था नहीं है । ग़ैर खेतिहरों को भी ऋण की कोई सुविधा प्राप्त नहीं है । छोटे किसानों और ग़ैर खेतिहरों को ऋण के के लिए बनियों समृद्ध किसानों और सम्बन्धियों का सहारा लेना पड़ता है ।

३ यह विचित्र बात है कि इतनी समृद्धि होने के बावजूद गांव में एक भी प्राथमिक पाठशाला नहीं है । सुना जाता है कि गांव के एक धनी किसान ने स्कूल के निर्माण के लिए ज़मीन दी थी । गन्ना सहकारी समिति के द्वारा इस काम के लिए रुपए भी जमा किए जा चुके थे किन्तु बाद में रुपए दाताओं को लौटा दिये गए । इसका मुख्य कारण गांव के दो प्रमुख दलों की गुटबन्दी है । गांव के बच्चे मुख्य रूप से धनी घरों के पड़ोस के गांव लोहिया और मातौर में पढ़ने के लिए जाते हैं । गांव की छोटी जाति के कुछ लोगों का कहना है कि गांव के धनी लोग नहीं चाहते कि मज़दूरों के बीच शिक्षा का प्रसार हो । इस बात की पुष्टि करना कठिन है क्योंकि स्कूल बनने पर सबसे अधिक फ़ायदा बड़ी जाति के लोगों को होगा ।

गांव के लोग भावी विकास के बारे में आशान्वित हैं । उनका विश्वास है कि कृषि विकास की प्रक्रिया चलती रहेगी और गांव अगले वर्षों में और अधिक समृद्धि प्राप्त करेगा । अगर उन्हें विकास अधिकारियों से उन्नत बीज उर्वरक औज़ार आदि कम कीमत पर मिलें तो गन्ना और अन्य फसलों की प्रति एकड़ पैदावार और भी बढ़ेगी । अगर सिंचाई की सुविधाएं बढ़ें तो वे उन्नत तौरतरीकों को जल्दी अपनाएंगे और साल में दो फ़सलें उगाई जाने लगेंगी । गांव में मज़दूरों की कमी होने के कारण समृद्ध किसान यन्त्रों को अपनाएंगे । जिन समृद्ध किसानों के पास नलकूप हैं उन्होंने पैसा लेकर सिंचाई की सुविधाएं देना शुरू कर दिया है । यह न सिर्फ़

आय का ही अतिरिक्त स्रोत है बल्कि इससे गांव के बाहर और भीतर उनका प्रभाव बढ़ा है। बुनकरों की हालत भी पिछले दो सालों में सुधरी है। वे उन्नत औज़ारों का इस्तेमाल कर बिछावन के लिए चादर इत्यादि का उत्पादन करने लगे हैं जिनके लिए आसानी से बाज़ार उपलब्ध है। अगर बुनकरों को एक लघु औद्योगिक सहकारी समिति के अन्तर्गत संगठित किया जाए तो वे और तरक्की कर सकेंगे।

व्यवसायीकरण के सामाजिक आर्थिक प्रभाव

गांव के लोगों के जीवनयापन के तरीकों उपभोग सम्बन्धा आदतों और उपभोग की जाने वाली वस्तुओं के ऊपर शहरी असर साफ़ दीखता है। किसानों को गन्ने की बिक्री से और मज़दूरों को मुख्य रूप से मिल मज़दूरों को मजूरी के रूप में नकद आमदनी होती है। गांव के लोगों की आदतों प्रवृत्तियों एवं वास्तविक स्थिति में परिवर्तन का यह एक मुख्य कारण है। गांव में पक्का घर बनाने आधुनिक रहन सहन अपनाने की आम प्रवृत्ति देखने में आ रही है। धनी किसानों के पास आधुनिक फ़र्नीचर मेज़ कुर्सियां बर्तन और कुछ लोगों के पास रेडियो भी हैं। मज़दूर परिवारों की आकांक्षा भी जीवनयापन का स्तर ऊंचा उठाने की है। दौराला में एक साप्ताहिक बाज़ार लगता है जिसमें आम ज़रूरत की चीज़ों के अलावा दिखावे के उपभोग की चीज़ें भी बिकती हैं। मज़दूर नियमित रूप से वहां जाते हैं और सामान ख़रीदते हैं।

गांव की अर्थव्यवस्था में एक घरेलू बाज़ार विकसित हो गया जिसका मुख्य कारण विशेषीकरण का विकास और कृषि का व्यवसायीकरण है। उपभोग की वस्तुओं की मांग बढ़ गई है। उपभोग और व्यय की आकांक्षा बढ़ रही है। मौद्रिक लेन देन तेज़ी से बढ़ा है और प्रदर्शन और व्यावसायिक साहस आदि के प्रभाव बढ़े हैं। ये व्यवसायीकरण की प्रक्रिया के सम्बद्ध लक्षण हैं।

व्यवसायीकरण के फलस्वरूप व्यक्तिवाद की भावना बढ़ी है। यह भावना परम्परागत ग्रामीण जीवन की सामूहिकता के प्रतिकूल है। व्यवसायीकरण के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार बदल जाता है। गांव के दस्तकारों के रोज़गार का आधार रिवाज नहीं बल्कि ठेका होता जा रहा है। मज़दूरों को नकद मजूरी मिलती है। इनके कारण गांव के विभिन्न भूमिधर और भूमिहीन वर्गों के परम्परागत परस्परावलम्बन को गम्भीर धक्का लगा है। विभिन्न समूहों के बीच अनेकता और विरोध के बीज उगे हैं। भूस्वामी और खेतिहर परिवारों का पारस्परिक

सम्बन्ध भी बदला है। व्यवसायीकरण से प्रतियोगिता वर्ग विभेद और धन और शक्ति का जमाव बढ़ता है। पुरानी उपभोग आधारित अर्थव्यवस्था के स्थान पर नफे और बाज़ार पर आधारित नई अर्थव्यवस्था और नये आर्थिक सम्बन्धों का विकास हुआ है।

ग्रामीण समुदाय में शिक्षा

डा० सीताराम जायसवाल

भारत के ग्रामीण समुदाय में शिक्षा सम्बन्धी अध्ययन को हम डा० श्यामाचरण दुबे लिखित पुस्तक भारत के बदलते गांव के आधार पर प्रस्तुत कर रहे हैं। इस ग्रन्थ के पूर्व प्रोफेसर दुबे ने भारतीय ग्राम पर भी एक पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें उन्होंने दक्षिण भारत के एक गांव के अध्ययन का विवरण दिया था। अत: प्रोफेसर दुबे ने भारतीय ग्राम में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन वैज्ञानिक रीति से किया है। नीचे जो ग्रामीण समुदाय में शिक्षा की सामग्री दी जा रही है उसका आधार प्रोफेसर दुबे द्वारा किये गये ये अध्ययन हैं।

भूमिका

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश में होने वाले सामुदायिक विकास के अन्तर्गत कार्यों से सम्बन्धित है। अध्ययन के लिए जो गांव चुना गया उसमें परम्परा की प्रधानता थी। अत: यह जानने की कोशिश की गयी कि सामुदायिक विकास द्वारा जो नये विचार और तकनीक ग्रामीण समुदाय में लाये गये उनके प्रति कैसी अनुक्रिया हुई। सामुदायिक विकास का उद्देश्य वस्तुत: कृषि उत्पादन में वृद्धि संचार व्यवस्था ग्रामीण स्वास्थ्य तथा शिक्षा में सुधार है। साथ ही सामुदायिक विकास का दूसरा प्रमुख उद्देश्य यह है कि ग्रामीण समुदाय में इस प्रकार सांस्कृतिक परिवर्तन किया जाय कि गांवों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में सांस्कृतिक समग्रता अक्षुण्ण रहे। जब यह अध्ययन आरम्भ किया गया उस समय गांव में २१ ३४० प्रौढ़ पुरुषों में से केवल ८०७८ साक्षर थे। स्त्रियों में निरक्षरता और भी अधिक थी। १४६११ प्रौढ़ स्त्रियों में केवल ३१६० साक्षर थीं। इसके अतिरिक्त ३६४६ बच्चे स्कूलों में पढ़ने जाते थे। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि स्कूल जाने योग्य सभी बालकों के लिए इस क्षेत्र में शैक्षिक सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

प्रौढ़ शिक्षा

अध्ययन क्षेत्र में जो कि सामुदायिक विकास द्वारा संचालित प्रोजेक्ट का क्षेत्र था प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी कक्षाएं आरम्भ की गयीं । इन कक्षाओं में पहले तो कुछ लोग आये लेकिन कुछ समय बाद उपस्थिति बिल्कुल समाप्त हो गयी । प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाओं में आने वाले व्यक्तियों में विशेष रूप से ऐसे युवक थे जो अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाये थे या ऐसे लोग थे जिन्होंने पहले तो पढ़ा था लेकिन बाद में अभ्यास के अभाव के कारण निरक्षर हो गये थे । इस अध्ययन में इन सभी व्यक्तियों का इंटरव्यू लिया गया । इस इंटरव्यू से यह ज्ञात हुआ कि प्रौढ़ शिक्षा के विषय में सभी व्यक्तियों की यह राय थी कि इससे लाभ होता है । परन्तु केवल ३० प्रतिशत प्रौढ़ों ने यह बताया कि प्रौढ़ शिक्षा जिस रूप में चलायी जा रही है वह उपयोगी तथा रोचक है । दूसरे शब्दों में ७० प्रतिशत प्रौढ़ों के अनुसार ग्रामीण समुदाय में चलने वाली प्रौढ़ शिक्षा का कोई उपयोग नहीं है और नहीं उनके लिए रुचिकर है । इस अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि दो गांवों में रहने वाले ७० प्रौढ़ों ने प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाओं में भाग लिया था । परन्तु कुछ समय बाद केवल २१ ही व्यक्ति ऐसे रहे जो बराबर प्रौढ़ पाठशाला में आते रहे । जब प्रौढ़ों की अनुपस्थिति के कारण का पता लगाया गया तब यह मालूम हुआ कि अधिकतर लोगों ने ऐसी प्रौढ़ कक्षाओं में आना बंद कर दिया क्योंकि उनके पास समय का अभाव था । कुछ लोगों ने यह भी कहा कि संध्या समय उन्हें बड़ी थकान आ जाती है और कुछ का यह उत्तर था कि लोग उन्हें स्कूल में जाने के कारण लज्जित करते हैं । अधिकांश लोग ऐसे भी थे जिन्होंने यह कहा कि कक्षाएं नीरस होती हैं ।

सामुदायिक विकास के लिए प्रचार

इस अध्ययन के अन्तर्गत जिन गांवों को चुना गया उनमें सामुदायिक विकास के कार्यक्रम का प्रचार अनेक माध्यमों से हुआ । उदाहरण के लिए सामुदायिक विकास का कार्यक्रम नारों द्वारा ग्रामीण जनता तक पहुंचाया गया स्कूल के बच्चों तथा ग्रामीण युवकों ने जूलूस निकाल कर नारे लगाये और इस प्रकार ग्रामों में होने वाले सामुदायिक विकास का प्रचार किया । इसके अतिरिक्त गांवों में तस्वीरें और पोस्टर भी लगाये गये । इस पोस्टरों और तस्वीरों में सहकारिता शिक्षा और स्वास्थ्य सम्बन्धी बातों को दिखाया गया था । कुछ छोटी छोटी पुस्तिकाएं भी प्रकाशित करके बांटी गयीं । इस अध्ययन में ग्रामीण जनता को चलचित्र द्वारा

भी सामुदायिक विकास के कार्यक्रम के बारे में बताया गया । बालकों और युवकों के लिए खेल की प्रतियोगिता की गयी तथा ग्रामीण जनता के लिए प्रदर्शनी और सभाओं का आयोजन किया गया । इनके अतिरिक्त इस सामुदायिक विकास के कार्यक्रम के प्रचार के लिए प्रचारक नियुक्त किये गये । इनके प्रचार का रूप वही था जो कि आर्य समाज में पाया जाता है ।

सामुदायिक विकास के कार्यकर्ता गांव के लोगों से मिलजुल कर अपने कार्यक्रम को समझाने लगे । होली जैसे त्यौहार पर सामुदायिक विकास के कार्यकर्ताओं ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर होली खेली । इस प्रकार प्रचार तथा जनसंपर्क के जितने भी साधन तथा माध्यम थे उनको काम में लाया गया । जहां तक सामाजिक तथा प्रौढ़ शिक्षा का प्रश्न है उसे भी अध्ययन क्षेत्र में आरम्भ किया गया । सामाजिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य जीवन स्तर को अच्छा बनाने में सहायता प्रदान करना था । साथ ही अपढ़ प्रौढ़ों को साक्षर बनाने का भी कार्यक्रम चालू किया गया । प्रौढ़ों तथा स्त्रियों के लिए कक्षाएं अलग अलग होती थीं । सामुदायिक विकास सम्बन्धी विषयों पर विचार विनिमय के लिए भी ग्रामीण लोगों को प्रोत्साहित किया जाता था । समय समय पर कैम्प लगाये जाते थे और दर्शनीय स्थानों पर युवकों तथा अन्य लोगों को ले जाया जाता था ।

समुदाय की अनुक्रिया

सामुदायिक विकास के लिए जो कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया उसके प्रति ग्रामीण समुदाय की क्या अनुक्रिया हुई उसका विश्लेषण करते हुए प्रोफेसर दुबे ने सर्वप्रथम इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि ग्रामीण समुदाय की अनुक्रिया जानने के लिए यह वांछनीय होगा कि दो प्रतिनिधि गांव के प्रोजेक्ट क्षेत्र से ले लिये जायं । इन दोनों गांवों के छद्मनाम राजपूत गांव तथा त्यागी गांव हैं । अध्ययन के लिए राजपूत गांव के १० प्रतिशत पुरुषों को इंटरव्यू के लिए चुना गया था । चूंकि त्यागी गांव छोटा था इसलिए इसके ७० प्रतिशत प्रौढ़ पुरुषों का इंटरव्यू लिया गया । राजपूत गांव के कुल ११४ व्यक्ति इस अध्ययन के लिए चुने गये थे । इनमें से ७६ ने यह बताया कि उन्होंने सामुदायिक विकास के प्रोजेक्ट के सम्बन्ध में सुना है तथा ७८ व्यक्तियों ने यह बताया कि उनकी इस विषय में कोई जानकारी नहीं है । त्यागी गांव के कुल ११७ व्यक्तियों का इंटरव्यू लिया गया था जिनमें से ७४ ने प्रोजेक्ट के विषय में सुना था और ४३ को कोई जानकारी नहीं थी । ग्रामीण समुदाय के विकास के लिए चलने वाले प्रोजेक्ट

से सम्बन्धित जो सभाएं हुईं उनमें राजपूत गांव के ६४ तथा त्यागी गांव के २१ व्यक्तियों ने भाग लिया था । राजपूत गांव के जिन ६४ व्यक्तियों ने सभाओं में भाग लिया था उनमें से सभी सामुदायिक विकास के सम्बन्ध में जानकारी नहीं रखते थे । केवल ४७ ऐसे थे जिन्हें इस विषय में कुछ मालूम था । राजपूत गांव के केवल २३ व्यक्ति ऐसे थे जिन्हें सामुदायिक विकास के कार्यक्रम की पूरी जानकारी थी । इन व्यक्तियों में से ७१ से ग्राम सेवक मिल चुका था । लेकिन इनमें से कुछ को नहीं मालूम था कि वह सामुदायिक विकास के प्रोजेक्ट से सम्बन्धित है । ग्रामसेवक ने ११४ व्यक्तियों में से केवल ४८ का सक्रिय सहयोग पाने का प्रयास किया । जिन कार्यों के लिए सहयोग मांगा गया उनमें कृषि प्रसार सेवा ग्राम स्वास्थ्य सिंचाई तथा कुछ अन्य कार्य थे । केवल ४७ व्यक्ति ऐसे मिले जो ग्रामसेवक द्वारा दिये गये नवीन सुझावों का उल्लेख कर सके । इसी प्रकार त्यागी गांव में प्राय: सभी व्यक्तियों को सामुदायिक विकास के प्रोजेक्ट के विषय में कुछ न कुछ जानकारी थी । इस गांव में ७१ व्यक्ति ऐसे थे जिन्हें सामुदायिक विकास का जो कार्य दूसरे गांव में भी हो रहा था उसके विषय में जानकारी थी । त्यागी गांव के १३ व्यक्ति ग्रामसेवक से मिले चुने गये ११७ व्यक्तियों में से ४१ ऐसे थे जिन्हें इनके विषय में कुछ भी याद नहीं था । अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि ३७ व्यक्तियों को सफाई के कार्य क्रम की जानकारी थी ३३ को पशु पालन तथा ८६ को कृषि सुधार के विषय में नयी बातों का ज्ञान था ।

जब इन गांवों में सामुदायिक विकास का कार्य आरम्भ किया जाने वाला था उस समय सर्वेक्षण द्वारा यह मालूम कर लिया गया था कि केवल ८ प्रतिशत व्यक्ति ऐसे थे जिन्हें ग्रामीण सामुदायिक विकास की कुछ न कुछ जानकारी थी । यह जानकारी उन्हें समाचार पत्रों रेडियो सिनेमा तथा राजनीतिक सभाओं के माध्यम से प्राप्त हुई थी । जहां तक रेडियो का सम्बन्ध है इन गांवों में रेडियो रखने वालों की संख्या बहुत ही कम ती और सामुदायिक प्रसारण के लिए जो रेडियो खरीदे गये थे उनमें से अधिकतर बेकार हो गये थे । अत: बहुत ही कम ऐसे लोग थे जिन्हें रेडियो सुनने की सुविधा प्राप्त थी ।

रेडियो कार्यक्रम

प्रोफेसर दुबे ने इस अध्ययन के अन्तर्गत दिल्ली तथा लखनऊ स्टेशनों से ग्रामीण समुदाय के लिए जो कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है उसका भी विश्लेषण किया है । इसके आधार पर

उन्हें मालूम हुआ कि ग्रामीण लोगों को सिनेमा के गीत तथा धार्मिक प्रवचन के कार्यक्रम प्रिय थे। कुछ लोग समाचार सुनना भी पसन्द करते थे। इस सम्बन्ध में डा० दुबे ने यह विचार व्यक्त किया है कि गांव के जिस व्यक्ति के पास रेडियो होता है वह अपने को नगरीय समझने लगता है। उसमें नगरीय भावना चेतन अथवा अचेतन रूप से प्रकट होती है। जब गांव में रेडियो रखने वाले लोगों से यह पूछा गया कि उन्हें रेडियो का ग्रामीण कार्यक्रम क्यों पसन्द नहीं है तब उन्होंने बताया कि हम रेडियो मन बहलाने के लिए सुनते हैं। रेडियो के ग्रामीण कार्यक्रम में वही देहाती गाने किस्से स्थानीय भाषा में होते हैं जिन्हें हम प्राय: सुनते रहते हैं। क्या इनकी हमारे गांव में कमी है। इसलिए हमें देहाती प्रोग्राम अच्छा नहीं लगता। शहर के लोग जब देहाती प्रोग्राम सुनते होंगे तब उन्हें अच्छा लगता होगा। जब गांव के लोगों को यह बताया गया कि रेडियो कृषि सुधार के लिए अच्छी वार्ताएं प्रसारित करता है तब वे चुप रहे। स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय में रेडियो से प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का ज्ञान नहीं होता। इंटरव्यू के समय एक ग्रामीण ने पूछा क्या ये वार्ताएं काम की होती हैं। क्या मौसम सम्बन्धी इनकी सूचनाएं सही होती हैं।

इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि रेडियो की भांति सिनेमा के प्रति ग्रामीण समुदाय की अनुक्रिया अनुकूल नहीं थी। देहात के लोग सिनेमा बहुत कम देखते हैं। अधिकतर ग्रामीण लोगों के लिए सिनेमा देखना एक अभूतपूर्व अनुभव है। गांव में जो चलचित्र दिखाये जाते हैं उनमें समाचार और शैक्षिक बातें होती हैं और इन्हें एक प्रकार का विज्ञापन माना जाता है। गांव में दिखायी जाने वाली फिल्मों में जिस भाषा का प्रयोग होता है वह अधिकतर पुस्तकीय होती है और गांव के लोग उसे सरलता से नहीं समझ पाते। इसी प्रकार समाचार पत्रों के विषय में यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण क्षेत्र में समाचार पत्र मंगाकर पढ़ने वालों की संख्या बहुत ही कम है। लेकिन जो थोड़े से पत्र गांव में आते हैं उन्हें लोग पढ़ते अवश्य हैं। फिर भी गांव के लोगों को जो समाचार मालूम होते हैं उनका स्रोत आपस में मिलना जुलना तथा अफवाहें हैं। जो समाचार पत्रों में दिया रहता है या सभाओं में बताया जाता है उसका ज्ञान पहले गांव के संभ्रांत लोगों को होता है। गांव के संभ्रांत व्यक्तियों का नगर में रहने वाले लोगों अधिकारियों तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं से संपर्क होता है। अत: गांव में जो भी समाचार आता है प्राय: उसका स्रोत ये संभ्रांत व्यक्ति होते हैं।

संचार माध्यमों का प्रभाव

जनसंपर्क तथा नवीन विचारों के प्रसार के लिए संचार के विभिन्नमाध्यमों का प्रयोग ग्रामीण समुदाय में किया गया था । संचार के विमित्र माध्यमों का उल्लेख प्रचार के सन्दर्भ में हो चुका है । अब इस स्थल पर हमें यह जानना है कि इन माध्यमों का क्या प्रभाव पड़ा । जहां तक जुलूस और नारों का प्रश्न है ये संचार के लोकप्रिय माध्यम हैं । इनका उपयोग भारत के स्वतंत्रता संग्राम में पर्याप्त मात्रा में हुआ था । अत: यह ज्ञात हुआ कि गांव के लोगों पर जुलूस और नारों का अच्छा प्रभाव पड़ा । यह उल्लेखनीय है कि मलेरिया के सम्बन्ध में दीवारों पर जब यह लिखा गया कि मच्छरों के कारण मलेरिया फैलता है तब कई ग्रामीण ऐसे मिले जिन्होंने यह स्वीकार किया कि दीवारों पर लिखी गयी इस सूचना को पढ़ कर उन्हें पहली बार यह मालूम हुआ कि मच्छरों से मलेरिया फैलता है । अत: इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि दीवारों पर लिखे गये नारे या सूचनाएं जनता के सामने बार बार आते हैं और उनका अच्छा प्रभाव पड़ता है । साथ ही संचार का यह बहुत ही सस्ता माध्यम है ।

अध्ययन किये जाने वाले गांवों में पोस्टरों और तस्वीरों का उपयोग भी संचार के माध्यम के रूप में हुआ था । अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि इस माध्यम का व्यवहार सीमित था अत: इसके प्रभाव के सम्बन्ध में कुछ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता । फिर भी यह उल्लेखनीय है कि अधिकतर पोस्टरों और तस्वीरों में पंचायत घरों स्कूल सहकारी बीज भंडार के जो चित्र दिखाये गये थे वे न तो कल्पनापूर्ण थे और न रोचक । इसके अतिरिक्त ये पोस्टर और चित्र ग्रामीण जनता की रुचि को ध्यान में रखकर नहीं बनाये गये थे । अत: यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण समुदाय में वही पोस्टर और चित्र उपयोगी होंगे कि ग्रामीण जनता की रुचि को ध्यान में रखकर कल्पनापूर्ण तथा रोचक बनाये जायेंगे । संचार माध्यमों के रूप में पुस्तिकाओं और पुस्तकों का भी उपयोग किया गया था और यह ज्ञात हुआ कि गांव के लोगों के लिए इनकी उपयोगिता बहुत ही कम थी । एक छोटी पुस्तिका बाग लगाने पर थी जिसका उपयोग केवल वे थोड़े बहुत व्यक्ति कर सके जिनके पास बाग लगाने के साधन थे । इसके अतिरिक्त जो पढ़े लिखे किसान थे उन्होंने भी बाग लगाने की पुस्तिका को अपने पास रखा । क्योंकि इस पुस्तिका की भाषा सरल थी और इसमें व्यवहार की बातों का सुगम शैली में उल्लेख किया गया था इसलिए बाग और फल वाले पेड़ों के सम्बन्ध में इसके द्वारा अच्छी जानकारी हो

जाती थी । इस अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि ग्रामीण जनता में उस बात का बड़ा प्रभाव पड़ता है जो कि मुद्रित होती है । अतः पुस्तिकाओं में लिखी गयी बातों को ग्रामीण लोग गम्भीरता से स्वीकार कर लेते थे । एक अन्य पुस्तिका विकास सम्बन्धी गीतों की थी । यह बहुत लोकप्रिय हुई क्योंकि गीतों की भाषा सरल थी और उनका ग्रामीण जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध था । इसके अतिरिक्त इन गीतों के माध्यम से भारतीय इतिहास तथा पौराणिक और ऐतिहासिक वीरों का भी अच्छा ज्ञान हो जाता था । इन गीतों में उन्हीं बातों का उल्लेख था जिन्हें ग्रामीण लोग पहले से ही जानते थे । अतः गीतों की पुस्तिका बहुत ही लोकप्रिय हुई और एक मास के भीतर इसकी १७० प्रतियां गांव के लोगों ने खरीद लीं ।

सामुदायिक विकास के इस प्रोजेक्ट में सिनेमा का अच्छा प्रयोग नहीं हो सका क्योंकि सिनेमा की मशीन के चालक तथा प्रोजेक्टर और जेनरेटर के मिलने तथा मरम्मत में कठिनाई समय समय पर होती थी । फिर भी कभी कभी जब कोई सभा कैम्प या प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता था तब उस समय प्रोजेक्ट के केन्द्र पर चल चित्र दिखाया जाता था । उन चलचित्रों को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग आते थे लेकिन उनकी रुचि चलचित्र में अधिक समय तक नहीं रहती थी । इसका कारण यह था कि अधिकतर लोग इसलिए आते थे कि उन्हें कोई ऐसी तस्वीर दिखाई जायेगी जिसमें प्रसिद्ध अभिनेता होंगे और जिनसे उनका मनोरंजन होगा । चूंकि ग्रामीण जनता को संवाद चित्र अथवा छोटी शैक्षिक फिल्में दिखायी जाती थीं इसलिए उनमें उनकी रुचि नहीं होती थी । इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि लोग सिनेमा मुख्य रूप से मनोरंजन के लिए देखना चाहते हैं । अतः यदि सिनेमा का उपयोग विकास कार्य में करना है तो सर्वप्रथम उन्हें मनोरंजक बनाना होगा और फिर उनमें ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाय जो कि ग्रामीण जनता की समझ में सरलता से आती हो । इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि जो चलचित्र दिखाये गये थे वे अत्यन्त निराशाजनक थे । तथा उनकी कथा शैली भाषा आदि ग्रामीण जनता के अनुकूल न थी ।

संचार माध्यम के रूप में खेल कूद का आयोजन तथा अन्तर्ग्राम प्रतियोगिताएं काफी प्रभावपूर्ण थीं । खेल कूद में स्कूल मे जाने वाले बच्चे अधिकतर भाग लेते थे । जहां तक अन्तर्ग्राम प्रतियोगिता का सम्बन्ध है उसके लिए मवेशियों की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था । किन्तु यह आयोजन भली भांति प्रचारित नहीं किया गया और न इसके लिए निश्चित समय ही

अनुकूल था । फिर भी पुरस्कार पाने के आकर्षण से काफी लोग अपने मवेशियों को इस प्रतियोगिता में लाये । मवेशियों की प्रतियोगिता के जो निर्णायक थे उन्होंने निष्पक्ष होकर सबसे अच्छे मवेशी का चुनाव किया । इस पर उस गांव के लोग प्रतियोगिता से उठकर चले गये जिनके गांव का मवेशी अच्छा नहीं माना गया । इसका कारण यह था कि पुरस्कार न मिलने पर गांव के लोग अपने को लज्जित अनुभव करने लगे । कुछ ग्रामीण व्यक्तियों का यह विचार था कि जितने लोगों ने भी मवेशियों की प्रदर्शनी में भाग लिया था उन सबको पुरस्कार मिलना चाहिए । अगर प्रत्येक गांव के किसी न किसी व्यक्ति को कोई पुरस्कार दे दिया जाय तो इससे गांव की प्रतिष्ठा बनी रहती है । यह मनोवृत्ति फसलों की प्रतियोगिता में भी दिखाई पड़ी ।

सभाओं और प्रदर्शनियों का भी अच्छा प्रभाव पड़ा । यद्यपि इसमें थोड़े ही लोग आते थे तो भी जो लोग सम्मिलित हुए थे वे गांव में प्रभावशाली थे । सभाओं में ग्रामीण नेताओं को आमंत्रित किया गया था । इस निमंत्रण को ग्रामीण नेताओं ने आदर के रूप में स्वीकार किया क्योंकि जब सरकार की ओर से आयोजित सभा में किसी गांव के व्यक्ति के पास निमंत्रण आता है तब इसका प्रभाव अन्य लोगों पर भी पड़ता है । तात्पर्य यह है कि आमंत्रित व्यक्ति का महत्त्व अपने समुदाय में बढ़ जाता है । अत: सभाएं और नुमायश काफी लोकप्रिय हुईं ॥ इन सभाओं में नेताओं की ही प्रधानता थी इसलिए उन्होंने अपने को प्रमुख स्थान दिया । जहां तक जनता का प्रश्न है उसने प्रदर्शनियों से अधिक लाभ उठाया । इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि विकास कार्य का प्रचार कारी कभी कभी व्याख्यान दे लेते हैं फिर भी उन्हें यह ज्ञात है कि किस प्रकार ग्रामीणों को प्रभावित किया जा सकता है ।

सामाजिक शिक्षा

सामुदायिक विकास के लिए सामाजिक शिक्षा का जो कार्यक्रम बनाया गया था वह आशा के अनुसार सफल नहीं हुआ । यह उल्लेखनीय है कि सामाजिक शिक्षा के अन्तर्गत निरक्षर प्रौढ़ों को साक्षर बनाने पर अधिक बल दिया गया था न कि उनके जीवनस्तर को सुधारने के लिए शिक्षा पर । दूसरे शब्दों में सामाजिक शिक्षा के कार्यक्रम ने साक्षरता प्रसार का रूप ले लिया । सामाजिक शिक्षा के अन्तर्गत जीवन स्तर को सुधारने का यह सीमित लक्ष्य क्यों पूरा न हो सका इस पर प्रकाश डालते हुए प्रोफेसर दुबे ने लिखा है कि सर्वप्रथम सामाजिक शिक्षा की कक्षाओं के

लिए जो समय निर्धारित किया गया वह उचित नहीं था। एक बार तो सामाजिक शिक्षा की कक्षाएं उस समय आरम्भ की गयीं जब कि खेतों को बोने का समय था और दूसरी बार उस समय जब कि किसान खेतों को काटने में व्यस्त था। खेती के काम में लगे रहने के वक्त बहुत ही कम लोग सामाजिक शिक्षा के लिए उपस्थित होते थे। इस सन्दर्भ में प्रोफेसर दुबे ने यह बताया है कि ग्रामीण समुदाय में साक्षरता और शिक्षा का अत्यधिक महत्त्व है लेकिन गांव के लोग यह मानते हैं कि केवल बालकों को ही शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। जब कोई प्रौढ़ व्यक्ति शिक्षा के लिए जाता है तब वह अन्य व्यक्तियों के सम्मुख हास परिहास का विषय बनता है। अत: जिन प्रौढ़ों ने सामाजिक शिक्षा की कक्षाओं में पहले पढ़ने के लिए नाम दिये थे उन्होंने कुछ समय बाद आना छोड़ दिया। अन्त में थोड़े से बालक रह गये जो कि स्कूल जाने की अवस्था के थे। इसी प्रकार स्त्रियों के लिए सामाजिक शिक्षा की जो व्यवस्था की गयी थी वह भी सफल न हुई। स्त्रियों के पढ़ाने के लिए लड़कियों के स्कूलों की अध्यापिकाओं को नियुक्त किया गया था। स्कूल में पढ़ा लेने के बाद जो समय उनके पास बचता था उसी में वे अपढ़ नारियों को शिक्षित कर सकती थी। चूंकि अधिकतर स्त्रियों को अपने घर का काम करना पड़ता था इसलिए वे यस समय न आ पाती थीं जबकि इन अध्यापिकाओं को उन्हें पढ़ाने के लिए समय होता था। इसके अतिरिक्त इस अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि कुछ ऐसे सांस्कृतिक घटक हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में नारी शिक्षा के प्रसार में बाधक हैं। उदाहरण के लिए किसी नव वधू को यह स्वतंत्रता नहीं होती कि वह घर से बाहर जाकर सामाजिक शिक्षा प्राप्त करे। जब नारी की अवस्था अधिक हो जाती है तभी वह घर से बाहर जाने के लिए स्वतंत्र होती है। जिन स्त्रियों को दो या तीन बच्चे थे वे प्राय: सामाजिक शिक्षा के केन्द्रों में आने के लिए स्वतंत्र थीं। लेकिन उनमें शिक्षा प्राप्त करने की कोई रुचि न थी। उनमें से अधिकतर का यह विचार था कि स्कूल जाने योग्य अब वे नहीं हैं क्योंकि उनकी अवस्था अब अधिक हो गयी है। इसके अतिरिक्त स्कूल जाने पर उन्हें अपने बच्चों को अकेला छोड़ना पड़ता। इन्हीं सब कारणों से ग्रामीण समुदाय में नारी शिक्षा का प्रसार नहीं हो पाता।

इस सन्दर्भ में प्रोफेसर दुबे ने यह उल्लेख किया है कि यदि ग्रामीण समदाय में शिक्षा का प्रचार करना है तो यह प्रयास करना होगा कि प्रौढ़ों के लिए जो शिक्षा की कक्षाएं संगठित की जायं वे देखने में प्राइमरी पाठशाला न मालूम पड़ें क्योंकि उनका जब यह रूप होता है तब प्रौढ़

लोग उससे दूर रहने की कोशिश करते हैं। इस अध्ययन से यह भी मालूम हुआ कि सामाजिक शिक्षा तथा साक्षरता की व्यवस्था और शिक्षण विधि आदि अधिकतर प्राइमरी स्कूलों के समान होती है इसलिए प्रौढ़ उसमें रुचि नहीं लेते। चूंकि सामाजिक शिक्षा का कार्यक्रम सफल नहीं हो रहा था इसलिए कुछ दिनों के बाद अधिकारियों ने प्रौढ़ों के लिए जो शिक्षा व्यवस्था थी उसे समाप्त कर दिया। फिर भी स्त्रियों के लिए कक्षाएं पुन: संगठित करके उन्हें किसी न किसी प्रकार चलाया गया। सामाजिक शिक्षा के साथ साथ सामुदायिक केन्द्रों का भी संगठन किया गया था और इन केन्द्रों में ऐसे कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते थे जिनसे कि ग्रामीण जनता का मनोरंजन होता था। उदाहरण के लिए इन केन्द्रों में सामूहिक रूप से धार्मिक तथा भक्ति गान का आयोजन किया जाता था। इन केन्द्रों में अधिकतर युवक ही उपस्थित होते थे क्योंकि उनकी रुचि सामूहिक गान में थी। इस बात का प्रयास नहीं किया गया कि और अधिक लोग आयें।

शिक्षा और ग्रामीण संस्कृति

इस अध्ययन से शिक्षा और ग्रामीण संस्कृति के सम्बन्ध में भी अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए। जब ग्रामीण समुदाय में विकास की योजना प्रस्तुत की जाती है तब कई ऐसे सांस्कृतिक घटक उपस्थित होते हैं जो इस कार्य में सहायक अथवा बाधक होते हैं। उदाहरण के लिए लोगों की आदतें और रुचियां हैं। यदि विकास का कार्यक्रम ऐसा है जो ग्रामीण समुदाय के रहन सहन के अनुकूल है तब उसका स्वागत किया जाता है। लेकिन यदि किसी ऐसे नवीन कार्यक्रम को प्रस्तुत करते हैं जो उनकी रुचियों तथा आदतों के प्रतिकूल है तो उसका विरोध होता है। इस अध्ययन से यह मालूम हुआ कि कृषि सम्बन्धी नवीन जानकारी आदि के प्रति आरम्भ में कुछ उत्साह था लेकिन बाद में यह उत्साह कम पड़ गया। जहां तक शिक्षा का सम्बन्ध है उस पर ग्रामीण संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट पड़ा। उदाहरण के लिए जिन गांवों का अध्ययन हुआ वहां के लोग शिक्षा के मूल्य को स्वीकार करते थे और यथासम्भव मौखिक सहायता भी उपलब्द होती थी। किन्तु व्यावहारिक कठिनाई उस समय उपस्थित हुई जब कि शिक्षण कार्य आरम्भ किया गया। जैसा कि पहले बताया जा चुका है गांव का प्रौढ़ व्यक्ति प्रौढ़ शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार करता है। लेकिन वह एक बालक की भांति स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं होता। यह एक सांस्कृतिक कठिनाई है। जो थोड़े से लोग प्रौढ़ पाठशालाओं में जाते हैं वे भी ग्रामीण

संस्कृति में इस प्रकार के व्यवहार के अनुमोदन के अभाव में अल्प समय के बाद स्कूल जाना बन्द कर देते हैं। इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण समुदाय के लोग अपने प्रतिष्ठा का अत्यधिक ध्यान रखते हैं। यदि उनसे किसी ऐसे कार्य के लिए कहा जाता है जो उनकी परम्परागत सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है तो वह उसे नहीं करते। अत: प्रौढ़ शिक्षा की असफलता का मुख्य कारण ग्रामीण संस्कृति की वे परम्पराएं हैं जो प्रौढ़ व्यक्ति को एक बालक के समान शिक्षा के लिए प्रोत्साहित नहीं करतीं। कुछ यही परिस्थिति स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में भी थी। नववधुओं तथा कम उम्र की विवाहित स्त्रियों के लिए ग्रामीण परम्परा यह स्वतंत्रता प्रदान नहीं करती कि वे घर के बाहर जाकर प्रौढ़ शिक्षा ग्रहण करें। अत: यह स्पष्ट है कि ग्रामीण संस्कृति में ऐसी परम्पराएं हैं जो वयस्कों को बालकों की भांति शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करतीं।

जहां तक ग्रामीण समुदाय के मूल्यों और अभिवृत्तियों का प्रश्न है इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षा को अधिक महत्त्व दिया जाता है। यही कारण था कि स्कूल भवन के निर्माण की योजना में ग्रामीण लोगों ने यथाशक्ति सहायता प्रदान की। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि ऊंची जाति के लोग अपने अपने बच्चों को आधुनिक शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं जिससे कि वे आधुनिक जगत की बदलती हुई परिस्थितियों में अपना उपयुक्त स्थान ग्रहण कर सकें। साथ ही शिक्षित व्यक्ति का ग्रामीण समुदाय में पद और कार्य महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसीलिए ऊंची जाति के लोग प्रयासपूर्वक अपने बच्चों को शिक्षा प्रदान करना चाहते हैं। जहां तक निम्न जाति के लोगों का प्रश्न है वे लोग अपने बच्चों को शिक्षित तो अवश्य बनाना चाहते हैं लेकिन साथ ही उन्हें यह भी भय है कि वे अपनी सामाजिक परम्परा से विमुख हो जायें। अत: निम्न जाति के लोगों में अधिक शिक्षा का प्रचार नहीं हो पाता। स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में भी कुछ इसी प्रकार की भावना है। ये लोग मानते हैं कि स्त्रियों को शिक्षित होना चाहिए लेकिन साथ ही यह भी भय होता है कि शिक्षित होकर ये स्त्रियां ग्रामीण संस्कृति से विलग न हो जायं।

मूल्यांकन

ग्रामीण समुदाय का जो अध्ययन प्रोफेसर दुबे ने किया है उसके संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट है कि भारत में होने वाले सामुदायिक विकास के कार्यक्रम में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस

सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है कि जब कभी कोई सामुदायिक विकास का कार्यक्रम निर्धारित किया जाय तब उसके शैक्षिक पक्ष की ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए और साथ ही उन सांस्कृतिक घटकों को न भूलना चाहिए जो कि ग्रामीण समुदाय में किसी नवीनता की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। साथ ही इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समुदायों में परम्पराओं की प्रधानता है और उनकी शिक्षा का कार्यक्रम निर्धारित करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि वे कौन से सांस्कृतिक घटक हैं जिनके आधार पर ग्रामीण शिक्षा को अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है।

इस अध्ययन का वास्तविक उद्देश्य ग्रामीण समुदाय में विकास तथा सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रभाव को जानना था। दो गांवों को विशेष रूप से लेकर के यह मालूम किया गया कि किस प्रकार ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन हो रहे हैं। परिवर्तन की प्रक्रिया में सामाजिक परम्पराएं किसी न किसी रूप में बाधक होती हैं यह भी स्पष्ट किया गया। फिर भी यह उल्लेखनीय है कि ग्रामीण समुदाय में ऐसे तत्त्व निहित हैं जो विकास कार्य में सहायक अथवा बाधक होते हैं। शैक्षिक समाजशास्त्र की दृष्टि से हमें यह ध्यान में रखना होगा कि भारतीय ग्रामीण समुदाय में शिक्षा का जो कार्यक्रम चल रहा है उसका आधार ग्रामीण संस्कृति होना चाहिए। दूसरे शब्दों में हमें ग्रामीण संस्कृति में निहित मूल्यों तथा प्रविधियों को अपना कर शिक्षा की ऐसी व्यवस्था करनी है जो ग्रामीण समुदाय के सामाजिक तथा आर्थिक विकास में सहायक हो। शिक्षा वही उपयोगी समझी जाती है जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का लाभ होता है। यदि हम ग्रामीण भारत की उन्नति करना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि हम शिक्षा को परिवर्तन का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधन स्वीकार करें। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि साक्षरताप्रसार का जो आन्दोलन हो रहा है उसमें भी परिवर्तन की आवश्यकता है। प्रौढ़ों को स्पष्ट रूप से ज्ञात होना चाहिए कि साक्षर होने से उन्हें क्या लाभ होगा। साक्षरता केवल एक साधन है उस ज्ञान को प्राप्त करने का जिसके द्वारा ग्रमीण समुदाय अपने को आर्थिक तथा सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बना सकता है। वास्तव में सामाजिक शिक्षा इस प्रकार होनी चाहिए कि न केवल ग्रामीण समुदाय के लोग इससे लाभान्वित हों वरन् उनका मनोरंजन भी होता रहे। दूसरे शब्दों में मनोरंजन द्वारा सामाजिक शिक्षा का कार्यक्रम अधिक उपयोगी हो सकता है। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि यदि प्रौढ़ों की कक्षाएं बालकों के समान

व्यवस्थित होंगी तो प्रौढ़ व्यक्ति इन कक्षाओं में सम्मिलित न हो सकेंगे क्योंकि उनकी सांस्कृतिक परम्परा बच्चों के समान शिक्षा ग्रहण करने के पक्ष में नहीं है। अतः सामाजिक शिक्षा की कक्षाओं का रूप बच्चों की कक्षाओं से भिन्न होना चाहिए और यह तभी सम्भव है जब कि हम सामाजिक शिक्षा को उन कार्यों पर आधारित करेंगे जिन्हें ग्रामीण लोग जीविकोपार्जन के लिए करते हैं। वास्तव में यहां हमें बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त उद्योग केन्द्रित शिक्षा प्रदान करना है। ग्रामीण समुदाय के लोग उस शिक्षा को उपयोगी पायेंगे जिसके द्वारा उन्हें आर्थिक लाभ हो सकता है।

अस्पृश्यता तथा हरिजन कल्याण

भारतीय जातीय संस्तरण में सबसे नीचा स्थान उनका है जो आजकल हरिजन या अनुसूचित जाति के नाम से पुकारे जाते हैं तथा परम्परागत रूप में अछूत या अस्पृश्य समझे जाते हैं । इस प्रकार अस्पृश्य जातियां जिनकी संख्या भारत में इस समय ५.५३ करोड़ है हिन्दुओं की वर्ण व्यवस्था में पंचम वर्ण है और जाति प्रथा के भयंकर परिणाम के रूप में आज हमारे सम्मुख है । गांधी जी ने अस्पृश्यता को हिन्दुओं की वर्ण व्यवस्था पर एक काला धब्बा सबसे बड़ा कलंक कहा है । गांधी जी के ही शब्दों में मैंने इस वर्ण व्यवस्था को प्राकृतिक नियम को जैसा समझा और उसका जो अर्थ किया है उससे तो यह नियम सर्वथा उपयोगी ही प्रतीत हुआ है । परन्तु प्रकृति के अनेक नियमों और व्यवस्थाओं की तरह यह वर्ण व्यवस्था भी विकृत हो गई है और इसी से यह आज हमें भयावनी सी दिखाई पड़ती है । मनुष्य ने हिन्दू नामधारी मनुष्य ने उसका रूप बिगाड़ दिया है और उसमें छूत छात का काला रंग पोत कर उसे और भी कुरूप कर दिया है । वर्ण व्यवस्था के इस अभद्र रूप या कुरूप अंग का ही विस्तृत अध्ययन हम इस निबन्ध में करेंगे ।

अस्पृश्यता का इतिहास

वैदिक ग्रन्थों में चाण्डाल निषाद आदि शब्दों का उल्लेख पाया जाता है । ये लोग समाज में सबसे नीचे स्तर के समझे जाते थे । पर वे अस्पृश्य थे या नहीं इसका स्पष्ट पता नहीं चलता । डा० घुरिये के अनुसार उत्तर वैदिक काल में यज्ञ धर्म आदि से सम्बन्धित शुद्धता या पवित्रता की धारणा अत्यन्त प्रखर थी परन्तु अस्पृश्यता की धारणा आज जिस रूप में है वैसी उस युग में नहीं थी । स्मृति काल में चाण्डाल आदि के रहने की व्यवस्था गांव से बाहर थी । धर्मशास्त्र युग में अस्पृश्यता की भावना सबसे पहले स्पष्ट हुई और एक ब्राह्मण नारी तथा एक शूद्र पुरुष से उत्पन्न सन्तानों को जिन्हें चाण्डाल कह कर सम्बोधित किया गया सबसे घृण्य समझा गया । मनु के युग में ऐसे अस्पृश्य लोगों को न केवल गांव से ही निकाल दिया गया बल्कि उन्हें

ऐसे कार्य और कर्तव्य सौंपे गये जिससे यह स्पष्ट हो जाये कि वे मनुष्य जाति में सबसे अधम नमूने के हैं। जैन और बौद्ध धर्म से प्रभावित लोगों ने इनकी दयनीय अवस्था से आकर्षित होकर इनकी अवस्था को सुधारने का प्रयत्न किया। परन्तु इस सम्बन्ध में मुसलमानों की राज्य स्थापना होने तक कोई विशेष उन्नति न हो पाई। नानक चैतन्य कबीर आदि के प्रयत्न इस दिशा में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उच्च जातियों के अत्याचारों से पीड़ित होकर हजारों अस्पृश्यों ने अपने को इस्लाम धर्म में परिवर्तित कर लिया। अंग्रेजों के आने के बाद अस्पृश्य जातियों की निर्योग्यतायें धीये धीरे कम होती गयीं। आज कांग्रेस सरकार इस सम्बन्ध में विशेष जागरूक एवम् प्रयत्नशील है।

अस्पृश्य जातियों को विभिन्न समयों में विभिन्न नामों से सम्बोधित किया गया है। बहुत दिनों तक इनको अछूत कहकर पुकारा जाता रहा। चूंकि इनकी स्थिति सबसे नीची थी इस कारण इनको दलित वर्ग के नाम से सम्बोधित किया जाता था यहां तक कि सन् १९३१ के पहले सरकारी तौर पर अस्पृश्य जातियों को दलित वर्ग ही कहा जाता था। सन् १९३१ में आसाम की जनगणना के अधीक्षक ने दलित वर्ग के स्थान पर बाहरी जाति शब्द के प्रयोग का सुझाव रखा क्योंकि अस्पृश्य या दलित वर्गों का कोई स्थान हिन्दुओं की जातीय संरचना के अन्दर नहीं था वे इस संरचना के बाहर के व्यक्ति समझे जाते थे। इस सुझाव को सर्व भारतीय प्रयोग के लिये स्वीकार कर लिया गया। इसके फलस्वरूप एक राजनैतिक झगड़े की सृष्टि हुई। १३ नवम्बर सन् १९३१ में लंदन में होने वाले गोलमेज सम्मेलन में डा० अम्बेडकर ने एक ओर तो दलित वर्ग शब्द का विरोध किया और दूसरी ओर यह सुझाव रखा कि चूंकि इन्हें हिन्दू जातीय संरचना के बाहर मान लिया गया है इस कारण इन्हें अलग मतदान देने का अधिकार भी देना चाहिये। महात्मा गांधी ने इसका विरोध किया और अछूतों के हितों की रक्षा के लिये आपने स्पष्ट शब्दों में घोषित किया भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये मैं अछूतों के वास्तविक हित को न बेचूंगा इस सम्मेलन को और समस्त संसार को यह जान लेना चाहिये कि आज हिन्दू समाज में सुधारकों का ऐसा समूह मौजूद है जो अस्पृश्यता के इस कलंक को जो उनका नहीं बल्कि कट्टर एवम् रूढ़िवादी हिन्दुओं का कलंक है धोने के लिये प्रतिज्ञाबद्ध हैं। परन्तु इस पर भी ब्रिटिश सरकार ने अस्पृश्य जातियों को हिन्दुओं से अलग घोषित किया। इसके विरोध में गांधी जी ने आमरण अनशन किया। बम्बई में इस सम्बन्ध में एक परिषद् हुई जो शीघ्र ही

पूना में ले जाई गई । डा० अम्बेडकर इस परिषद् में शामिल हो गये । इसमें एक योजना तैयार की गई जिसे अनशन के पांचवे दिन सारे दलों ने स्वीकार कर लिया । दलित जातियों ने पृथक् निर्वाचन का अधिकार त्याग दिया और आम हिन्दू निर्वाचनों से ही संतोष कर लिया । इसके फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार को भी झुकना पड़ा और १९३२ में एक समझौता हुआ जो पूना पैक्ट के नाम से प्रसिद्ध है । इसमें दलित जातियों को हिन्दू मान लिया गया । इसके पश्चात् ही गांधी जी इन जातियों को इनके अपमानजनक नाम से विमुक्त करने के लिये हरिजन कह कर सम्बोधित करने लगे और वे आज भी इसी नाम से परिचित हैं । सन् १९३५ के विधान में इन दलित जातियों को कुछ विशेष सुविधायें प्रदान करने के हेतु एक अनुसूची तैयार की गई जिसके आधार पर वैधानिक दृष्टिकोण से इनको अनुसूचित जाति कहा गया । आज भी समस्त सरकारी प्रयोगों में इन्हें अनुसूचित जाति या हरिजन के नाम से सम्बोधित किया जाता है ।

अस्पृश्यता की उत्पत्ति

१ प्रजातीय व्याख्या अस्पृश्यता की उत्पत्ति के सम्बन्ध में जो विभिन्न धारणायें हैं उनमें प्रजातीय व्याख्या एक है । सर्वश्री रिज़ले मज़ूमदार और घुरिये प्रजातीय व्याख्या प्रस्तुत करते हैं । डा० घुरिये के अनुसार इण्डो आर्यन लोगों ने यहां के मूल निवासियों को घृणा की दृष्टि से देखा और दास के नाम से सम्बोधित करते हुये उन्हें समाज में सबसे नीचा स्थान दिया और अपनी धार्मिक पुजा संस्कार आदि से उन्हें बिल्कुल अलग रखा । डा० घुरिये के शब्दों में पवित्रता का विचार चाहे वह व्यवसाय या संस्कार सम्बन्धी हो जो कि जाति की उत्पत्ति का एक कारण माना जाता है अस्पृश्यता के विचार और आचरण की आत्मा है । डा० मज़ूमदार ने लिखा है कि तथाकथित दलित जातियों की निर्योग्यतायें संस्कार सम्बन्धित नहीं हैं बल्कि इसका आधार सम्भवत: प्रजातीय और सांस्कृतिक भिन्नतायें हैं । इन भिन्नताओं के कारण पृथकता की धारणा धीरे धीरे इतनी कटु हो गयी कि कुछ लोगों को छूना भी उचित नहीं समझा गया जिसके फलस्वरूप वे अछूत कहलाये ।

२ व्यवसायिक व्याख्या श्री नेसफील्ड ने पेशे के आधार पर अस्पृश्यता को समझाने का प्रयत्न किया है । आपके अनुसार घृणित या गन्दे पेशे ही अस्पृश्यता की उत्पत्ति के प्रमुख कारण हैं । वे लोग जो ऐसे पेशे करते हैं जो कि सामाजिक दृष्टिकोण से गन्दे या अपवित्र हैं उनसे छुआ छूत मानी जाती है । इसका उदाहरण आज भी मिलता है । एक चमार भी धोबी से छुआ छूत

मानता है क्योंकि धोबी स्त्रियों के मासिक धर्म के गन्दे कपड़े तक धोता है। इस प्रकार गन्दे पेशों को करने वाले व्यक्ति या समूह गन्दे या अछूत माने गये।

३ माना का सिद्धान्त श्री हट्टन ने माना और दूसरे सामाजिक निषेधों के आधार पर अस्प्टश्यता को समझाने काप्रयत्न किया है। आपके मतानुसार माना के आधार पर अपरिचित व्यक्ति और घृणित या गन्दे पेशों के करने वालों से अकल्याण होने या नुकसान पहुंचने के डर से लोगों में छुआछूत की धारणा पनपी। इसका उदाहरण नामा जनजातियों में मिलता है। श्री हट्टन के सिद्धान्त में धार्मिक पक्ष भी आ जाता है। मंगल कलश पवित्र जान्वर धर्म गुरू आदि की धारणायें भी अस्पृश्यता की धारणा को विकसित करने में सहायक सिद्ध हुई हैं।

४ परम्परात्मक व्याख्या मनु के विधान के अनुसार प्रतिलोम विवाह को ही अस्पृश्यता की उत्पत्ति का कारण मानना चाहिये। ऐसे विवाह से उत्पन्न सन्तानों को वर्ण संकर माना गया और चूंकि इन्हें माता पिता में से किसी का भी कुल नहीं मिला इस कारण उन्हें हिन्दू समाज से अलग रखा गया जिससे अछूत जाति का निर्माण हुआ। मनु ने एक ब्राह्मण लड़की और एक शूद्र लड़के से उत्पन्न सन्तान को चाण्डाल बताया है।

५ गांधी जी के विचार महात्मा गांधी जी के अनुसार अस्पृश्यता का मूल उद्गम धर्म नहीं है। उच्चता के खोटे अहंकार ने ही अस्पृश्यता को जन्म दिया है। अपने से दुर्बल को हम सदैव पैरों तले दबाते रहे इसी मनोवृत्ति से अस्पृश्यता उत्पन्न हुई है। अस्पृश्यता के सम्बन्ध में आपकी जो यह धारणा है कि वह स्वयं ईश्वर की बनायी हुयी है मैं आपके इसी विश्वास के विरुद्ध तो यहां चेतावनी देने आया हूं कि अस्पृश्यता और दुरिता कोई दैवी रचना नहीं हैं। अस्पृश्यता तो कागज़ के नकली फूलों की भांति मनुष्य की बनायी हुई एक कृत्रिम चीज है। अस्पृश्यता को देवता ने नहीं शैतान ने बनाया है। अधूतपन जैसा आज हम मानते हैं वह न पूर्व कर्म का फल है न ईश्वर कृत है। आज का अछूतपन मनुष्य कृत है सवर्ण हिन्दू कृत है। अस्पृश्यता की उत्पत्ति के सम्बन्ध में गांधी जी का मत है कि हिन्दू समाज तथा धर्म के क्रमिक विकास में एक समय ऐसा था जबकि गाय की रक्षा करना धर्म का एक अंग हो गया और इसी लिये गाय को गऊ माता कहकर पुकारा जाने लगा। समाज की इस अवस्था में कुछ लोग ऐसे भी थे जोकि उस समय भी अधिक सुसभ्य नहीं थे और गऊ मांस खाते थे। स्वभावतः ऐसे लोगों से समाज की अधिकांश जनता जोकि गाय को माता की तरह पूजती थी सम्पर्क स्थापित नहीं करती

थीं । सामाजिक नियम ऐसी अवस्था में बहुत ही कठोरता से अपनाये जाते थे । परिणाम यह हुआ कि गऊ मांस खाने वाले समाज से बहिष्कृत कर दिये गये । यही सामाजिक पाप पिता से पुत्र को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होता चला गया । इस प्रकार सामाजिक बहिष्कार का वह नियम जोकि प्रारम्भ में अच्छे उद्देश्य से लागू किया गया था धीरे धीरे परम्परागत और कटु होता गया तथा स्थायी रूप से सामाजिक जीवन में जड़ पकड़ कर विष वृक्ष की भांति विष फल ही उत्पन्न करता गया और समाज के एक लाभ कारी बड़े अंग को अस्पृश्य बनाये रक्खा ।

उक्त लिखित पांच व्याख्याओं में सत्यता होते हुये भी उन्हें सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता क्योंकि अस्पृश्यता जाति प्रथा का ही एक अंग होने के कारण एक जटिल धारणा है और इसकी उत्पत्ति किसी एक विशिष्ट कारण से नहीं बल्कि अनेक कारणों से हुई है । सांस्कृतिक एवम प्रजातीय भिन्नतायें धर्म से सम्बन्धित पवित्रता की धारणा सामाजिक निषेध गन्दे और घृणित पेशों के प्रति सामाजिक मनोवृत्ति आदि सभी धारणाओं ने मिलकर अस्पृश्यता को जन्म दिया है । उचित ही कहा गया है कि वहिष्कृत जातियों के स्तर की उत्पत्ति अंशत: प्रजातीय अंशत: धार्मिक और अंशत: सामाजिक प्रथा कर परिणाम है ।

अस्पृश्य जातियों की निर्योग्यतायें

अस्पृश्य जातियों को कुछ काम नहीं करने दिये जाते हैं यह दशा निर्योग्यता कहलाती है । डा० मजूमदार ने कहा है अस्पृश्य जातियां वे हैं जो अनेक सामाजिक और राजनैतिक निर्योग्यताओं की शिकार हैं इनमें से अनेक निर्योग्यतायें उच्च जातियों द्वारा परम्परात्मक तौर पर निर्धारित और सामाजिक तौर पर लागू की गई हैं । भारत के स्वतन्त्र होने के बाद अस्पृश्यता का वैधानिक पहलू समाप्त कर दिया गया और अस्पृश्य लोगों को साधारण जनता की भांति समस्त अधिकार प्राप्त हैं । यही महान् परिवर्तन अस्पृश्य जातियों में स्वतन्त्रता के बाद देखने में आया । अनेकों निर्योग्यतायें समाप्त होने के पश्चात् भी जैसा कि श्री पानिक्कर का कथन है कि यह मान लेना सर्वथा गलत होगा कि अस्पृश्यता समाप्त हो जाने की घोषणा कर देने से ही अस्पृश्यों की सामाजिक निर्योग्यतायें भी दूर हो गयी हैं । इस सम्बन्ध में किसी भी निष्कर्ष पर आने से पूर्व इन अस्पृश्य जातियों की समस्त निर्योग्यताओं का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है । ये निर्योग्यतायें निम्न प्रकार हैं

१ आर्थिक निर्योग्यतायें

कहा जाता है कि राजनैतिक स्वतन्त्रता आर्थिक समानता के बिना केवल एक कल्पना मात्र है। इस सम्बन्ध में अछूतों की समस्या अत्यधिक गम्भीर है।

अछूतों को आर्थिक क्षेत्र में अपनी स्वेच्छानुसार पेशे चुनने की स्वतन्त्रता नहीं थी। अपने परम्परागत पेशों को छोड़कर उन्हें यह अधिकार प्राप्त नहीं था कि वे ऊंची जातियों के पेशों को स्वतन्त्रतापूर्वक चुन सकें। एक भंगी के लिए क्लर्क होना सम्भव न था। यही कारण है कि अस्पृश्य जातियों की आर्थिक दशा शोचनीय है। वे निर्धनता से सम्बन्धित सभी कष्टों को झेल रहे हैं।

खेती पर ऊंची जातियों का एकाधिकार है इस कारण अस्पृश्य जाति के लोग भूमिहीन हैं। जमींदारी प्रथा की समाप्ति से पूर्व अछूतों से गुलामों की तरह बेगार ली जाती थी। श्री पान्किकर ने उचित ही कहा है कि उस समय जब अस्पृश्यता की धारणा अपने परम्परागत रूप में कार्य कर रही थी अस्पृश्यों की स्थिति गुलामों से भी गई बीती थी। गुलाम कम से कम अपने मालिक की चल सम्पत्ति होने के कारण मालिकों से कुछ व्यक्तिगत सम्बन्ध रखते थे और उनकी आर्थिक महत्ता के कारण उनके साथ बर्बरता का व्यवहार अधिक नहीं किया जाता था। पर अस्पृश्य लोगों के मामले में इसका भी अभाव था। यह एक प्रकार का गुलामों पर सामुदायिक अधिकार था। प्रत्येक व्यक्ति का पृथक पृथक गुलाम न होकर प्रत्येक गांव में उनकी सेवा करने के लिये अनेक अस्पृश्य परिवार होते थे जो कि सामुदायिक गुलामी के ही द्योतक हैं।

अछूत प्राणी समाज की सबसे आवश्यक और मूल्यवान सेवा करते हैं। गांधी जी के शब्दों में डाक्टर यदि डाक्टरी छोड़ दे तो उसके रोगी का सर्वनाश हो जाये। किन्तु अछूत यदि अपना काम बन्द कर दे तो जगत् का ही विनाश हो जाये। परन्तु इस काम का पारिश्रमिक उन्हें सबसे कम मिलता है उनकी दरिद्रता यहां तक बढ़ जाती है कि वे आधे पेट खाकर और नंगे रहकर अपना जीवन यापन करते हैं।

अस्पृश्यता की ही धारणा के कारण मिल फैक्ट्री आदि में अछूतों को ऊंचे पदों पर काम करने का अवसर ही नहीं मिल पाता है। उन्हें केवल वे काम ही करने को मिलते हैं जो कोई नहीं करता। योग्यता होने पर भी उचित काम न मिलने से उत्पादन को काफी धक्का पहुंचता है और उनकी आर्थिक स्थिति गिर जाती है।

२ सामाजिक निर्योग्यतायें

सामाजिक क्षेत्र में भी अस्पृश्य जातियों की अनेकों निर्योग्यतायें हैं । समाज ने अछूतों को निम्न स्थिति प्रदान की है इसी कारण ऊंची जातियों के सभी व्यक्ति उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं उनके स्पर्श से बचते हैं उनके दर्शन उनकी छाया को अपवित्र मानाते हैं । अभी कुछ समय पूर्व तक अछूतों के बच्चों को स्कूल और कालिज में शिक्षा प्राप्त करने से रोका जाता था । उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की भी स्वतन्त्रता नहीं थी । इसका फल यह हुआ कि शत प्रतिशत अस्पृश्य अशिक्षित थे परिणाम स्वरूप दरिद्रता रूपी दानव से छुटकारा उन्हें नहीं मिल पाता था ।

अनेक स्थानों में अछूत उन सड़कों पर चल भी नहीं सकते थे जिन पर ऊंची जाति के लोग चलते थे उनके लिये अलग सड़कें थीं । उसी प्रकार वे उन कुओं से पानी भी नहीं भर सकते थे तथा उन तालाबों को भी व्यवहार में नहीं ला सकते थे जिन्हें ऊंची जाति के लोग व्यवहार में लाते थे । छात्रावासों में रहने होटल जलपान गृह आदि में घुसने के सम्बन्ध में अनेकों निर्योग्यतायें उन पर लाद दी गयीं थीं । दक्षिण भारत में उनकी स्थिति इस सम्बन्ध में सचमुच ही दयनीय थी । जिस प्रकार अछूतों को बाल बनवाने साफ कपड़े पहनने सोने के जेवर आदि व्यवहार में लाने और गांव में रहने की आज्ञा नहीं थी उसी प्रकार ऊंची जातियों के किसी भी व्यक्ति के निकट आने पर सम्मान पूर्वक खड़े हो जाना उनके लिए अनिवार्य था ।

अछूतों के रहने के लिये शहर में अलग बस्तियां होती थीं जहां वे पशुओं से भी बदतर जीवन व्यतीत करते थे । इसके अलावा सबसे बड़ी बात तो यह है कि अछूतों में आपस में ही छुआछूत की भावना पाई जाती है । अछूतों का अपना एक जातीय संगठन है और हिन्दुओं की भांति उनमें भी असंख्य उपजातियां हैं जिनमें से प्रत्येक अपने को श्रेष्ठ प्रमाणित करने का प्रयत्न करती है । एक मोची एक धोबी को या एक धोबी एक जमादार को कभी नहीं छूता है । इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि दक्षिणी भारत में ऐसे भी स्थान हैं जहां न केवल ब्राह्मण लोग ही अछूतों के स्पर्श से बचने की कोशिश करते हैं बल्कि अछूत लोग भी ब्राह्मणों के पास जाना या उन्हें देखना अच्छा नहीं समझते हैं । सामाजिक निर्योग्यता का यह विचित्र रूप है ।

३ धार्मिक निर्योग्यतायें

कुछ वर्ष पूर्व तक अछूतों को मंदिर में प्रवेश करने का अधिकार नहीं था कानून ने अब इस निर्योग्यता को दूर कर दिया है फिर भी गांवों आदि में कहीं कहीं यह निर्योग्यतायें पायी

जाती हैं। धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने तथा धार्मिक संस्कारों में भाग लेने आदि के सम्बन्ध में भी निर्योग्यतायें थीं। न ही अछूत लोग धार्मिक उपदेशों को सुन सकते थे और न ही श्मशान घाटों में अपने मुर्दों को जला सकते थे। ब्राह्मण इनके धार्मिक संस्कारों में पुरोहिती नहीं करते हैं।

उपर्युक्त निर्योग्यताओं में मन्दिर में प्रवेश या देवी देवताओं के पूजन सम्बन्धी निर्योग्यतायें ही प्रमुख हैं क्योंकि धर्म के माध्यम से नैतिक उन्नति ही नहीं होती वरन् सामाजिक एकता की धारणा भी बढ़ती है। इस कारण इन निर्योग्यताओं से अछूतों के नैतिक स्तर को ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता को भी ठेस पहुंची है।

४ राजनैतिक निर्योग्यतायें

सामान्य नागरिक के रूप में जो अधिकार प्राप्त होने चाहिये थे उनमें से अधिकतर इन अछूतों को नहीं प्राप्त थे। वोट देने का अधिकार न देना शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार न देना नौकरी में नियुक्ति सम्बन्धी समान अधिकार न देना इत्यादि राजनैतिक निर्योग्यताओं के अन्तर्गत आता है। वर्तमान सरकार से पहले इस सम्बन्ध में सरकारी सुरक्षा न के बराबर थी।

निर्योग्यताओं का प्रभाव

१ सामाजिक एकता में बाधा ऊपर लिखी निर्योग्यताओं के कारण अनेक अछूतों ने मुसलमान और ईसाई धर्म को स्वीकृत कर लिया है क्योंकि वे इन धर्मों के समानता के सिद्धान्त से आकर्षित हुए और अपना धर्म उन्हें हेय लगा जिसके कारण उन्हें अनेकों निर्योग्यताओं का सामना करना पड़ता था। व्यवहारिक रूप में ईसाई और मुसलमान लोगों में चाहे समानता हो या न हो इतना अवश्य था कि हिन्दू जाति संरचना के अनुसार ऊंची जातियों का नीची जातियों पर अत्याचार ही अछूतों के धर्म परिवर्तन का कारण बना और सामाजिक एकता में बाधा पड़ी।

२ राजनैतिक फूट अनेकों निर्योग्यताओं के कारण अछूतों में दृढ़ धारणा बन गई कि उनका हिन्दू समाज में कोई अस्तित्व नहीं उन्होंने अपने को हिन्दू समाज का एक अंग मानने से इन्कार कर दिया और प्राय: अपने को हिन्दू कहना तक छोड़ दिया। इसके फलस्वरूप राजनैतिक एकता को भारी धक्का लगा। राजनैतिक फूट स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगी। १३ नवम्बर सन् १९३१ को द्वितीय गोल मेज सम्मेलन में डा० अम्बेडकर की इस मांग का कि अछूतों को पृथक राजनैतिक अधिकार मिलना चाहिये था विरोध करते हुये महात्मा गांधी ने सारयुक्त शब्दों में कहा था कि जो लोग अछूतों के राजनैतिक अधिकार की बात करते हैं वे भारत को नहीं पहचानते

और हिन्दू समाज आज किस प्रकार बना हुआ है इसे नहीं जानते । इसलिये मैं अपनी पूरी शक्ति से यह कहूंगा कि इस बात का विरोध करने वाला यदि मैं अकेला भी रहूं तो भी अपने प्राणों की बाजी लगाकर इसका विरोध करूंगा ।

३ आर्थिक असमानतायें आर्थिक निर्योग्यताओं के कारण अन्य लोगों की तुलना में अस्पृश्य जातियों की आर्थिक असमानतायें बढ़ती ही गयीं । इसने समाज के एक बहुसंख्यक भाग को अपना आर्थिक उत्पादन करने से रोका फलस्वरूप इसका प्रभाव पूरे समाज की आर्थिक दशा पर पड़ा । आर्थिक क्षेत्र में हरिजनों की उपेक्षा हिन्दू समाज के लिये कितनी हानिप्रद है इस सम्बन्ध में गांधी जी ने कहा था पश्चिम के वैज्ञानिक इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि समाज के सेवकों की उपेक्षा करने से उनकी देखभाल न करने से समाज को भारी आर्थिक हानि होती है ।

४ स्वास्थ्य का निम्न स्तर प्राय: अधिकतर गांवों में अछूतों को गांव के किनारे पर मकान बनाने की अनुमति दी जाती है कोई भी ऊंची जाति अपने मुहल्लों में अछूतों का निवास होता है जहां कि स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई भी सुविधा उन्हें प्राप्त नहीं होती है जिससे इतनी बड़ी अछूत संख्या का स्वास्थ्य निम्न स्तर पर हो गया । यह पूरे समाज की प्रगति के रास्ते में बहुत बड़ी बाधा है ।

५ अशिक्षा और दरिद्रता अस्पृश्य जातियों की शिक्षा सम्बन्धी निर्योग्यता के कारण ही भारतवर्ष की इतनी बड़ी जनसंख्या अज्ञानता के अन्ध कूप में पड़ी रहती है । इतना ही नहीं श्रम विभाजन की कठिनाई उच्च वर्ग की शोषण नीति श्रमिक गतिशीलता में बाधा आदि के कारण अस्पृश्य जाति निर्धनता के निम्न स्तर पर निवास करती रही है ।

हरिजन सुधार आन्दोलन

अ प्रारम्भिक सुधार आन्दोलन हरिजन सुधार आन्दोलन का श्री गणेश भारत में हुआ जहां पर कि इनकी दशा वास्तव में बहुत ही दयनीय थी । इस प्रारम्भिक आन्दोलन के प्रथम नेता पूना के श्री ज्योतिबा फूले थे । श्री वी० आर० सिंधे के अनुसार सन् १८६५ में बंगाली ब्राह्मण शशिमद बन्दोपाध्याय ने बरानगर में काम करने वाले अस्पृश्य श्रमिकों की अवस्था को सुधारने का प्रयत्न किया था । इसके बाद के प्रयत्नों में श्री सिंधे केद्वारा स्थापित बम्बई में दलित वर्ग मिशन का नाम उल्लेखनीय है । इसके बाद डाक्टर अम्बेदकर के नेतृत्व में आन्दोलन ने और भी जोर पकड़ा और अखिल भारतीय दलित संघ तथा अखिल भारतीय दलित वर्ग फेडरेशन

नामक समितियां बनीं । सन् १९२४ में सबसे पहले ट्रावनकोर में अछूतों ने अपने धार्मिक अधिकार को प्राप्त करने के लिये आन्दोलन किया और कुछ सफलता भी प्राप्त हुई ।

सन् १९३१ के गोल मेज सम्मेलन के पश्चात् गांधी जी ने अपना अनशन प्रारम्भ किया । बम्बई में इस सम्बन्ध में एक परिषद् का निर्माण किया गया । गांधी जी के उपवास भंग करने के बाद ही परिषद् ने बम्बई में एक सभा की । इसमें एक प्रस्ताव के द्वारा हरिजन सेवक संघ के नाम से एक विख्यात संस्था की स्थापना की गयी । इसी परिषद् ने पंडित मदनमोहन मालवीय की अध्यक्षता में सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत किया कि यह परिषद् निश्चय करती है कि अब भविष्य में हिन्दू जाति में किसी को जन्म से अस्पृश्य न समझा जायेगा और जिन्हें अब तक अस्पृश्य समझा जाता रहा है उन्हें अन्य हिन्दुओं की भांति ही मन्दिरों कुओं पाठशालाओं सड़कों और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं का अधिकार रहेगा । मौका मिलते ही इस अधिकार को कानूनी स्वरूप दे दिया जायेगा और यदि इस प्रकार का रूप उसे स्वराज्य पार्लियामेंट स्थापित होने से पहले तक प्राप्त न हुआ तो स्वराज्य पार्लियामेंट का पहला कानून इस सम्बन्ध में होगा ।

ब हरिजन सेवक संघ द्वारा कल्याण कार्य जिन समितियों ने हरिजन सुधार आन्दोलन में महत्वपूर्ण कार्य किये हैं उनमें हरिजन सेवक संघ का नाम सबसे प्रमुख है । इस संघ की प्रत्येक प्रान्त में शाखायें हैं । यह संघ प्रचार के द्वारा अस्पृश्यता को दूर करने समानता की भावना को फैलाने तथा हरिजनों के लिये मन्दिर में प्रवेश आदि के अधिकारों को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है । साथ ही अस्पृश्य जातियों की आर्थिक अवस्था को सुधारने के लिये संघ की ओर से व्यवसाय सम्बन्धी प्रशिक्षा अथवा ट्रेनिंग देने की व्यवस्था भी है । कुटीर उद्योगों को पनपने और दवा आदि की सहायता अधिक से अधिक प्रदान करने की ओर भी यह संघ प्रयत्नशील है । इसके अतिरिक्त इस संघ ने हरिजनों के कल्याण के लिये स्कूलों को खोलना छात्र वृत्तियों और पढ़ने की सामग्रियों को गरीब बच्चों को मुफ्त देना तथा हरिजन बस्तियों की सफाई कुओं का खोदना आदि कल्याण कार्यों को संगठित किया है । इस संघ के प्रयत्नों से दक्षिण भारत के अनेक मन्दिरों के द्वार हरिजनों के लिये खोल दिये गये और मद्रास सरकार ने इस सम्बन्ध में एक कानून भी पास किया । इन प्रयत्नों के फलस्वरूप ही हरिजनों में शिक्षा का प्रचार प्रारम्भ हुआ और उनकी आर्थिक स्थिति में भी उन्नति हुई ।

स अन्य समितियों द्वारा सुधार कार्य इसके अन्तर्गत हम स्वर्ण हिन्दुओं के प्रयत्नों को ले

सकते हैं जिनमें ब्रह्म समाज आर्य समाज रामकृष्ण मिशन के नाम उल्लेखनीय हैं। इन समितियों ने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और समानता के आधार पर अस्पृश्यों को ऊपर उठाने का प्रयत्न किया है जिसके फलस्वरूप नगरों में इनकी अनेकों प्रमुख सार्वजनिक निर्योग्यतायें दूर हो गई हैं जैसे सरकारी स्कूलों में शिक्षा पाना मन्दिरों में प्रवेश का अधिकार सार्वजनिक कुओं में पानी भरने का अधिकार आदि।

द सरकारी प्रयत्न

स्वतंत्रता के पूर्व प्रयत्न कांग्रेस के द्वारा और साथ ही अन्य समितियों के द्वारा किये गये सुधार आन्दोलन के फलस्वरूप सन् १९३० में कांग्रेस सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र में इनके उत्थान के लिये कुछ कदम उठाये। सार्वजनिक स्कूलों में शिक्षा की व्यवस्था और नौकरी में विशेष सुविधायें दी गयीं। पर ये प्राय: न के बराबर थीं।

सन् १९३५ के विधान में अछूतों की एक अनुसूची तैयार की गयी जिसका मुख्य उद्देश्य उनको कुछ विशेष सुविधायें प्रदान करके उनकी अवस्था को सुधारना था। परन्तु इसमें भी अधिक सफलता प्राप्त न हो सकी।

सन् १९३९ में जब विभिन्न प्रान्तों में लोकप्रिय कांग्रेसी मंत्रिमंडल स्थापित हुआ तो इस लोकप्रिय सरकार ने विभिन्न योजनायें हरिजों की अवस्था को सुधारने के लिये बनायीं। मद्रास सरकार ने सबसे पहला चरण उठाया और मालावार मन्दिर प्रवेश अधिनियम आदि पास किये। सन् १९३९ से सन् १९४० के बीच सरकार ने हरिजनों के स्वास्थ और शिक्षा सम्बन्धी प्रगति के लिये आर्थिक सहायता प्रदान की।

सन् १९३९ में उत्तर प्रदेश सरकार ने पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरी के दो पदों को हरिजनों के लिये सुरक्षित कर दिया। पुलिस विभाग में हरिजनों की भर्ती की विशेष व्यवस्था की गयी। हरिजन विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्तियां भी दी गयीं। साथ ही सहकारी समितियां भी इनकी आर्थिक सहायता के लिये खोली गयीं।

स्वतंत्रता के पश्चात् प्रयत्न

क सैंधानिक रक्षा स्वतंत्रता के पश्चात् हरिजनों के उत्थान के लिये गये प्रयत्नों में सर्वप्रथम उल्लेखनीय उनके लिये सैंधानिक रक्षा है। स्वतन्त्र भारत के संविधान में उनकी अनेक निर्योग्यताओं को दूर करने के सम्बन्ध में नियम रखे गये हैं जैसे

अनुच्छेद १५ १ राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म मूलवंश जाति लिंग जन्मस्थान अथवा इनमें से किसी के आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा ।

२ केवल धर्म मूलवंश जाति लिंग जन्मस्थान अथवा इनमें से किसी के आधार पर कोई नागरिक

क दुकानों सार्वजनिक भोजनालयों होटलों तथा सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों में प्रवेश के अथवा

ख पूर्ण या आंशिक रूप में राज्यनिधि से पोषित अथवा साधारण जनता के उपयोग के लिये समर्पित कुओं तालाबों स्नान घाटों सड़कों तथा सार्वजनिक समागम स्थानों के उपयोग के बारे में किसी भी निर्योग्यता निर्बन्ध या शर्त के आधीन न होगा ।

अनुच्छेद १६ राज्याधीन नौकरियों या पदों पर नियुक्ति के सम्बन्ध में समस्त नागरिगों के लिये अवसर की समता होगी । केवल धर्म मूलवंश जाति लिंग जन्म स्थान निवास अथवा इनमें से किसी के आधार पर किसी नागरिक के लिये राज्याधीन किसी नौकरी या पद के विषय में न अपात्रता होगी और न विभेद किया जायेगा ।

अनुच्छेद १७ अस्पृश्यता का अन्त किया जाता है और उसका किसी भी रूप में आचरण निषिद्ध किया जाता है । अस्पृश्यता से उत्पन्न किसी निर्योग्यता को लागू करना अपराध होगा जो विधि के अनुसार दंडनीय होगा ।

अनुच्छेद २६ राज्यनिधि द्वारा पोषित अथवा राज्यनिधि से सहायता पाने वाली किसी शिक्षा संस्था में प्रवेश से किसी भी नागरिक को केवल धर्म मूलवंश जाति भाषा अथवा इनमें से किसी के आधार पर वंचित न किया जायेगा ।

अनुच्छेद ३८ राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था की भरसक कार्य साधन रूप में स्थापना और संरक्षण करके लोक कल्याण की उन्नति का प्रयास करेगा जिससे सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्राणित करे ।

अनुच्छेद ४६ राज्य जनता के दुर्बलतर विभागों की विशेषतया अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा तथा अर्थ सम्बन्धी हितों की विशेष सावधानी से उन्नति करेगा तथा सामाजिक अन्याय और सब प्रकार के शोषण से उनका संरक्षण करेगा ।

उक्त लिखित विवेचना से स्पष्ट है कि भारत के संविधान में अनुसूचित जातियों का शैक्षणिक

तथा आर्थिक दृष्टि से उत्थान करने और उन पर लादी गयी परम्परागत सामाजिक निय निर्योग्यताओं का निराकरण करने के उद्देश्य से आवश्यक सुरक्षा तथा संरक्षण प्रदान करने की व्यवस्था की गयी है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कि अस्पृश्यता का उन्मूलन किया जाये तथा किसी भी रूप में अस्पृश्यता का आचरण करना निषिद्ध कर दिया जाये अनुच्छेद १७। २ इन जातियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों की रक्षा की जाये तथा सामाजिक अन्याय और शोषण के सब रूपों से उन्हें बचाया जाये अनुच्छेद ४६। ३ हिन्दुओं के सार्वजनिक धार्मिक स्थानों के द्वारा जातियों के हिन्दू धर्मावलम्बियों के लिये उन्मुक्त रखे जायें अनुच्छेद २५। ४ दुकानों सार्वजनिक भोजनालयों होटलों और सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों कुओं ताल तालाबों स्नान घाटों और ऐसी सड़कों तथा सार्वजनिक स्थानों का उपयोग करने पर लगी सभी रुकावटें हटाई जायें जिनका पूरा या कुछ खर्च सरकार उठाती है अथवा जा जन साधारण के लिये बनाई गयी हों अनुच्छेद १५। ५ इन जातियों को कोई भी धन्धा या व्यापार अपनाने की पूर्ण स्वतंत्रता दी जाये अनुच्छेद १९। ६ सरकार द्वारा संचालित अथवा सरकारी कोष से सहायता पाने वाले शिक्षालयों में उनके प्रवेश पर कोई रुकावट न रखी जाये अनुच्छेद २९। ७ सरकारी नौकरियों में इनकी नियुक्ति के हितों का ध्यान रखना सरकार का कर्त्तव्य है अत: इनके लिये स्थान सुरक्षित रखे जायें अनु १६ तथा ३३५। ८ संसद् तथा राजकीय विधान मंडलों में २० वर्ष की अवधि तक इन्हें विशेष प्रतिनिधित्व की सुविधा दी जाये अनुच्छेद ३३० ३३२ तथा ३३४। तथा ९ इनके कल्याण एवम् हितों की सुरक्षा के प्रयोजन से राज्यों में सलाहकार परिषदों और पृथक विभागों की स्थापना की जाय तथा केन्द्र में एक विशेष अधिकारी की नियुक्ति की जाये अनुच्छेद १६४।

ख अस्पृश्यता अपराध अधिनियम १९५५ केन्द्रीय सरकार ने संविधान के अनुच्छेद १५ को विस्तारपूर्वक लागू करने के लिये इस अधिनियम को पास किया और यह कानून के रूप में १ जून सन् १९५५ में लागू हुआ।

धारा ३ अ प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी सार्वजनिक पूजा के स्थान में प्रवेश करने की स्वतन्त्रता होगी।

ब प्रत्येक व्यक्ति किसी भी प्रकार से पूजा प्रार्थना या दूसरे धार्मिक संस्कार करने में स्वतन्त्र होगा।

स प्रत्येक व्यक्ति को धर्म सम्बन्धी पवित्र नदी तालाब आदि में नहाने या पानी लेने की स्वतन्त्रता होगी ।

द इन नियमों का पालन न करने पर सरकार द्वारा दी गयी कोई भी सहायता बन्द या जमीन छीनी जा सकती है ।

धारा ४ क प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी दुकान जलपान गृह होटल या सार्बजनिक मनोरंजन के स्थानों में प्रवेश करने का और धर्मशालाओं या मुसाफिरखाने के बर्तनों तथा अन्य चीजों को व्यवहार में लाने की स्वतन्त्रता होगी ।

ख किसी भी प्रकार के पेशे अथवा धन्धे को करने अथवा चुने की स्वतन्त्रता होगी ।

ग किसी भी नदी कुओं तालाबों नल अथवा घाट स्मशान या कब्रिस्तान के स्थानों को व्यवहार में लाने की स्वतन्त्रता होगी ।

घ साधारण जनता के लिये बनायी गयी धर्मार्थ संस्थाओं के लाभ और सेवाओं का उपभोग करने का पूर्ण अधिकार होगा ।

ड किसी भी मुहल्ले में जमीन खरीदने मकान बनवाने और रहने की स्वतन्त्रता होगी ।

च किसी भी धर्मशाला सराय आदि से लाभ उठाने का पूर्ण अधिकार होगा ।

छ किसी भी सामाजिक या धार्मिक संस्कार या प्रथा को अपनाने की स्वतन्त्रता होगी ।

ज किसी भी प्रकार के जेवर या अन्य चीजों को पहनने की स्वतन्त्रता होगी ।

धारा ५ अ प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी सार्वजनिक चिकित्सालय औषधालय शिक्षा संस्था या छात्रावास में प्रवेश का अधिकार होगा और वहां प्रत्येक के साथ समान व्यवहार किया जायेगा ।

ब अस्पृश्यता के आधार पर कोई भी दुकानदार किसी भी व्यक्ति को कोई भी चीज बेचने या सेवा करने से इन्कार नहीं कर सकता है ।

धारा ७ इस कानून के किसी भी नियम को न मानने या अस्पृश्यता को बढ़ावा देने वाले को दण्ड दिया जायेगा । ये दण्ड ६ माह की कैद या ५०० का जुर्माना या दोनों ही हो सकते हैं ।

ग अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन भारत सरकार सन् १९५४ से अस्पृश्यता उन्मूलन आन्दोलन के लिये आर्थिक सहायता देती आ रही है । इस कार्य के लिये सरकारी तथा गैर

सरकारी दोनों प्रकार की संस्थाओं का उपयोग किया जा रहा है। राज्य सरकारों ने भी अपने जिलाधिकारियों तथा अन्य अधिकारियों को जिनका वास्ता जनता से पड़ता है यह आदेश दिया है कि वे इस कुरीति का अन्त करने पर विशेष बल दें। जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित करने तथा उसका सहयोग प्राप्त करने की दृष्टि से प्राय: सभी राज्यों में हरिजन दिवस तथा हरिजन सप्ताह मनाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त अधिकांश राज्यों में अस्पृश्यता अपराध अधिनियम सन् १९५५ को लागू करने के लिये छोटी छोटी समितियां नियुक्त कर दी गई हैं। इस कार्य के लिये पुस्तक पुस्तिकाओं विज्ञापन और अन्य दृश्य श्रव्य साधनों का उपयोग किया जा रहा है। अस्पृश्यता सम्बन्धी एक फिल्म भी बनाई गयी है।

अस्पृश्यता विरोधी कार्य में हरिजन सेवक संघ भारतीय दलित वर्ग संघ भारत दलित सेवक संघ तथा इलाहाबाद के हरिजन आश्रम जैसे स्वयंसेवी संगठनों का सहयोग तथा सहायता प्राप्त की जा रही है। पहली योजना की अनधि में इन संगठनों को सहायता अनुदान के रूप ६१५०७४ रु० दिया गया जिसमें से केन्द्रीय सरकार ने १४७७२०० रु० दिया। दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में इस कार्य में गैर सरकारी संस्थाओं की सहायता करने के लिए केन्द्र तथा राज्यों में कुल मिलाकर लगभग २ ०८ करोड़ रुपया व्यय करने का लक्ष्य रखा गया था। दूसरी योजना के प्रथम दो वर्षों में केन्द्रीय सरकार ने विभिन्न राज्यों की अखिल भारतीय स्वयंसेवी संस्थाओं को अनुदान के रूप में २४ लाख रुपये दिया।

हरिजन कल्याण कार्य

कल्याणकारी तथा सलाहकार संस्थायें

संविधान के अनुच्छेद ३३८ के अन्तर्गत संविधान में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजाति जनजातियों को दी गई सुरक्षा सम्बन्धी व्यवस्था की जांच पड़ताल करने तथा इनको कार्यरूप देने के सम्बन्ध में राष्ट्रपति को अवगत कराने के लिये राष्ट्रपति ने एक आयुक्त की नियुक्ति की है। आयुक्त की सहायता के लिए इस समय १० सहायक आयुक्त भी हैं। अनुसूचित जातियों के कल्याण सम्बन्धी मामलों में संसद सदस्यों तथा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त करने के लिये भारत सरकार ने एक केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड स्थापित किया है। यह बोर्ड हरिजनों के लिये कल्याण सम्बन्धी बातों पर भारत सरकार को सलाह देता है तथा इनके लिये कल्याण सम्ब सम्बन्धीमामलों में संसद सदस्यों तथा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त करने के लिये

भारत सरकार ने एक केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड स्थापित किया है। यह बोर्ड हरिजनों के लिये कल्याण सम्बन्धी बातों पर भारत सरकार को सलाह देता है तथा इनके लिये कल्याण सम्बन्धी योजनायें बनाता है।

विशेष सुविधायें तथा कल्याणकारी योजनायें

१ विधान मण्डलों में प्रतिनिधित्व संविधान के अनुसार राज्यों की अनुसूचित जातियों की जनसंख्या के अनुपात से इन लोगों के लिये लोक सभा तथा राज्यों की विधान सभाओं में संविधान लागू होने के बाद से २० वर्ष की अवधि के लिये स्थान सुरक्षित रखे गये हैं। लोक सभा में इनके लिये ७६ स्थान सुरक्षित हैं। इसी प्रकार राज्यों के विधान मण्डलों में इन जातियों के लिये सुरक्षित स्थानों की कुल संख्या ४७० है।

२ सरकारी नौकरियों में प्रतिनिधित्व २६ जनवरी सन् १९५० को केन्द्रीय सरकार ने यह निर्णय किया कि जिन पदों पर नियुक्तियां खुली प्रतियोगिता द्वारा देशव्यापी आधार पर की जाती हैं उनमें १२.५ प्रतिशत स्थान तथा जो नियुक्तियां अन्य प्रकार से की जाती हैं उनमें १६.७ प्रतिशत स्थान अनुसूचित जातियों के लिये सुरक्षित रखे जायें। नौकरियों में इन जातियों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने के लिए आयु सीमा में छूट योग्यताओं के मानदण्ड में रियायत आदि जैसी सुविधायें दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त स्थान सुरक्षित रखने का सिद्धान्त उन नौकरियों पर लागू कर दिया गया है जो केवल पदोन्नति तथा विभागीय उम्मीदवारों की प्रतियोगितामूलक परीक्षा द्वारा भरी जाती है।

अनुविहित और स्वायत्तशासी निकायों तथा सरकारी लिमिटेड कम्पनियों के बारे में भी यह सिद्धान्त लागू किया है। इन जातियों के लिये स्थान सुरक्षित रखने के नियम कुछ राज्य सरकारों ने भी बना दिये हैं तथा राज्यों की नौकरियों में इनको अधिक स्थान दिलाने की दिशा में प्रयत्न किया जा रहा है। अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के २८२६२० व्यक्ति भारत सरकार की नौकरियों पर नियुक्त हैं रोजगार केन्द्रों के आंकड़ों के अनुसार सन् १९५८ में इन जातियों के ४००९७ व्यक्तियों को रोजगार दिलाया गया।

३ शिक्षा सम्बन्धी सुविधायें हरिजनों को शिक्षा की अधिक से अधिक सुविधायें देने के लिये प्रयत्न किये जा रहे हैं। विद्यार्थियों को निःशुल्क पढ़ाई छात्रवृत्तियों पुस्तकों लेखन सामग्रियों आदि की सुविधायें दी जा रही हैं।अ अनेक स्थानों पर दोपहर में भोजन देने की भी

व्यवस्था है। सन् १९४४ ४५ में भारत सरकार ने अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां देने की एक योजना आरम्भ की थी। सन् १९५८ ५९ में सरकार ने १२५·८६ लाख रु० की छात्रवृत्तियां दीं। सन् १९५३ ५४ में भारत सरकार ने इन जातियों के अच्छे बिद्यार्थियों को विदेशों में अध्ययन के लिये भी छात्रवृत्तियां देने की एक योजना आरम्भ की। सन् १९५३ ५४ में भारत के विभिन्न १३ राज्यों में हरिजनों के लिए २४९ बेसिक स्कूल १६८ प्राइमरी स्कूल और १८४ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये। सन् १९५७ ५८ में अनुसूचित जातियों के छात्रों के २६ ४४७ प्रार्थना पत्र आये तथा इन सबको ही छात्रवृत्तियां प्रदान की गईं। अनेक राज्य सरकारों द्वारा इनके लिए छात्रावास चलाये जाते हैं।

प्रौद्योगिक प्रशिक्षण इन्हें मेकेनिकल इंजीनियरिंग तथा अन्य औद्योगिक शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश पाने की सुविधा प्रदान करके इनके औद्योगिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सन् १९५१ में बख्शी का तालाब में एक औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया था। इसमें २४० प्रशिक्षणार्थियों को इलैक्ट्रीशियन टर्नर्स फिटर मोल्डिंग मोटर मैकेनिक बढ़ई तथा दर्जी का और कैलिको प्रिंटिंग का कार्य निःशुल्क सिखाया जाता है। छात्रावास की भी फीस नहीं ली जाती है और ३० रुपये की मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है। इस प्रकार के प्रशिक्षण केन्द्र नैनीताल और गोरखपुर में भी खोले गये हैं। तृतीय पंचवर्षीय योजना में इनका विस्तार होगा तथा दो अन्य केन्द्र खोले जायेंगे। सामान्य रूप से द्वितीय पंचवर्षीय योजना में हरिजनों की शिक्षा पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा २५४ लाख रुपया खर्च होना था।

५ कुटीर उद्योग हरिजनों की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए कुटीर उद्योगों के विकास की ओर भी सरकार प्रयत्नशील है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में इसके लिए प्रायः २४७ लाख रुपये व्यय होना था। उत्तर प्रदेश की सरकार ने हरिजनों को घरेलू व्यवसाय चलाने और विकसित करने के लिये २५० से ५०० तक का अनुदान दिया ताकि वे अपने कार्य के लिये उपयुक्त मशीने तथा औजार खरीद सकें।

६ सहकारिता सहकारिता के लिये द्वितीय पंचवर्षीय योजना में केन्द्रीय सरकार ने प्रायः १९ लाख रुपया रखा था और राज्य सरकारों ने प्रायः ४७ लाख रुपये की व्यवस्था की थी।

७ गृह निर्माण योजनायें हरिजनों की बास्तियों में आवश्यक सुधार लाने के लिए राज्य और केन्द्रीय सरकार द्वारा योजनायें बनाई गई हैं। साधारणतया ७५० रुपया प्रति परिवार

को अनुदान के रूप में दिये जाते हैं । उत्तर प्रदेश की सरकार हरिजनों की बस्तियों में अनेक प्रकार के सुधार के लिये प्रतिवर्ष प्राय: सात लाख रुपये व्यय कर रही है । अब तक लगभग ७००० नये मकान बनाये जा चुके हैं और ५०० पुराने मकानों की मरम्मत की गई है ।

८ पंचवर्षीय योजना और हरिजन कल्याण दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में अनुसूचित जातियों के लिए ६००० स्कूल और छात्रावास स्थापित करने तथा ३० लाख विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियों आदि देने का लक्ष्य रखा गया था । शिक्षा मन्त्रालय ने भी प्राय: १०७००० छात्रवृ छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की है । दूसरी योजना में हरिजन कल्याण कार्यों के लिये २१ करो करोड़ रुपया निश्चित किया गया था । इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार द्वारा आयोजित क आवास ख पीने के पानी की पूर्ति ग आर्थिक उन्नति तथा घ निजी संस्थाओं को आर्थिक सहायता इन चार योजनाओं पर ६ २५ करोड़ रुपये की व्यवस्था थी । स्वास्थ्य योजनाओं परअतिरिक्त अनुसूचित जातियों के लिए २३४०० कुयें बनाने की भी व्यवस्था थी । इसके अतिरिक्त इन लोगों के लिए १२६३०० मकान व्यय ५ २५ करोड़ रु० बनने थे ।

उक्त लिखित विवेचना से स्पष्ट है कि सरकारी तथा गैर सरकारी दोनों प्रकार के सक्रिय प्रयत्नों का जाल सारे देश में दयापक रूप में आज फैला हुआ है । इन सबका उद्देश्य हरिजनों को उनकी परम्परागत निर्योग्यताओं से विमुक्त करना तथा भारत के सहयोगी नागरिक बनने में सहायता करना है ।

शायद यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अछूतों के प्रश्न से भारत को घोर हानि उठानी पड़ रही है और यह मानव समाज के प्रति घोरतम अन्याय है । इससे मानव समाज का कोई हित नहीं हुआ है बल्कि इससे मानव समाज के उतने अंश को नीचे दबा दिया है जो विद्या और बल बुद्धि से हमारे समान हो सकता है और जीवन के अनेक अंशों में देश की बड़ी ही उत्तर सेवा कर रहा है । इसीलिये जब तक हम अस्पृश्यता की भावना के जाल से अपने को मुक्त न कर लेंगे तब तक सामाजिक या राष्ट्रीय प्रगति कदापि सम्भव नहीं । गांधीजी के विचार में अस्पृश्यता की यह दयनीय जीर्ण शीर्ण भावना हमारे पूर्वजों के मस्तिष्क में उस समय विकसित हुई होगी जबकि उनका दृष्टिकोण अति संकुचित अवस्था में से गुजर रहा होगा । यह तो एक प्रकार का अभिषाप है और जब तक यह अभिषाप हमारे साथ है तब तक हम भारत की इस पवित्र भूमि में हमारे ही समाज के एक बड़े भाग को प्रत्येक प्रकार के दु:ख कष्ट तथा अज्ञानता के अन्धकार में

रखने का महापाप करते रहेंगे। किसी व्यक्ति को केवल पेशे के आधार पर अस्पृश्य समझा जाय यह तो किसी भी रूप में युक्ति युक्त तथा तर्कसंगत नहीं है और यदि कोई भी विद्यार्थी जो आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर रहा है अस्पृश्यता के पक्ष में ही राय देता है तो गांधीजी के मतानुसार यह अच्छा हो कि उसे किसी भी प्रकार की शिक्षा न मिले क्योंकि वह शिक्षित कहलाने के योग्य कदापि न होगा।

गांधीजी के मतानुसार यदि हम अस्पृश्यता की भावना को सदा के लिये अपने हृदय से निकाल दें तो अनेक सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान आप से आप हो जायेगा। ऐसा करने पर सामाजिक संगठन आर्थिक समृद्धि तथा राष्ट्रीय एकता अति सरल हो जायेगी। किसी दबाव के कारण नहीं बल्कि स्वेच्छा से इस अस्पृश्यता की भावना को त्याग देने से राष्ट्र को नवीन शक्तियां प्राप्त हो सकेंगी और वास्तविक अर्थ में स्वराज्य की स्थापना सम्भव होगी। आज हम शक्ति हीन हैं क्योंकि हममें एकता तथा संगठन का अभाव है। गांधीजी का विश्वास है कि जब हम प्रत्येक हरिजन को अपना ही भाई समझने लगेंगे तब हम अहिंसक अस्त्रों से शक्तिमान होकर समस्त दुनिया को भी चेतावनी देने योग्य बन जायेंगे। यदि अस्पृश्यता के बिना हिन्दुओं का या हिन्दू धर्म का अस्तित्व सम्भव नहीं तो इनका मिट जाना ही अधिक उत्तम होगा।

इसमें सन्देह नहीं कि सरकारी और गैर सरकारी अनेक प्रयत्न आज उनकी अवस्था को सुधारने के लिये हो रहे हैं पर ये सभी निरर्थक प्रतीत होंगे अगर ऊंची जातियों के हृदयों में पूरा परिवर्तन न हो जाये। हृदय को ही बदलना आवश्यक है। हम उच्च हैं और दूसरे नीच हैं यह विचार ही नीच है। जब तक यह भावना हमारे अन्दर उत्पन्न न होगी तब तक लाख चिल्लाने या प्रयत्न करने पर भी कुछ सफलता मिलने की आशा नहीं। गांधीजी ने उचित ही कहा है कि हरिजनों का जो ऋण सवर्णों के सिर पर चढ़ा हुआ है उन्हें उसे साफ साफ स्वीकार कर लेना चाहिये। ऐसा पूरा पूरा ऋण परिशोध हमारे सम्पूर्ण हृदय परिवर्तन से ही हो सकता है। मां बच्चे का मैला उठाती है इसलिये वह पवित्र मानी गई है। रोगी की सेवा करने वाली बहिन अत्यन्त दुर्गन्ध वाली वस्तुयें उठाती है उसका हम सम्मान करते हैं। तब जो सदैव पाखाने साफ कर हमें निरोग रखने में सहायता करते हैं उनकी हम पूजा क्यों न करें। पूज्य बापू के इस प्रश्न का उत्तर देने में आज भी भारत की जनता हिचकिचा रही है पर ख्वाजा अहमद

अब्बास ने यह आशा प्रकट की है कि बहुत जल्द ही वह समय आ रहा है जब जाति पांति की ऊंच नीच की बाधायें नहीं रहेंगी तब प्रेम कहानियों का अन्त इतना दु:खद नहीं होगा। परन्तु शायद यह सपना सपना ही रहे। डा० मजूमदार के शब्दों में भारत के लिये जातिविहीन समाज एक सपना ही रहेगा जैसा कि प्रत्येक समाज में रहा है जहां कहीं भी प्रजातीय और सांस्कृतिक अल्पसंख्यक लोग हैं। परंतु हमें आने वाली पीढ़ियों के लिये असहनशीलता और घृणा का उत्तरदान भी नहीं छोड़ जाना चाहिये और इसे कैसे दूर किया जा सकता है वह हमें स्वयं ही अच्छी तरह मालूम है। ठीक भी है इन दु:खीजनों को अमृत सुधा पिलाकर इनके भाग्य रवि को उदित देखना एक सपना मात्र ही है। पर क्या कभी इतनी की महानता भी हममें नहीं पनप सकेगी कि उन्हें एक सम्मानित स्थान देकर भी उनकी सेवाओं को हम सम्मानित करें।

VOCABULARY

अ

अंक	(m) a number, digit, act (drama)
अंकशास्त्री	(m) statistician
अंकुर	(m) seed, sprout
अंखिया	(f) eye, amourous glance
अंग	(m) part, division, body
अंग उपांग	(m) divisions and sub-divisions of religious books
अंगमुत	(adj) constitutive, componential
अंगरेज	(m) English person
अंगार	(m) burning fuel
अंगार काल	carboniferous
अंगी	(adj) componential
अंगुत्तर निकाय	(f) name of a Buddhist book
अंग्रेज़ी	(adj) English
अंगूठा	(m) thumb, big toe
अंगूठी	(f) finger-ring
अंजलि = अंजली	(f) the open hands placed side by side and slightly hollowed, handful, offering, benediction
अंडा	(m) egg
अंत	(m) end, goal, completion
अंत करना	to end (trans)
अंत होना	to end (intr)
अंततः	in the end
अंततोगत्वा	in the end, finally
अंतर	(m) difference, distance
अंतरा	(m) middle, near, time between morning and evening
अंतरानुभूति	(f) internal feeling
अंतराल	(m) intermediate space (adj) central, middle
अंतर्गत	included in, hidden
अंतर्ग्राम	inter-village
अंतर्राष्ट्रीय	international
अंतः पुर	(m) the female apartment, harem
अंत्येष्टि	(f) funeral
अंदर	within,inside
अंदाज	(m) estimate, guess
अंधकवृष्णी	descendants of Andhaka and Vrishni
अंधकार	(m) darkness
अंधविश्वास	(m) blind faith
अंधविश्वासग्रस्त	(adj) possessed by blind faith
अंधा	blind
अंधानुकरण	(m) blind imitation
अंधानुयायी	(adj) blind follower
अंश	(m) part, share, fraction
अंशतः	partly
अकम्पन	(m) firmness
अकारण	without any reason
अकेला	(adj) alone, single

अकृत्रिय (adj) non-artificial natural
अक्षय (adj) imperishable, durable eternal
अक्षय्य (adj) undecaying

अक्षर (m) letter(of an alphabet), syllable
अक्षरशः literally, verbatim

अक्षांश (m) latitude (degree)

अक्षुण्ण (adj) unbroken, entire

अक्सर often

अखिल (adj) entire, all -

अखिल भारतीय (adj) all- India

अगर if

अगला (adj) next, front

अगारस्थूण (m)

अग्नि (f) fire, (m) god of fire

अग्नि-स्पर्श (m)

अग्रगण्य (adj) foremost, top, chief, most prominent
अग्रणी =अग्रगण्य

अग्रसर होना to go forward

अग्रांकित (adj) following

अचर (adj) inanimate

अचरज (m) wonder, surprise

अचल (adj) motionless, firm, immovable (m) mountain
अचा[illegible]क suddenly

अचेतन unconcious

अच्छा (adj) good, healthy (adv) well
अच्छा बुरा good and bad, all kinds of.

अछूता (adj) untouched, fresh, safe
अजनबी (adj) strange, unknown, foreign
अज्ञात unknown

अज्ञान (m) ignorance, stupidity

अज्ञानता= अज्ञान

अज्ञान धूमिल (adj) clouded or veiled by ignorance, ignorant, unknown
अटन (m) travel, motion

अटूट (adj) unbreakable, unshaken,

अडिग (adj) unmoved, firm

अड्डा (m) hang-out, stand

अतः therefore

अतस्व (adj) unhit (cor)

अताड़ित (adj) unhit

अति (f) extreme, excess; (adv) very, extremely (adj) extreme
अतिक्रम (m) excess, overstepping

अतिक्रमण (m) act of surpassing, going over or overstepping; transgression, violation.
अतिथि (m) guest, stranger, new-comer
अतिथि सत्कार (m) hospitality

अतिनिकट close by, very near

अतिनूतन (adj) Bliocene

अतिमानुष (m) superhuman

अतिरिक्त besides, (adj) extra, additional
अतिशय exceedingly, excessively

अतिशयता (f) excess

अतिशयोक्ति (f) exaggeration, hyperbole

अतिशयोक्तिमय - (adj.) exaggerated

अतिशीघ्रगामी - (adj) very fast

अतिसंदे - (adj) highly sceptical highly suspicious.

अतीत - (m) past (time) (adj) past

अत्यंत - (adj) very (adv) very, extremely.

अत्यधिक - very much

अत्य शुभ -(adj) extremely auspicious

अत्याचार - (m) atrocity, cruelty.

अत्याचारपूर्ण (adj) atrocious, cruel.

अत्युक्ति =अतिशयोक्ति -

अथ - (m) beginning

अथर्ववेद संहिता - (f.) hymn part

अथर्वा - hymn part

अथाह - (adj) very deep, abysmal

अथाह गड्ढा - (m) abyss, chasm

अदम्य - (adj) unconquerable, unyielding, heroic.

अदलीय - (adj) non-partisan, independent.

अदा - (f) cocuetry, blandishment; payment.

अदाता - (m) miser (adj) miserly.

अद्भुत - (adj) wonderful; strange

अदृशय - (adj) invisible

अदृश्य शक्ति - supernatural power

अद्वितीय - (adj) second to none, unique

अधः पतन - (m) downfall

अधर - (m) lip, limbo, empty space

अधर्म - (m) injustice, ewille, sin, unrighteousness, irreligion.

अधर्म्म चारी =अधार्मिक

अधर्म पूर्वक - unjustly, sinfully

अधार्मिक - (adj) irreligious, sinful, unrighteous.

अधिक - (adj) plenty, much, extra

अधिकतर - mpstly.

अधिकतम - the most, maximum

अधिक से अधिक - at the most, the most.

अधिकांश - (m) greater part, (adj) most

अधिकांशतः - mostly

अधिकाधिक - more and more

अधिकार - (m) authority, right, possession, domination, jurisdiction

अधिकारपूर्ण - (adj) rightfully, authoritatively

अधिकार मद - (m) pride of power

अधिकारी - (m) officer, authority

अधिदैविक - spiritual, pertaining to divinity, supernatural

अधिनियम - (m) rule, law, act.

अधिपति - (m) lord, master, ruler

अधिराज - (m) emperor

अधिवेशन -(m) meeting, congress, conference session

अधिष्ठित - (adj) settled, ruled, appointed

अधीन - (adj) dependent, under the authority; (m) slave, subject, servant.

अधीनता - (f) slavery, subjection, dependence

अध्यक्ष - (m) chairman, head, President

अध्ययन - (m) study

अध्ययनकर्ता -(m) student, scholar

अध्ययनक्षेत्र - (m) field of study

अध्ययन पद्धति - (f) method of study

अध्ययन प्रणाली (f) = अध्ययन पद्धति

अध्यात्म - (m) supreme spirit, (adj) spiritual

अध्यात्मवादी - (m) spiritualist

अध्यात्मसाधन

अध्यापक - (m) teacher

अध्याविका - (f) lady teacher

अध्यारोहण विधि - (f) law of superposition

अध्याहार - inferred subject, elipsis

अध्येता - (m) student, scholar

अनंतर - afterwards, next

अनगढ़ - (adj) unformed, unpolished

अनजाने - unknowingly, ignorantly

अनधिकार - (m) absence of right, claim; unauthorization

अनधिकारचेष्टा - (f) acting without authority

अनन्य - (adj) unique, identical

अनभिषिक्त - (adj) uncrowned

अनूसूया - (f) freedom from spite or jealousy

अनाचार - (m) cruelty, injustice

अनाज - (m) grain

अनादर - (m) dishonour, scorn, insult, disrespect

अनायास - (adj) easy, (m) ease, (adv) suddenly

अनार्य - (m) not an Arya, uncivilized, not noble

अनावश्यक - (adj) unnecessary

अनालोचित - (adj) unreviewed, rash, unseen

अनाविल - (adj) clear, pure, not turbid

अनासक्त - (adj) detached, objective

अनियन्त्रित - (adj) uncontrolled

अनिवार्य = अनिवार्य्य - (adj) neccessary, unavoidable

अनिवार्यता - (f) necessity, compulsion

अनिश्चित - (adv) uncertain, indefinite

अनी - (f) sharp edge of arms

अनुकरण - (m) imitation, following

अनुकरण करना - to follow

अनुकूल - (adj) favorable

अनुक्रिया - (f) succeeding action, reaction

अनुगामी - (m) follower, successor

अनुचर - (m) servant

अनुचित - (adj) improper, unfit, wrong

अनुच्चरित - (adj) not to be pronounced, silent

अनुच्छेद - (m) paragraph, clause

अनुज्ञात - (adj) permitted, directed, authorized

अनुदात्त - (adj) unraised, grave (accent)

अनुदान - (m) grant

अनुनय - (m) request

अनुपनीत-धर्म - (m) Dharma for the uninitiated person

अनुपम - (adj) unequalled, peerless, excellent

अनुपयुक्त - (adj) unsuitable, unfit

अनुपयोगी - (adj) useless

अनुपस्थित - (adj) absent

अनुपात - (m) ratio, proportion

अनुपेक्षणीय - (adj) not to be overlooked or disregarded
अनुप्राणित - (adj) breathed, inspired
अनुप्रास - (m) alliteration, repetition of similar letters, syllables or words
अनुप्रास मूलक - (adj) rooted in or springing from alliteration
अनुबंध - (m) contract
अनुभव - (m) experience
अनुभव करना - to feel
अनुमति - (f) permission, advice, consent, order
अनुमान - (m) guess, inference
अनुमान करना - to imagine
अनुमेय - (adj) inferable
अनुमोदन - (m) approval
अनुयायी - (m) follower
अनुरक्त - (adj) attached, devoted, in love
अनुरक्ति - (f) devotion, affection
अनुरूप - (adj) resembling, like
अनुरूपता - (f) resemblance, harmony, suitability
अनुरोध - (m) request
अनुविंद - (m) Name of a King of Ujjain
अनुविद - (adj) discovered, known, translated
अनुविह्ति - (adj) incorporated
अनुशीलन - (m) constant practice or study, contemplation
अनुशीलित - (adj) studied
अनुष्ठान - (m) undertaking, (religious) performance
अनुसंधान् - (m) research
के अनुसार - according (to)
अनुसूथित - (adj) scheduled
अनुसूचित जनजाति - (f) scheduled tribe
अनुसूचित जाति - (f) scheduled caste
अनेक - many
अनेकांतिक - (adj) unsteady, multi-purpose, fallacy
अनोखा - (adj) strange, rare, novel, wonderful
अनौचित्य - (m) unfitness, injustice, impropriety
अन्त = अंत -
अन्तः सम्बन्ध - (m) internal relation
अन्तर जीवन - (m) internal life
अन्तरा = अंतरा
अन्तरानुभूति - (f) internal feeling
अन्तर्गत = अंतर्गत -
अन्तर्ग्राम = अंतर्ग्राम
अन्तर्भूत होना - to be absorbed
अन्तर्वि वाही - (adj) endogamous
अन्त्येष्टि कृत्य - (m) funeral rites
अन्ध - (adj) blind
अन्धविश्वासपूर्ण - (adj) superstitious
अन्न - (m) food, victuals
अन्न जल - (m) food and water, subsistence
अन्न दान - (m) donation of food
अन्न प्राशन - (m) a sacrament to give a child solid food for the first time
अन्य - (adj) other, another
अन्यतम - (adj) totally different

अन्यत्र - somewhere else

अन्यथा - otherwise

अन्याय - (m) injustice, tyranny

अन्वेषण - (m) investigation, research

अपकर्ष - (m) fall, eoconomic recession

अपढ - (adj) illiterate

अपना - (adj) one's own, self's

अपनाना - to own, to accept

अपनेआप - by oneself, without any effort

अपभ्रंश - (f) vulgar dialects of Prakrit.

अपभ्रंश युग - (m) Apabhramsha period of Indian literature

अपयश - (m) defame, infamy, crime

अपराध - (m) guilt, crime, offence

अपराधानुसार - according to the offence or guilt

अपराधी - (m) convict (adj) guilty

अपरिग्रही - (adj) renouncing, non-possesser.

अपरिचित - (adj)unacquainted

अपरिमेय - (adj) unmeasured, infinite

अपरिवर्तनीय - (adj) rigid, unchangeable

अपरिष्कृत - (adj) unrefined, coarse

अपर्याप्त - (adj) insufficient

अपवाद - (m) exception; slander

अपवार्य भाषण - (m) aside (drama)

अपवित्र - (adj) unholy, impure

अपशकुन - (m) bad omen

अपाच्य -(adj) undigestable; name of a people

अपि - also, even

अपितु - but (also)

अपूर्ण - (adj) incomplete

अपूर्णता - (f) incompleteness

अपूर्ण पद लोप - (m) incomplete elipsis

अपेक्षा - (f) expectation

अपेक्षा - than, in comparison

अपेक्षाकृत - relatively

अपेक्षित - (adj) expected

अप्रतिभ - (adj) ungifted, timid

अप्रतिम - (adj) unique, without comparison

अप्रत्यक्ष - (adj) invisible, secret

अप्रसन्न - (adj) unhappy, displeased

अप्राप्ति - (f) non-attainment

अप्राप्ति सूचक - (adj) non-attaining

अफवाह - (f) rumor

अफसरशाह - (m) bureaucrat

अफसरशाही -(f) bureaucracy

अबन्धनीति - (f) laissez faire

अबतक - as yet, up to now

अबुद्धिगत - (adj) illogical

अबोध - (m) ignorance, (adj) innocent, ignorant

अब्रह्मचारी - (adj,m) unchaste

अभागा - (adj) unfortunate

अभाव - (m) absence, negation, non-existence

अभाव होना - to lack (intr)

अभिक्रम	(m) process, initiative
अभिजात	(adj) noble, well-born, born
अभिजातवर्ग	(m) high class, nobility
अभिज्ञता	(f) knowledge
अभिधारणा	(f) conviction
अभिनय	(m) acting (in a play)
अभिनीत	(adj) staged
अभिनीय मान	(m) coy, sulking
अभिनेता	(m) actor
अभिन्न	(adj) not separate, not different, identical
अभिप्राय	(m) intention, meaning
अभिप्रेत होना	to be understood
अभिभावक	(m) guardian
अभिमत	(m) opinion
अभिलाषा	(f) wish, craving
अभिलेख	(m) inscription, engraving, record, document, manuscript
अभिवृत्ति	(f) attitude
अभिवृद्धि	(f) growth, progress, prosperity, success
अभिव्यंजना	(f) making manifest
अभिव्यंजना पक्ष	(m) expression - side
अभिव्यक्त करना	to express
अभिव्यक्ति	(f) expression, manifestation
अभिव्यक्ति शैली	(f) style of expression
अभिशप्त	(adj) cursed, accursed
अभिशाप	(m) curse, misfortune
अभिषाप =अभिशाप	
अभिषिक्त	(adj) enthroned installed
अभिषेक	(m) coronation, inauguration
अभिहित	(adj) told, spoken, named, harnessed
अभी अभी	just now
अभीप्सित	(adj) desired
अभीष्ट	(adj) desired, loved
अभीष्ट सिद्धि	(f) attainment of the desired
अभूतपूर्व	(adj) unprecedented, wonderful, unique
अभ्यस्त	(adj) accustomed, skilled
अभ्यास	(m) practice
अभ्युद्देश्य	(m) reference
अमंगलकारी	(adj) inauspicious, harmful
अमंगलजनक	(adj) inauspicious, harmful
अमर	(adj) immortal
अमरत्व	(m) iimmortality
अमर्याद	(adj) improper, against tradition
अमर्यादित	(adj) unbcunded, having no limits
अमल	(m) application, practice
अमल करना	to follow, to implement
अमल में लाना	to use, to put into practice
अमात्य	(m) minister, councillor
अमानत	(f) deposit (in trust)
अमार्जित	(adj) unrefined, unwashed, unclean,
अमिट	(adj) indestructible, not effaced
अमुक	(adj) such and such
अमुकगोत्रोत्पन्न	(adj) born in such and such Gotra

अमुद्रास्फीतिक	(adj) non-inflationary
अमृत सुधा	(f) nectar
अमेरुदण्डी	(m) invertebrate
अमोघ	(adj) infallible, sure, unfailing
अयुक्त	(adj) unyoked
अरगजा	(m) a kind of yellow perfume
अरब	(m) billion, Arab
अराजक	(adj) anarchical
अराजकता	(f) anarchy
अरुचि	(f) disliking
अरुणोदय	(m) early dawn, daybreak
अरुण्डा	(adj) Arunda, name of people
अर्चना	(f) worship
अर्ज़	(f) request
अर्थ	(m) meaning, sense, wealth
अर्थवाद	(m) eulogium
अर्थविकास	(m) development of meaning
अर्थविस्तार	(m) expansion of meaning
अर्थविज्ञान	(m) semantics
अर्थवैज्ञानिक	(m) semanticist
अर्थव्यवस्था	(m) financing, economic system
अर्थशास्त्र	(m) economics; name of a book on Polity
अर्थ संकोच	(m) contraction of meaning
अर्थात्	that is, namely
अर्थादेश	(m) transference of meaning
अर्धशास्त्रीय	(adj) semi-classical

अर्धांश	(m) half the portion
अर्पण	(m) dedication, offering
अर्पित	(adj) dedicated
अर्पित करना	to offer
अर्वाचीन	(adj) modern
अलंकारिक	(adj) figurative, ornamental
अलंकृत	(adj) adorned, ornate
अलग	separate
अलग होना	to separate (intr)
अलग करना	to separate (trans)
अलग अलग	separately
अलाप	(m) dialogue, modulation, introductory part of music
अलावा	besides
अलिखित	(adj) unwritten
अलीक	(adj) false, displeasing
अलौकिक	(adj) supernatural, transcendental, heavenly
अल्प	(adj) little, short, brief
अल्प अवधि	(f) short time
अल्पकालिक	(adj) short-lived
अल्पविकसित	(adj) underdeveloped
अल्पसंख्यक	(adj) minority
अल्हैत	(m) name of a caste
अवकाश	(m) freetime, vacation
अवज्ञा	(f) disregard, contempt
अवज्ञा करना	to disobey
अवतरण	(m) descending, advent, birth

अवतार (m) incarnation

अवतारणा (f) invention

अवतारना to procreate

अवधि (f) time limit, period, term

अवधी (f) language of Oudh, a dialect of Eastern Hindi

अवध्य (adj) inviolable, not to be killed

अवनति (f) decline, fall

अवरज (m) of low tirth, inferior, junior

अवरप्रावादि काल (m) Ardovincian

अवरोहात्मक (adj) descending

अवर्णनीय (adj) indescribable, ineffable

अवर्षाकाल (m) non-rainy season

अवलंबन (m) dependence, support

अवलम्बित होना to depend

अवलोकन (m) viewing, glancing

अवशेष (m) remnant, remaining; ruins

अवश्य surely, sure

अवसर (m) chance, occasion, opportunity

अवसाद (m) fatigue, sorrow

अवस्था (f) age, condition

अवहेलना (f) neglect, disregard

अवांछित (adj) undesired

अवास्तविक (adj) unread

अविच्छिन्न (adj) uninterupted, continuous

अविद्या (f) illusion, ignorance

अविद्वान (adj) non-intellectual

अविभक्त (adj) undivided, solid

अविभाज्य (adj) indivisible

अविमिश्र (adj) unmixed, pure

अविलम्ब without delay

अविवाहिता adj,f.) unmarried

अविहित (adj) unprescribed, forbidden

अवैध (adj) illegal, illegitimate, unprescribed

अवैयक्तिक (adj) impersonal, non-private

अव्यवहित (adj) united, immediate, contiguous, uninterrupted

अव्याकरणिक (adj) ungrammatical

अव्वल (adj) first, (adv) firstly

अशर्फी (f) a gold coin

अशासकीय (adj) non-governmental, non-political

अशिक्षित (adj) illiterate

अशुभ (adj) inauspicious, evil; (m) misfortune

अशुभ सूचक (adj) indicating misfortune

अशेष (adj) entire, complete

अशोक (m) a red flower tree, Jonesia Asoka Roxb

अशोक वाटिका (f) a grove of Asoka trees

अशौच (m) impurity

अश्रुसिक्त (adj) soaked in tears, tearful

अश्लील (adj) lewd, obscene

अश्व (m) horse

अश्वमेध (m) horse sacrifice

अश्वारोही	(m) horseman
अष्टछाप	(m) a group of eight Krishna-Bhakti poets
अष्टमी	(f) eighth day of a lunar fortnight
असंख्य	(adj) countless, innumerable
असंगठित	(adj) disunited, unorganized
असंगत	(adj) incoherent, uneven, improper
असंगति	(f) incongruity, incoherence
असंगति पूर्ण	=असंगत
असंतुष्ट	(adj) dissatisfied
असंतोष	(m) dissatisfaction
असंदिग्ध	(adj) undoubted, certain
असंपृक्त	(adj) unmixed, unsaturated
असंबद्ध	(adj) unconnected
असंभव	(adj) impossible
असत्य	(m) lie, (adj) false, untrue
असफल	(adj) unsuccessful
असफलता	(f) failure
असभ्य	(adj) uncivilized
असभ्यता पूर्ण	(adj) uncivilized
असमर्थ	(adj) incapable, weak
असमान	(adj) dissimilar, unequal
असमानता	(f) dissimilarity
असर	(m) effect, influence
असल में	in fact
असलियत	(f) fact
असहनशीलता	(f) intolerance
असहमति	(f) disagreement
असहमति प्रकट करना	to disagree
असाधारण	(adj) extraordinary
असाध्य	(adj) incurable, beyond attainment
असामाजिक	(adj) unsocial
असावधान	(adj) negligent, careless
असावरी	(m) a kind of song
असीम	(adj) unlimited, boundless
असुर	(m) demon
असूया	(f) envy, jealousy,malice
अस्त व्यस्त	(adj) scattered, confused
अस्तित्व	(m) existence
अस्तु	Okay, so be it
अस्त्र	(m) weapon, missile
अस्त्र शस्त्र	(m.pl) armaments, weapons
अस्थि	(f) bone
अस्थि पंजर	(m) skeleton
अस्थिरता	(f) unsteadiness, fickleness, instability
अस्पष्ट	(adj) unclear, vague
अस्पृष्ट	(adj) untouched
अस्पृश्य	(adj) untouchable
अस्पृश्यता	(f) untouchability
अस्वीकार करना	to deny
अस्वीकृत	(adj) rejected, denied
अहस्त क्षेप	(m) non-interference
अहिंसक	(adj) non-violent

अहिंसापद्धति non-violent system

अहितकर (adj) adverse, harmful

अहिन्दी (adj) non-Hindi

अहीर (m) cowherd; name of a musical mode

अहीरी (m) name of musical mode

अहो oh!

अहोभाग्य (m) good fortune!

आ

आंकड़ा (m) numerical figure

आंकड़े (m,pl) figures, statistics

आंकना to assess, to evaluate

आंख (f) eye;

आंतरिक्ष (adj) heavenly, horizontal

आंदोलन (m) movement, upheaval

आंधी (f) wind storm

आंव (f) dysentery

आंसू (m) tear

आकर्षक (adj) attractive, magnetic

आकर्षण (m) attraction, gravity

आकलन (m) accumulation, investigation

आकलित होना to be accumulated

आकांक्षा (f) wish, aspiration

आकार (m) form, size, figure

आकार-प्रकार (m) size and shape

आकाश (m) sky, ether

[illegible]

[illegible]

आकाशभाषित (adj) speaking off stage; looking upward

आकीर्ण (adj) diffused, scattered

आकृष्ट (adj) attracted

आक्रमण (m) attack, invasion

आक्रमणकारी (adj) invader, assailant

आक्रान्त (adj) invaded, defeated

आक्रोश (m) curse, abuse

आक्षेप करना to blame, to accuse

आक्षेपात्मक (adj) satirical

आखर = अक्षर

आखिर at last (m) end

आखिरकार at last

आख्यान (m) legend

आगंतुक (m) visitor, new-comer

आग (f) fire

आगमन (m) arrival, advent

आगमात्मक (adj) Vedic

आगरी (m) saltmaker

आगे farther, ahead

आगे चलकर later on

आग्रह (m) insistence, obstinacy

आचरण (m) conduct, behavior

आचार (m) practice, conduct

आचार परम्परा (m) tradition

आचार विचार (m) conduct and [illegible] thoughts, traditions

आचार व्यवहार (m) conduct, way of living, behavior

आचारसंहिता	(f) Code of Ethics
आचारांग सूत्र	(m) a religious-ethical book of Jains
आचार्य	(m) teacher, priest
आच्छन्नहोना	to be covered or lost
आच्छादन	(m) cover
आज	today
आज कल	now-a-days
आजादी	(f) freedom
आज्ञा	(f) command, permission
आज्ञाकारी	(adj) obedient; (m) servant
आज्ञापालक = आज्ञाकारी	
आडंबर	(m) ostentation, arrogance
आणविक	(adj) atomic
आणविकशक्ति	atomic energy
आत्मगुण	(m) virtue of the soul inherent virtue
आत्म प्रकाशित	(adj) self-illuminated
आत्म रक्षा	(f) self-defence
आत्म वादी	(adj) spiritualistic
आत्म व्यवस्था	(f) self-management
आत्म शान्ति	(f) peace of soul
आत्म संयम	(m) self-control, self-discipline
आत्म साक्षात्कार करना	self-realization
आत्म सात	(adj) absorbed
आत्म सिद्धान्त	(m) theory of eternal self
आत्म हत्या	(f) suicide
आत्मा	(f) soul, self
आत्मानुशासन	(m) self-discipline
आत्माभिव्यक्ति	(f) self-expression
आत्मार्पण	(m) self-dedication
आत्मावलंबी	(adj) self-supporting
आत्मोत्सर्ग	(m) self-sacrifice
आदत	(f) habit
आदमी	(m) man, human being, person
आदर	(m) respect, honor, reverence
आदरणीय	(adj) respectable
आदर-सम्मान =आदर	
आदर्श	(m) ideal
आदर्शवादी	(adj) idealist
आदाता	(adj) giver
आदान-प्रदान	(m) exchange
आदि	(m) beginning: etcetra
आदि	(adj) ancient, beginning
आदि आदि	etcetera
आदि कल्प	(m) archaeological era, Archaeozoic
आदि कारण	(m) primary or primal cause
आदि काल	(m) primitive time, first period
आदि निवासी	(adj) aboriginal, tribal
आदिनूतन	Oligocene
आदित्य	(m) sun
आदिदैं	(adj) relating to or proceeding from gods
आदिम	(adj) primitive, archaean
आदिमकाल	(m) primitive age, ancient period

आदिमवृत्तिवाद	(m) primitive
आदिमानव	(m) early man
आदिवासी	= आदिनिवासी
आदेश	(m) instruction, command
आदेशानुसार	according to the instruction
आद्यनूतन	(adj) Eocene
आध	= आधा half
आधार	(m) base, basis, foundation
आधारभूत	(adj) basic
आधार-शिला	(f) foundation stone
आधारहीन	(adj) baseless
आधारित	(adj) based
आधिदैविक	= अधिदैविक
आधिपत्य	(m) supremacy, sovereignty, lordship
आधिभौतिक	(adj) material; (pain or sickness) caused by created beings or animals
आधीन	= अधीन
आधुनिक	(adj) modern, Holocene
आधुनिकता	(f) modernity
आध्यात्मिक	(adj) spiritual
आध्यात्मिकता	(f) spiritualism
आनन्द	(m) pleasure
आनन्दघन	(m) name of a poet, cloud of joy, consisting of pure joy
आनन्ददायक	(adj) pleasant, giver of joy
आनन्दपूर्वक	happily
आनन्दाश्रम	(m) stage (of life) of pleasure, abode of joy
आनन्दित	(adj) delighted
आनन्दोत्सव	(m) joyful festival
आन्तरिक	(adj) internal
आन्दोलन	= आंदोलन
आना	to come
आनाकानी	(f) procrastination
आनाकानी करना	to procrastinate
आप	you, (one) self
आप से आप	(by) itself
आपत्ति	(f) calamity, trouble
आपस	selves
आपस में	mutually
आपस्तम्भ	(m) name of a renounced saint-writer on ritual
आबनूस	(m) ebony
आबाद	(adj) settled, populated, prosperous
आबादी	(f) population, habitation
आभास	(m) hint, inclination
आभास होना	to get a hint, to have a hazy idea
आभीर	(m) name of a people, cowherd
आमंत्रण	(m) invitation
आमंत्रित	(adj) invited
आमंत्रित करना	to invite
आम	(m) mango; (adj) common, general
आम तौर पर (से)	generally
आमदनी	(f) income
आमूल	(adj) by the foot, basic, radical

आय	(f) income
आय कमेटी	(f) revenue committee
आयकर	(m) income tax
आयात	(m) import
आयात-निर्यात	(m) import and export
आयु	(f) age
आयुक्त	(m) commissioner
आयुनिर्धारण	(m) fixing of an age or duration, dating
आयु निर्धारण मापदण्ड	(m) scale for dating
आयुसीमा	(f) age-limit
आयोजन	(m) arrangement, plan
आयोजित	(adj) planned
आरंभ	(m) beginning
आरंभ करना	to begin (trans)
आरंभ होना	to begin (intr)
आरपार	across
आरती	(f) ceremony performed to worship gods by moving a lighted lamp circularly round the idol.
आरती उतारना	to perform Artī
आरा	(m) a saw, name of a district
आराधन	(m) adoration, worship
आराधना = आराधन	
आराम	(m) rest
आराम करना	to rest
आराम होना	to feel better
आरोह = आरोहण	(m) ascending

आरोहात्मक (adj) ascending

आरोहात्मक	(adj) ascending
आर्थिक	(adj) economic
आर्थिक-सांस्कृतिक	(adj) economic-cultural
आर्य = आर्य्य	(adj) noble; (m) Aryan
आर्यक	
आर्य धर्म	(m) religion of the Aryans, noble duty
आर्यभाषा	(f) Aryan language(s), language of noblemen
आर्य भिन्न	(adj) non-Aryan
आर्यसमाज	(m) a reformist religious Hindu sect founded by Swami Dayanand Saraswati
आर्यसमाजी	(adj) Arya Samajist
आर्ष विवाह	(m) a form of marriage in which the bride's father receives a pair or two pairs of kine from the bridegroom
आर्षवी	(f) name of a people or caste
आलमबाग	(m) name of a royal garden
आलस्य	(m) laziness
आलिखित	(adj) painted, inscribed
आलेख	(m) script, painting
आलोक	(m) splendor,light
आलोकन	(m) viewing
आलोकित होना	to be illuminated
आलोचक	(m) critic, reviewer
आलोचना	(f) criticism, review
आलोचना करना	to criticize, to review
आलोड़न विलोड़न	(m) agitation, stirring, churning
आवभगत	(f) welcome, hospitality

आवश्यक	(adj) necessary
आवश्यकता	(f) necessity, need
आवश्यकतानुसार	according to the need
आवश्यकरूपेण	necessarily
आवागमन	(m) transportation, comming and going, cycle of birth and death
आवाज	(f) voice, sound, noise, call
आवाज लगाना	to call
आवास	(m) dwelling, abode
आविष्कार	(m) invention, discovery
आवृत्ति	(f) repetition, reprint, edition
आशंका	(f) doubt, fear
आशंका होना	to be doubtful
आशा	(f) hope
आशाजनक	hopeful, promising
आशा निराशा	(f) hope and despair
आशापूर्ण	(adj) hopeful
आशीर्वाद	(m) blessing
आशीर्वाद देना	to bless
आश्चर्य	(m) surprise, wonder
आश्चर्य चूड़ामणि	(m) wonder of wonders
आश्चर्यजनक	(adj) wonderful, amazing
आश्रय	(m) protection, patronage, aasylum
आश्रया लेना	to take refuge, to follow
आश्रित	(adj) dependent
आश्वलायन	(m) name of a writer
आश्वासन	(m) assurance
आसकरनप्रभु	(m) name of a poet
आसन	(m) seat, small carpet to sit on, Yogie posture
आसन देना	to give a seat
आसनदान	(m) giving a seat
आसन्न	(adj) imminent, near
आसपास	near, in the vicinity
आसमान	(m) sky
आसान	(adj) easy
आसानी	(f) easiness, convenience
आसीन	(adj) seated, occupying a seat
आसीन होना	to occupy a seat
आसुर	(adj) devilish, uncivilized
आसुर विवाह	(m) a form of marriage where bride's father paid
आस्ट्रेलिया-वासी	(adj) inhabitant of Australia
आस्था	(f) faith, reverance
आहट	(f) sound indicating someone's presence
आहार	(m) meal, diet
आहार विशेषज्ञ	(m) dietitian
आह्वान	(m) call, summons
आहुति	(f) religious offering
आहुति देना	to offer, sacrifice

[illegible]

इ

इंकार	(m) refusal
इंकार करना	to refuse, to deny

इंगलिस्तान (m) England

इंग्लैण्ड निवासी (adj) inhabitant of England

इंजन (m) engine

इंजीनियर= इंजिनियर (m) engineer

इंजीनियरी (f) engineering

इंतजाम (m) management, arrangement

इंद्र (m) Lord Indra

इंद्रिय (f) sense-organ

इकट्ठा (adj) together, amassed

इकाई (f) unit

इक्कीस twenty-one

इक्यासी eighty-one

इक्ष्वाकु (m) name of first king in solar race

इच्छा (f) desire

इच्छा करना to desire

इच्छा होना to be desired

इच्छित (adj) desired

इच्छुक (adj) desirous

इतना this much, so much

इत्मीनान (m) assurance, confidence

इत्मीनान दिलाना to assure

इति (f) end

इतिवृत्तात्मकता (f) epic style, plot-description

इतिहास (m) history

इतिहास ग्रन्थ (m) history book

इतिहासज्ञ (m) historian

इतिहास सम्बन्धी (adj) historical

इत्यादि et cetera

इत्यादि इत्यादि et cetera et ce et cetera

इत्र (m) perfume

इधर hither, on this side

इधर उधर here and there

इन्कार= इन्कार

इनाम (m) reward

इनाम इकराम (m) reward, tip

इन्दुमती (f) name of a lady

इन्द्रचाप (m) rainbow

इन्द्रधनुष (m) rainbow

इमारत (f) building

इरादा (m) intention

इलाका (m) region, province

इलाज (m) medical treatment

इष्ट (adj) desired, favourite

इसका its, of this

इस प्रकार like this, in this way

इसलिये therefore

इसाइयत (f) Christianity

इसाई (m) Christian

इसीलिये for this very reason

इसे= इसको to this

इस्तेमाल no use

इस्तेमाल करना to use

5

इस्पात	(m) steel
इह	here, in this world
इहकाल	(m) this life, present time
इहलोक	(m) this world
इहलौकिक	(adj) pertaining to this world, worldly

ई

ईमान	(m) faith, truth
ईमानदारी	(f) honesty
ईर्ष्या	(f) jealousy, envy
ईश्वर	(m) God, Lord, master
ईश्वरीय	(adj) Godly, divine
ईस्वी	(m) Christian era (A.D.)
ईसा	(m) Jesus Christ
ईहामृग	(m) a form of Sanskrit play of four acts
ईसाई	(m) Christian
ईसाईधर्म	(m) Christianity

उ

उक्त	(adj) aforesaid, spoken
उक्तलिखित	above written
उक्ति	(f) speech, saying
उक्ति उत्कर्षक	(adj) elevating a speech, boasting
उखड़ना	to root up, to root out
उखाड़फेंकना	to root out thoroughly
उगाना	to grow (trans), to raise
उग्र	(adj) violent, a king of state
उचित	(adj) proper, fit, just
उच्च	(adj) high, lofty
उच्चतर	higher
उच्चतम	highest
उच्च स्तर	(m) high level
उच्चारण	(m) ppronunciation, utterance
उच्चारण सौकर्य	(m) ease of pronunciation
उच्छेद	(m) destruction
उच्छ्वसित	(adj) sprung, breathed cut
उज्ज्वल	(adj) bright, splendid
उठना	to get up, to stand up
उठाना	to wake up, to raise
उड़ना	to fly (intr)
उड़ाऊ	(adj) flier, extravagant
उड़ान	(f) flight
उड़ाना	to fly (trans)
उड़िया	(f) Oriya language
उतना	that much, so much
उतरना	to descend, to come down
उतार	(m) fall, descent, ebb-tide
उतार-चढ़ाव	(m) ascending and descending
उत्कर्ष	(m) exaltation, excellence, progress, recovery
उत्कर्षता	(f) = उत्कर्ष
उत्कृष्ट	(adj) excellent, best
उत्तम	best, greatest
उत्तमता	(f) excellence
उत्तर	(m) answer, north; (adj) latter, subsequent

उत्तरकाल	(m) later period
उत्तरदान	(m) heritage, legacy
उत्तरदायित्व	(m) responsibility
उत्तरदायी	(adj) responsible
उत्तर-पश्चिम	(m) northwest
उत्तर वैदिक	later Vedic
उत्तरांश	(m) latter part
उत्तराधिकार	(m) inheritance
उत्तरार्ध	(m) latter half
उत्तरोत्तर	more and more, continuously
उत्तेजना	(f) excitement, heat, incitement
उत्तेजित	(adj) excited
उत्थान	(m) progress, uplift
उत्पत्ति	(f) origin, production, yield
उत्पन्न	(adj) born, produced
उत्पात	(m) misfortune
उत्पादक	(m) producer (adj) creative
उत्पादन	(m) production
उत्पादन आंकड़े	(m) production statistics
उत्पादन कर	(m) tax on production
उत्पादन कार्य	(m) production-activity
उत्पादनक्षमता	(f) productive capacity
उत्पादनव्यय	(f) business expense
उत्पादन शक्ति	(f) productive power
उत्प्रेक्षा	(m) indifference, metaphor
उत्स	(m) spring, well
उत्सव	(m) festival
उत्साह	(m) enthusiasm
उत्सुक	(adj) enthusiast
उत्सुकता	(f) eagerness, impatience
उथलपुथल	(f) tumult, state of change and uprising
उदग्र	(adj) vertical, high, great
उदय	(m) rise, ascent
उदात्त	(m) acute ascent, lofty, elevated, high
उदार	(adj) liberal, generous
उदाराशयता	(f) liberalism, generosity.
उदास	(adj) sad
उदासीन	(adj) sad, dejected, cool, detached
उदासीनता	(f) indifference
उदाहरण	(m) example, instance
उदाहरण परक	(adj) illustrate
उदाहरण स्वरूप	as an example
उदाहरणार्थ	for example
उदित	(adj) risen
उदुम्बर	(m) threshhold, a fig tree
उद्गम	(m) spring, rise,coming out
उद्गम स्थान	(m) source
उद्गम स्रोत	(m) source
उद्घाटन	(m) inauguration, first revelation
उद्घोष	(m) proclaimation
उद्दंडता	(f) rudeness, arrogance
उद्दाम	(adj) un-restrained,haughty

उद्दिष्ट	(adj) aimed, pointed out
उद्देश्य	(m) aim, goal
उद्धार	(m) uplift, deliverance
उद्धृत	(adj) quoted
उद्धृत करना	to quote
उद्भव	(m) origin, production
उद्भूत	(adj) produced, born
उद्यम	(m) industry, enterprise
उद्योग	(m) industry, diligence
उद्योग केन्द्रित	(adj) centered around the industry
उद्योग-धन्धा	(m) business, enterprise
उद्योग-व्यापार	(m) business trade
उद्योग शील	(adj) industrious
उद्योग संचालक	(m) business manager
उद्विकास	(m) growth, evolution
उद्विग्न	(adj) agitated, distressed
उधर	thither, over there
उन्नत	(adj) developed, high
उन्नति	(f) progress
उन्नतिशील	(adj) developing
उन्नायक	(m) leader; (adj) elevating
उन्नीस	nineteen
उन्नीसवां	nineteenth
उन्मुख	(adj) facing toward, intent
उन्मुख करना	to direct
उन्मूलन	(m) eradication, uprooting
उपकरण	(m) means, implements
उपकरण निर्माता	(m) tool maker
उपकरण प्रकार	(m) type of means
उपकरणसिद्ध	(adj) mechanical
उपकार	(m) good, favor
उपचार	(m) remedy, treatment
उपज	(f) produce, crop
उपजाऊ	(adj) fertile
उपजाति	(f) sub-caste
उपत्यका	(f) lowland, valley
उपदेश	(m) preaching
उपनयन	(m) initiation of the twice born
उपनिवेश	(m) colony
उपनिषद	(m) Upanisad, sitting down near to
उपभोक्ता	(m) consumer
उपभोक्ता संघ	(m) consumers' society
उपभोग	(m) enjoyment, use
उपभोग करना	to enjoy, to consume
उपमहाद्वीप	(m) sub-continent
उपमान	(m) object of comparison
उपयुक्त	(adj) suitable, proper
उपयोग	(m) use, utility
उपयोग करना	to utilize, to use
उपयोगितावाद	(m) utilitarianism
उपयोगी	(adj) useful
उपरला	(adj) upper

उपरांत afterwards

उपरूपक (m) small drama

उपर्युक्त above mentioned

उपलब्ध (adj) aquired

उपलब्ध होना to be found

उपलब्धि (f) aquisition, perception, availability, gain

उपवर्ग (m) sub-group

उपवास (m) fast

उपविभाग (m) sub-division

उपवीर (m) sub-hero, an evil spirit

उपसंस्कृति (f) sub-culture

उपसर्ग (m) prefix

उपस्थापक (m) founder

उपस्थित present, at hand

उपस्थिति (f) presence, attendance

उपाख्यानमूलक (adj) pertaining to a narrative or episode

उपादेय (adj) useful

उपाधि (f) title, degree, attribute

उपाधि धारी titled, designated

उपाय (m) remedy, means, way

उपासक (m) devotee

उपासना (f) devotion, worship

उपास्य (adj) to be worshipped

उपास्यदेव (m) worshipped one

उपेक्षा (f) neglect, slight

उपेक्षा करना to neglect

उपेक्षित (adj) neglected

उबटन (m) ointment

उबलना to boil (intr), to seethe

उमंग (f) jubilation, enthusiasm

उम्मीदवार = उम्मेदवार (m) hopeful, candidate

उर्वर = उर्वरा (adj) fertile

उर्वरता (f) fertility

उर्वशी (f) name of a nymph, beauty

उलंघन (m) violation

उलंघना to violate, spring over

उलझन (f) tangle, complication

उलट-फेर (f) change

उलटना-पलटना to turn over, examine

उलटा (adj) reverse, upside down, backward

उलूक (m) owl

उलूखल (m) mortar for pounding corn

उल्का (f) meteorite, falling star

उल्टा = उलटा

उल्टेरूप in reverse order

उल्लघन = उलंघन

उल्लाघ राघव (m) name of a book

उल्लास्य (adj) to be rejoiced about

उल्लिखित (adj) mentioned

उल्लेख (m) mention

उल्लेख करना to mention

उल्लेखन (m) inscription

उल्लेखनीय	(adj) worth mentioning
उषःकाल	(m) time of dawn
उषादेवी	(f) Goddess Dawn
उष्ट्र	(m) camel
उष्ण	(adj) hot
उस समय	then

ऊ

ऊंच नीच	(m) high and low (society)
ऊंचा	(adj) high
ऊंची आय	(f) high income
ऊंचे नीचे	up and down
ऊंट	(m) camel
ऊधो	a friend of Krishna
ऊन	(f) wool; (adj) less
ऊपर	above, up, on, upward
ऊपरी	(adj) upper, on the surface
ऊब	(f) boredom
ऊबना	to get fed up, to get bored
ऊर्ध्वगामी	(adj) going upward
ऊर्ध्वगामी गत्यात्मक	(adj) ascending vertically

ऋ

ऋग्वेद	(m) the first of four Vedas
ऋचा	(f) hymn of the Rigveda
ऋण	(m) debt
ऋण परिशोध	(m) clearance of debt
ऋणात्मक	(adj) negative
ऋतुकाल	(m) menstruating period, time of ovulation
ऋतुमती	(adj) menstruating
ऋतूत्सव	(m) season (spring) festival
ऋषभ	(m) bull
ऋषि	(m) seer, saint, composer of Vedic hymns

ए

एक	an, alone, one
एक आध	a few, some
एकएक	everyone, one by one, all
एककोषीय	(adj) unicellular
एकड़	(m) acre
एकता	(f) unity, harmony
एकता अनेकता	(f) unity and diversity
एकत्र	(adj) together, gathered, at one place
एकदम	at once; (adj) brand -
एकदूसरा	one another
एकबारगी	all at once, suddenly
एकमत	(adj) unanimous
एकमात्र	only, lonely
एकराज	(m) (hereditary) monarch
एकराट्	(m) emperor
एक समय में	at the same time
एकांकी	(adj) one-act -
एकांगी = एकांतिक	one-sided
एकाकार	(adj) uniformed
एकाधिकार	(m) monopoly

एकीकरण	(m) unification, integration, consolidation
एकेश्वरवाद	(m) monotheism
एकेश्वरवादी	(adj) monotheistic
एवं	and, thus

ऐ

ऐक्य	(m) unity
ऐतरेय	(m) a Brahmana part of Vedic literature
ऐतिहासिक	(adj) historical, historic
ऐश	(m) luxury, pleasure
ऐश-आराम = ऐश	
ऐसा	(adj) such, after this manner, like
ऐसे	in this way, similarly

ओ

ओट	(f) shelter, screen, veil, protection
ओढ़ना	to cover over, to put on, to take the blame
ओर	(f) direction; (adv) in the direction
ओरछोर	(m) end, size

औ

औचित्य	(m) justification, rightness
औचित्यपूर्ण	(adj) justified, right
औचित्यानुसार	justifyingly, according to the reason
औज़ार	(m) tool
औद्योगिक	(adj) industrial
औद्योगीकरण	(m) industrialization
औपचारिक	(adj) formal
और	and, other, more
और अधिक = और ज्यादा	more
और भी कई	many more
औषधि	(f) medicine
औसत	(m) average; (adj) average

क

कंक	(m) white kite
कंजूसी	(f) miserliness
कंठाहार	(m) necklace, dear
कंठाहार बनना	to become very beloved
कंडु	(f) itch, name of a saint
कंधा	(m) shoulder
कंस वध	(m) killing of Kansa
कई	many
कई कई	many-many, many at a time
कक्षा	(f) class
कचहरी	(f) a court of justice, assembly
कच्चा	(adj) unripe, raw, immature, clay-built, weak, uncooked, non-fried
कच्चामाल	raw material
कजरा	(adj) deep blackeyed
कजरी = कजली	(f) a black eye makeup, a kind of folksong
कटाई	(f) harvesting, reaping
कटा-छंटा	(adj) cut into pieces
कटाना	to have (something) cut
कटारी	(f) a small hatchet or dagger

कटिबद्ध	(adj) determined, intent
कट्टरपंथी	(adj) orthodox, bigoted
कठिन	(adj) difficult
कठोर	(adj) hard, rough, stern
कड़ा = कठोर	
कड़ा	(m) a bangle, a metal ring
कड़ाई	(f) stiffness, hardness
कड़ी	(f) link, beam, portion of a son a song
कड़ीआलोचना	(f) sharp criticism
कढ़ाहुआ	embroidered
कण	(m) grain, particle
कथन	(m) statement, utterance
कतिपय	(adj) some, a few
कथन	(m) statement, utterance
कथनानुसार	according to
कथा	(f) a prose narrative
कथाकहानी	(f) tale
कथानक	(m) tale, plot, prose narrative
कथानक रूढि	(f) plot
कथानायक	(m) hero
कथापुराण	(f) legend, myth
कथासरित सागर	name of a book
कथासाहित्य	(m) narrative literature
कद	(m) stature, height
कदम	(m) name of a tree, step, foot
कदाचित्	perhaps
कदापि	ever
कदापि नहीं	never
कनक	(m) gold
कनछेदन	(m) ear-piercing ceremony
कन्नड़	(f) Kannada language
कन्या	(f) lass, maid, virgin, daughter
कन्यादान	(m) giving away of daughter in marriage
कपड़ा	(m) cloth, clothing
कपाल	(m) forehead, skull, destiny
कपास	(f) cotton
कपोत	(m) pigeon
कपोल कल्पना	(f) sheer imagination
कप्तान	(m) captain
कब	when
कबीर	name of a poet
कबीला	(m) clan, tribe, wife
कबीलावाद	(m) tribalism
कब्ज़ा	(m) occupation, poss possession
कब्ज़ा करना	to occupy
कभी	sometime
कभी कभी	sometimes
कभी का	since a long time
कभी न कभी	sometime or other
कभी नहीं	never

कम (adj) little, less, few

कम ज़्यादा more or less

कम से कम at least, the least

कमजोर (adj) weak

कमजोरी (f) weakness

कमाना to earn

कमी (f) lack

कर (m) hand, arm, tax, toll, fee

कर लगाना to tax

करघा (m) hand loom

करना to work, to do, to make, to use

करदाता (m) taxpayer

करनीति (f) taxation policy

कर प्रणाली (f) taxation method

कर वाना to have (something) performed

कराना to have done, to cause to do

करामात (f) feat, miracle

करारोपण (m) taxing, taxation

करीब nearby, approximately, almost

करुण (adj) compassionate

करुणकथा सम्बन्धित (adj) related to compassionate narrative

करुणक्रन्दन (m) lamenting, crying

करुणरस (m) sentiment of compassion

करोड़ ten million

कर्कश (adj) harsh, unkind, cruel

कर्ज़=कर्ज़ा (m) debt, loan

कर्ज़दार (m) debtor, (adj) indebted

कर्णगोचर (adj) audible

कर्तव्य (m) duty, obligation

कर्तव्य बुद्धि (f) knowledge of one's duty

कर्ता (m) author; subject (in grammar)

कर्म (m) act, deed, fate, karma, object (in grammar)

कर्मकांडीय (adj) ritualistic

कर्मचारी (m) worker, official

कर्मफलवाद (m) fatalism

कर्मवाद (m) theory of Karma

कर्म सम्बन्धी (adj) related to Karma

कल कारखाना (m) factory

कलना

कलपना to lament

कलह (f) strife, dissension

कला (f) art, craft

कला कौशल (m) artistic expertness

कला गुण (m) artistic quality

कलात्मक (adj) artistic

कला पूर्ण (adj) artistic

कलाप (m) assemblage

कलावन्त (m) artist

कल्प (m) age, era

कल्पकवि (m) poet of his age

कल्पना (f) imagination, dream, hypothesis

कल्पना करना to imagine, to suppose

कल्पना पूर्ण	(adj) imaginary
कल्याण	(m) good, benediction
कल्याण कारी	(adj) auspicious, beneficial, welfare
कल्याण योजना	(f) welfare scheme
कल्याणवादी	(m) proponent of welfare doctrine
कल्याणी	(m) a city; (adj) auspicious
कल्यान = कल्याण	(m) a kind of song
कवच	(m) armour, charm
कवि	(m) poet
कवि कल्पित	(adj) imagined by a poet
कश्यप	(m) Vedic seer
कष्ट	(m) distress, pain, hardship
कष्टझेलना	to suffer
कष्टकर	painful, agonizing
कष्ट कारक	painful, agonizing
कष्ट पूर्ण	painful, agonizing
कष्ट साध्य	(adj) attainable by great difficulty
कुसुंमी	(adj) saffron-colored
कसौटी	(f) test
कस्बा	(m) a small town
कहना	to say
कहना सुनना	to converse
कहरवा	(m) a dance-song
कहलवाना = कहलाना	to have something said
कहलाने वाला	so-called, named
कहां	where
कहानी	(f) story, tale
कहावत	(f) proverb
कहीं	anywhere, somewhere
कहीं कहीं	in some places
कहीं न कहीं	somewhere or other
कहीं नहीं	nowhere
कहूं = कहीं	
कांगड़ा	(m) a region in the Punjab
कांच	(m) glass
कांचनमृग	(m) golden deer
कांसा	(m) bronze
कांस्य	(adj) bronze
कांस्य युगीन	(adj) bronze age -
का	of, from, worth
काक	(m) crow
काग़ज़	(m) paper
काछ	(m) cloth worn around hips tucked on tc the waist
काछनी	(f) lion - cloth
काजर	(m) lampblack used on eyes
काजर रोरी	(f) काज़र and रोरी
काटना	to cut (trans)
काढ़ना	to embroider, draw out
कादंबरी	(f) name of a book
कान	(m) ear
कानून	(m) law
कान्ह	(m) Krishna

कान्हड़ा (m) name of a musical mode

कापर, कापरा = कपड़ा

काफिर (m,&adj) disbeliever in Islam, infidel

काफिर प्रथा (f)

काफी enough; (m) a kind of musical mode; (f) coffee

काम (m) work; desire, lust; Cupid

काम में लायाजाना = काम में आना to be used

काम में लाना to use

काम करना to work

काम का useful

काम काज (m) job, business

कामदेव (m) god of love

कामना (f) wish

कामिनी (f) beautiful or lustful woman

कामोपभोग (m) enjoyment of sex

कायम (adj) fixed, settled, intact

कायर (adj) cowardly

कायरता (f) cowardice

कायस्थ (m) name of a caste

कारक (m) inventor, doer

कारक-प्रक्रिया (f) syntax, creative process

कारखाना (f) factory, mill, workshop

कारगर (adj) effective

कारण (m) cause

कारीगर (m) artisan, mechanic

कारोबार (m) business, trade

कार्य (m) work, effect, result

कार्यकर्ता (m) worker

कार्यकारण भेद (m) division of cause and effect

कार्यकारी (adj) acting -

कार्यकुशलता (f) efficiency

कार्य क्रम (m) agenda, program

कार्य क्षमता (m) working capacity

कार्य क्षेत्र (m) field of work

कार्यप्रणाली (f) methodology

कार्यरूप (m) implementation, realistic achievement

कार्य विधि (f) methodology

कार्य व्यापार (m) activity

कार्य संकलन (m) unity of action

कार्य संचालन (m) execution of work

कार्य सिद्ध

कार्यसूची (f) program, agenda

कार्यान्वित करना to implement

कार्रवाई (f) proceedings

काल (m) time, death

कालकूट (m) a deadly poison

काल क्रम (m) chronology

काल क्रमिक (adj) chronological

काल मापक (m) time scale

कालवाद (m) fatalism, doctrine of time

कालविभाजन (m) division of time, timetable

काला (adj) black

कालान्तर later
कालिदास (m) famous Sanskrit poet
-कालीन belonging to ---- age
काल्पनिक (adj) imaginary
काव्य (m) poetical work
काव्य ग्रन्थ (m) poetical work
काव्यतत्व (m) component of a poetical work
काव्य रूप (m) form(s) of poetical work
काव्यशास्त्र (m) science of poetics
कासा like
किंचित् somewhat
कि that
कितना how much
किनारा (m) edge, border, shore
किन्तु but
किफ़ायत (f) thrift
किरण (f) ray
किरात (m) name of a tribe
किराया (m) rent, fare
किला (m) fort
किशोर (m) boy aged 11 to 15 years
किसान (m) farmer
किसी प्रकार somehow
किस्सा (m) story, tale
कीटाणु (m) insect
कीटाणु सम्बन्धी (adj) pertaining to insect
कीमत (f) price
कीमती (adj) precious, costly
कीरति = कीर्ति
कीर्तन (m) singing in praise of God
कीर्ति (f) fame, honor, repute
कीर्तिशाली (adj) celebrated, famous
कुंअर (m) son, prince
कुंज (m) grave
कुंजी (f) key
कुंठित करना to blunt
कुंवर = कुंअर
कुकुभ (f) kind of music mode
कुचलना to supress, to trample
कुछ (adj) some, a little, a few
कुछ न कुछ something or other
कुछेक little, few
कुटिया (f) cottage, hut
कुटी (f) cottage, hermitage
कुटीर उद्योग (m) cottage industry
कुटुम्ब (m) family, clan, household
कुमार (m) boy, prince, son, unmarried
कुमारि = कुमारी (f) maiden, princess
कुमारिल भट्ट (m) a Mimansak writer-philosopher
कुमुद (m) lily, red lotus
कुम्भ (m) water jug
कुम्भकर्ण (m) a brother of Ravaṇa

कुरसी	(f) chair, power
कुरु	(n) name of a king, founder of Kaurva dynasty
कुरुख	(f) a Dravidian language
कुक्कुर	(m) dog
कुर्ता	(m) collarless shirt
कुर्मी	(m) an agricultural caste
कुल	(m) family, clan, lineage; (adj) total
कुलघ्नी	(f) destroyer of the family
कुलपांसनी	(f) disgrace to the family
कुलपुत्र	(m) son of a noble family
कुलाबा	(m) outlet, water-spring
कुल्लू	(f) name of a valley
कुल्हाड़ा	(m) axe
कुश	(m) sacred grass used in [illegible] rituals, son of Krishna
कुशल	(adj) skilled, clever; healthy
कुशलता	(f) happiness, well-being
कूजन	(m) cuckooing
कूटयुद्ध	(m) treachery; [illegible] unfair battle
कूदना	to jump
कृतकृत्य	(adj) obliged, gratified, satisfied, fulfilled
कृतघ्न	(adj) ungrateful
कृतघ्नता	(f) ingratitude
कृतज्ञ	(adj) grateful
कृतज्ञता	(f) gratitude
कृतार्थ	=कृतकृत्य
कृति	(f) work, literary or artistic work
कृत्य	(m) duction, action
कृत्रिम	(adj) artificial
कृषि	(f) agriculture
कृषि आय	(f) agricultural income
कृषि उत्पादन	(m) agricultural output
कृषि उन्पादन बोर्ड	(m) agricultural output board
कृषि उपकरण	(m) agricultural tools
कृषि उपनिवेश	(m) colonial agrarian appendage
कृषिकर्म = कृषि कार्य	(m) farming, husbandry
कृषिजीवी	(adj) living on agriculture
कृषि-पैदावार	(f) = कृषिउत्पादन
कृषिप्रधान	(adj) agrarian
कृषिप्रसारसेवा	(f) service for agricultural expansion
कृषि विषयक	pertaining to agriculture
कृष्ण	(adj) dark, black; [illegible]
कृष्ण	(m) Lord Krishna
कृष्ण कथा	(f) life story of Lord Krishna
कृष्ण कथा परक	(adj) pertaining to Krishna-Katha
कृष्ण जन्म	(m) birth of Krishna
कृष्ण भक्ति	(f) devotion of Krishna
केतु	(m) banner
केन्द्र	(m) center, federal government
केन्द्र बिन्दु	(m) central point
केन्द्रीभूत	(adj) centralized
केन्द्रीय	(adj) central, federal

केन्द्रीय श्रंक संगठन	
केन्द्रीय करण	(m) centralization
केरल	(m) Kerala
केरलपुतो	(m) a king of Kerala
केवल	only
केश	(m) hair
केशव	(m) Lord Krishna; name of a poet
केशान्त	(m) hair end
कैकेयी	(f) step-mother of Lord Krishna
कैद	(f) imprisonment; (adj) imprisoned
कोंपल	(f) new sprout
कोई	someone, any
कोईकोई	someone
कोई न कोई	some or other
कोई नहीं	no one
कोटि	(f) end of a bow; ten million
कोडू	(f) a Dravidian language
कोड़ा	(m) whip
कोड़ा मारना	to whip
कोतवाल	(m) city police chief
कोना	(m) corner
कोना कोना	(m) every corner
कोरस	chorus
कोरा	(adj) brand new, unused
कोरा जवाब	(m) blank refusal, blunt reply
कोलामी	(f) a Dravidian language
कोशल	(m) old name of Ayodhya
कोशिश	(f) attempt, effort
कोष	(m) treasure; dictionary
कोस	(m) distance of two miles
कौआ	(m) crow
कौटलीय	(adj) of Kautilya
कौटिल्य	(m) name of Chanakya
कौटुल्य	
कौटुम्बिक	(adj) family -
कौन	who?
कौनसा	which one?
कौमुदी महोत्सव	(m) great festival to be celebrated on a full moon day in Ashvina (Oct-Nov)
कौशल्या	(f) mother of Rama
कौशिकी	(adj) pertaining to Kaushik clan
क्या	what?
क्यों	why?
क्योंकि	because
क्रन्दन	(m) weeping and wailing
क्रम	(m) order, step
क्रमशः	step by step, gradually
क्रमात्	in this order
क्रमालंकार	(m) a kind of simile in which the comparisons made correspond to each other in regular succession
क्रमिक	(adj) successive, gradual
क्रय विक्रय	(m) purchasing power

क्रयशक्ति (f) purchasing power

क्रान्ति (f) revolution

क्रान्तिकारी (adj) revolutionary; (m) revolutionist

क्रिया (f) action, process; verb

क्रियाकलाप (m) activities

क्रियापद (m) verb morpheme

क्रियान्वित (adj) implemented

क्रियान्वित करना to implement

क्रियाशील (adj) active

क्रियाशीलता (f) functioning, momentum

क्रीड़ा (f) sport, pastime

क्रुद्ध (adj) angry

क्रूरता (f) cruelty

क्रोध (m) anger

क्वचित् rarely, rare

क्षण (m) moment, instant

क्षति (f) loss

क्षतिपूर्ति (m) compensation

क्षत्रछाया = छत्रछाया (f) protection

क्षत्रिय (m) ruler class (caste)

क्षमता (f) capacity, ability, patience

क्षमा (f) forgiveness

क्षमा करना to pardon

क्षम्य (adj) forgivable

क्षय (m) decay, loss, decline

क्षीण (adj) weak, decayed

क्षुधा (m) hunger

[illegible]

क्षेत्र (m) field

क्षेत्रफल (m) area

क्षोभ (m) agitation, anger

ख

खंड (m) part, region, block

खजांची (m) treasurer

खजानची = खजांची

खजाना (m) treasure, treasury

खजूर (m) palm tree, date

खटकना to click, to bother

खड़ा (adj) standing, erect

खड़ा करना to stand, to build (trans)

खड़ा होना to stand (intr)

खतम (m) end; (adj) complete

खतम करना to end, to complete

खतम होना to end, complete, finish (intr)

खतरा (m) danger

खत्म = खतम

खनिज (adj) mineral

खनिजपदार्थ (n) mineral substance, natural resources

खपाना to consume,

खबर (f) news

खम्माटी (m) a kind of raga

खम्मावती name of a city

खयाल	(m) a kind of thought; a musical mode
खर	(m) donkey; name of Ravana's brother
खरगोश	(m) hare, rabbit
खरच	(m) expenditure
खरचा	= खरच
खरादं	(f) lathe
खराब	(adj) bad, defective
खरीदना	(trans) to buy
खरीद बिक्री	(f) buying and sale
खर्च	= खरच
खल	(f) oil cake
खली	(f) oil cake
खांड	(f) unrefined sugar
खाई	(f) ditch
खाड़ी	(f) bay
खाता	(m) account
खातिर	(adv) sake; for; in honcr.
खाद	(f) manure
खाद्य	(adj) edible, food
खाद्यपदार्थ	(m) edible food stuffs
खाद्यसम्बन्धी	related to food
खाद्यान्न	(m) cereal, food
खाना	(trans) to eat; (m) meal
खाना पीना	(m) eating and drinking
खामोशी	(f) silence
खारवेल	(m) name of a king
ख़ाली	(adj) empty, free
ख़ास	(adj) special
ख़ासकर	(adv) specially
ख़ासा अच्छा	(adj) pretty good
खासियत	(f) speciality
खिंचना	(trans) to be drawn
खिचड़ी	(f) rice-pulse, mixed dish, misture
खिच्चरी	(f) female mule
खिलवाड़	(m) play
खिलवाड़ करना	to make a mockery
खिलाना	(trans) to feed
खिलाना पिलाना	(trans) to feed, to nourish, to entertain
खिलाफ	against
खिसकना	(intr) to slip
खींचना	(trans) to pull, to draw
खीर	(f) rice pudding
खुदवाई	(f) digging
खुदाई	(f) digging
खुभना	(intr) to be thrusted
खुर	(m) hoof
खुराक	(f) diet
खुलना	(intr) to open
खुलवाना	(trans) to have opened
खुला	(adj) opened
खुला हुआ	(adj) opened
खूब	plenty

खेचराधीशपुत्र (m) son of the king of Khechar
खेतिहर (adj) agrarian
खेतिहर चरागाह (m) agricultural meadow
खेतिहर मज़दूर (m) agricultural labor
खेती (f) cultivation
खेद (m) regret
खेल कूद (m) games
खेलना (trans) to play
खेवैया (m) boatman
खैरात (f) gift, donation
खोखला (adj) hollow
खोज (f) research, search
खोजना (trans) to search
खोदना (trans) to dig
खोना (trans) to lose
खोलना (trans) to open

ग

गंगा (f) Ganges
गंगा सिन्ध का मैदान (m) plains of Indus-Ganges Valley
गंधर्व (m) a demi god
गंभीर (m) Gandhar, a place
गंभीरता (adj) seriousness
गंभीरता पूर्वक seriously
गंवारू (adj) rustic, villager
गऊ (f) cow
गगन (m) sky
गज (m) elephant
गज़ (m) yard
गजरा (m) a flower-garland
गजवाजी (m) elephants and horses
गड़बड़ (f) mess, confusion
गड़बड़ी = गड़बड़
गड्ढा (m) ditch
गढ़ना (trans) to make, to form
गढ़ = गड्ढा
गण (m) republic
गणतन्त्र (m) republic
गणतन्त्रकाल (m) republican age
गणतन्त्र प्रणाली (f) republic system
गणतांत्रिक (adj) democratic
गणना (f) counting
गणराज्य (m) republic
गण्यमान (adj) prestigeous
गत (adj) past
गति (f) speed
गतिविधि (f) activity
गतिशीलता (f) mobility
गत्यंतर (m) way out, different movement
गत्यात्मक (adj) dynamic; horizontal
गद्दा (m) cushion
गद्दी (f) throne; pad
गन्धर्व नगर (m) city of Gandharvas

गन्ध	(f) smell
गन्धक	(m) sulphur
गन्ना	(m) sugar cane
गन्ना विकास समिति	(f) sugar cane development society
गब्बा	(m) stout, budding youth
गमन	(m) voyage, departure
गम्य	(m) goal, accessible
गया	(m) name of a place
गरद	(f) dirt
गरब	(m) pride
गरिमा	(f) dignity, honor
ग़रीब	(adj) poor
ग़रीबी	(f) poverty
गर्बा	(m) a folk dance of Gujrat
गर्भ	(m) womb
गर्भवास	(m) embryo abode
गर्भवती	(f) pregnant
गर्भस्थ	(adj) in the womb
गर्भाधान	(m) conception
गर्भाधान संस्कार	(m) ceremony performed at time of conception
गर्भिणी	(f) pregnant
गर्भिणी धर्म	(m) Dharma of a pregnant woman
गर्भित	(adj) pregnant, full
गर्व	(m) pride
गर्व पूर्वक	proudly
ग़लत	(adj) wrong
ग़लती	(f) mistake
गला	(m) throat
गलाना	(trans) to melt
गलित	(adj) rotten
गली	(f) street, alley
गवाह	(m) witness
गवेषणा	(f) research
गहन	(adj) deep
गहना	(m) ornament; (trans) to seize; (intr) to be in eclipse
गहरा	(adj) deep
गांधर्व	(adj) a kind of marriage
गांधार	(m) name of a place
गांधारी	(f) name of a caste
गांधी विचार	(m) Gandhian thought
गांव	(m) village
गांव के लोग	(m) villagers
गाथा	(f) verse, meter, ballad
गाथासप्तशती	(f) name of a book
गान	(m) a song, singing
गाना	(trans) to sing; (m) song
गार्भा	(adj) new, unopened
गाय	(f) cow
गायक	(m) singer
गायकी	(f) a musical mode
गायन	(m) song
गारी	(f) curse, rebuke, abuse

ग़लती

गार्हस्थ्य	(adj) household
गाली	(f) curse, rebuke, abuse
गिनना	(trans) to count
गिनवाना	(trans) to have count
गिनाना	(trans) to cause to count
गिरधर	(m) one of the names of Lord Krishna
गिरधारी	(m) one of the names of Lord Krishna
गिरना	(intr) to fall
गिरवी	(f) pawn
गिरा ग्राम्य	(f) village speech, sweet non-flowery language
गिराना	(trans) to drop
गिराव	(f) fall
गिलास	(m) glass
गीत	(m) song
गीत नृत्य	(m) song-dance
गीत पद्धति	(f) song style
गीत शैली	(f) song style
गीता	(f) Gita
गीतादि	Gita, etc.; songs, etc.
गीदड़	(m) jackal
गुंजाइश	(f) accomodation
गुंथना	(intr) to be plaited or braided
गुजर	(f) living
गुजराती	(adj) Gujrati
गुजरी	(f) a musical mode
गुट	(m) band, party
गुटबंदी	(f) party politics
गुटिकापात	(m) casting of lots
गुड़	(m) raw sugar, molasses
गुड़ धान	(m) raw sugar and rice
गुण	(m) quality
गुणक	(m) multiplier, co-efficient
गुणक प्रभाव	(m)
गुणगान	(m) praise, eulogy
गुणवान	(adj) meritorious
गुणाढ्य	(m) name of a poet
गुणात्मक	(adj) qualitative
गुन = गुण	
गुप्त	(adj) hidden; Gupta
गुप्तकाल	(m) Gupta period
गुप्तचर	(m) spy
गुफा	(f) cave
गुमाश्ता	(m) agent
गुरु	(m) teacher; heavy
गुरुजन	(m) teachers
गुरुभाव	(m) feeling (respect) for the teacher
गुरुशिष्य	(m) teacher-pupil
गुरु सेवा	(f) service of teacher
गुर्जर	(m) name of a caste
गुलाम	(m) slave
गूंजना	(intr) resound
गूंथना	(trans) to braid

गृध	(m) eagle
गृह	(m) house, home
गृह निर्माण	(m) house-building
गृहनिर्माण शिल्प	(m) architecture
गृहदेवता	(m) household god
गृहपति	(m) master of household
गृहस्थ	(m) household, householder
गृहस्थाश्रम	(m) state (period) of householder
गृहस्वामी	(m) master of household
गृहीत	(adj) taken
गृह्य	(adj) obtainable
गेहूं	(m) wheat
ग़ैर	else, un-
ग़ैर जरूरी	(adj) unnecessary
ग़ैर सरकारी	(adj) non-governmental, private
गोंड	(m) name of a tribe, Gond
गोंडी	(f) name of a language, belonging to the Gonds
गो	(f) cow; although
गोकुल	(m) name of a place
गोचारण	(m) tending of cows
गोदाम	(m) warehouse
गोपाल	(m) a name of Lord Krishna, cowherd
गोपिका	(f) milkmaid
गोपी	(m) cowherd
गोपी ग्वाल	(m) cowherd group
गोबर	(m) dung
गोरस	(m) milk, curd, butter
गोरा	(adj) fair skinned
गोरी	(f) beautiful
गोलमोल	(adj) unclear
गोला	(m) ball; coconut
गोलाछुआरा	(m) coconut and date palm
गोली	(f) bullet; pill
गोवर्धन	(m) name of a hill
गोविन्द	(m) Lord Krishna
गोविन्दस्वामी	(m) name of a poet
गोशाला	(f) cow pen, cattle shed
गोष्ठ	(m) cow pen, cattle shed
गोष्ठी	(f) assembly, meeting
गोहत्या	(f) cow slaughter
गोहन	(m) partner
गौ	(f) cow
गौड़	(m) a caste of Brahmans
गौड़ी	(m) a musical mode
गौण	(adj) secondary, inferior
गौणतया	secondarily
गौतम	(m) name of a saint-philosopher; Buddha
गौतमी	(f) wife of Gautama (Ahilya)
गौर	(m) deep thought, fair color
गौरव	(m) dignity, honor
गौरवपूर्ण	(adj) dignified, splendid

गौरी (m) a musical mode

ग्रंथ (m) book

ग्रह (m) star, planet

ग्रहण (m) eclipse; taking

ग्रहण करना (intr) to accept, to take, to hold

ग्रहोपग्रह (m) stars and satellites

ग्राम (m) gramme; village

ग्राम उत्पादन (m) production of a village

ग्राम गीत (m) village folksong

ग्रामदान (m) a movement in land reform by Vinoba Bhave

ग्राम पंचायत (f) village council

ग्राम मंडल (m) village block

ग्रामराज्य (m) village rule

ग्रामवासी (m) villager

ग्रामसंस्था (f) village institution

ग्राम समुदाय (m) village community

ग्राम सुधार (m) village reform

ग्राम सेवक (m) village level worker

ग्राम स्तरीय (adj) on a village level

ग्राम स्वराज्य (m) village self-rule

ग्रामीण (adj) villager, rural

ग्रामीण स्वास्थ्य (m) rural health

ग्राम्य (adj) rural

ग्रास (m) mouthful

ग्राह्य (adj) acceptable

ग्रीवा neck

ग्वार (m) a plant

घ

घंटा (m) hour

घट घट (m) every soul or body

घटक (m) unit

घटना (f) event; to happen

घटित (adj) happened event

घना (adj) thick, plenty

घनिष्ठ (adj) deep

घबराना (intr) to be frightened

घमासान (adj) fierce (fight)

घर (m) house, home

घरेलू (adj) domestic

घरेलू बाज़ार (m) domestic market

घसीटना (trans) to drag

घाट (m) pier, landing place, washerman's washing place

घाटा (m) loss

घाटी (f) valley

घात (m) blow

घानी (f) one batch of output of a mill

घायल (adj) wounded

घास (m) grass

घास चारा (m) grass and fodder

घिरना (intr) to be surrounded

घिसाई कोष (m) wear and tear

घी (m) refined butter

घी तेल	(m)	ghi and oil
घुड़सवार	(m)	horseman
घुमन्तू	(adj)	nomad
घूंघट पट	(m)	veil cloth
घूमना	(intr)	to turn around, to walk
घृणा	(f)	hate
घृणासूचक	(adj)	disgusting, abhorrent
घोंसला	(m)	nest
घोड़ा	(m)	horse
घोर	(adj)	horrible; dense
घोरतम		most dreadful
घोष	(m)	sound
घोषणा	(f)	proclamation, announcement
घौंसला	(m)	nest

च

चंचल	(adj)	fickle, restless
चंदन	(m)	sandlewood
चंदसखी	(m)	name of a poet
चंद्र	(m)	moon
चंद्रमा	(m)	moon
चकनाचूर	(adj)	shattered to pieces
चक्र	(m)	circle
चक्रवर्ती	(adj)	universal (king)
चट्टान	(f)	rock
चढ़ना	(intr)	to climb, to ascend
चढ़ाना	(trans)	to offer
चढ़ाव	(m)	rise
चढ़ावा	(m)	offerings made to a god
चण्डकौशिक	(m)	name of a sage
चतुर	(adj)	clever
चतुर्थ	(adj)	fourth
चतुर्थीकर्म	(m)	cremation ceremony
चतुष्पाद	(m)	four-footed
चना	(m)	gram,pea
चन्देरी		name of a place
चन्द्रप्रभाचरित	(m)	name of a book
चबाना	(trans)	to chew
चमक	(f)	glare, gleam
चमकना	(intr)	to shine
चमड़ा	(m)	leather
चमत्कार	(m)	miracle
चमार	(m)	shoe-maker caste
चम्पूकाव्य	(m)	work written in poetry and prose
चम्पूभारत	(m)	name of a book
चयन	(m)	selection
चरण= चरन	(m)	foot
चरम	(adj)	extreme
चरस	(f)	leather bucket
चरागाह	(m)	meadow
चराना	(trans)	to graze
चरित	(m)	life-account,character
चरित्र	(m)	character

चरित्र निर्माण (m) building of one's character

चरित्रबल (m) strength of character

चरु (m) oblational food

चर्चा (f) talk, discussion, report

चर्मोत्कर्ष (m) rise to highest point

चल (adj) movable, transient

चलचित्र (m) cinema, movie

चलना (intr) to walk, to function

चलाना (trans) to drive

चलनेयोग्य (adj) capable of running or walking

चलायमान (adj) fickle, unsteady,

चहरका (m) a kind of folksong

चांद (m) moon

चांदनी (f) moonlight

चांदी (f) silver

चांय चांय (f) nonsense, useless noise

चाकू (m) knife

चातुरी (f) cleverness

चातुर्वर्ण्य (m) pertaining to four Varnas

चादर (f) sheet, shawl

चार four

चारा (m) fodder

चारुता (f) beauty

चारुदत्त (m) name of a hero

चारुदत्तनाटक (m) name of a play

चालकशक्ति (f) motive power

चालित (adj) run (by)

चालुक्य (m) name of a lineage

चालुक्यराज (m) Chalukya emperor

चालूकरना (trans) to start

चाव (m) affection, hobby

चावल (m) rice

चाहत (f) longing, desire

चाहना (trans) to wish

चाहिये needed

चाहे even if, no matter

चिंतक (m) thinker

चिंतन (m) thinking

चिंतनीय (adj) worrysome

चिंता (f) worry

चिकनाई (f) grease

चिकित्सा (f) treatment

चित्त (m) heart, mind

चित्र (m) picture, painting

चित्रकर्म (m) painting, photograph

चित्रकार (m) painter

चित्रकूट (m) name of a place

चित्रण (m) description

चिनगारी (f) flame

चिन्तनधारा (f) chain of thought

चिन्तानधारा (f) chain of thought

चिन्ह (m) sign

चिर	(adj) long time
चिरकाल	(m) long time, eternal
चिल्लाना	(trans) to shout
चिह्न = चिन्ह	
चीज़	(f) thing
चीनी	(f) sugar; (m) Chinese; (adj) China (vessel)
चीनी मिल	(m) sugar mill
चीर	(m) garb, cloth
चुकाना	(trans) to pay
चुगलखोर	(m) backbiter
चुनना	(intr) to select, elect
चुनरी	(f) shawl worn by a female
चुनाव	(m) election, selection
चुनाव समिति	(f) election committee
चुनौती	(f) challenge
चुस्त	(adj) sharp, alert
चूंकि	because
चूकना	(trans) to miss
चूड़ाकर्म	(m) tonsure ceremony
चूरी चोकड़	(m) husk, chaff
चूसना	(trans) to suck
चूचक	(f) small pox
चेतन	(adj) conscious, animate
चेतन शक्ति	(f) energy; consciouness
चेतना	(f) consciousness
चेतावनी	(f) warning
चेष्टा	(f) effort, desire
चेष्टा करना	(trans) to strive after
चेहरा	(m) face
चैतन्य	(m) name of a saint, animate, conscious
चैतन्य चरितामृत	(m) name of book
चैती	(adj) a musical mode
चोट	(f) blow
चोट लगना	(intr) to get hurt
चोटी	(f) peak; pigtail
चोर	(m) thief
चोरी	(f) theft
चौंकना	(intr) to startle
चौक	(m) square
चौकरी	(f) stool
चौखम्भा राज्य	(m) empire
चौड़ा	(adj) wide
चौताल	(f) four beats, a kind of rhythem
चौथाई	(adj) one fourth
चौबीस	twenty four
च्यवन	(m) name of a saint
च्युत	(adj) fallen

छ

छंद	(m) meter
छंदशास्त्र	(m) science of meter
छः	six
छक्का	(m) group of six

छटकना	(intr) to be scattered
छटा	(f) beauty, splendor
छठी	(f) ceremony performed on the sixth day after childbirth
छत्तीसौ	thirty six hundred
छत्र	(m) parasol, umbrella
छदाम	(m) ¼ pice
छन छन	(m) every moment
छनना	(intr) to be filtered; to be intimate
छन्दबद्द	metrical
छन्दशास्त्रसम्मत	(adj) according to metrics
छन्दोविधान	(m) metric system
छवि	(f) brillance, beauty
छहियां	(f) shade
छह	six
छांड़ना	(trans) to abandon
छांक	(f) solace
छाती	(f) breast, chest
छान बीन	(f) scrutiny, search
छाना	(trans) to be overspread
छाप	(f) imprint
छापा	(m) raid
छाया	(f) shade, shadow
छायानत	(m) a folk music mode
छावनी	(f) army camp, cantonment
छिछोरापन	(m) shallowness (of character)
छिटकाना	(trans) to scatter
छिड़कना	(trans) to sprinkle
छिद्र	(m) hole
छिद्रयुक्त	(adj) full of holes, defective
छिन्न	(adj) cut
छिन्न मिन्न	(adj) broken, destroyed
छिपना	(intr) to hide
छींकना	(intr) to sneeze
छींट	(f) calico, water-drop
छीनना	(trans) to take away
छुआछूत	(f) defilement
छुआछूत सम्बन्धी	(adj) pertaining to defilement
छुटकारा पाना	(intr) to get rid of
छुटपुट	(f) rare, here and there
छुड़ाना	(trans) to release
छुहारा	(m) palm date
छूट	(f) exemption, rebate
छूरना	(intr) to perform tonsure ceremony
छेकना	(trans) to pierce; to check
छोटा	(adj) little, small, young
छोटा बडा	little and big, young and old
छोटामोटा	(adj) ordinary, insignificant
छोटे से छोटा	smallest
छोड़न्तर	leaving aside, besides
छोड़ना	(trans) to leave

ज

जंगल	(m) jungle, forest, fi fields

जंगली	(adj) wild
जंगलीपन	(m) savagery
जंघा	(f) thigh
जगत	(m) universe
जगह	(f) place
जगाना	(trans) to waken
जघन्य	(adj) abominable
जटिल	(adj) arduous
जड़	(adj) rigid, immovable; (f) root
जड़काटना	(trans) to harm, destroy
जड़ता	(f) rigidity, idiocy
जड़पदार्थ	(m) inanimate object
जड़वाद	(m) idiocy
जतन	(m) effort
जन	(m) person, human, people
जन आन्दोलन	(m) mass movement
जनजाति	(f) human race, people
जनजीवन	(m) human life, life of people
जनतन्त्र	(m) democracy
जनतांत्रिक	(adj) democratic
जनता	(f) public
जननि = जननी	(f) mother
जनपद	(m) district, county
जनमंडली	(f) folk troupe
जनमत	(m) public opinion
जनरीति	(f) people's custom, folk customs
जनवरी	(f) January
जनशक्ति	(f) people's power
जनसंख्या	(f) population
जनसंपर्क	(m) public relation
जनसंस्कृति	(f) folk culture
जनसमुदाय	(m) masses
जनसहयोग	(m) public support
जनसाधारण	(m) general public
जनसामान्य	(m) general public
जनस्वास्थ्य	(m) public health
जनित	(adj) born, produced
जनेऊ	(m) sacred thread; ceremony of sacred thread
जन्म	(m) birth
जन्मस्थान	(m) birthplace
जन्मोत्सव	(m) celebration of birth
जप	(m) muttering prayers as religious sacrifice
जपतप	(m) worship and penance
जब	when
जबकि	when
जबतक	as long
जबरदस्ती	(f) by force
जमघट	(m) congregation
जमना	(intr) to freeze
जमनियाबाग	(m) name of a place
जमा	(m) credit
जमा करना	(trans) to hoard, to save, to deposit

जमाना	(trans) to freeze, to set
ज़माना	(m) time, world
जमाव	(m) gathering
जमींदार	(m) landlord, Zamindar
जमींदारी प्रथा	(f) Zamindari system
जमीन	(f) land, earth
जमीन आसमान	(m) earth and sky
जय	(f) victory
जयजयकार	(m) victory cheers
जयन्त	(m) victorious, name of a king
जयन्तविजय	(f) name of a book
ज़रूर	certainly, for sure
ज़रूरत	(f) necessity
जर्जर	(adj) tattered, ramshackly
जल	(m) water
जलतल	(m) water surface
जलधि	(m) ocean
जलन	(f) burn
जलना	(intr) to burn
जलमय	(adj) full of water, flooded
जलमय होना	to be full of water
जल वायु	(f) climate
जलविद्युत	(f) hydro-electric
जलाना	(trans) to burn
जलेबी	(f) name of a candy
जल्दी	soon
जल्दी से जल्दी	as soon as possible
जसुदा	= यशोदा
जसुमति	(f) mother of Lord Krishna
जसोमति	(f) mother of Lord Krishna
ज़हर	(m) poison
जहां	where
जहाज़	(m) ship
जहाजनिर्माण	(m) ship building
जहाजरानी	(f) navigation
जांच	(f) test, investigation
जांच पड़ताल	(f) investigation
जांत पांत	= जांति पांति
जागना	(intr) to wake up
जागरूक	(adj) alert
जागृत	(adj) awaken
जाट	(m) name of peasant caste
जाड़ा	(m) winter
जात	(adj) born; (f) caste
जातक	(m) Jataka
जातककथा	(f) Jataka tales
जातकर्म	(m) birth ceremony
जाति	(f) musical mode, set, race, caste
जातिप्रथा	(f) caste system
जातिबद्ध	(adj) caste bound
जातिविहीन	(adj) casteless
जातिव्यवस्था	(f) caste system

जादू	(m) magic
जादूटोना	(m) sorcery, witchcraft
जानकार	(adj) knowledgeable
जानकारी	(f) knowledge; aquaintance
जानकी	(f) Sita
जानना	(trans) to know
जान पड़ना	(intr) to seem
जानपद	(adj) rural, district, divisional
जानबूझकर	intentionally
जानवर	(m) animal
जाना	(intr) to go
जामाता	(m) son-in-law
जायदाद	(f) property
जाया	(f) wife; (trans) gave birth
जारी	(adj) continuous
जारी करना	(trans) to start
जारी रखना	(trans) to continue
जारी होना	(intr) to start
जाल	(m) net
जाहिर होना	(intr) to be apparent
जिक्र	(m) mention, reference
जिज्ञासा	(f) curiosity
जितना	as much
जिम्मेदारी	(f) responsibility
जिय	(m) heart, soul
ज़िरह	(f) argumenht, pleading, cross-examination
ज़िरह करना	(trans) to plead (a case)
ज़िला	(m) district
जिलाना	(trans) to make alive
जिला स्तरीय उत्पादन	(m) district level producti
जिल्द	(f) volume
जिवाना = जिलाना	
जिसका	whose
जिसमें	in whom
जिससे	by whom
जीत	(f) victory
जीतना	(trans) to win
जीमूतकेतु	(m) name of person
जीव	(m) animate
जीवजगत्	(m) animate world
जीवजन्तु	(m) subhuman animals
जीवनदान	(m) life-donation
जीवनदायक	(m) life-giver
जीवनदृष्टि	(f) life's point of view
जीवनधारा	(f) life-stream
जीवन प्रकार	(m) way of life
जीवन मार्ग	(m) path of life
जीवन यात्रा	(f) journey of life
जीवन यापन	(m) livlihood
जीवन रक्षा	(f) life-protection
जीवन विकास	(m) life-growth, life-evolution

जीवन व्यापार	(m) business of life, living
जीवनशक्ति	(f) strength of life
जीवनसंघर्ष	(m) struggle of life
जीवनसाथी	(m) life companion
जीवनस्तर	(m) standard of living
जीवन्त	(adj) living, live
जीविका	(f) livlihood
जीविकोपार्जन	(m) earning a livlihood
जीवित	(adj) live
जुटाना	(trans) to gather, provide
जुड़ना	(intr) to be gathered, united or joined
जुताई	(f) ploughing
जुत्थ	(m) herd, band
जुरना	(intr) to be joined, united
जुर्माना	(m) fine
जुलाहा	(m) weaver
जुलूस	(m) procession
जुवति	(f) young lady
जू	sir, lord
जूझ	(f) quarrel, battle
जूझना	(trans) to engage in battle
जूता	(m) shoe
जेइ = जेउ	
जेठ	(adj) elder, elder brother of husband; name of a month
जेठरा = जेठा	elder
जेवर	(m) ornament
जैन	(m) Jain religion
जैविक	(adj) physical, biological
जैसा	as, like
जैसाकुछ	whatever
जैसे	as, such as
जैसे जैसे	as
जो	what, which, who
जो कुई	whoever
जोग	(m) worthy
जोगिया	(m) a folk music mode
जोड़ना	(trans) to add, to unite
जोड़ा	(adj) couple
जोड़ा जाना	(intr) to be added, or united
जोतना	(trans) to plough
जोर	(m) strength
जोरदेना	(trans) to press
जोश	(m) excitement
जौं	(f) barley
जौनपुरी	from Jaunpur
जौ पै	if
ज्ञात	(adj) known
ज्ञात करना	(trans) to find out
ज्ञात होना	(intr) to be known
ज्ञाता	(adj) one who knows, wise
ज्ञान	(m) knowledge
ज्ञानत:	knowingly

ज्ञानेश्वरी	(f) name of a book
ज्यादा	much, more
ज्यादा से ज्यादा	most
ज्यष्ठ	(adj) elder, elder brother of husband, name of month
ज्यैष्ठ्य	(m) seniority, elderliness
ज्यों	as
ज्यों ज्यों	as much, in which order
ज्यों ही	as soon as
ज्योति	(f) flame, light, splendor
ज्योनार	(f) musical mode
ज्वलंत	(adj) shining, blazing
ज्वलन	(m) shine, blaze
ज्वार	(f) millet

झ

झंगुली	(f) loose garment of a baby
झंडा	(f) flag
झगड़ना	to quarrel
झगड़ा	(m) quarrel
झड़ी	(f) continued rainfall
झरना	(m) water-fall
झलक	(f) glimpse
झाड़	(m) shrub, brush
झाड़झानूस	(m) chandlier
झिंझोटी	(f) a kind of song
झिझक	(f) hesitation
झींना	(adj) very fine, thin

झुण्ड	(m) flock, group, band
झुकाव	(m) bent, tendency
झुलाना	(trans) to swing
झूठ	(m) lie, falsehood
झूठा	(adj) lying, false
झूमका	(m) a kind of earring, a kind of song
झूलना	(intr) to swing; (m) swing
झूला	(m) swing

ट

टंकारी	(m) a musical mode in Kanga Valley
टंगना	(intr) to be hanged
टकराना	(intr) to collide, to bump
टका	(m) a brass coin worth half anna
टक्क	(f) name of a people, name of a musical mode
टट्टी	(f) fence, latrine, excrement
टन्	(m) tinkling sound
टप्पा	(m) a kind of Panjabi song
टलना	(intr) to be postponed, to go away
टालना	(trans) to postpone, to ward off
टिकना	(intr) to stay
टिप्पणी	(f) comment, commentary
टीका	(f) commentary remark
टीकाकार	(m) commentator
टीका टिप्पणी	(f) commentary, remark, criticism
टुकड़ा	(m) piece, bit
टुकड़े टुकड़े करना	to cut into pieces

टुकड़े टुकड़े होना	to be chopped to pieces
टुड्डी	(f) chin
टूटना	(intr) to break
टोंक	(m) name of a musical mode
टोडी	(m) name of a musical mode
टोड़ा	(m) Toda, name of a tribe
टोपी	(f) cap
टोली	(f) troup, group

ठ

ठंडा	(adj) cold
ठग	(m) deceiver, thug
ठगोरी	(f) deceiver
ठठेरा	(m) brass-vessel maker
ठहरना	(intr) to wait, to stay
ठाकुर	(m) an honorific term for a man of Ksatriya caste, master
ठाकुरी	(f) mastery, a ruling family
ठामज्ये	(intr) stay
ठीक	(adj) right, correct
ठीक-ठीक	correctly
ठुमरी	(f) name of a musical mode
ठेका	(m) contract
ठेकेदार	(m) contractor
ठोस	(adj) solid

ड

डकार	(f) burp
डटना	(intr) to stand or stay firmly
डर	(m) fear
डरना	(intr) to fear
डरपोक	(adj) coward
डांटना	to scold, rebuke
डाकू	(m) robber
डालना	(trans) to cast, to pour, to drop
डिम	(m) a kind of drama
डींग	(f) boasting
डींगमारना	(trans) to boast
डूबना	(intr) to sink
डेरा	(m) camping site
डेराडालना	(trans) to camp
डोम्बिका	(f) a kind of drama
डोर,डोरी	(f) string
डोलना	(intr) to shake, to move, to wander

ढ

ढंग	(m) way, style, manner
ढकना	(trans) to cover; (m) cover, lid
ढहना	(intr) to crumble down
ढांचा	(m) structure, outline, skeleton
ढाई	two and a half
ढाल	(f) shield; slope
ढालना	(trans) to mint; to pour
ढीला	(adj) loose
ढूंढना	(trans) to search for
ढेंचा	(m) a crop

ढेला	(m) paddle
ढोंग	(m) hypocrisy
ढोलक	(f) drum

त

तंतु	(m) string
तंतुवाद्य	(m) string instrument
तंत्र	(m) instrument, tool, government, mystic formula
तक	even; upto, until
तकनीक	(f) technioue, technology
तकनीकी	(adj) technological
तकनीकी शास्त्र	(m) technology
तक्षशिला	(m) name of a place
तटस्थ	(adj) non- alignednt, neutral, indifference
तत्काल	right away
तत्कालीन	contemporary, of that time
तत्तत्	that and that
तत्पयार्थि	for that reason
तत्व	(m) element, essence
तत्वचिंतक	(m) philosopher, thinker
तत्वज्ञान	(m) metaphysical or divine knowledge
तत्वदर्शन	(m) philosophy or realization of truth
तत्सम	(adj;m) unaltered Sanskrit word used in vernaculars
तत्सम्बन्धी	(adj) related to that
तथा	and, so
तथाकथित	(adj) so called
तथापि	even so, yet
तथ्य	(m) fact
तदनंतर	afterwards
तदनुसार	accordingly
तदुपरांत	afterwards
तद्भव	(adj;m) Sanskrit word used in changed form
तन	(m) body
तनाव	(m) tension
तनिक	little
तनिक भी नहीं	not at all
तप	(m) penance; heat
तपश्चर्या	(f) penance
तपस्या	(f) penance
तपस्विदर्शन	(m) seeing an ascetic
तपस्वी	(m) ascetic, hermit
तपस्वी रूप	(m) form of ascetic
तपोनिष्ठ	(m) saint, hermit; absorbed in penance
तप्तीसंवरण	(m) containing heat
तब	then
तब तक	until then
तबला	(m) Tabalā drum
तभी	right then
तमाम	all
तमिल	(f) Tamil language
तय	agreed, decided
तय करना	to decide, to settle
तय होना	to be decided

तरक्की	(f) progress
तरक्की करना	to progress
तरंग	(f) wave
तरह	way, kind, type
तरहतरह का	of various kinds
तरह तरह से	in many ways
तरी	(f) green fodder, moisture
तरीका	(m) way
तर्क	(m) logic
तर्क बुद्धि	(f) logical intellect
तर्कसंगत	(adj) logical
तर्पण	(m) libation of water to the manes or ancestors, offering
तल	(m) surface
तलछट	(m) scum
तलवार	(f) sword
तलहटी	(f) valley
तलाश	(f) search
तलाश करना	to search
तली	(f) bottom
तस्वीर	(f) picture
तहसील	(f) sub-division of district
तांबा	(m) bronze
ताकि	so that
ताजा	(adj) fresh
तातोई	(adj) hot, fresh
तात्कालिक	(adj) immediate
तात्पर्य	(m) sense, meaning
तात्विक	(adj) essential, real
तादात्म्य	(m) identity
तादात्म्य करना	to unite, to identify, to be absorbed
तादृश	(adj) similar
तादृशी	(adj;f) similar, identical
तानकेसरी	name of a musical mode
तानपूरा	(m) Tambura, a musical instrument
ताना	(m) taunt; wrap, loom
तानाशाही	(f) dictatorship
ताप	(m) temperature
तामिल	(f) Tamil language
तामें = उसमें	
तार	(m) wire, telegram, thread
तारतम्य	(m) rhythmm, gradation
तारता	(f) pitch
तारा	(m) star
तारापीड	(m) name of character in Kadambari
ताल	(m) rhythmm
तालबद्धता	rhythmm-pattern
तालाब	(m) pond, tank
तिजारत	(f) trade, business
तितर बितर	scattered
तितर बितर होना	to disperse
तिथि	(f) date
तिनका	their; (m) straw

तिब्बती चीनी	(adj) Sino-Tibetan
तिरस्कृत	(adj) neglected
तिरिया	(f) woman
तिरोहित	(adj) disappeared
तिरोहित होना	to disappear
तिल	(m) sesamum seed; mole
तिलांजलि	oblation to the dead with sesamum seed and water
तिलांजलि देना	(trans) to renounce, to say goodbye forever
तीक्ष्ण	(adj) sharp
तीक्ष्ण करना	(trans) to sharpen
तीन तीन	three by three
तीर्थयात्रा	(f) pilgrimage
तीर्थयात्री	(m) pilgrim
तीर्थवास	(m) living at a holy place of pilgrimage
तीव्र	(adj) fast, sharp, keen
तीव्रतर	faster, sharper
तीस चालीस	thirty to forty
तीसरा	third
तुम	you
तुम्हारा	your
तुम्हें	to you
तुरंग	(m) horse
तुर्क	Turk
तुरीय	(adj) Quaternary
तुलना	(f) comparison
तुलना करना	to compare
तुलनात्मक	comparative
तुलसी - तुलसीदास	name of a Hindi poet saint
तुल्लू	(f) name of a valley
तुल्य	like
तुष्टि	(f) satisfaction
तृण	(m) blade of grass, straw
तृणावर्त वध	(m) killing of Trinavart
तृतीय	third
तृष्णा	(f) thirst, craving
तेज	(adj) fast, sharp
तेज़ाब	(m) acid
तेल	(m) oil
तेलगू	(f) Telugu language
तेली	(m) oil man
तैंतालिस = तैंतालीस	forty-seven
तैत्तिरीय	(m) name of Brahmana (Vedic book)
तैयार	(adj) ready
तैयारी	(f) preparation
तैयारी करना	to prepare
तैरना	(intr) to swim, float
तो	then, emphatic word
तोड़ना	(trans) to break
तोड़ी	(m) name of musical mode
तोतला	(m) stutterer
तोप	(f) gun, cannon
तोपदान	(m) place to keep artillery

तोरण	(m) arched gateway
तोहि	to you
तौर	(m) manner, mode, way
तौरतरीका	(m) manners, etiquette
त्याग	(m) sacrifice
त्यागी	(m) name of a caste
त्यागी गांव	(m) Tyagi village, where Tyagi caste in majority
त्यों	so like, in the same way
त्यों त्यों	in the same way
त्यौहार	(m) festival
त्राण	(m) security, protection, liberation
त्रिखंड काल	(m) Cambrian age
त्रिजटा	(f) a female character in Ramayaṇa
त्रिपिटक	(three baskets) name of Buddhist canons
त्रिभुज	triangle
त्रीटक	(m) a type of drama
त्वरक	swift
त्वरा	(f) speed, haste

थ

थकना	(intr) to be tired
थकान	(f) fatigue, weariness
थाती	(f) heritage, legacy, trust
थान	(m) place; long piece of cloth
थाली	(f) brass plate
थाली कटोरा	(m) brass plate and bowl
थोक	(adj) retail
थोक भंडार	(m) retail store
थोड़ा	(adj) a little
थोड़ा बहुत	(adj) more or less
थोड़ा सा	(adj) a little
थोड़े से	(adj) a few

द

दंड	(m) punishment
दंड देना	to punish
दंडकारण्य	(m) Dandaka forest
दंडित	(adj) punished
दंभ	(m) arrogance, pride
दक्ष	(adj) expert
दक्षिण	(m) south; right (hand, etc.)
दक्षिण पूर्व	(m) southeast
दक्षिण बाहु स्पन्दन	(m) throbbing of the right arm
दक्षिण श्रोत्रहीन	(adj) without right ear
दक्षिणा	(f) renumeration, religious donation
दण्ड = दंड	(m) punishment; staff
दण्डधारण करना	to assume authority, to hold a staff
दण्डनीय	(adj) punishable
दण्डित = दंडित	
दत्तक	(adj) adopted (son)
दत्तकपुत्र	(m) adopted son
दधि	(f) curd
दधिगोरोचन दूब	(m) curd. cattle-bile-ointment and panic grass

दधि दूब	(m) curd and bent grass
दधि मिश्रित	(adj) mixed with curd
दबाना	to suppress, to press
दबाव	(m) pressure
दबाव डालना	to apply pressure
दमयन्ती	(f) name of a queen
दम्पति =दंपति	couple
दम्पती	(m) couple
दयनीय	(adj) pitiable
दया	(f) pity, mercy, compassion
दयावान	(adj) kind
दर	(f) rate; (m) door, gate
दरअसल	in fact
दरपन	(m) mirror
दरबार	(m) durbar, court
दरबारी	(m) courtier
दरवाजा	(m) door, gate
दरस	(m) view, seeing
दरिद्र	(adj) poor
दरिद्रता	(f) poverty
दरी	(f) carpet
दर्जन	(adj) dozen
दर्जी	(m) traitor
दर्प	(m) pride, anger, arrogance
दर्पण	(m) mirror
दर्पोक्ति	(f) arrogant utterance
दर्रा	(m) mountain pass
दर्शनीय	(adj) worth seeing
दल	(m) group, party
दलदल	(f) swamp
दलपति	(m) party-leader
दलप्रथा	(f) party system
दलबंदी	(f) factionalism
दलाल	(m) broker
दलीय	(adj) party
दलील	(f) arguement, plea
दवा	(f) medicine
दशरथ	(m) father of Lord Rama
दशम	ten, tenth
दशा	(f) condition
दशाब्दि	(f) decade
दस	ten
दस्तकार	(m) artisan
दहकना	(intr) to burn
दहाना	(m) delta, mouth of a river
दही	(f) curd
दांत	(m) tooth
दांपत्य	(adj) maritall
दांवपेंच	(m) stratigem, trick
दा	skt. root, to give
दाता	(m) donor
दादरा	(m) a kind of raga

दादा	(m) father's father, elder brother
दान	(m) donation, gift
दाना	(m) grain; wise
दाय	(m) inheritance
दायरा	(m) circle
दायविभाग	(m) division of inheritance
दायस्वरूप	as inheritance
दायित्व	(m) responsibility
दारिद्र्य	(m) poverty
दार्शनिक	(m) philosopher, philosophical
दाल	(f) pulse; lentils
दावत	(f) feast, banquet
दासता	(f) slavery, dependence
दासी	(f) servant, slave
दाह	(m) cremation, burning
दाहकता	(f) heat, burning
दाहसंस्कार	(m) cremation ceremony
दिक्कत	(f) obstacle, difficulty
दिखलाना	(trans) to show
दिखाऊ	(adj) show-piece, presentable
दिखावा	(m) show, pretense
दिग्विजय	(f) world conquest
दिन	(m) day
दिमाग	(m) mind
दिलचस्पी	(f) interesting
दिलाना	(trans) to make give
दिवोदास	(m) name of a king
दिव्य	(adj) divine, heavenly
दिशा	(f) direction
दीखना	(intr) to be seen
दीज्ये	'give'. (imp)
दीन	(adj) poor
दीर्घकाल	(m) long time
दीर्घकालीन	(adj) aged
दीर्घायु	(f) long-age; (adj) long-aged
दीवान	(m) royal court; book of poems
दीवार	(f) wall
दु:ख	(m) suffering, pain
दु:कष्ट	(m) suffering
दु:खद	(adj) painful
दु:खिया	(adj,f) unhappy
दु:खीजन	(m) unhappy person
दु:स्वप्न	(m) bad dream
दुख	etc. =दु:ख
दुखांत	(adj) tragic
दुगुना	(adj) twice
दुधारू	(adj) milch, giving milk
दुनिया	(f) world
दुबारा	second time, again
दुराग्रह	(m) obstinacy, prejudice
दुरूह	(adj) difficult
दुर्ग	(m) fort

दुर्गन्ध	(f) bad smell
दुर्गा	(f) goddess Durga
दुर्दशा	(f) sad condition
दुर्धर्ष	(adj) difficult
दुर्बल	(adj) weak
दुर्बल बनाना	(trans) to weaken
दुर्बोध	(adj) hard to grasp
दुर्भाग्य	(m) misfortune
दुर्भाग्यपूर्ण	(adj) unfortunate
दुर्भाग्यवश	unfortunately
दुर्मल्लिका	(f) a kind of drama
दुर्योधन	(m) name of a king in the Mahabharata
दुर्लभ	(adj) hard to get
दुर्व्यवहार	(m) ill treatment
दुलहन	(f) bride
दुलहा	(m) bridegroom
दुविधा	(f) dilemma
दुश्मन	(m) enemy
दुष्ट	(adj) cruel
दुष्टता	(f) cruelty
दुष्यंत	(m) hero of one of the plays of Kalidasa
दुहरा	(adj) two-fold
दूत	(m) messenger, envoy
दूतावास	(m) embassy
दूध	(m) milk
दूध दही	(m) milk and curd
दूर	far
दूरदृष्टि	for sight
दूरवर्ती	(adj) distant
दूरव्यापी	(adj) widely expanded
दूरी	(f) distance
दूल्हा	(m) bridegroom
दूषित	(adj) contaminated
दूषित करना	(trans) to contaminate
दूषित होना	to be contaminated
दूसरा	(adj) second; other
दूहो = दोहा	(m) couplet; name of a meter
दृढ़	(adj) firm, solid
दृढ़तर	firmer
दृढ़ता	firmness
दृढ़ता पूर्वक	firmly
दृश्य	(m) scene
दृष्टव्य	(adj) worth seeing
दृष्टांत	(m) parable
दृष्टि	(f) view
दृष्टिकोण	(m) point of view
दृष्टिगत होना	to come to sight
दृष्टिगोचर होना	to come to sight
दृष्टिपात करना	to examine
दृष्टिसंधि	(f) corner of the eye
दृष्टि से	from the point of
देखना	(trans) to see, to look at

देखभाल	(f) care, looking after
देखभाल करना	to take care
देदीप्यमान	(adj) radiant, bright
देन	(f) gift, giving
देना	to give
देय	(adj) to be given
देर = देरी	(f) delay
देव	(m) god
देवगण	(m) gods
देवता = देव	
देवतातुल्य = देवतुल्य	god-like
देवत्व	(m) godliness, divinity
देवप्रतिमा	(f) god-idol
देवमंदिर	(m) god's temple
देवासुर संघर्ष	(m) struggle between gods and demons
देवी	(f) goddess
देवी-देवता	gods and goddesses
देश	name of a musical mode, country
देशनिकाला	(m) exile
देशभक्त	(m) patriotic
देशवासी	(m) native person
देशव्यापी	(adj) extending throughout the country
देशाख्य	(m) name of a musical mode
देशान्तर	(m) longitude
देशी	(m) native, local
देशी भाषा	(f) native language
देशीय	(adj) provincial
देशी हल	(m) native wooden plough
देहली	(f) Delhi
देहात	(m) village, countryside
देहाती	(adj) villager, country
देहात्मवाद	(m) doctrine asserting that the soul is the body (materialism)
देहान्त	(m) death
देहौं	(I) give
दैत्य	(m) demon
दैनंदिन	(adj) daily
दैनिक	(adj) daily
दैनिक जीवन	(m) daily life
दैन्य	(m) poverty, misery
दैन्य पीड़ित	poverty-stricken
दैव	a kind of marriage
दैव वात	name of a king
दैवी	(adj) divine
दैवी इच्छा	(f) divine will
दैहिक	(adj) physical, bodily
दैहिकी	(f) physiology
दो	two
दोनों	both
दोरी दोरी	running
दोष	(m) defect, fault

दोहरा (adj) two-fold; dohā meter

दोहराना to repeat

दोहा (m) name of meter

दौड़ (f) race

दौड़धूप करना to try hard

दौड़ना (intr) to run

दौरान (में) during

दौहित्र (m) daughter's son

द्योतक (adj) indicator

द्यौ (m) heaven, sky

द्रविड़ (adj) Dravid; Deccan

द्रविड़ क्षेत्र (m) Dravidian area

द्रविड़ परिवार (m) Dravidian language family

द्रष्टा (m) viewer

द्रुत (adj) fast

द्रुतलय (f) fast time

द्रोणास (m) name of a supernatural power

द्वंद्व (m) pain, duel, a kind of democracy

द्वंद्वात्मक (adj) duelist, dialectical

द्वार (m) door

द्वारा by

द्विज (m) twice born

द्वितीय (adj) second

द्विदल धान्य (m) bipetalled grain

द्वेष (m) malice, hatred

द्वै two, both

द्वैक one or two, some

द्वैत (m) duality

द्वैध (adv) in two different ways

द्वैधी भाव (m) dualism, diplomacy of being friendly with one nation and fighting another

द्वैराज्य (m) country ruled by two kings

ध

धंधा (m) job

धक्का (m) push, jolt, shock

धक्का लगना to be pushed, to be shocked, to suffer

धड़ (m) trunk (of body)

धनंजय (m) a name of Arjuna

धन (m) wealth

धन धान्य (m) riches

धनधान्यपूर्ण (adj) wealthy

धनवाद (m) capitalism

धनवान (adj) rich

धनसम्पत्ति (f) riches

धनाश्री (m) name of a musical mode

धनिक (adj) rich

धनि धनि bravo! how fortunate!

धनी (adj) rich

धनी मानी (adj) rich and esteemed

धनुर्भंग (m) breaking of a bow

धनुष (m) bow

धन्य (adj) blessed, fortunate

धंन्यवाद (m) thanks

धमाल = धम्मार name of a musical mode

धम्मारी name of a musical mode

धम्माल = धमाल

धरती (f) earth, ground

धरना (intr) to place; picket

धरनी (f) earth; persistence

धरातल (m) surface

धर्म (m) religion, duty, merit

धर्मग्रन्थ (m) religious book

धर्मज्ञ (adj) conversant in religion

धर्मतन्त्र (m) theocracy

धर्म निरपेक्ष (adj) secular

धर्मपत्नी (f) lawful wife

धर्मपरक (adj) religious

धर्मपूर्वक (adv) religiously

धर्म प्रवृत्ति (f) religious tendency

धर्म भूमि (f) religious land

धर्मभ्रष्ट (adj) fallen from duty, defiled, outcaste

धर्म मर्यादा (f) religious property of conduct

धर्म युद्ध (m) holy war, just war

धर्म शास्त्र (m) religious writ

धर्म सम्बन्धी (adj) religious

धर्म सूत्र (m) name of a Jain religious book

धर्मा त्मा (adj) virtuous, pious

धर्मा नुकूल (adj) according to the Dharma, dutiful, correct

धर्मोन्मुख (adj) religious

धर्मोपदेश (m) religious preaching

धाउ (m) a kind of dance

धातु (m) metal, root, part of a song

धान्य (m) grain, paddy

धाम (m) place

धारण करना to hold, to take, to put on

धारणा (f) conviction; entity; resolution

धारा (f) stream; legal clause

धार्मिक (adj) religious

धीमा (adj) slow

धीमे धीमे slowly, gradually

धीरे slowly

धीरे धीरे slowly, gradually

धुंआं (m) smoke

धुन (f) tune; fad

धुरंधर (adj) prominent; expert

धुरा (m) axis

धूनी (f) incense; fire to do penance by

धूप (f) sunshine

धूमदर्शन (m) seeing smoke

धूमिल (adj) cloudy, misty

धूलि (f) dust, dire

धूलिकण (m) dust - atom

धृष्टता (f) impertinence

धैवत (m) the sixth note of the gamut

धैवती	(f) name of a caste
धोखा	(m) deceit; doubt, delusion
धोखा देना	to deceive, to cheat
धोखा होना	to be cheated, fooled
धोबी	(m) washerman
ध्यान	(m) meditation, attention
ध्येय	(m) aim, goal
ध्रुपद	(m) name of a musical mode
ध्वज	(m) flag
ध्वजा	(f) flag
ध्वजाहृत	(adj) plundered on battle field
ध्वनि	(f) sound
ध्वनिपरिवर्तन	(m) change in sound
ध्वनित	sounded, roared
ध्वन्या लोक	name of a book on poetics

न

न	no, not
नंगा	(adj) naked
नंददास	(m) name of a Hindi poet
नंदनंदन	(m) son of Nand, Krishna
नई	(f) new
नईनीति	(f) New Deal
नकद	(m) cash
नकद ऋण	(m) cash debt
नकल	(f) copy, imitation
नकल करना	to imitate
नकली	(adj) fake, artificial
नकारात्मक	(adj) negative
नकुल	(m) mongoose; fourth son of Pandu
नक्षत्र	(m) star, constellation
नक्षत्रदेव	(m) star god
नगण्य	(adj) unimportant
नगर	(m) city
नगरी	(f) small city
नगरीय	(adj) city's, urban
नगला	(m) name of a place
नग्न	(adj) naked
नजदीक	close
नजर	(f) sight
नजरअंदाज करना	to overlook
नजरआना	to come to sight
नटराज	(m) lord of dance
नटवर	(m) good actor, dancer, Krishna
नतीजा	(m) result
नतीजा निकालना	to conclude, to draw a conclusion
नदी	(f) river
ननुनच	hesitation (saying no, yes, eh, uh)
ननुनच करना	to object, to hesitate
नन्द	(m) name of Lord Krishna's foster father
नपुंसक	(adj) important
नफ़ा	(m) gain, profit
नमस्कार	(m) greeting

नमस्कार करना	to greet
नमी	(f) dampness
नमूना	(m) example
नम्रता	(f) humility, modesty
नम्रता पूर्वक	humbly, politely
नयना	(f) eye
नया	(adj) new
नयापन	(m) newness
नरक	(m) hell
नरनारी	(m) people (men and women)
नरसंतति	(f) human offspring
नल	(m) water pipe
नलकूप	(m) Tubewell
नव	(adj) new
नवजागरण	(m) new awakening
नवजात	(adj) newly born
नवदशांश	(m) nine-tenths
नवनिर्माण	(m) new construction
नवपाषाण युग	(m) Neolithic Age
नवपाषाण युगीन	(adj) belonging to Neolithic age
नववधू	(f) bride
नवविवाहिता	(f) newly married
नवशिशु	(m) new born baby
नवसाहसांक	(m) name of a book
नवस्वतंत्र	(adj) newly independent
नवागन्तुक	(adj) newcomer
नवाब	(m) nabob, prince, lord
नवासी	eighty nine
नवीन	(adj) new
नश्वर	(adj) mortal
नष्ट	(adj) destroyed
नष्ट करना	to destroy
नष्ट होना	to be destroyed
नष्ट भ्रष्ट	(adj) ruined, broken
नसीहत	(f) advice, preaching
नसीहत करना देना	to advise
नस्ल	(f) breed, race
नहर	(f) canal
नहीं	no, not
नहीं तो	otherwise
नांदी पाठ	benediction pronounced as prologue to drama
नांदी मुख	(m) ancestor worship
नाइन	(f) barber woman
नाई	(m) barber
नाद	(f) noise
नागर	(adj) citizen, urban
नागराजकन्या	(f) daughter of Nagaraja
नागरिक	(m) citizen
नागा	(m) a sect of naked Hindu saints; an Assam tribe; (f) absence
नागानन्द	(m) name of a play
नाटक	(m) drama, play

नाटकीय	(adj) dramatic
नाटिका	(f) drama, play
नाट्यधर्मी	(m) conventional
नाट्यरासक	(m) a kind of one act play
नाट्यशास्त्र	(m) dramaturgy, name of a book on drama
नाट्यशास्त्रकार	(m) writer of Natva Shastra
नाती	(m) daughter's son
नातेदार	(m) relatives
नादो उल्लास	(m) joy, celebration
नाना	(m) mother's father; (adj) various
नाबालिग	(m) a minor
नाभि	(f) navel
नाम	name
नामक	named
नामकरण	name giving
नाम-पद	name word
नाममात्र का/की	only in name
नामोल्लेख	(m) mention of name
नायक	(m) hero
नायिका	(f) heroine
नारद	(m) name of a saint
नारदस्मृति	(f) law book by Narad
नारा	(m) slogan
नारियल	(m) coconut
नारी	(f) woman
नारी शिक्षा	(f) education of women
नाली	(f) drainpipe
नाविक	(m) boatman
नाश	(m) destruction
नाश करना	to destroy
नाश होना	to be destroyed
नाशक	(adj) destroyer
नासिक	(m) name of a city
नाहक	in vain
निंदा	(f) reproach
निंदा करना	to condemn, to backbite
निःशंक	(adj) fearless
निःशुल्क	(adj) free, without any face
निःसंदेह	(adv) undoubtedly
निःस्वार्थ	unselfish
निकट	near
निकलना	to come out, emerge
निकाय	(m) collection (of Buddhist sutras)
निकालना	to bring out
निकृष्ट	(adj) of low quality, base
निकौनी	(f) weeding
निखारना	to purify, to cleanse
निगमात्मक	(adj) Vedic
निगोड़ा	(adj) wretched
निजंधरी	(adj) folk-legendary
निज = निजका	own, personal
निजत्व	(m) ownership

निजी	(adj) personal, private
निजी उद्योग	(m) private enterprise
निजी क्षेत्र	(m) private sector
निजी लाभ	(m) private gain
नित	daily
नितांत	extremely
नित्य	daily, regularly, eternally
निदर्शनार्थ	for example
निदान	(m) diagnosis
निपटारा	(m) settlement
निपटारा करना	to settle
निपुणता	expertness
निबंध = निबन्ध	(m) treatise; essay
निबरना	(intr) to get settled
निमंत्रण	(m) invitation
निमग्न होना	to be absorbed
निमित्त	for, for the sake of
निमीलन	(m) winking of the eye, closing of the eye
निम्न	(adj) low, below
निम्न देश	(m) low land
निम्नलिखित	(adj) written below
निम्नांकित	(adj) following
नियंत्रण	(m) control
नियंत्रण क्षम	(adj) controlled, controlable
नियति वाद	(m) fatalism
नियम	(m) regulation, rule
नियमन	(m) regulation
नियमन करना	to regulate
नियमित	(adj) regulated
नियमित रूप से	regularly
नियामक	(adj) sumptuary, regulating
नियुक्त	(adj) appointed
नियोग	(m) custom of levirate to beget a child
नियोजन	(m) planning; organization
नियोजित	(adj) planned
निरंकुश	(adj) unchecked
निरंतर	continuously
निरक्षर	(adj) illiterate
निरखना	(intr) to see, to view
निरतिशय	(m) God; supreme
निरन्तर	continuously
निरपराध	(adj) without any fault, innocent
निरपेक्ष	(adj) neutral
निरर्थक	(adj) useless, meaningless
निरा	totally
निराकरण	(m) repudiation, prevention
निराकरण करना	to repudiate
निराश	(adj) disappointed
निराशा	(f) disappointment, despair, hopelessness
निराशाजनक	disappointing
निराश्रय	(adj) orphaned, shelterless
निरीक्षण	(m) supervision

निरीह	(adj) innocent, poor
निरूपण	(m) observation, description
निरोग	(adj) healthy
निर्घात	(m) wind-sound
निर्जीव	(adj) lifeless
निर्णय	(m) decision
निर्णय करना	to decide
निर्णायक	(m) referee, judge; (adj) critical, decisive
निर्दलीय	non-partisan, independent
निर्दिष्ट	(adj) indicated, directed
निर्देश	(m) command
निर्देशन	(m) directive
निर्धन	(adj) poor
निर्धारण	(m) determining
निर्धारण पद्धति	(f) process of determining
निर्धारित	(adj) fixed, decided
निर्बन्ध	(adj) free, blank (verse)
निर्बल	(adj) weak
निर्बल पड़ना	to weaken
निर्बाध	(adj) uninterrupted
निर्भर	(adj) dependent
निर्भरता	dependency
निर्माण	construction
निर्माण वैशिष्ट्य	(m) speciality of construction, technology
निर्माण व्यय	(m) cost of construction
निर्माता कंपनी	(f) constructor of company
निर्मित	(adj) made, built
निर्यात	(m) export
निर्यात मूल्य	(m) export price
निर्यात वस्तु	(f) export commodity
निर्यात व्यापार	(m) export trade
निर्लोभता	(f) absence of greed
निर्वाचक गण	(m) electorate
निर्वाचन	(m) election
निर्वाचनाधिकार	(m) right of being elected
निर्वाण	(m) Nirvana, salvation
निर्वासन	(m) banishment
निर्वाह	(m) maintenance
निर्विवाद	(adj) indisputable
निवारना	to renounce
निवारण	(m) prevention
निवास	(m) dwelling, residence
निवास स्थान	(m) residence
निवासी	(m) inhabitant
निवृत्ति	(f) detachment
निवेदन	(m) plea, request
निशान	(m) symbol, sign
निश्चय	(m) decision, determination
निश्चित	(adj) sure, decided
निश्चिन्त	(adj) carefree
निश्छल	(adj) without wiles, simple, innocent
निषाद	(m) a tribal caste

निषादी (f) name of a caste

निषिद्ध (adj) forbidden

निषेध (m) negation

निषेधात्मक (adj) negative

निष्कर्म (m) inaction

निष्काम (adj) detached, without desire

निष्क्रमण (m) exit, ceremony to take a child out of a home

निष्क्रिय (adj) inactive

निष्क्रियता (f) inactivity

निश्चेष्ट (adj) unambitious

निष्ठा (f) faith

निष्ठा होना to have faith

निष्पक्ष (adj) honest, objective

निष्पक्षता (f) objectivity

निष्पत्ति (f) derivation

निष्प्रयास without effort

निष्प्रयोजन aimless

निष्प्राण lifeless

निष्फल without any result

निसृष्टार्थ (m) envoy of cabinet rank

निस्संतान issueless

निस्वार्थ selfless

निहित होना to be included

नींद sleep

नींद आना to feel sleepy

नीच mean, base

नींव foundation

नीचा (adj) lower, low

नीचे below

नीच्य (adj) low

नीति (f) policy; polity, ethics

नीति निरपेक्ष (adj) amoral, ethically neutral, neutral to a policy

नीति शास्त्र (m) science of ethics

नील (adj) blue, indigo

नीलकंठ = नील कण्ठ blue jay

नीलकण्ठविजय चम्पू (m) name of a book

नीलांबर (m) blue sky

नीलाम (m) auction

नुकसान (m) loss, harm

नुकसानदेह (adj) harmful

नुमायश (f) exhibition

नुसखा (m) formula, prescription

नूतन (adj) new

नृतत्व anthropology

नृतत्व विद् anthropologist

नृत्य (m) dance, dancing

नृशंस (adj) cruel

नेक (adj) good; a little

नेकु = नेक

नेता(m) leader

नेतृत्व (m) leadership

नेत्र (m) eye

नेत्रोन्मीलन	(m) closing eyes
नेत्रु = नेत्र	
नैतिक	(adj) moral, ethical
नैन	(m) eye
नैननि	(m) eyes
नैया	(f) boat
नैरंतर्य	(m) continuity
नैराश्य	(m) disappointment
नैवेद्य	(m) offerings made to deities
नैवेद्यादि	(m) oblation
नैसर्गिक	(adj) natural
नौ	nine
नौकर	(m) servant
नौकर-चाकर	(m) servants
नौकरशाही	(f) bureauocracy
नौकरी	(f) job
नौगुना	nine times
नौदस	nine-ten
नौबत	(f) condition, situation
न्यायालय	(m) judicial court
न्यायोचित	(adj) just
न्यूनतम	at least
न्यूनाधिक	more or less
न्यौता	(m) invitation
न्यौता देना	to invite

प

पंक्ति	(f) line
पंख	(m) wing
पंख फड़फड़ाना	to flutter wings
पंच	(m) judge; five
पंचतंत्र	name of a book
पंचतत्वमय	made of five elements
पंचनद	five rivers of the Punjab
पंचफैसला	arbitration
पंचमहायज्ञ	(m) five essential daily rituals of a householder
पंचवर्षीय	five-year
पंचायत प्रणाली	(f) Panchayat system
पंचायत संस्था	(f) Panchayat council
पंचायती राज	village government based on Panchayats
पंजीयन	(m) registration
पंडित	(m) Pundit, learned man
पंवारा	(m) heroic ballad
पकड़ना	(trans) to hold
पकना	(intr) to ripen
पक्का	(adj) ripe, firm, grade A
पक्ष	(m) wing, side
पक्ष में होना	to be in favor
पक्षधारी	(adj) winged
पक्षपात	(m) favoriticism
पक्षी	(m) bird

पग (m) step, foot, leg

पचना to be digested

पचनागार (m) kitchen

पचाना to digest

पचासा (m) group of fifty similar articles

पछताना to repent

पञ्च =पंच five; judges

पञ्चगव्य (m) mixture of dung and urine of a cow

पञ्चतन्त्र =पंचतंत्र name of a book

पटरानी (f) chief queen

पटवारी (m) record keeper of village land

पटसन (m) flax, jute

पठाना to send, to dispatch

पठार (m) plateau

पड़ना to fall, to befall

पड़ाव (m) camping

पड़ौस (m) neighborhood unity

पड़ौसी (m) neighbor

पढालिखा (adj) literate

पण (m) an old coin; resolution

पण्डितवर्ग (m) priests, scholars

पतंग (m) kite, moth

पतन (m) fall

पतनोन्मुख (adj) facing downfall

पतला (adj) thin

पताका (f) flag

पतित (adj) fallen

पति प्राप्ति (f) attainment of a husband

पत्थर (m) stone

पत्नी प्राप्ति (f) attainment of a wife

पत्रिका (f) magazine; letter

पथप्रदर्शन (m) guidance, showing a way

पदक्रम (m) word order

पदच्युत (adj) demoted, degraded

पददलित (adj) trodden

पदलोप (m) loss of morpheme

पदवी (f) title, position

पदसंबंधी (adj) morphemic

पदाति (m) footman, pedestrian

पदार्थ (m) matter

पदेपदे at every step

पद्म (m) lotus

पद्मनाल (m) lotus stalk

पद्य (m) verse, poetry

पद्यमात्र verse only

पधारना to come

पनपना to prosper

पनहारिन (f) water carrier

परंपरा (f) tradition

परंपरागत (adj) traditional

परकम्मा (f) circling

परजीवी (adj) dependent on someone for a living

परतंत्र	(adj) dependent, slave
परतंत्रता	(f) slavery
परमाणु	(m) atom
परमात्मा	(m) supreme soul, God
परमानन्ददास	(m) name of a saint poet
परमावश्यक	most necessary
परम्परा = परंपरा	tradition
परम्परा क्रम	(m) traditional order
परम्परा पालन	(m) preservation and carrying of a tradition
परम्परा लब्ध	(adj) obtained by tradition
परम्परा वाहक	(m) tradition's carrier
परराष्ट्र नीति	(f) foreign policy
परलोक	(m) other world
परलोक वासी	(adj) dead
परवर्ती	(adj) successor, follower
परशु	(m) ax
परशुराम	(m) name of a saint hero
परस्पर	mutual; mutually
पराकाष्ठा	(f) zenith, climax
पराक्रम	(m) great deed, heroic exploit
पराङ् मुख	(adj) averse
पराजय	(f) defeat
पराधीनता	(f) slavery, dependence
पराभूत	(adj) conquered, ruined
परामर्श	(m) advice
परामर्श करना	to confer
परामर्श देना	to advise
परार्थ	(m) others' good
परार्थ साधन	(m) realization of good of others
परास्त	(adj) defeated
परिकल्पन	(m) illusion, creation
परिकल्पनात्मक	imaginary, creative
परिक्रमा	(f) circling
परिगणन	(m) enumeration, counting
परिचय	(m) introduction, acquaintance
परिचयात्मक	introductory
परिचायक	(m) introducer
परिचायिका	(f) introducer
परिच्छेद	(m) chapter, section, paragraph
परिणत	(adj) changed
परिणति	(f) change; fulfillment
परिणाम	(m) result
परिणामस्वरूप	as a result
परित्याग	(m) renunciation
परिधि	(f) circumference, circle
परिनिष्ठित	(adj) included
परिपक्व	(adj) fully ripe
परिपूर्ति	(f) fulfillment
परिभाषा	(f) definition
परिमाण	(m) quantity
परिमार्जन	(m) refinement
परिमार्जित	(adj) refined

परिमित	(adj)	limited
परिमितार्थ	(m)	envoy with limited rights
परियोजना	(f)	planning
परिलक्षित होना		to be indicated
परिवर्तन	(m)	change
परिवर्तित	(adj)	changed
परिवहन	(m)	transportation
परिवहन सम्बन्धी		relating to transportation
परिवार	(m)	family
परिवार प्रणाली	(f)	family system
परिवेत्ता	(m)	one married before his elder brother
परिवेष	(m)	circle, surrounding
परिश्रम	(m)	labor, hard work
परिष्कार	(m)	purification
परिष्कृत	(adj)	purified, cleansed
परिस्थिति	(f)	circumstances
परीक्षण	(m)	test
परीक्षा	(f)	test, examination
परोक्ष	(adj)	indirect, invisible
पर्दा	(m)	veil, screen, curtain
पर्याप्त	(adj)	sufficient
पर्याप्त मात्रा	(f)	sufficient quantity
पर्व	(m)	festival
पर्वत	(m)	mountain
पर्वत श्रेणी	(f)	mountain range
पर्वतीय	(adj)	mountainous
पलंग	(m)	bedstead, sofa
पलना		to be reared
पलायन	(m)	flight, escape
पल्टन	(f)	platoon
पवन	(f)	air, wind
पवनपूत्र	(m)	Hanuman
पवित्र	(adj)	sacred, holy
पवित्रता	(f)	holiness, sanctity
पवित्रतामय = पवित्र		
पशु	(m)	animal
पशुजगत	(m)	animal world
पशुजीवन	(m)	animal life
पशुपालन = पशुपोषण	(m)	raising cattle
पश्चिम	(m)	west
पश्चिमी	(adj)	western
पसीना	(m)	sweat
पहचानना		to recognize
पहनना		to wear, to put on
पहनाना		to dress, to clothe
पहरा	(m)	watch, guard
पहरेदार	(m)	guardsman
पहरो	(m)	guard, watch
पहलू		aspect
पहाड़ी		name of a musical mode
पहिनना = पहनना		

पहुंचना	(intr) to reach
पहेली	(f) riddle
पांडुलिपि	(f) manuscript
पांति	(f) line
पाइन	(m) feet
पाखाना	(m) toilet, excrement
पागलपन	(m) stupidity
पाटना	to fill (a hole); to roof
पाठ	(m) lesson, reading
पाठक	(m) reader
पाठशाला	(f) school
पाठान्तर	(m) variation of text; variant
पाणिग्रहण संस्कार	(m) marriage ceremony
पाणिनि	(m) name of a Sanskrit grammarian
पातक	(m) sin
पाता	(m) leaf
पात्र	(m) vessel; worthy
पाना	to receive
पानी	(m) water
पाप	(m) sin
पायुद्वार	(m) anus
पार	(m) other side; limit
पारलौकिक	(adj) other worldly
पारसी	(m) Zoroastrian
पारस्परिक	(adj) mutual
पारिजातमंजरी	(f) name of a book
पारितोषिक	(m) reward, prize
पारिभाषिक	(adj) technical
पारिवारिक	(adj) family's
पार्थिव	(adj) mortal, made of clay, king
पार्वती परिणय	(m) name of a book, life of Parvati
पार्श्व	(m) vicinity, aspect
पार्श्वनाथ चरित	name of a book, life of Parshvanatha
पालक	(m) nourisher
पालतू	(adj) domesticated, tame
पालन	(m) protection, nourishing
पालन करना	to nourish, to maintain or follow
पालन पोषण	(m) support, or nurturance
पाला	(m) frost; dealing
पाली	(f) name of a language, Pali
पावन	(adj) holy
पाश	(m) noose, trap
पाश्चात्य	(adj) western; westerner
पाषाण	(m) stone
पाषाणयुग	(m) Stone Age
पासनी	(f) ceremony to feed a baby cereals
पिंड	(m) ball of rice meal offered to ancestors
पिण्डदान	(m) offering of piṇḍa
पिघलाना	to melt (trans)
पिछड़ना	to remain behind
पिछौरा	(m) waist-cloth, belt
पिटारी	(f) basket

पिण्ड = पिंड

पितर, पितरम्	(m) ancestors
पितरादत्त	(adj) given by father
पितामह	(m) grandfather
पितृ	(m) father, ancestor
पितृ ऋण	(m) ancestors' debt
पितृ-तुल्य	(adj) like a father
पितृ यज्ञ	(m) rituals performed for ancestors
पितृ लोक	(m) heaven
पिलाना	to make drink
पिशाच	(m) demon, fiend
पीठ	(f) back
पीड़ित	(adj) tortured, miserable
पीढ़ी	(f) generation
पीढ़ी दर पीढ़ी	from generation to generation
पीत	(adj) yellow
पीतल	(m) brass
पीना	to drink
पीला	(adj) yellow
पुकारना	to call
पुजारी	(m) worshipper, priest
पुट	(m) cover, flavor
पुण्य	(m) merit, virtue
पुण्य पाप	(m) merit and sin
पुण्यसंचय	(m) accumulation of merits
पुतोहू	(f) son's wife

पुत्र	(m) son
पुत्र जन्म	(m) birth of a son
पुत्र मृत्यु सूचक	(m) indicating the death of a son
पुत्री	(f) daughter
पुत्रोत्पत्ति	birth of a son
पुनः	again
पुनर्गठन	(m) re-organization
पुनर्जन्म	(m) rebirth
पुनर्जन्मवाद	(m) doctrine of rebirth
पुनर्जीविन	(m) revival, rebirth
पुनर्निर्माण	(m) reconstruction
पुनर्वितरण	(m) redistribution
पुनर्स्थापना	(f) reinstating, rehabilitation
पुरस्कार	(m) reward, prize
पुराकल्प	(m) Paleozoic
पुराजलवायुविधी	Palaeoclimatology
पुराण	(f) Purana, books of Hindu mythology
पुराणकथा	(f) myth
पुरातत्व	(m) archaeology
पुरावृत	(adj) old account, myth, tradition
पुरुरवा	(m) name of a king
पुरुष	(m) man
पुरुषार्थ	(f) human race
पुरुषार्थ सिद्धि	(f) attainment of life's aims
पुरुस्कार	(m) reward, prize
पुरोहित	(m) priest

पुरोहितवाद	(m) shamanism
पुलकित	(adj) rejoiced
पुलिंद, पुलिखड	an ancient aboriginal tribe of India
पुष्ट	(adj) strong, able bodied; confirmed
पुष्टि	(f) confirmation
पुष्पफल	(m) flowers and fruits; offerings to deity
पुस्तक	(f) book
पुस्तकनिबद्ध	(adj) recorded in book form
पुस्तिका	(f) book
पूंछ	(f) tail
पूंजी	(f) capital
पूंजीपति	(m) capitalist
पूंजीपति कारखाना	(m) capitalist's factory
पूंजी बाज़ार	(m) monetary market
पूजना	to worship
पूरा	(adj) complete, whole
पूरा करना	to complete, to fill in
पूरा पूरा	completely, exactly
पूरा होना	to be exact, to be complete, to suffice
पूर्ण	(adj) complete, fulfilled
पूर्णतः, पूर्णतया	completely, totally
पूर्णता	completeness
पूर्णपद लोप	(m) loss of whole word
पूर्णब्रम्ह, पूर्णब्रह्म	(m) Brahman, the supreme authority
पूर्णरूपेण	completely
पूर्ति	(f) fulfilment, supply
पूर्व	before; east
पूर्वकाल	(m) time before, ancient time
पूर्वज	(m) ancestor, born before
पूर्वजन्म	(m) past life
पूर्वपरिणीता	(f) formerly married
पूर्वफाल्गुनी	(f) eleventh lunar mansion
पूर्वमीमांसा	one of the philosophical schools
पूर्ववर्ती	former, preceeding
पूर्वसूचना	(f) premonition
पूर्वांश	(m) first part
पूर्वाग्रह	(m) insistance on preconceived ideas
पूर्वाग्रही	(adj) obstinate
पूर्वार्ध	(m) first half
पूर्वी	(adj) Eastern
पूर्वोक्त	(adj) aforesaid
पृथक्	(adj) separate
पृथक् पृथक्	separately
पृथक्तावादी	(m) separatist
पृथ्वी, पृथिवी, पृथ्वी	(f) earth, land, ground
पृथ्वीराजविजय	name of a book, Victory of Prithviraj
पृष्ठभूमि	(f) background
पेचीदा	(adj) complex
पेट	(m) stomach
पेटभरकेखाना	to eat one's fill
पेटू	(adj) gluttonous
पेड़	(m) tree

पेड़ा	(m) name of a sweet
पेतन्निक	(adj) hereditary
पेलना	to press (like oil or sugar cane)
पेशकरना	to present
पेश होना	(intr) to be presented
पेशा	(m) profession, job
पेशाब	(m) urine
पैंठ	(f) weekly market
पैकार	(m) dealer, agent, hawker
पैतृक	(adj) patrilineal, hereditary
पैतृक	paternal, ancestral, patronymic
पैतृकसम्पत्ति	(f) inheritance
पैतृकसम्बन्ध	(m) agnatic relationship
पैदा	(adj) born
पैदाकरना	to grow, to produce
पैदा होना	(intr) to be born
पैदावार	(f) product, crop
पैमाना	(m) scale
पैर	(m) foot, leg
पैशाच	(m) a form of marriage
पैसा	(m) money
पोथी	(f) book
पोशाक	(f) dress
पोषक	(m) nourisher, patron
पोषण	(adj) support, nourishing
पोषित	(adj) nurtured, nourished
पौत्र	(m) son's son
पौधसंरक्षण	(m) protection of plants
पौधा	(m) plant
पौन, पौना	three-fourths
पौने	less one-fourth
पौर	(adj) urban
पौराणिक	(adj) traditional, classical
पौराणिक कथा	(f) legend, myth
पौरुष	(m) manhood, effort
पौर्वात्य	(adj) eastern, oriental
पौष्टिक	(adj) nutritious
प्यारा	(adj) lovely, beloved
प्यास	(f) thirst
प्यास लगना	to feel thirsty
प्रकट	(adj) manifested, appeared
प्रकट करना	to expose
प्रकट होना	to appear, seem
प्रकरण	(m) chapter; context, a kind of drama
प्रकरणिका	(f) a kind of drama
प्रकार	(m) typology, manner
प्रकारान्तर	(m) variant, variation
प्रकाश	(m) light
प्रकाशयुद्ध	(m) open battle
प्रकाशन	(m) publication
प्रकाशमान	(adj) shining, illustrious
प्रकाशित	(adj) published

प्रकृति	(f) nature
प्रकृति पूजा	(f) nature worship
प्रकोप	(m) anger
प्रक्रम	(m) stage; order
प्रक्रिया	(f) process
प्रक्षिप्त	(adj) added later
प्रख्यात	(adj) famous
प्रख्यान	(adj) known, perceived
प्रगति	(f) progress
प्रगति करना	to make progress
प्रगतिशील	progressive
प्रगाढ़	(adj) thick
प्रचंड	(adj) violent, fierce, great
प्रचलन	(m) custom, currency
प्रचलित	(adj) vogue, prevalent
प्रचार	(m) propaganda
प्रचार करना	to propagate, to preach
प्रचारक	(m) propagator, preacher
प्रचारित	(adj) propagated, spread
प्रचुरता	(f) abundance
प्रच्छन्न	(adj) concealed, secret
प्रजा	(f) subject of a king
प्रजाजन	(m) subjects
प्रजातन्त्र	(m) democracy
प्रजातन्त्रात्मकता	(f) being democratic
प्रजाति	(f) race
प्रजातीय	(adj) racial
प्रजापति	(m) lord of creation, Brahma, king
प्रजाहित	(m) good of the subject
प्रज्ञा	(f) wisdom, intellect
प्रज्ञाजनन	(m) procreation, creation of wisdom
प्रज्ज्वलित	(adj) ignited, illuminated
प्रज्ज्वलित होना	to blaze
प्रणय	(m) love
प्रणाली	(f) method, methodology
प्रति	per; toward
प्रतिकूल	unfavorable, opposed
प्रतिकृति	(f) image, reaction, revenge
प्रतिक्रान्ति	(f) counter-revolution
प्रतिक्रिया	(f) reaction
प्रतिक्रियावादी	(m) reactionary
प्रतिगृह्णामि	"I accept"
प्रतिग्या, प्रतिज्ञा	(f) vow, resolution
प्रतिद्वन्दिता	(f) competition
प्रतिद्वन्दी, प्रतिद्वन्द्वी	(m) rival
प्रतिध्वनि	(f) echo
प्रतिनिधि	(m) representive
प्रतिनिधित्व	(m) representation
प्रतिपादन	(m) ascertainment
प्रतिपादित	(adj) ascertained
प्रतिपालन	(m) nourishing, fostering
प्रतिपालना	nourishing, to nourish

प्रतिबंध	(m) ban, prohibition
प्रतिबंधात्मक	(adj) prohibitive, forbidding
प्रतिबिम्ब	(m) reflection, shadow
प्रतिभा	(f) genius, brilliancy
प्रतिमा	(f) idol, image
प्रतिमाह	every month
प्रतियोगिता	(f) competition
प्रतियोगितामूलक	(adj) competitive
प्रतिरूप	(m) image, counterpart
प्रतिरोध	(m) opposition, resistance
प्रतिवर्ष	every year
प्रतिवादी	(m) defendant
प्रतिव्यक्ति	per person, every man
प्रतिष्ठा	(f) prestige
प्रतिष्ठान	(m) installation, consecration (of image)
प्रतिष्ठित	(adj) reverenced, installed
प्रतिस्पर्धा	(f) rivalry, jealousy
प्रतिस्पर्धी	(m) rival, jealous person
प्रतीक	(m) symbol
प्रतीकमात्र	token only, symbolic
प्रतीकस्वरूप	as a token
प्रतीकात्मक	(adj) symbolic
प्रतीत होना	to seem
प्रतीति	(f) knowledge
प्रत्यंचा	(m) string of a bow
प्रत्यक्ष	(adj) direct
प्रत्यक्षत:	evidently
प्रत्यक्षप्रमाण	(m) perception
प्रत्यय	(m) suffix
प्रत्याख्यान	(m) refutation, contradiction
प्रत्युत	but
प्रत्येक	everyone
प्रथम	first
प्रथा	(f) custom
प्रदत्त	given, donated
प्रदर्शन	(m) show
प्रदर्शन करना	to exhibit
प्रदर्शनी	(f) exhibition
प्रदान	(m) giving
प्रदान करना	to give
प्रदेश	(m) region
प्रधान	(adj) main, prime
प्रधानतया	mainly
प्रधानता	(f) pre-eminence
प्रधानमंत्री	(m) Prime Minister
प्रपाठक	(m) part of a chapter of the Vedas
प्रबंध	(m) management; essay
प्रबंधक	(m) manager
प्रबल	(adj) strong
प्रबलतर	stronger
प्रभात	(m) morning
प्रभाव	(m) influence

प्रभाव डालना to influence

प्रभावकारी (adj) influenced

प्रभावशालिता (f) capacity to influence

प्रभावशाली (adj) influential

प्रभावोत्पादक (adj) impressive

प्रभावोत्पादकता (f) capacity to influence

प्रभु (m) Lord, god

प्रभुता(f),प्रभुत्व (m) sovereignty, supremacy

प्रभुता करना to dominate

प्रभूत (adj) plentiful, born, sprung

प्रमाण (m) proof

प्रमुख (adj) main

प्रमुखता (f) prominence

प्रमेय (m) object of certain knowledge, object to be proved

प्रयत्न (m) effort

प्रयत्नशील (adj) making an effort

प्रयास (m) effort

प्रयासपूर्वक dilligently

प्रयुक्त (adj) used

प्रयोग (m) use, experiment

प्रयोजन (m) aim, motive

प्रलय (m) destruction

प्रलयकारी (adj) destructive

प्रलोभन (m) temptation, seduction

प्रवरान्वित (adj) excellent

प्रवर्तन (m) retreat, return, commencement

प्रवहमान (adj) flowing (moving) ahead, progressive

प्रवालकाल (m) Silurian

प्रवालादि काल (m) Silurian era

प्रवास (m) living abroad

प्रवाह (m) flow

प्रवाहित (adj) flowing

प्रवाहित करना to flow

प्रविष्ट (adj) entered

प्रविष्ट होना to enter

प्रवीण (adj) expert, skillful

प्रवृत्त होना to be enraged

प्रवृत्ति (f) nature, inclination

प्रवेश (m) entrance

प्रवेश करना to enter

प्रवेशक विष्कंभक (m) interlude in a drama

प्रवेश पत्र (m) entry card

प्रशंसनीय (adj) praiseworthy

प्रशंसा (f) praise

प्रशंसा करना to praise

प्रशस्त (adj) clear

प्रशासनीय (adj) administrative

प्रशासन (m) administration

प्रशासनिक (adj) administrative

प्रशिक्षण (m) training

प्रशिक्षणार्थी (m) trainee

प्रशिक्षित (adj) trained

प्रशिक्षित करना	(trans) to train
प्रश्न	(m) question
प्रश्न उठाना	to raise a question
प्रश्रय देना	to give shelter or asylum
प्रसंग	(m) context
प्रसंगतः	incidently
प्रसन्न	(adj) happy
प्रसन्नता	happiness
प्रसरण	(m) expansion
प्रसाद	(m) favor, food offered to deity
प्रसार	(m) expansion
प्रसारण	(m) expansion
प्रसारित	(adj) issued, broadcasted
प्रसारित करना	to issue, to broadcast
प्रसिद्ध	(adj) famous
प्रसुप्त	(adj) sleepy
प्रस्तर	(m) stone
प्रस्तर उपकरण	stone tool
प्रस्तार	(m) expansion
प्रस्ताव	(m) proposal, resolution
प्रस्तावना	(f) introduction
प्रस्तुत करना	to present
प्रस्थान करना	to depart
प्रस्फुट	(adj) open, manifest, broken
प्रहसन	(m) a kind of comedy, satiric play
प्रहार	(m) attack, blow
प्रहार करना	to attack
प्राक् इतिहास	(m) pre-history
प्राकारान्तर	(m) variation, variant
प्राकृत	(f) Prakrit
प्राकृतिक	(adj) natural
प्राकृतिक साधन	(m) natural resources
प्राक्कलन	(m) preface
प्रागैतिहास	(m) pre-history
प्राग्बौद्ध काल	(m) pre-Buddhist era
प्राचीन	(adj) ancient, old
प्राचीन काल	(m) ancient period
प्राचीनतम	ancient most, oldest
प्राण	(m) life, breath, air
प्राणप्रिय	(adj) dearest
प्राणवान	(adj) animate, lively
प्राणहीन	(adj) inanimate, lifeless
प्राणी	(m) animate, living
प्रातिनूतन काल	(m) Pleistocene
प्राथमिक	(adj) primary
प्राक्कल्प	(m) Proterozoic
प्रादुर्भाव	(m) birth
प्रादेशिक	(adj) regional, provincial
प्राधान्य	(m) preponderance
प्रान्त	(m) state
प्राप्त	(adj) obtained
प्राप्त करना	to receive

प्राप्ति	(f) attainment
प्राप्य	(adj) attainable, to be achieved
प्रामाणिक	(adj) authentic
प्राय:	generally
प्रायद्वीप	(m) peninsula
प्रायश्चित्त	(m) repent
प्रारम्भ	(m) beginning
प्रार्थना	(f) request
प्रार्थना पत्र	(m) application form
प्रासाद	(m) palace
प्रिय	(adj) dear
प्रियमिलन	(m) meeting with beloved
प्रिया	(f) beloved
प्रीतिमती	(f) loving
प्रेखण	(m) swinging, dispatching
प्रेमप्रेमकथा	(f) love story
प्रेमाख्यान	(m) love story
प्रेरणा	(f) inspiration
प्रेरणादायक	(adj) inspiring
प्रेषित	(adj) sent
प्रोष्ठपद	(m) hoof
प्रोत्साहन	(m) encouragement
प्रोत्साहित	(adj) encouraged
प्रौढ़	(adj) adult
प्रौढकक्षा	(f) adult class
प्रौढशिक्षा	(f) adult education
प्रौद्योगिकी	(f) technology

फ

फंसना	to be trapped
फटकारना	to tell off, to scold
फड़कना	(intr) to throb
फड़फड़ाना	(trans) to flutter
फरकना	(intr) to throb
फरसा	(m) axe
फर्क	(m) different
फर्म	(f) firm, incorporation
फलत:	as a result
फलना फूलना	to prosper
फलस्वरूप	as a result
फसल	(f) crop
फहराना	(trans) unfurl
फांदना	to climb over
फाग	(m) the Holi festival; song sung at Holi
फागुन	12th month of Hindu year (March-April)
फायदा	(m) profit, gain
फारस	(m) Iran
फारसी	(f) Persian
फिरंगी	(adj) English people
फिरना	(intr) to turn, to wander
फ़ील	(m) elephant
फ़ीलखाना	(m) elephant house
फीसदी	percent

फुर्ती	(f) swiftness
फुहार	(f) shower
फूंकना	(trans) to burn, to blow (air)
फूटना	(intr) to break
फूल	(m) flower
फूलना	to blossom
फूलना-फलना	to prosper
फूल फल	(m) flowers and fruits
फेंकना	(trans) to throw
फेरना	(trans) to turn around, to return
फेरि	having turned back, again
फैलना	(trans) to spread
फैलाव	(m) expansion
फौज	(m) army
फौजखर्च	(m) army expenditure

ब

बंगला	(f) Bengali language
बंगाला	(m) name of a musical mode
बंटना	to be divided
बंटवारा	(m) division
बंद	(adj) closed
बंदन	(m) salutation
बंदनवार	(m) arch made of leaves and flowers
बंदूक	(f) gun
बंधन	(m) bondage
बंधुत्व	(m) brotherhood
बंबड़	(f) ant hole
बंसी	(f) flute
बकरी	(f) goat
बख्तर	(m) armour
बख्शना	to forgive, to bestow
बगावत	(f) rebellion
बघार	(m) seasoning
बचत	(f) saving
बचाव	(m) safety
बच्चा	(m) child
बछड़ा	(adj) calf
बजट-नीति	(f) budget policy
बजना	(intr) to ring
बजाज	(m) cloth merchant
बजाना	to play(an instrument), to ring
बजाय	instead
बटाई	(f) share-cropping
बड़प्पन	(m) seniority, greatness
बड़ौना	(m) praise, exultation
बड़कहा = वृहत्कथा	
बढकर	superior
बढना	(intr) to increase, to grow, to march forward
बढाना	(trans) to increase
बढावादेना	to encourage
बढिया	(adj) splendid
बढैया	(m) carpenter

बत्तख	(f) duck
बत्तख	(f) duck
बदलना	(trans) to change
बदला	(m) exchange, revenge
बधाई	(f) congratulation
बधाव	(m) increase, congratulation-song
बनना	to become
बनाना	to make
बनारहना	to remain
बनावटी	(adj) fake, artificial
बनिया	(m) merchant, moneylander
बनैया	(m) maker
बन्द करना	(trans) to close
बन्धन	= बंधन
बन्धन मुक्ति	(f) freedom from bondage
बबुआ	(m) dim. form of बाबू , dear sir
बयान	(m) speech, testimony
बरतानिया	(m) Britain
बरताव	(m) treatment
बरदौ	(m) cow-pen
बरबस	forcefully
बराबर	(adj) equal
बरार	(m) name of an Indian region
बर्तन	(m) pot
बर्दाश्त	(f) tolerance
बर्फीला	(adj) icy, snow-covered
बर्बर	(adj) barbarian
बर्बाद	(adj) destroyed
बल	(m) force
बल देना	to emphasize
बल बूता	(m) strength
बलबीर	(m) an epithet of Lord Krishna
बलमिलना	to get strength
बलवती	(adj) forceful, strong
बलवान	(adj) strong
बलशाली	(adj) strong
बलाई	(f) fondling
बलाघात	(m) stress, accent
बलात्कार	(m) rape
बलि	(f) sacrifice
बलि पशु	(m) sacrificial animal
बल्कि	but also
बस	enough; controlled
बस की बस	(f) matter under one's control
बसना	(intr) to settle
बस्ती	(f) hamlet
बहकाना	to deceive
बहना	to flow
बहिन	(f) sister
बहियां	(f) hands, arms
बहिष्कार	(m) boycott
बहुकालिक	(adj) ancient, long

बहुत	many, much, very
बहुदेवपूजन	(m) polytheism
बहुदेव वाद	(m) polytheism
बहुद्देशीय	(adj) multipurpose
बहुधा	often
बहुप्रचलित	(adj) prevalent
बहुमूल्य	(adj) costly, valuable
बहुवचन	(m) plural
बहुसंख्या	(f) majority
बांका	(adj) beau, dandy, brave
बांट	(f) division, distribution
बांटना	to distribute, to divide
बांट बांटना	to distribute the shares
बांधना	(trans) to tie
बांयां	(adj) left
बांस	(m) bamboo
बाईस	twenty-two
बाकी	(adj) remaining
बागडोर	(f) reign
बागबानी	(f) gardening
बाज़	(m) hawk
बाजा	(m) instrument
बाजार	(m) bazar
बाजारभाव	(m) market rate
बाजी	(f) bet; (m) horse
बाढ	(f) flood
बाण	(m) arrow
बात	(f) matter, thing, tale
बाद	after
बादल	(m) cloud
बाधा	(f) hindrance
बाध्य	(adj) forced
बानी	(f) speech
बाबा	(m) father's father
बाबू	(m) white collar worker
बामन	(adj) dwarf
बार	(m) times
बांरम्बारता	(f) recurrence
बारहमासा	(m) a seasonal song
बारिन	(f) gardener woman
बारी	(f) turn
बारे में	about
बाल	(m) hair; child
बालपन	(m) childhood
बालम	(m) husband, lover
बाल्यवस्था	(f) childhood
बावड़ी	(f) tank of water
बाहुल्य	(m) majority, preponderance
बाह्य	(adj) outer
बिकना	to be sold
बिक्री	(f) sale
बिखरना	(intr) to scatter

बिखेरना (trans) to scatter

बिगड़ना (intr) to rot, to spoil
बिचला (adj) middle
बिछाना (trans) to spread
बिछुड़ना to be sep rated
बिछौना (m) bedding
बिजली (f) electricity, lightning
बिठलाना, बिठाना to seat
बिताना to spend
बिदा (f) farewell
बिन्दुसारमौर्य (m) name of a king
बिरज (m) a region, Braj
बिरादरी (f) community
बिल्कुल = बिलकुल totally
बिस (m) lotus stalk
बिसरना (intr) to be forgotten
बिहारी (m) native of Bihar; name of a musical mode; name of poet
बीघा (m) land measurment of 3325 square yards
बीच middle, in
बीज (m) seed
बीजरूप से basically
बीजसम्बन्धी related to seed
बीतना (intr) to pass time
बीमा (m) insurance
बीमारी (f) sickness

बीर-बांकुड़ा (m) hero, brave man
बुंदेलखंड (m) name of a region
बुंदेली (f) Bundeli dialect of Hindi
बुआई (f) sowing, planting
बुझना to be extinguished
बुद्ध (m) Buddha, enlightened
बुद्धि (f) intellect
बुद्धिमान (adj) wise
बुद्धिमानी (f) prudence, intelligence
बुद्धिविलास(m) play of mind, fancy
बुनकर (m) weaver
बुनना (trans) to weave
बुनियाद (f) foundation
बुनियादी(adj) basic
बुनियादी अधिकार (m) fundamental right
बुन्देली गीत (m) Bundeli song
बुराई (f) evil, defect
बुर्ज (m) tower
बुर्जुआ (adj) bourgeosie
बुलंद (adj) high
बूंद (f) drop
बूझना (trans) to figure
बूढ़ा (adj) old (man)
बृहस्पति (m) teacher of gods, Thursday, a planet
बेईमानी (f) dishonesty
बेकार (adj) useless; unemployed

बेगम	(f) queen
बेगि	quick, soon
बेटा	(m) son
बेड़ी	(f) fetter
बेब्याही	(adj) unmarried
बेमानी	(adj) meaningless
बेमेल	(adj) ill-matched; unsuited
बेरोजगार	jobless
बेशक	undoubtedly
बेसुर	(adj) out of tune
बेसुरापन	(f) disharmony
बेहतर	better, good
बेहोश	(adj) unconscious
बैठक	(f) sitting room
बैल	(m) ox
बोझ	(m) load
बोझिल	(adj) heavy
बोध	(m) knowledge
बोधगम्य	(adj) intelligible
बोधायनी	(adj) pertaining to Bodhayana
बोना	to sow
बोरा	(m) sack
बोल	(m) speech, utterance
बोलना	to speak
बोलबाला होना	to predominate
बोली	(f) dialect, speech
बौद्ध	(adj) Buddhist
बौद्धसाहित्य	(m) Buddhist literature
बौद्धिक	(adj) intellectual
बौधायन	(m) name of a writer-philosopher
ब्याज	(m) interest
ब्योरा	(m) description, detail
ब्रज	(m) a region in Uttar Pradesh
ब्रह्म	(m) Brahman, the ultimate reality
ब्रह्मचारी धर्म	(m) tenet of a Brahmachari
ब्रह्मदेश	(m) Burma
ब्रह्मपुत्र	(m) Brahmaputra river
ब्रह्मलोक	(m) heaven
ब्रह्मलोक प्राप्ति	(f) attainment of heaven
ब्रह्मवाद	(m) study of sacred text
ब्रह्मसमाजी	(adj) belonging to Brahmo Samaja
ब्रह्मा	(m) creator
ब्राह्म	(adj) a kind of marriage
ब्रह्मण	(m) the priestly caste among the Hindus
ब्राह्मणकृत	(adj) made by Brahmanas
ब्राह्मणवाद	(m) Brahmanism
ब्राह्मण्य	(m) tenet of Brahmana
ब्राह्मविधि	(f) Brahma way
ब्राह्मविवाह	(m) Brahma marriage
ब्राह्मी	(f) a script
ब्रिटिश काल	(m) British period

भ

भंग	(adj) broken, disturbed
भंडार	(m) store
भंडार संग्राहक	(m) storekeeper
भंवर	(f) whirlpool
भइया	(m) brother
भक्त	(m) devotee
भक्तकवि	(m) saint poet
भक्ति	(f) devotion
भक्तिगान	(m) devotional song
भक्तिमार्ग	(m) path of devotion
भक्षण	(m) devouring
भगना	(intr) to run away
भगनीवत्	like a sister
भगवद्गीता	(f) Bhagvadgita
भगवान	(m) God
भगाल	(m) skull
भग्न	(adj) broken
भग्नावशेष	(m) ruins, relic
भजन	(m) worship; hymn
भजन कीर्तन	(m) hymn songs; religious singing
भटकना	to wander, to lose way
भट्ट	(m) a title of Brahmans
भट्ठी	(f) oven
भयंकर	(adj) dreadful, fierce
भय	(m) fear
भयभीत	(adj) frightened
भया = हुआ	
भयानक	(adj) horrible, fearful
भरत	(m) name of a king, name of a saint
भरतखंड	(m) India
भरतमुनि	(m) saint Bharat
भरना	(trans) to fill
-भरसक	to the best of one's ability
भरोसा	(m) reliance, trust
भर्त्सना	(f) reproach, rebuke
भला	(adj) good
भली भांति	very well
भलेही	even if
भवन	(m) building
भविष्य	(m) future
भविष्यपुराण	(f) name of a religious book
भव्य	(adj) grand
भस्मासुर	(m) name of a demon
भांडार	(m) storehouse
भांति	like
भाई	(m) brother
भाईचारा	(m) brotherhood
भाग	(m) part, share
भागना	(intr) to run
भागी	(m) name of a person
भागीन	(m) sharer, partner

भागुरायण	(m) name of a minister
भाग्य	(m) fate
भाग्यवाद	(m) fatalism
भाग्यशाली	(adj) fortunate
भाजन	(m) a suitable person; pot
भाट	(m) bard, minstrel
भाण	(m) a kind of drama
भाणिका	(f) a kind of drama
भाण्ड	(m) pot, vessel; buffoon
भादों, भादौं	(m) sixth month of Hindu calendar
भाप	(f) steam, gas
भार	(m) burden, load
भारत	(m) India
भारतनिवासी	(m) inhabitant of India
भारतभूमि	(f) land of India
भारत रक्षा	(f) defence of India
भारतवर्ष	(m) India
भारतवासी	(m) inhabitant of India
भारतीय	(adj) Indian
भारतीय चरित्र	(m) Indian character
भारद्वाज	(m) name of an author
भारमुक्त	(adj) burden-free
भारी	(adj) heavy
भारी यंत्र	(m) heavy machinery
भारोपीय	(adj) Indo-European
भार्या	(f) wife
भाला	(m) lance
भाव	(m) emotion, essence, meaning
भावना	(f) feeling, sentiment
भावनात्मक	(adj) sentimental
भावत	soothes
भाव सौन्दर्य	(m) beauty of expression
भावाभिव्यक्ति	(f) expression of emotions
भावावेश	(m) emotion
भावी	(adj) future, would be
भाषण	(m) speech, lecture
भाषा	(f) language
भाषा उपक्षेत्र	(m) linguistic sub-region
भाषा क्षेत्र	(m) linguistic region
भाषाबद्ध	(adj) bounded by language
भाषाभाषी	(m) speaker of a language
भाषावार	(adj) on linguistic basis
भाषा विविधता	(f) linguistic diversity
भाषावैज्ञानिक	(m) linguist; (adj) linguistic
भाषावैमनस्य	(m) linguistic animosity
भाषा संस्कृति	(f) language and culture
भास	(m) name of a Sanskrit dramatist
भित्ति	(f) wall
भिन्न	(adj) different
भिन्नता	(f) difference
भिन्नभिन्न	various
भींजना	(intr) to get wet

भीतर inside
भीम (m) one of the five Pandava brothers; huge
भीषण (adj) terrible, fierce
भीषणता fierceness
भुगतान (m) payment
भुज name of a place
भुजा (f) arm
भुलाना to forget
भुवन (m) world
भूकम्प (m) earthquake
भूकालक्रमिकी (f) geochronology
भूख (f) hunger
भूखा (adj) hungry
भूगोल (m) geography
भूचाल (m) earthquake
भूत (m) past; ghost
भूतकाल (m) past
भूतत्व (m) geology
भूतद्रव्य (m) element
भूतपिशाच (m) ghost, fiend
भूतपूर्व अध्यक्ष (m) ex-president
भूत-प्रेत (m) ghost, apparition
भूतल (m) surface of the earth
भूदान (m) land gift
भूदान यज्ञ (m) land gift movement
भूदेव (m) earthly god

भूभाग (m) land-portion
भूमध्य सागर (m) Mediterranean Sea
भूमि (f) land, ground, earth
भूमिधर (m) landlord
भूमि सुधार (m) land reform
भूमि हार (m) name of a landlord caste
भूमिहीन (adj) landless
भूल (f) mistake
भूलकरना to make a mistake
भूलना to forget
भूला बिसरा (adj) forgotten
भूसा (m) chaff
भृगु (m) name of a sage
भेंट (f) present, meeting
भेजना to send
भेड़ (f) sheep
भेदक (m) divider
भेदन (m) piercing
भैंस (f) buffalo
भैंसपालना to keep buffalo
भैंसा (m) male buffalo
भैरव (m) name of a godling
भैरवी (m) name of a musical mode
भोंड़ा (adj) ugly
भोक्ता (m) consumer
भोग (m) experience of pleasure or pain; religious food offering

भोगना to suffer, to experience

भोग वासना (f) craving or lust for enjoyment

भोग विलास (m) pleasure, enjoyment

भोज,भोजक (m) a type of non-hereditary ruler; a caste

भोजन (m) meal

भोजपुरी people or language of Bhojpur area W. Bihar and E. U.P.

भोजपुरी लोक समुदाय (m) Bhojpuri folk group

भोज्य (adj) enjoyable or eatable

भोपाली (m) a rāga

भौगोलिक (adj) geographical

भौगोलिक पृथकता (f) geographical isolation

भौज्य (m) a type of government in ancient India

भौतात्विक (adj) geological

भौतात्विक कल्प (m) geological era

भौतिक (adj) material, physical

भौतिकवादी (m) materialist

भौम (adj) universe

भ्रम (m) illusion

भ्रष्ट (adj) defiled, corrupt

भ्रष्टाचार (m) corruption

भ्रांति (f) illusion

भ्राता, भ्रातृ brother

भ्रातृत्व (m) brotherhood

भ्रान्ति वश under the illusion

भ्रूण (m) foetus

भ्रूणहत्या (f) foeticide

म

मंगल (m) good luck, Mars; Tuesday

मंगलस्मरण (m) benediction; auspicious rememberance

मंगाना to send for, to order

मंज़िल (f) destination, storey

मंडल (m) circle, sphere

मंडी (f) market

मंतव्य (m) opinion, view

मंत्र (m) Vedic hymn; spell, formula

मंत्रालय (m) ministry

मंत्री (m) minister

मंत्रीमंडल (m) council of ministers

मंदगति (f) slow speed

मंदा (adj) inexpensive

मंदिर (m) temple

मंहगा (adj) costly, dear

मकई (f) corn

मकड़ी (f) spider

मकान (m) house, building

मखमल (f) velvet

मगध (m) name of a city and kingdom

मग्न (adj) absorbed

मघवान (m) Lord Indra

मघानक्षत्र (m) name of a planet

मचना to be rampant, to be stirred

मच्छर (m) mosquito

मच्छीमवन	(m) "Fish House"
मछली	(f) fish
मजदूर	(m) laborer
मजदूर संघ	(m) labor union
मजदूरी	(f) wages
मजबूत	(adj) strong
मजबूती	(f) strength, firmness
मजबूर	(adj) helpless, forced
मजूरी	= मजदूरी
मटर	(f) plea
मठ	(m) monastery
मठवाद	(m) monasticism
मढ़ना	(trans) to cover, to gild
मणि	(f) jewel, gem, pearl
मणिकुम्भ	(m) jug (full) of jewels
मण्डल	(m) path of a planet; council; circle
मतंग	(m) elephant; cloud
मत	(m) opinion; doctrine, religious sect; vote
मतदाता	(m) voter
मतदान	(m) voting
मतभेद	(m) difference of opinion
मत मतान्तर	(m) various sects
मतलब	(m) meaning
मतानुसार	according to the opinion
मतैक्य	(m) unanimity
मत्स्य काल	(m) Devonian
मथन	(m) churning
मथुरा	(m) name of a city
मद	(m) intoxication, pride
मदद	(f) help
मद्य	(m) liquor
मद्र	(m) name of an area of the Punjab
मधु	(m) honey, sweet
मधुमक्षिका	(f) honey bee
मधुर	(adj) sweet
मधुरालाप	(m) sweet conversation
मध्य	(adj) middle
मध्यकल्प	(m) Mesozoic
मध्यकालीन	(adj) mediaeval
मध्यदेश	(m) midland
मध्यनूतन	(m) Miocene
मध्यम	(adj) middle part
मध्यमदी	(m) a musical mode
मध्यमार्ग	(m) middle path
मध्यमी	(m) name of a musical mode
भध्ययुग	(m) middle ages
मध्यस्थित	(adj) situated in the middle
भध्यान्तर	(m) interval, meridian
मन	(m) heart, mind
मनन	(m) pondering, thinking
मनबहलाव	(m) entertainment
मनु	(m) name of a lawgiver

मनुष्य	(m) man, human being
मनुष्य उपयोगी	useful to human being
मनुष्य जाति	(f) human race
मनुष्य जीवन	(m) human life
मनुस्मृति	(f) law code of Manu
मनोयोग	(m) pondering, meditating
मनोरंजक	(adj) entertaining
मनोरंजन	(m) entertainment
मनोरथ	(m) intention, desire
मनोविज्ञान	(m) psychology
मनोवृत्ति	(f) nature
मनोवेग	(m) emotion; speed of thought
मनोवैज्ञानिक	(m) psychologist
मरुमृग	(m) deer plagued by mirage
मन्दिर	(m) temple
ममता	(f) love
मरणासन्न	(adj) close to death
मरदाना	(adj) manly, male
मरना	to die
मरम्मत	(f) repair
मरहट्टा	(m) Maratha, name of a people
मर्क	(m) monkey, ape
मर्कट	(m) monkey, ape
मर्जी	(f) wish
मर्मज्ञ	(m) learned man with deep insight, exceeding cleverness
मर्मभेदी	(adj) heart-rending
मर्यादित	(adj) limited, within boundaries, traditional
मलमल	(f) Muslim
मलमूत्र	(m) excrement and urine
मलयद्वीप	(m) Malaya Island
मलाई	(f) milk-skin
मलिनता	(f) dirt
मलिम्लुच	(m) robber, thief, demon
मल्ल	(m) name of a people
मल्हार	(m) a song sumg in rainy season
मवेशी	(m) cattle, stock
मवेशी पालन	(m) stock breeding
मशीन निर्मित	(adj) machine made
मसविदा	(m) draft
मसाला	(m) preservative
मसाला लगा शव	mummy
मसि कागद	(m) ink and paper
मस्तिष्क	(m) mind
महत्वपूर्ण	(adj) important
महत्वाकांक्षा	(f) ambition
महरि	(f) madam, mistress
महल	(m) palace
महसूल	(m) tax, toll tax
महाकवि	(m) great poet
महाकाव्य	(m) great epic
महाजनपद	(m) greater district; title of eminent man
महात्मा	(m) Mahatma, great soul

महाद्वीय	(m) continent
महाद्वीपी	(adj) continental
महान	(adj) great
महानता	(f) greatness
महापद्मनन्द	(m) name of a king
महापाप	(m) great sin
महापुरुष	(m) great man
महाभोज	a type of ruler
महामारी	(f) plague
महाराज	(m) sir, great king
महारानी	(f) emperess
महावर	(m) red color prepared from lac to color ladies' feet
महावात	(m) hurricane
महाशून्य	(m) sky, great void
महिमा	(f) greatness, majesty
महिला	(f) lady
महिषी	(f) queen
महीन	(adj) refined
महीना	(m) month
महेन्द्र	(m) Lord Indra or Vishnu
महेरी	(f) a dish of boiled milk
मां	(f) mother
मांग	(f) demand
मांगना	to ask for, to beg, to demand
मांगलिक	(adj) auspicious
मांजना	to polish, to cleanse
मांड	(m) rice water; name of a folksong tune
मांदा	(adj) tired, sick
मांस	(m) meat, flesh
मांसपिण्ड	(m) lump of flesh; body
मांसाहारी	(adj) non-vegetarian
माखन	(m) butter
मातहत	(f) under
ममाता-पिता	(m) parents
मातृ	(f) mother
मातृतुल्य	like mother
मातृभूमि	(f) mother land
मातृसत्ताक	(adj) matrilineal, matriarchal
मात्र	only
मात्रा	(f) quantity
माथा	head
मादा सन्तति	(f) female offspring
माधव माधो	(m) Krishna
माध्यम	(m) mean
माध्यम स्वरूप	as a means
माध्यमिक	(adj) name of a Buddhist school
मान	(m) respect, honor
मानचित्र	(m) map
मानदंड	(m) standard
मानना	to agree, to admit
माननीय	(adj) honorable
मानव	(m) man, human

मानव अनुभव	(m) human experience
मानव कथा	(f) human tale
मानव जाति	(f) human race
मानव जीवन सम्बन्धी	(adj) related to human life
मानव वानर	(m) man-ape
मानवविज्ञान	(m) anthropology
मानव शत्रु	(m) enemy of humanity
मानव संस्कृति	(f) human culture
मानवसभ्यता	(f) human civilization
मानवसम	like a human
मानवसमाज	human society
मानवस्थान	(m) place of man
मानव स्वतंत्रता	(f) man's freedom
मानव स्वभाव	(m) human nature
मानवी	human
मानवी कृत	(adj) man-made
मानवीय	(adj) human
मानस	(m) heart, mind
मानसग्रन्थि	(f) inhibition
मानसिक	mental
माना जाना	to be considered
मानो	as if
मान्यता	(f) belief
मापना	(trans) to measure
मामला	(m) affair
मामूली	(adj) ordinary
माया	(f) illusion; wisdom; witchcraft; money
मायाजाल	(m) net of illusion
माया वाद	(m) the doctrine of affirming the world to be an illusion
मारना	to kill, to hit
मारव	(m) name of a caste and a song
मार्क्स वाद	(m) Marxism
मार्क्स सम्मत	in agreement with Marx
मार्ग	(m) way, path
मार्गदर्शक	(m) leader
मार्गदर्शन	(m) showing
मार्फत	(f) care of
मार्मिक	(adj) sensitive, heart-rending
माल	(m) luggage
मालअसबाब	(m) luggage
मालकौंस	(m) name of a raga
मालतीमाधव	(m) name of a Sanskrit play
मालवकौशिकी	(m) name of a raga
मालवश्री	(m) name of a musical mode
मालविका	(f) name of a heroine
मालविकाग्निमित्र	(m) name of a Sanskrit play
मालश्री	(m) name of a musical mode
माला	(f) garland; series
मालिक	(m) owner, master
मालिकी	(f) ownership
मालिन	(f) fem. of माली gardener

माल्दा (m) a kind of mango, name of a place

मिटना to be destroyed

मिटाना to destroy

मिट्टी (f) soil, clay

मिठास (f) sweetness

मिताक्षरा (f) a commentary on Yajna Valkya's Dharma Shastra

मित्र (f) friend

मित्रता (f) friendship

मित्र राष्ट्र (m) friendly nation

मिथुन (m) sexual act

मिल्जुल कर together

मिलता जुलता similar

मिलना जुलना to meet

मिलने योग्य worthy of meeting

मिलाना to join

मिलावट (f) mixture

मिलिन्द पन्हो (m) name of a book

मिश्र (m) mixed; a title of Brahmans; Egypt

मिश्रण (m) mixture

मिस excuse, pretext

मिस्र (m) Egypt

मीचना to close (eyes)

मीठा (adj) sweet

मीठाकड़ुआ (adj) sweet and bitter

मीना (m) enamel work; a kind of stone

मीनाकारी (f) enamelling

मीनाबाज़ार (m) fancy-fair, name of a place

मीमांसा (m) a philosophy system, review, critique

मीरा (f) name of a poetess

मील (m) mile

मुंडन (m) tonsure ceremony; shaving

मुंडा (m) name of a tribe

मुंडा भाषा परिवार Munda language family

मुंडारी (m) person from Mundar

मुंह (m) mouth, face

मुआविज़ा (m) compensation

मुकाबला, मुकाबिला (m) confrontation, comparison

मुकाबले in comparison

मुक़ाम (m) halt, residence, place

मुकुट (m) crown

मुकुटधारण करना to be crownec

मुकुट बंधन (m) crowning

मुक्त (adj) free

मुक्त उद्यम, मुक्त उद्योग (m) free enterprise

मुक्तक (m) free verse

मुक्तता, मुक्ति (f) freedom, release, salvation

मुक्ति चिन्तन (m) thinking of salvation

मुक्ति लाभ (m) attainment of salvation

मुख (m) mouth, face

मुखरित (adj) resonant; spoken

मुखिया (m) chief

मुख्य (adj) chief

मुख्यत:, मुख्यतया chiefly

मुख्य मुख्य important

मुख्यरूप से = मुख्यत:

मुड़ना (intr) to turn

मुदित (adj) happy

मुद्दा (m) proposition

मुद्रा (f) coin, stamp, seal

मुद्रा-बाज़ार (m) cash-market

मुद्रा स्फीत-विरोधी (adj) anti-inflationary

मुनाफ़ा (m) profit

मुनाफ़ा खोरी (f) profiteering

मुनासिब (adj) proper

मुनि (m) saint, ascetic, monk

मुनिव्रत (m) tenet of asceticism

मुफ़्त (adj) without charge

मुरली (f) flute

मुर्गी (f) hen

मुर्गी पालन (m) raising of chickens

मुर्दा (adj) dead

मुल्क (m) country

मुल्तानी (m) name of a rāga

मुल्ला (m) Muslim priest

मुश्किल (adj) difficult

मुसल्मान (m) Muslim

मुसल्मानी (adj) Islamic

मुस्तैदी (f) promptness

मुस्लिम = मुसल्मान

मुस्लिम काल (m) Muslim period

मुहाना (m) mouth of a river

मुहावरा (m) idiom

मूंगफली (f) peanut

मूंगफली की खली (f) oil cake made of peanuts

मूंछ (f) moustaches

मूंदना (trans) to close, to cover

मूत्रोत्सर्ग करना (trans) to urinate

मूर्ख (adj) stupid

मूर्छना (f) modulation in music, fainting

मूर्तिमान (adj) personified, incarnate

मूर्धन्य (adj) most important, head

मूल (m) basis, root

मूलत: basically

मूलभूत (adj) fundamental

मूलस्वर (m) primary vowels

मूलाधार (m) fundamental basis

मूलोच्छेद (m) uprooting

मूल्य (m) price

मूल्यनीति (f) policy of price

मूल्यवान (adj) valuable

मूल्य-स्तर (m) price-level

मूल्यांकन (m) evaluation

मृग (m) deer

मृगया (f) hunting

मृच्छकटिक (m) name of a Sanskrit play
मृत (adj) dead
मृतप्राय (adj) almost dead
मृत्यु (f) death
मृत्युकर (m) inheritance tax
मृत्युदंड (m) death penalty
मृत्युसागर (m) ocean through which soul travels after death
मृत्युसूचक (adj) indicator of death
मृदु (adj) soft, sweet
में in, between, among
मेघ (m) cloud
मेघरहित,मेघहीन (adj) cloudless
मेढक परिवार (m) Amphibia
मेरुतन्त्र (m) name of a philosophical school
मेल (m) unity
मैं I; in
मैत्री (f) friendship
मैत्रीपूर्ण (adj) friendly
मैदान (f) field
मैया (f) mother
मोक्ष (f) liberation from the cycle of birth and death
मोक्षधर्म (m) law of emancipation
मोक्षप्रवृत्ति (f) inclination towards emancipation
मोक्षमार्ग (m) name of a Jain book; path of liberation
मोक्षाभिलाषी (m) desirous of emancipation
मोचन (m) deliverance, release

मोच्छ = मोक्ष
मोटा (adj) fat, gross
मोटाभेद (m) broad division
मोटी बात (f) major item, main thing
मोटे तौर पर mainly, roughly
मोड़ (m) turn
मोड़ना (trans) to turn
मोती (m) pearl
मोर (m) peacock
मोरचा (m) entrenchment
मोरी (f) drain
मोर्चा = मोरचा
मोह (m) attachment; illusion
मोहक (adj) attractive
मोहन (m) Krishna
मोहर (f) stamp, imprint
मोहर-अशरफी (f) a golden coin
मोहि = मुझे
मौखिक (adj) oral
मौजूद (adj) present
मौद्रिक (adj) cash, coin
मौद्रिकलेनदेन (m) cash trade
मौन (m) silence
मौर्य (m) name of a dynasty
मौलिक (adj) basic, original, fundamental
मौसम (m) weather

मौसमी	seasonal
म्यान	(f) sheath
म्लेच्छ	(m) barbarian, non-Aryan, foreign, outcaste

य

यंत्र	(m) machinery
यंत्रकला	(f) technique
यंत्रज्ञ	(m) technician, machinist
यंत्रयुग	(m) mechanic age
यकीन	(m) belief
यकृत	(m) liver
यजुर्वेद	(m) Yajur Veda
यज्ञ	(m) oblation, religious sacrifice
यज्ञादि सम्बन्धी	ritualistic
यज्ञपायसमिन्न	(adj) except ritualistic pudding
यथा	as
यथातथ्य	(adj) based on facts; exact
यथानिश्चित	as decided
यथार्थ	(adj) real
यथावत्	as usual
यथाशक्ति	to the best of one's power
यथासंख्या	according to the number
यथासंभव	as far as possible
यथासमय	on the fixed time
यथास्थान	on the fixed place
यथेष्ट	(adj) desirable
यथोचित	(adj) proper
यदा-कदा	now and then
यदि	if
यद्यपि	even if
यन्त्र = यंत्र	
यम, यमराज	(m) god of death
यमन	(m) name of a rāga
ययाति	(m) name of a person
यवद्वीप	(adj) Javanese
यवन	(m) Greek, Muslim, foreigner
यवनिका	(f) curtain
यश	(m) fame
यशस्वी	(adj) celebrated, glorious
यशोगाथा	(f) singing of glory
यह	this, it
याचना	(f) begging, request
याज्ञवल्क्य	(m) name
यातना	(f) torture
यातायात	(m) transportation
यात्रा	(f) travel
याद आना	to come to memory
याद रखना	to remember
यादव	(m) name of a people, cowherd
यान	(m) vehicle
यानी	that is to say
यापन	(m) passing the time
यायावर	traveller

युक्ति (f) argument

युक्ति पूर्ण logical

युक्ति पोषित,युक्ति युक्त logical

युक्ति संगत (adj) logical

युग (m) age, era

युग युग for ages

युग सन्धि (f) twilight of ages

युगीन (adj) pertaining to an age

युद्ध (m) war

युधिष्ठिर (m) name of a Mahabharata hero

युवराज (m) prince

यूं = यों

यूनान(m) Greece

यूनानी (adj) Greek

यूरोपवासी (adj) European (people)

यूरोपीय (adj) European

यों thus

यों तो although

यों ही without any reason; just

योग (m) addition; Yoga

योग देना, योगदान देना to help

योगात्मक(adj) pertaining to the Yoga

योगाभ्यास (m) practice of the Yoga

योगी (m) Yogi

योग्य (adj) worthy, capable

योग्यता (f) qualification

योजना (f) plan

योजनांतर्गत under the plan

योजना आयोग (m) planning commission

योजना-कार्यक्रम (m) planning program

योजनाबद्ध(adj) planned

योद्धा (m) warrior

यौन (m) sex

यौवराज्याभिषेक(m) coronation of a prince

र

रंग (m) color

रंगमंच (m) stage

रंगाना to have something dyed

रईस (m) rich

रक्त (m) blood

रक्तपात (m) blood shed

रक्ताश्म काल Triassic e

रक्षक(adj) protective; (m) savior, protector

रक्षाखाद्यपदार्थ protective

रक्षा(f) defence, protection

रखना to keep, to put

रघु(m) name of a king

रघुवंश (m) name of an epic by Kalidasa

रचना (f) creation, writing

रचनाकार (m) creator, writer

रचनात्मक(adj) constructive

रचयिता (m) author

रजवाड़ा (m) region of Rajputs

रजस्वला (f) menstruating

रज्जाशि (m) a type of state in ancient India

रज्जु (f) rope

रट लगाना (trans) to rot, to repeat over and over

रठ़िक (adj) national; (m) a type of state in India

रण (m) battle, war

रणक्षेत्र, रणभूमि (f) battle field

रतन (m) gem

रतिसुन्दरी (f) most beautiful woman

रत्न = रतन

रथ (m) chariot

रथ चक्र (m) chariot wheel

रथी (m) warrior fighting from chariot

रवाज (m) custom

रवाना होना to depart

रश्मि (f) ray

रस (m) juice, flavor, sentiment

रसानुभूति (f) sentimental experience

रसाल (m) sweet; mango

रसिया (m) man of taste: name of a song

रसोद्दीपक (m) object of inflaming sentiment

रहनसहन (m) living

रहना to live, to stay, to remain

रहस्यवाद (m) mysticism

रहस्यात्मक (adj) mystical

रहस्योन्मुख (adj) unveiling of a secret

रहित without

रांड (f) widow

राक्षस (m) demon

राक्षसी (f) demon (female)

राख (f) ashes

राग (m) rāga, musical mode

रागात्मक (adj) melodic

रागिनी (f) rāga, musical mode

राज (m) rule, kingdom, state

राज आंदोलन (m) state-movement

राजकीय (adj) state's

राजकीय अहस्तक्षेप (m) state non-interference

राजकीय स्वामित्व (m) state ownership

राजकुमार (m) prince

राजगद्दी (f) royal throne

राजघराना (m) royal family

राजतंत्र (m) monarchy

राजदरबार (m) royal court

राजदूत (m) ambassador

राजधर्म (m) state's duty

राजधानी (f) capitol

राजनगर (m) name of a town

राजनीति (f) politics

राजनीतिक, राजनैतिक (adj) political

राजन्य	(m) monarchy
राजपुरुष	(m) royal servant
राजपूत	(m) name of a caste
राजपूत गांव	(m) village where Rajput caste is numerically dominant
राजमुकुट	(m) royal crown
राजवंश	(m) royal lineage
राजशाही	(f) monarchy
राजसंस्थान	(m) state institution
राजसत्ता	(f) sovereignty
राजसभा	(f) royal court
राजसिंहासन	(m) royal throne
राजसीमा	(f) state-boundary
राजस्व	(m) revenue
राजा	(m) king
राजारहित	without a king
राज्य	(m) state; rule, government
राज्यक्रान्ति	(f) revolution
राज्य प्रशासन	(m) state-government
राज्य वर्धन	(m) name of a king
राज्यवादी	(m) follower of doctrine of state supremacy
राज्य व्यवस्था	(f) state organization
राज्यश्री	(f) name of a princess
राज्यसत्ता	(f) sovereignty, state power
राज्यसभा	Rajya Sabha, upper house of Indian Parliment
राज्यसरकार	(f) state government
राज्याधिकार	(m) state right
राज्याभिषेक	(m) coronation
रात,रात्रि	(f) night
राधावल्लभ	(m) name of a mystic
रानी	(f) queen
रामचरितमानस	(m) name of a Hindu Ramayana by Tulsidas
रामलीला	(f) a play staging Rama's life
रामायण	(f) epic describing Rama's life
रामायण कालीन	(adj) of Ramayana age
रामायणमंजरी	(adj) name of a book
रायचूर	(m) name of a place
रावणवध	(m) killing of Ravana
राशि	(f) star
राष्ट्र	(m) nation
राष्ट्र निर्माण	(m) nation-building
राष्ट्र पति	(m) President (of a nation)
राष्ट्रपिता	(m) father of the nation, Gandhiji
राष्ट्र भाषा	(f) national language
राष्ट्र वादिता	(f) nationalism
राष्ट्रिक	(m) a type of government
राष्ट्रीय	(adj) national
राष्ट्रीयकरण	(m) nationalization
रास	(m) a kind of song or dance or drama
रासायनिक	(adj) chemical
रास्ता,राह	(f) path, way
रिक्त	(adj) empty
रिझाना	(trans) to please

रियासत	(f) estate; state
रिवाज	(m) custom
रिश्ता	(m) relationship
रिश्ताजोड़ना	to establish relationship
रिश्तेदार	(m) relative
री	oh!
रीझ	(f) pleasure
रीति	(f) way, method
रीति रस्म	(f) customs
रीति रिवाज	(m) customs
रीस	(f) jealousy; anger
रुकना	(intr) to stop
रुकावट	(f) obstruction
रुक्मिणी कल्याण	(m) name of a book
रुक्मिणी हरण	(m) name of a book
रुख	(m) tendency, bent
रुचि	(f) taste
रुचिकर	(adj) tasty, relishing
रुचिभेद	(m) difference of tastes
रुचिसम्पन्न	(adj) rich in taste
रुझान	(m) tendency
रुद्र	(m) Lord Shiva; name of a Vedic god; dreadful
रुद्रलोक	(m) world of Rudra; heaven
रुधिर	(m) blood
रुधिर प्रवाण	(m) flow of blood
रुष्ट	(adj) angry
रूई	(f) cotton
रूढ़ि	(f) tradition
रूढ़िगत	(adj) traditional
रूप	(m) form, beauty
रूपक	(m) drama
रूपगठन	(m) structure
रूपरेखा	(f) outline
रूपविकास	(m) development of form
रूपवैविध्य	(m) diversity of forms
रूपात्मक	(adj) structural
रूपान्तर, रूपान्तरण	(m) transformation
रूमानीपन	(m) romanticism
रूमाल	(m) handkerchief
रेंगना	(intr) to crawl
रेखा	(f) line
रेगिस्तान	(m) desert
रेणुका	(f) dust, sand, atom; name of a woman
रेशम	(f) silk
रेशमी	(adj) silky
रोकना	(trans) to stop
रोग	(m) sickness
रोगवाही	(f) treatment
रोचक	(adj) interesting
रोज़	(m) day; (adv) crawl
रोज़गार	(m) employment
रोज़गारकेन्द्र	(m) employment (exchange) center

रोजमर्रा	daily
रोज़ी रोटी	(f) livelihood
रोदन	(m) lamentation, wailing
रोना	to cry
रोपना	to sow
रोब	(m) awe
रोम	(m) hair on the body
रोमावर्त	(m) curled up hair; pore
रोरी, रोली	(f) a powder to paint forehead
रोशनी	(f) light
रोष	(m) anger

ल

लंका	(f) Ceylon
लंबा	(adj) tall, long
लक्षण	(m) sign
लक्षणा	(f) figurative sense of a word; elliptical expression
लक्षित होना	to be indicated or hinted
लक्ष्मण	(m) Rama's half-brother
लक्ष्मी	(f) goddess of wealth
लक्ष्मीनारायण	(m) Lakshmi and Vishnu
लक्ष्मीबाई	(f) name of a queen
लक्ष्य	(m) aim
लखीणों	(adj) worth a hundred thousand rupees
लगन	(f) devotion
लगना	(intr) to begin to, to seem, to look, to be related as, to be applied, to take (time), to stick, to be attached, to be hit, to continue
लगभग	approximately
लगातार	continuously
लगान	(m) rent, land revenue
लगाना	(trans) to apply, to hit, to join, to patch
लघु	(adj) small
लघु उद्योग	(m) small industry
लघु औद्योगिक	(adj) pertaining to small industry
लघुशंका	(f) urinating
लचीला	(adj) flexible
लज्जा	(f) shyness, shame
लज्जाजनक	(adj) shameful
लज्जित	(adj) shamed
लट	(f) tangled hair, lock of hair
लटक	(f) hanging; bend; coquetry
लड़का	(m) boy
लड़ना	to fight, to quarrel
लड्डू	(m) sweetmeat
लपट	(f) flame

लम्बा = लंबा

लय	(f) tune, melody
लय पूरक	(adj) melodic, in tune
लय पूर्ति	(f) fulfilling melody
लय बद्ध	(adj) melodic
लयात्मक	(adj) melodic
लयात्मकता	(f) melodiousness

लरना = लड़ना

लरिकिन	=लड़के
ललना	(f) woman
ललित	(adj) fine
ललितकला	(f) fine art
लवज़मा	(m) appendage, requisite
लहर	(f) wave
लहराना	(intr) to wave, to swing
लहरदार	(adj) curly
लाक्षणिक	(adj) figurative, elliptical
लाख	one hundred thousand (100,000)
लाखों करोड़ों	millions
लागत	(f) manufacturing cost
लागू होना	to apply
लाज	(f) shame, shyness
लाज़मी	(adj) compulsory
लाठी	(f) staff, stick
लादना	to impose; to load
लाना	(intr) to bring
लापरवाही	(f) carelessness
लाभ	(m) gain, profit, use
लाभकारी ,लाभदायक	(adj) useful, profitable
लाल	(adj) red; jewel
लालची	(adj) greedy
लालन	(m) fondling, loving, bringing up; boy
लावनी	(f) a kind of song and meter
लिंग पुराण	(f) name of a Purana
लिंगायत	(m) follower of a Shaivites' sect
लिए	for
लिखना	(trans) to write
लिखित	(adj) written
लिच्छवि	(m) name of a dynasty
लिपटना	to be coiled, to enwrap
लिपि	(f) script
लिपिबद्ध	(adj) written down, inscribed
लिहाज	(m) regard, deference
लीक	(f) mark, line, track
लीन	(adj) absorbed
लीपना	to coat, to besmear
लीला	(f) sport, play, charm, performance
लुगाई	(f) woman
लुटाना	to spend lavishly
लुटेरा	(m) robber
लुप्त होना	to disappear, to hide
लुभाना	to attract
लूट	(f) loot
लूट खसोट	(f) looting
ले जाना	to take away
लेकिन	but
लेख	(m) article
लेखन सामग्री	(f) writing material
लेखा जोखा	(m) account
लेटना	to lie down

लेना to take

लोक (adj) folk, people, public; (m) world, universe

लोककथा (f) folktale

लोककथानक (m) plot of a folk narrative

लोककला (f) folk art

लोकगीत (m) folk song

लोकचित्त (m) folk mind, folk heart

लोकतंत्र (m) democracy

लोकतंत्री, लोकतान्त्रिक (adj) democratic

लोकधर्मी (adj) in vogue, among people, realistic

लोकनाटक (m) folk drama

लोकनिंदित (adj) condemned by public

लोकनीति (f) people's politics

लोक पर लोक (m) this world and the other world

लोकप्रचलित (adj) traditional

लोकप्रिय (adj) popular

लोकमानस (m) people's mind

लोकव्यवहार (m) customary conduct, way of society

लोक व्यवहार परक (adj) traditional, customary

लोकशिल्प (m) folk architecture

लोकसंगीत (m) folk music

लोकसंगीतज्ञ (m) folk musician

लोकसंस्कृति (f) folk culture

लोकसभा (f) Lok Sabha - lower house of Indian parliament

लोकसमुदाय (m) folk community

लोकसाहित्य (m) folk literature

लोकसेवक (m) public servant

लोक सेवक संघ (m) people's servants' organization

लोक स्वी कृत (adj) accepted by the people

लोकायन (m) folklore

लोकोक्ति (f) proverb

लोकोक्तिगत (adj) proverbial

लोकोक्तिपरक (adj) proverbial

लोकोत्सव (m) folk - festival

लोग (m) people

लोप करना to make disappear

लोबिया (m) a kind of bean

लोभ (m) greed

लोरी (f) lullabye

लोहा (m) iron

लोहे का हल (m) advanced type of iron plow

लोहित (adj) red; Mars

लौकिक (adj) worldly

लौटाना (trans) to return

लौह (adj) iron-made

लौहस्तम्भ (m) iron pillar

ल्याउ bring

व

वंग (m) Bengal

वंचित (adj) deprived

वंश (m) lineage, clan; bamboo

वंशगत (adj) hereditary

वंशज	(m) descendant
वंशदण्ड	(m) bamboo staff
वंशानुक्रमिक	(adj) hereditary
वंशावली	(f) genealogy
वक्त	(m) time
वक्तव्य	(m) statement. lecture
वक्तव्य परक	(adj) to be spoken
वक्ता	(m) speaker
वक्र	(adj) curvy
वगैरह	etcetra
वचन	(m) world, promise
वजह	(f) cause
वज्र	(m) thunderbolt
वटवृक्ष	(m) banyan tree
वत्सराज	(m) name of a king
वध	(m) murder, killing
वधू	(f) bride, wife
वधू प्राप्ति	(f) attainment of a bride
वन	(m) forest
वनवास	(m) exile into forest
वनस्पति	(f) vegetable
वनस्पति जीवन	(m) vegetation
वन्य	(adj) forest's
वमन करना	to vomit
वय	(f) age
वयस्क	(adj) adult
वयोवृद्ध	(adj) elderly man
वर	(m) husband, bridegroom; boon, favor
वरण	(m) choosing as spouse
वरदान	(m) boon, favor
वरदान स्वरूप	as a boon
वरन्	but also
वरारी = बरारी	(m) a folktune of Berar region
वराह	(m) boar
वरिष्ठ	(adj) respected, best
वरेण्य	(adj) excellent, best, desirable
वर्ग	(m) class
वर्गरहित	(adj) classless
वर्गविभेद	(m) class-difference
वर्ग विशेष	(m) certain class
वर्गीकरण	(m) classification
वर्गीकृत	(adj) classified
वर्जित	(adj) forbidden
वर्ण	(m) color, caste, class, syllable
वर्णन	(m) description
वर्ण विहीनता	(f) classlessness
वर्णानुसार	according to Varna
वर्णाश्रम	(m) Varna and Ashrama
वर्णाश्रम धर्म	(m) tenets of Varna and Ashrama
वर्तन	(m) occupation, subsistence
वर्तमान	(m) present
वर्तमान काल	(m) present time

वर्तमान होना	to be present
वर्तुल	(m) circle
वर्तुलाकार	(adj) circular
वर्ष	(m) year
वर्षा	(f) rain
वर्षाकाल	(m) rainy season
वर्षा होना	to rain
वल्कल	(m) cloth made of bark
वशीभूत	(adj) overpowered
वसन्तोत्सव	(m) a spring festival
वसव:	(m) eight vasus - gods
वसीयत	(f) will, testament
वसूल करना	to charge
वस्तु	(f) commodity, thing
वस्तु आधारित	(adj) commodity - based
वस्तुत:	really
वस्त्र	(m) cloth
वस्त्रचयनकला	(f) art of choosing cloth
वह	he, she, it, that
वहां	there
वहीं	right there
वही	the same
वांछनीय	(adj) desirable
वांछित	(adj) desired
वाक्य	(m) sentence
वाक्यखंड	(m) part of sentence, phrase
वाक्य विन्यास	(m) syntax
वाक्यांश	(m) phrase
वाचक	(m) reader, reciter
वाच्य	(m) voice
वाजपेय	(m) a certain Vedic sacrifice
वाणिज्य	(m) trade
वाणी	(f) speech
वातावरण	(m) atmosphere
वादी	(m) musical notes; plaintiff
वाद्य	(m) musical instrument
वानर	(m) monkey, ape
वानरीय मानव	(m) ape - man
वापस	back
वापस करना	to return
वाम	(adj) left
वामाक्षिस्पन्दन	(m) throbbing of left eye
वायु	(f) air, wind
वायुगति	(f) wind - speed
वारना	to offer, to dedicate, to sacrifice
वार्ता	(f) conversation, talk, tale
वार्षिक	(adj) yearly
वाला	-er
वाल्मीकि	(m) a great Sanskrit poet
वाल्मीकि रामायण	(f) Valmiki's Ramayana (life of Rama)
वाशिष्ठ	(adj) pertaining to Saint Vashishtha
वासना	(f) lust

वासभूमि	(f) abode place
वासवदत्ता	(m) name of a man
वासी	(m) inhabitant
वासुदेव	(m) Lord Krishna
वास्तव	(m) reality
वास्तव में	in fact
वास्तविक	(adj) real
वास्ते	for
वाहन	(m) vehicle
वाह्य	(adj) outer
वाह्लीक	(m) name of a place
विंद	(m) name of a king
विंदु	(m) point
विंध्याचल	(m) Vindhyachal mountain
विंध्याटवी	(f) Vindhyachal valley
विकट	(adj) difficult, terrible
विकल्प	(m) alternative
विकसित	(adj) developed
विकास	(m) development
विकास कर्म चारी	(m) development worker (officer)
विकास कार्य	(m) development work
विकासकार्यक्रम	(m)development project
विकासखंड	(m) development block
विकासखंडीय	(m) development block's
विकासमंत्री	(m) minister of development
विकासव्यय	(m) development expenditure
विकासशील	(adj) developing
विकासोन्मुख	(adj) developing
विकृत	(adj) disfigured, spoiled
विकेंद्रित	(adj) decentralized
विकेंद्रीयकरण, विकेन्द्रीकरण	decentralization
विक्रमसिंह	(m) name of a man
विक्रमांकदेव चरित	(m) name of a book, Life of Vikramankdev
विक्रमोर्वशी	(m) name of a play by Kalidasa
विक्रय	(m) sale
विख्यात	(adj) famous
विगत	(adj) past
विग्रह	(m) feud, fight
विघटन	(m) disintegration, dissolution
विघटनकारी	(adj) disintegrating
विघटित	(adj) disorganised
विघ्न	(m) obstacle
विचार	(m) thought
विचारक	(m) thinker
विचारजन्य	(adj) under consideration
विचारणा	(f) deliberation
विचारणीय	(adj) worthy of consideration
विचारधारा	(f) ideology; stream of thought
विचारविनिमय	(m) exchange of views
विचारशील	(adj) thoughtful
विचित्र	(adj) strange
विजन्या	(f) pregnant, woman about to give birth

विजय	(f) victory
विजय गाथा	(f) saga of victory
विजय श्री	(f) victory; goddess of victory
विजयी	(m) winner
विजिगीषु	(adj) desirous of victory
विजित	(adj) defeated
विजेता	(m) winner
विज्ञान	(m) science
विज्ञान परक	(adj) scientific
विज्ञान श्रेणी	(f) scientific class, class of sciences
विज्ञापन	(m) advertisement
विडंबन	(m) mockery, irony
वितंडा	(m) frivolous arguement
वितरण	(m) distribution
वितुंड	(m) elephant
वित्त	(m) finance
वित्त निगम	(m) finance corporation
वित्तीय	(adj) fiscal
विदग्ध	(adj) burnt
विदित	(adj) known
विदिशा	(f) name of a kingdom
विदीर्ण	(adj) broken into pieces
विदूषक	(m) jester in a drama
विदेश	(m) foreign country
विदेश नीति	(f) foreign policy
विदेशी	(adj) foreigner, foreign
विदेशी मामले	(m) foreign affairs
विद्धशालभंजिका	(f) name of a book
विद्यमान होना	to be present
विद्यमानता	(f) presence
विद्या	(f) knowledge, science
विद्यार्थी	(m) student
विद्यार्थी जीवन	(m) student-life
विद्युत	(f) electricity
विद्युत शक्ति	(f) electric, energy
विद्योषित	(adj) very intelligent
विद्रव	(m) flight, retreat; liquefaction
विद्रूपता	(f) horrible form
विद्रोह	(m) rebellion
विद्रोही	(m) rebel
विद्वान	(m) scholar, learned man
विधान	(m) constitution
विधानमण्डल	(m) constituent council
विधानसभा	(f) constituent assembly
विधि	(f) law, way, method
विधि निर्माता	(m) law-maker
विधि निषेली	(f) legal system
विधि विज्ञान	(m) science of law
विधि विधान	(m) tenet, precept
विधेयक	(m) act
विनम्र	(adj) polite
विनय	(f) politeness, request, prayer

विनयपिटक	(f) name of a Buddhist book
विनष्ट	(adj) destroyed
विनाश	(m) destruction
विनिमय	(m) exchange
विनियोग	(m) investment, disposal
विनियोग व्यय	(m) investment cost
विनियोजक	(m) planner
विनियोजन	(m) planning
विनीत	(adj) polite
विनोद	(m) jest, humor, entertainment
विनोद साधन	(m) means of entertainment
विपत्ति	(f) destitution
विपद	(f) hardship, destitution
विपद संकुलन	(m) throng of hardships
विपद्ग्रस्त	(adj) fallen into calamity
विपरीत	(adj) contrary
विपर्यास	(m) overturning, change
विपुल	(adj) abundant
विप्र	(m) Brahman, priest
विफल	(adj) unsuccesful
विफलता	(f) unsuccess
विभक्त	(adj) divided
विभाग	(m) department
विभाजन	(m) division
विभिन्न	(adj) different, diverse, various
विभूति	(f) holy ashes
विमाता	(f) step-mother
विमुक्त	(adj) freed
विमुग्ध	(adj) bewildered, confused, infatuated
वियोग	(m) separation
वियोगिनी	(f) separated woman
विरक्ति	(f) aversion
विरल	(adj) rare
विराज	(m) sovereign; ruler
विराजना	to take seat
विराजमान	(adj) seated
विराट	(m) name of a place
विरासत	(f) inheritance
विरितिया	(adj) non-attached
विरुद्ध	(adj) opposed
विरोध	(m) opposition
विरोधी	(adj) opponent
विलंब	(m) delay
विलंबित	(adj) delayed
विलक्षण	(adj) strange; extraordinary
विलग	(adj) separate
विलास	(m) luxury
विलासवती	(f) name of a woman; playful woman
विलास-सामग्री	(f) means of luxury
विलासिका	(f) a kind of one act play

विलासिता	(f) luxuriousness; sensual pleasure
विवरण	(m) description, account
विवाद	(m) argument, debate
विवादग्रस्त	(adj) disputed
विवादास्पद	(adj) disputable
विवाह	(m) marriage
विवाह योग्य	(adj) marriageable
विवाह-संबंधी	(adj) marital
विविध	(adj) various
विविधता	(f) diversity
विविधता पूर्ण	(adj) diversified
विवृत	(adj) round, open
विवेक	(m) true knowledge,discretion
विवेक पूर्वक	sensible, thoughtfully
विवेक युक्त	(adj) sensible
विवेक युक्त समाजीकरण	(m) creating socialism thoughtfully
विवेचनापरक	(adj) examining, reviewing
विशद	(adj) brilliant, splendid
विशाखापत्तम	(m) name of a city
विशाल	(adj) huge, big
विशालकाय	(adj) huge bodied
विशिष्ट	(adj) special
विशेष	(adj) special
विशेष कर , विशेष कर के	especially, mainly, for the most part
विशेषज्ञ	(m) specialist
विशेषण	(m) abjective, attribute
विशेषाधिकार	(m) special right, special privilege
विशेषीकरण	(m) specialization
विश	(m) homestead, community, village
विश्लेषण	(m) analysis
विश्व	(m) world, universe
विश्व दृष्टि	(f) world point of view
विश्व नागरिक	(m) world citizen
विश्व नेता	(m) world leader
विश्व बैंक	(m) world bank
विश्वयुद्ध	(m) world war
विश्वसमाज	(m) world community
विश्वसनीय	(adj) trustworthy
विश्वस्त	(adj) assured
विश्वामित्र	(m) name of a saint
विश्वास	(m) belief
विश्वासी	(m) believer
विष	(m) poison
विषम	(adj) difficult, uneven adverse
विषमता	(f) inequality, disproportion
विषय	(m) subject
विषयक	(adj) related
विषय-वस्तु	(f) subject matter, plot (of a marrative)
विषय वस्तु परक	based on or pertaining to a plot
विषाण	(m) horn
विषुवत रेखा	(f) equator
विस्तार	(m) expansion

विस्तृत	(adj) detailed
विहीन	less, without
वीथी	(f) road, row
वीर	(adj) hero; brave
वीर रस	(m) sentiment of heroism
वीर रस प्रधान	(adj) heroic
वीरा ग्रणी	vanguard
वृंदावन	(m) name of a city
वृक्ष	(m) tree
वृत्ति	(f) job, livelihood
वृत्ति जीवी	(m) salaried man
वृद्ध	(adj) old (man)
वृद्धावस्था	(f) old age
वृद्धि	(f) increase
वृष भानु	(m) name of a king
वृहत्	(adj) great, big, large
वृहत्तर	(adj) greater
वृहत्तर भारत	(m) Greater India
वृहत्देशी	(m) name of a book by Matanga
वे	they
वेग	(m) speed; flow
वेगवती	(adj) fleeting, speeding
वेतन	(m) wages, salary
वेद	(m) Veda
वेदविदित	(adj) known to or in the Vedas
वेदांत	(m) Vedanta
वेदांती	(adj) Vedantic
वेदारम्भ	(m) initiation to the study of Vedas
वेला	(f) time
वैज्ञानिक	(m) scientist
वैदिक	(adj) Vedic
वैदूर्य	(adj) lapis lazuli, beryl
वैध	(adj) legal
वैभव	(m) glory, power, wealthiness, grandeur
वैयक्तिक	(adj) personal, private
वैरवी	(f) name of a snake-charmer caste
वैराज्य	(m) non-monarachy government, a type of democracy
वैवाहिक	(adj) marrital
वैश्य	(m) Vaisya, third Varna
वैष्णव	(adj) worshipper of Vishnu
वैसा	of that kind
वैसा ही	of the same kind
वैसे	in that way, on the other hand
व्यंग्य	(m) sarcasm, satire
व्यंग्य विनोद	(m) jest
व्यंग्यार्थ	(m) suggestive meaning
व्यंजना	(f) suggestive meaning
व्यक्त	(adj) expressed
व्यक्ति	(m) person
व्यक्तिगत	(adj) personal, private
व्यक्ति परक	(adj) individualistic
व्यक्ति बोधक	(adj) personal; indicator of a proper person or object

व्यक्तिवाद	(m) individualism
व्यतीत होना	to be past
व्यय	(m) expenditure
व्यर्थ	in vain, useless
व्यवधान	(m) interruption, obstruction, intervention
व्यवसाय	(m) profession, commerce, business
व्यवसायिक	(adj) pertaining to business
व्यवसायिक साहस	(m) business enterprise
व्यवसायी	(m) businessman
व्यवसायीकरण	(m) commercialism
व्यवस्था	(f) management
व्यवस्थापक	(m) manager
व्यवहार	(m) behavior, conduct
व्यवहारिक	(adj) practical
व्यवहृत होना	to be followed or practiced
व्यष्टिमूलक	(adj) individualistic; isolationist
व्याकरण	(m) grammar
व्याकरणिक	(adj) grammatical
व्याकुल	(adj) agitated, restless, in agony
व्याख्या	(f) explanation
व्याघात	(m) blow, obstruction
व्याघ्र	(m) tiger, lion
व्यापक	(adj) comprehensive, widespread
व्यापार	(m) trade
व्यापारचक्र	(m) trade circle
व्यापारवर्ग	(m) business class
व्यापारी	(m) business man
व्यापृत	(adj) occupied, engaged
व्याप्त होना	to be all-pervading, to be spread wide
व्याप्ति	(f) pervasion, inherence, universal
व्यायोग	(m) a kind of heroic one act play
व्यावर्तन करना	to differentiate
व्यावसायिक	(adj) related to business, vocational
व्यावहारिक	(adj) practical
व्युत्पत्ति	(f) etymology, origin, derivation
व्यूह	(m) military array, arrangement of troops
व्यूह रचना	(f) military strategy
व्यूहरचना करना	to deploy troops strategically
व्रजभाषा	(f) Braj language
व्रजमंडल	(m) Braj area
व्रत	(m) fasting, solemn vow, austerity

श

शंकर	(m) Lord Shiva; Shankarā-charya
शंकर दिग्विजय	(f) name of a book
शंकराचार्य	(m) name of a philosopher
शंका	(f) doubt
शंकावाद	(m) doctrine of scepticism
शंख	(m) conch-shell; name of a writer
शंख लिखित	(adj) written by Shaka
शक	(m) name of a tribe or race
शक तिलक	(m) coronation of Shaka
शकमिश्रित	(adj) mixed with Shaka

शानदार splendid

शान्त = शांत

शान्तिपूर्वक peacefully

शान्तिमय (adj) peaceful

शापवश due to a curse

शाम (f) evening

शामिल included

शारीरिक (adj) bodily, physical

शाल (m) a kind of tree

शाश्वत (adj) eternal

शासक (m) administrator, ruler

शासन (m) rule, administration

शासनकर्ता (m) administrator

शासन कार्य (m) administration

शासन काल (m) reign, period of rule

शासन नियत्रण (m) state control

शासन प्रणाली (f) type of government

शासनभार (m) burden of governing

शासन सम्बन्धी (adj) administrative

शासनहर (m) a kind of envoy

शासनाधिकार (m) right to rule, administration's right

शास्त्र (m) science, precept; scientific treatise

शास्त्र कार (m) author of a Shastra

शास्त्र बर्जित (adj) forbidden by Shastras

शास्त्र सम्मत (adj) approved by Shastras

शास्त्रीय (adj) scientific, classical

शास्त्रीय संगीत (m) classical music

शिकायत (f) complaint

शिकार (m) prey; hunting

शिकारी (m) hunter

शिक्षक (m) educator, teacher

शिक्षण (m) education, teaching

शिक्षणकार्य (m) teaching profession

शिक्षण विधि (f) method of teaching

शिक्षणालय (m) educational institution

शिक्षा (f) education

शिक्षा व्यवस्था (f) education management

शिक्षासम्बन्धी (adj) educational

शिक्षित (adj) educated

शिथिल (adj) lax, loose

शिथिलता (f) laxity

शिरोधार्य (adj) venerable, worthy of obedience

शिलारोहण (m) climbing a stone

शिलालेख (m) inscription

शिल्प (m) sculpture, art, craft

शिल्पक (m) artisan

शिल्पकला (f) sculpture

शिव (m) Lord Shiva

शिवधनुष (m) Shiva's bow

शिशु (m) child

शिशु जन्म (m) child birth

शिश्नदेव (m) phallus god

शकुंतला	(f) name of a heroine of a play
शकुन	(m) omen
शकुनपरीक्षक	(m) augur
शकुल	(f) a kind of fish
शक्ति	(f) power, energy
शक्तिमान	(adj) powerful
शक्तिवर्धक	(adj) stimulant, energizer
शक्तिशाली	(adj) powerful
शक्तिहीन	(adj) powerless
शतपथ ब्राह्मण	(m) name of a religious book
शत प्रतिशत	cent, percent
शताब्दि, शताब्दी	(f) century
शत्रु	(m) enemy
शत्रुघ्न	(m) half-brother of Rama
शत्रुनाशक	(adj) destroyer of enemies
शत्रुराष्ट्र	(m) enemy nation
शपथ	(f) oath
शब्द	(m) word, noise
शब्द भंडार	(m) vocabulary
शब्द भेद	(m) classification of words
शब्द मय	(adj) resonant, sounding
शब्दविहीन	(adj) without words
शब्दशः	word for word
शब्द सामर्थ्य	(f) power of word
शब्दावली	(f) vocabulary
शम, शमन	(m) tranquillity, calmness
शयन	(m) sleep
शयनावस्था	(f) sleeping stage
शरद	(f) autumn,fall
शरीफत	(f) nobility, politeness
शरीर	(m) body
शरीर-संस्कार	(m) bodily sacrament
शर्त	(f) condition
शर्मा	(m) title of Brahmans caste people
शव	(m) corpse
शबर	(m) name of a people
शशिप्रभा	(f) moonlight
शस्त्र	(m) arm, weapon
शस्त्रविहीन	unarmed
शस्त्रहीन	(adj) unarmed
शस्त्रास्त्र	(m) armament
शहर	(m) city
शहरपनाह	(m) master of the city
शहरी	(m) urban, citizen
शांत	(adj) peaceful, calm
शांति	(f) peace
शांतिपूर्ण	(adj) peaceful
शांतिप्रिय	(adj) peace loving
शाकल	(m) name of a place
शाकाहारी	(adj) vegetarian
शाखा	(f) branch
शादी	(f) marriage

शिष्ट (adj) cultured

शिष्टाचार (m) etiquette

शिष्य (m) pupil

शीघ्र soon

शीघ्रतिशीघ्र as soon as possible

शीतला (f) small pox

शीश (m) head

शुंगवंशी belonging to Shung lineage

शुंडाकार स्तंभ (m) pyramid (pillar)

शुकनास (m) parrot-nosed; name of a person

शुक्रनीतिसार (m) name of a book

शुक्ल (adj) white

शुण्ड (m) elephant trunk

शुद्ध (adj) pure

शुद्धतम (adj) purest

शुद्धता (f) purity

शुद्धि (f) purification

शुनःशेष (m) name of a saint

शुभ (adj) good, auspicious

शुभाशुभसूचक (adj) indicator of good or evil (omen)

शुरू begun

शुश्रूषा (f) nursing, service, obedience

शुष्क (adj) dry

शूद्र (m) a man of the lowest of the four Varnas

शून्यता (f) voidness, vacuum

शूर्पणखा (f) name of Ravana's sister

शृंखला (f) chain, link

शृंगार (m) adornment; erotic sentiment

शृंगारसाधन (m) means of adornment

शृगाल (m) jackal

शेष (adj) remaining

शैक्षणिक, शैक्षिक educational

शैय्या (f) bed

शैली (f) style

शैलीगत (adj) stylistic

शैव (adj) Lord Shiva's worshipper

शैशव (m) childhood

शैशवकाल (m) childhood

शोचनीय (adj) worrisome

शोध (m) research

शोधन (m) refining, purifying

शोधनक (m) an official in a judge's court

शोधपरक (adj) pertaining to research

शोधस्तरीय of research level

शोषण (m) exploitation

शौच (m) purity

शौण्डिकेय (m) name of a demon

शौरसेन (m) name of a modern Braj

शौर्य (m) valor, heroism

श्याम (adj) black, blue; (m) Lord Krishna

श्यामा (f) black; beautiful woman; Radha, Durga

श्रद्धा (m) devotion

श्रद्धामय (adj) devoted

श्रम (m) labor, hard work

श्रमनीति (f) labor policy

श्रमिक (m) laborer

श्राद्ध (m) a ceremony in honor of forefathers

श्रावक (m) Jain monk

श्री (f,m) dignity; splendor; honorific title like Mr.

श्रीगणेश (m) beginning

श्रीगदित (m) a kind of minor drama

श्रीमती (f) Mrs. ; beautiful

श्रीवृद्धि (f) progress, prosperity

श्रुति (f) Veda; revealed or heard

श्रुत्यान्तर (m) deviation from the Vedas

श्रेणी (f) class

श्रेणी विभाग (m) class division

श्रेय credit

श्रेष्ठ (adj) best, superb, grand

श्रेष्ठतर (adj) better, best

श्रेष्ठी (m) merchant

श्रोत्रहीन (adj) ear-less

श्लिष्ट (adj) mixed; joined together; clinging

श्लोक (m) name of a Sanskrit meter; verse

श्वान (m) dog

श्वास (f) breath

श्वास प्रश्वास (m) breath; inspiration and expiration

श्वेत (adj) white

ष

षट्मास six month period

षड्ज (m) name of a caste

षड्जी (m) name of a caste and a raga

षड्यन्त्र (m) conspiracy

षडविंश ब्राह्मण (m) name of a book

षाड्गुण्य (adj) containing six attributes

षोड़श sixteen

स

संकटकालीन (adj) emergency

संकलन (m) collection

संकलनकर्ता (m) collector

संकल्प (m) resolution; a ceremony of resolution

संकल्प पूर्वक resolutely

संकल्प सूर्योदय (m) sankalpa made at sunrise

संकल्पस्वातंत्र्य (m) freedom of determination

संकीर्ण (adj) narrow, tight

संकुचित (adj) narrow, contracted

संकुल (adj) crowded together

संकेत (m) hint

संकेत करना to hint

संकोच (m) hesitation

संक्रमण (m) transition

संक्रांति (f) transition

संक्षिप्त (adj) brief, abridged

संक्षेप (m) summary

संक्षेप में	in brief
संख्या	(f) number
संख्या पद	(m) number word
संख्या सूचक	(adj) number indicator
संग	(m) company, with
संगठन	(m) organization
संगठित	(adj) organized
संगति	(f) company
संगम	(m) union, meeting
संगमरमर	(m) white marble
संगीत	(m) music
संगीतज्ञ	(m) musician
संगीतमयता	(f) musicality
संगीत रत्नाकार	(m) name of a book on music
संगीत विद्या	(f) science of music
संगीत विस्तार	(m) expansion or improvisation of music
संगीत शास्त्री	(m) musician
संगृहीत	(adj) collected
संग्रह	(m) accumulation
संग्रह प्रणाली	(f) method of collecting
संग्राम	(m) war, struggle
संघ	(m) union, central government
संघराज्य	(m) federal government
संघटन	(m) organization
संघर्ष	(m) struggle, rubbing
संघात	(m) striking, blow, collision
संचय	(m) accumulation
संचार	(m) communication; motion
संचारना	to spread
संचार माध्यम	(m) means of communication
संचार व्यवस्था	(f) communication system
संचालक	(m) director
संचालन	(m) direction
संचालित	(adj) directed, run
संचित	(adj) collected
संजीवन	(m) revival
संजोइ	having arranged
संजोना	to arrange
संज्ञा	(f) name, noun
संत	(adj) saint
संतभक्त	(m) saint devotee
संतति	(f) continuum; offspring
संतान	(f) offspring
संतान हीन	(adj) issueless
संतुलन	(m) balance
संतुलित	(adj) balanced
संतोष	(m) satisfaction
संतोष होना	to be satisfied
संथाल	(m) name of a tribe
संथाली	(f) Santhali language
संदर्भ	(m) reference
संदेह	(m) suspicion

संधान	(m) aiming
संधि	(f) treaty
संधिचर्चा	(f) treaty-negotiation
संन्यास	(m) renunciation
संपत्ति	(f) riches, wealth
संपदा	(f) wealth
संपन्न	(adj) affluent, rich
संपन्नता	(f) affluence
संपर्क	(m) contact
संपादन	(m) editing
संपादित	(f) edited
संपूर्ण	(adj) whole, all
संपेरा	(m) snake charmer
संप्रदा	(m) sect
संबंध	(m) relation
संबंधित, संबंधी	(adj) related
संबद्ध	(adj) related
संभव	(adj) possible
संभाल	(f) care-taking
संभालना	to manage, to hold up
संभावना	(f) possibility
संभाव्य	(adj) possible
संभ्रांत	(adj) confused; honorable
संयत्र	(m) machinery
संयम	(m) restrain
संयुक्त	(adj) joint
संयुक्ताक्षर	(m) joined letters, sound cluster
संयोग	(m) chance
संयोगवश, संयोग से	by chance
संयोजन	(m) planning
संरक्षक	(m) guardian
संरक्षण	(m) protection, defence
संरचना	(f) structure
संलग्न	(adj) joined, associated
संलापक	(m) a kind of drama
संवरण	(m) containment, covering
संवाद	(m) dialogue
संवाद चित्र	(m) movie
संवादी	(m) a kind of musical notes
संवाहिका	(f) carrier
संविधान	(m) constitution
संव्यूहन	(m) arrangement
संशोधन	(m) amendment
संशोधन-विधेयक	(m) amendment bill or act
संश्रय	(m) refuge, protection, alliance
संश्लिष्ट	(adj) coherent, closely connected
संसद	(f) parliament
संसद सदस्य	(m) member of parliament
संसदीय	(adj) parliamentary
संसाधन	(m) accomplishment; fulfillment, performance
संसार	(m) world, universe

संस्कार	(m) sanctifying ceremony
संस्कार जर्जरित	(adj) tattered (rotten) by Samskaras
संस्कारमय	with Samskaras
संस्कार्य	to be sanctified
संस्कृत शब्दावली	(f) Sanskrit vocabulary
संस्कृति	(f) culture
संस्कृति प्रसरण	(m) cultural expansion
संस्था	(f) institution, party, organization
संस्थान	(m) institution
संस्था विघटन	(m) dissolution of a party or institution
संस्पर्शिता	(f) touchability
संहत	(adj) collected, coherent, compact; killed
संहिता	(f) collection of Vedic hymns
सइयां	(m) husband, lover, master
सकना	(intr) can, may
सक्रिय	(adj) active
सखी	(f) woman friend
सगर	(m) name of a king
सगाई	(f) engagement, betrothal
सगुण	(adj) with attributes
सगे सम्बन्धी	(m) blood relative
सघन	(adj) thick, dense
सघनता	(f) thickness
सच	(m) true, truth
सचाई	(f) truth
सचिव	(m) secretary, minister
सच्चा	(adj) truthful
सजग	(adj) alert, careful
सजनी	(f) sweetheart, mistress
सजातीय	(adj) being of same caste or race
सजीव	(adj) live, lively
सट्टक	(m) a kind of Prakrit play
सट्टा बाजी	(f) speculation (in stock market
सड़क	(f) road
सड़ना	(intr) to rot
सड़ला, सड़ाहुआ	(adj) rotten
सतत	continuous
सतर्क	(adj) alert, careful
सतर्कता आयोग	(m) watch commission
सतह	(f) surface
सताना	to torture, to harrass
सतिय पुतो	(m) name of a ruler
सतिया	(m) a kind of religious folk art and festival, Swastika
सत्कार	(m) welcome
सता	(f) power
सतावन	fifty seven (1857's mutiny)
सताहीन	(adj) powerless
सत्पथ	(m) good path
सत्प्रभाव	(m) good intelligence
सत्य	(m) truth
सत्ययुग	(m) first of four ages, golden age
सत्य हरिश्चन्द्र	(m) name of a truthful king

सत्रह	seventeen
सत्वत्	(m) name of an ancient tribe in India, Yadava
सत्वमूल	(m) protoplasm
सदर	(adj) main, chief, chairman, president
सदस्य	(m) member
सदा	always
सदा चार	(m) good conduct
सदा चारी	(adj) having a pure and good conduct
सदी	century
सदुपदेश	(m) good counsel or preaching
सदृश	like
सदैव	always
सद्गुण	(m) good quality
सद्भाव	(m) a kind feeling, good nature
सद्भावना	(f) good will
सन....ईस्वी	A.D.
सनसनी खेज	(adj) sensational
सनी	(f) flax, jute
सन्तति-प्रजनन	(f) procreation
सन्तानोत्पत्ति	(f) procreation
संदेशवाहक माध्यम	(m) means of communication
सन्देशवाहकता	(f) communicativity
सन्देशवाहन	(m) act of communication
सन्निहित	(f) close; inherent, included
सन्मुख	before, facing
सपना	(m) dream
सप्तक	(m) group of seven; seven musical notes, scale
सप्तपदी	(f) a ceremony in marriage of taking seven steps
सप्तस्वर	(m) seven scales or notes
सप्रयोजन	with a purpose
सफल	(adj) successful
सफलता	(f) success
सफलतापूर्वक	successfully
सफाई	(f) cleanliness
सब	all
सब कुछ	everything, all
सब के सब	all
सब से	(+ adj) most, than all
सबल	(adj) strong
सबहिन	all
सब्जी	(f) green vegetable
सभा	(f) council, meeting
सभागृह	(m) council chamber
सभापति	(m) chairman, president
सभासद	(m) member, courtier
सभी	all
सभ्य	(adj) civilized
सभ्यता	(f) civilization
सभ्यता निर्मात्री	(f) civilization-maker
समंजन	(m) annointment
सम	(adj) even, equal
समकक्ष	(adj) peer, equal

समकक्षी	(m) equal
समक्ष	in front of, before
समग्र	(adj) total
समग्रता	(f) totality
समझ	(f) intellect
समझना	to understand
समझा बुझा कर	pursuadingly
समझौता	(m) agreement
समता	(f) equality
समता मूलक	(adj) equalitarian
समदि	(adj) intoxicating
समन्वय	(m) integration
समन्वित	(adj) integrated
समन्वितता	(f) integration
समय	(m) time
समय मापक	(m) time scale
समय समय पर	from time to time
समय सारिणी	(f) time table
समयानुकूल	(adj) timely, opportune
समरसता	(f) harmony
समर्थ	(adj) capable
समर्थन	(m) support
समर्पण	(m) surrender, dedication
समवकार	(m) a kind of drama
समवेत	(adj) assembled
समष्टि	(f) collection; society; creation
समष्टिरूप	(m) collective form, totality
समस्त	all
समस्या	(f) problem
समागम	(m) reunion, coming together, meeting
समाचार	(m) news
समाचारपत्र	(m) newspaper
समाज	(m) society
समाजगत	(adj) social, belonging to society
समाजरक्षा	(f) defence of society
समाजवाद	(m) socialism
समाजवादी	(adj) socialist
समाजविज्ञान	(m) sociology
समाज व्यवस्था	(f) social order
समाज शास्त्र	(m) sociology
समाज शास्त्री	(m) sociologist
समाज शास्त्रीय	(adj) sociological
समादर	(m) reverence
समाधान	(m) justification of a statement
समान	(adj) equal, like
समानता	(f) equality
समानान्तर	(adj) parallel
समाना	to be absorbed
समाप्त	(adj) ended
समायोजन	(m) connection; meeting; assembly
समावर्तन	(m) return after completing studies
समावेश होना	to be included

समिति	(f) committee, assembly
समिद्ध अग्नि	(f) bonfire
समीक्षा	(f) review
समीक्षात्मक	(adj) critical
समीचीन	(adj) proper
समीप	near
समुचित	(adj) proper
समुच्च्यकारक	(m) conjunction
समुदय	(m) origin, upspringing
समुदाय	(m) group
समुदाय-सिद्धांत	(m) community-theory
समुद्दीपन	(m) pump priming
समुद्र	(m) sea
समुद्रगुप्त	(m) name of a king
समुद्र पर्यन्त	up to the sea
समुद्रमंथन	(m) "churning of the ocean"
समुद्री, समुद्रीय	(adj) marine
समुद्रीय अमेरुदण्डी	(m) marine invertebrates
समूचा	(adj) all, whole
समूल नाश करना	to destroy from the root
समूह	(m) group
समूहगत	(adj) collective; group
समृद्ध	(adj) prosperous
समृद्धि	(f) prosperity
समेत	with, including

सम्पन्न = संपन्न

सम्पूर्ण = संपूर्ण

सम्प्रदाय = संप्रदाय

सम्प्रेषण	(m) summoning, dispatching
सम्बद्ध	(adj) related; tied together
सम्बन्ध विच्छेद	(m) breaking-of relations
सम्बन्धी	(adj) related; (m) relative
सम्बोधित करना	to address
सम्मत होना	to agree
सम्मान	(m) respect
सम्मानित	(adj) honored, respected
सम्मिलन	(m) meeting
सम्मिलत	(adj) included
सम्मिश्रण	(m) mixture
सम्मुख	in front
सम्यक	(adj) balanced
सम्राट्	(m) emperor
सरकार	(f) government
सरकारी	(adj) governmental
सरल	(adj) easy, simple, straight
सरलता	(f) ease
सरलता से	easily
सर्प	(m) snake
सर्वत्र	everywhere
सर्वत्र प्रजा	(f) all (general) public
सर्वथा	totally, completely
सर्वदा	always

सर्वनाश	(m) total destruction
सर्वप्रथम	(adj) the very first; at first
सर्वप्राचीन	(adj) most ancient, oldest
सर्वमान्य	(adj) unanimous, accepted by all
सर्व विदित	(adj) known to all, well known
सर्वशक्तिमान	(adj) all powerful
सर्व शक्तिसंपन्न	(adj) all powerful
सर्व श्रेष्ठ	(adj) the best
सर्वसत्तात्मकता	(f) universalism
सर्वसम्मत	(adj) unanimous
सर्वसाधारण	(adj) general public
सर्वसामान्य	(adj) general public
सर्वस्व	(adj) whole; all, everything
सर्वांग	(m) total; all parts; whole body
सर्वांगपूर्ण	(adj) exhaustive
सर्वांश	(adj) complete
सर्वाधिक	(adj) most
सर्वेक्षण	(m) survey
सर्वोच्च	(adj) the highest
सर्वोदय	(m) rise of all, name of a movement
सर्वोदय आन्दोलन	(m) Sarvodaya movement
सर्वोदय दृष्टि	(f) Sarvodaya point of view
सर्वोदय बस्ती	(f) Sarvodaya hamlet
सर्वोपरि	above all
सलामत	(adj) safe
सलाह	(f) advice
सलाह करना	to confer
सलाहकार	(m) adviser
सवा	one and a quarter; plus a quarter
सवार	(m) passenger
सवारी	(f) transportation; passenger
सशंकित	(adj) suspicious
सशक्त	(adj) powerful
सशस्त्र	(adj) armed
सस्ता	(adj) cheap
सस्तापन	(m) cheapness
सहकारिता	(f) cooperation, cooperative
सहकारी	(adj) cooperative
सहकारी समिति	(f) cooperative society
सहज	(adj) easy
सहन	(m) endurance
सहन करना	to tolerate
सहनशीलता	(f) forebearance
सहमत	(adj) agreed
सहयोग	(m) cooperation
सहवासी	(m) co-inhabitant
सहसा	suddenly
सहस्र	one thousand
सहानुभूति	(f) sympathy
सहायक	(m) helper, deputy, tributary
सहायता	(f) help
सहायता करना/देना	to help

सहारा	(m) support
सहारा लेना	to take support or revenge
सहित	with, including
सही	(adj) right, correct
सही सलामत	(adj) perfectly safe
सहृदयानन्द	(m) bliss of compassionate persons
सांचा	(m) pattern, mold
सांप	(m) snake
सांस्कृतिक	(adj) cultural
साकार	(adj) actual
साक्षर	(adj) literate
साक्षरता	(f) literacy
साक्षरता प्रसार	(m) spreading literacy
साक्षात्	in person
साक्षात्कार होना	to meet face to face, to confront
साक्षी	(m,f) witness, evidence
साक्ष्य	(m) testimony, evidence
साख	(f) credit
सागर	(m) sea
साज सजावट	(f) decoration
साजो सामान	(m) instruments, tools, luggage
साझेदार	(adj) partner
साड़ी	(f) sari
साढ़े	and a half
सात	seven
सातवां	seventh
साथ	along with
साथ साथ	together
साथी	(m) companion
सादगी	(f) simplicity
सादा	(adj) simple
सादृश्यमूलक	(adj) showing similarity; common factor
साधक	(m) devotee; dedicated to some accomplishment
साधन	(m) means; devotion
साधना	(f) devotion
साधना भूमि	(f) devotional plane
साधन सुलभ	(adj) easily accessible in term of means
साधारण	(adj) general, ordinary
साधारणतः, साधारणतया	generally
साधु	(m) saint, holyman; gentleman
साध्य	(adj) goal; attainable
सानन्द	(m) happy
सान्निध्य	(m) proximity, nearness
सानुपातिक	(adj) relative
सापतेय्य	(m) joint leadership
सापत्य	(m) co-wife's son; half-brother
सापेक्ष	(adj) relative
सापेक्षतः	relatively
सापेक्षिता	(f) relativity
साप्ताहिक	(adj) weekly
साफ	(adj) clear, clean
साफ तौर से	clearly

साफ साफ	bluntly
साबित होना	to be proved
सामिप्रायिक	(adj) purposeful .
सामंजस्य	(m) integration
सामंत	(adj) feudal
सामंतीय शासक	(m) feudal ruler
साम	(m) Vedic prayer; gentle words
सामगान	(m) singing of Vedic prayers
सामग्री	(f) ingredient
सामना	(m) confrontation
सामना करना	to face
सामने	before
सामन्त = सामंत	
सामयिक	(adj) topical, timely
सामर्थ्य	(m) capability
सामवत	(adj) connected with a Saman hymn
सामाजिक	(adj) social
सामाजिक लाभ	(m) social gain
सामाजिक सुरक्षा	(f) social security
सामान	(m) luggage
सामान्य	(adj) general, simple
सामान्यत:, सामान्यतया	generally
सामुदायिक	(adj) of the community
सामुदायिक विकास आंदोलन	(m) community development movement
सामूहिक	(adj) joint, collective
साम्यवाद	(m) communism
साम्यवादी	(m) communist
साम्राज्य	(m) empire
साम्राज्य काल	(m) empirical period
साम्राज्य वाद	(m) imperialism
साम्राज्यवादी	(m) imperialist
सायं	(f) evening
सायंप्रात:	(f) evening and morning
सारंग	(m) musical mode
सारंगदेव	(m) name of a king and a writer
सार	(m) gist, core, purpose
सारगर्भित	(adj) meaningful
सारदा	(f) goddess of learning and music
सारस्वत	a sub-caste of Brahmans; a Sanskrit grammar
सारांश	(m) substance
सारा	(adj) whole
सारा का सारा	whole
सारी	(adj) whole; (f) sari
सार्थ	(adj) meaningful
सार्थक	(adj) purposeful, meaningful
सार्वजनिक	(adj) public
सार्वजनिक व्यय	(m) public expenditure
सार्व भौम	(adj) universal
सार्व भौमिकता	(f) universalism
साल	(m) year; hole
सालना	to pierce
साला दुसाला	(m) shawl etc.

सावधान (adj) alert, careful
सावधान करना to alert
सावधान होना to be alert
सावन (m) fifth month of Hindu calendar
सावां (m) a kind of grain
साहब (m) master, boss, word of respect
साहस (m) courage
साहसपूर्ण (adj) courageous
साहसिक (adj) courageous
साहसी (adj) courageous
साहित्य (m) literature
साहित्य सम्पत्ति (f) wealth of literature
सिंचाई (f) irrigation
सिंचाई करना to irrigate
सिंचित (adj) irrigated
सिंधी (adj) Sindhi
सिंध काफी (m) a musical mode
सिंधु (f) Indus, (m) ocean
सिंह (m) lion
सिंहावलोकन (m) review in retrospect
सिकुड़ना (intr) contract
सिक्का (m) coin
सिक्ख (m) Sikh
सिद्ध (adj) proved; (m) Jogi saint
सिद्ध करना to prove
सिद्धांत (m) principle
सिद्धि (f) accomplishment
सिद्धिदायक (adj) giver of desired goal or power
सिपाही (m) soldier
सिफारिश (f) recommendation
सिफारिश करना to recommend
सिमटना (intr) to shrink
सिर (m) head
सिरा (m) edge
सिर्फ only
सिलसिला (m) series, arrangement
सिवा, सिवाय except
सींक (f) broom-stick
सीखना to learn
सीढ़ी (f) ladder
सीतल (adj) cold
सीता (f) Sita, wife of Rama
सीताहरण (m) abduction of Sita
सीधा (adj) direct, right
सीधापन (m) simplicity
सीधी ओर toward,right
सीमन्तोन्नयन (m) rite performed in the 6th or 8th month of pregnancy
सीमा (f) boundary, limit
सीमाबद्ध (adj) limited
सीमारेखा (f) boarder line
सीमित (adj) limited
सुंदर (adj) beautiful

सुंदरी	(f) beautiful woman
सु	good, easy
सुअर	(m) pig
सुकुमार	(m) gentle, prince, tender
सुकुमारता	(f) tenderness
सुकुर्कुर	(m) name of a dog demon
सुख	(m) pleasure, happiness
सुखपूर्ण	(adj) happy
सुखशान्ति	(f) pleasure and peace
सुख सुविधा	(f) facilities
सुखी	(adj) happy
सुगठन	(m) solid stnucture
सुगम	(adj) easy
सुग्रीव	(m) name of a king
सुघड़	(adj) well-built, beautiful, clever
सुचारु	(adj) very beautiful, pleasing
सुचारु रूप से	very well
सुझाना	to suggest
सुझाव	(m) suggestion
सुदामा	(m) name of a friend of Krishna
सुदूर	far
सुदृढ़	(adj) solid, very strong, firm
सुधनि	(adj) fortunate
सुधरना	(intr) to improve
सुधार	(m) reform
सुनना	to hear, to listen
सुनहरा	(adj) golden
सुनियोजन	(m) good planning
सुनिश्चित	(adj) certain
सुपाच्य	(adj) easily digestable
सुपुर्द	charge, trust
सुप्रसिद्ध	(adj) well known
सुबंधु	(m) name of a writer
सुभद्राधनंजय	(m) name of a book
सुभाषित	(adj) spoken eloquently, beautifully quoted
सुमंगलशंसी	(adj) very auspicious
सुमधुर	(adj) very sweet
सुमित्रा	(f) name of a queen
सुयुद्ध	(m) fair fighting, well fought battle
सुयोग्य	(adj) very capable, worthy
सुर	(m) god, voice, tune
सुरक्षा	(f) defence
सुरक्षाकारी	(adj) defensive
सुरक्षित	(adj) safe
सुराष्ट्र	(m) name of an area
सुरीला	(adj) melodious; sweet
सुलभा	(f) easily attainable
सुलाना	to put to bed, to cause to sleep
सुल्तान	(m) king
सुवर्ण	(m) gold
सुवर्ण निर्मित	(adj) golden, made of gold
सुवर्णबाहु	(m) name of a person

सुविधा	(f) ease, facility
सुविधाजनक	(adj) easy
सुविधापूर्वक	easily
सुविधाभोगी	(adj) affluent
सुविधासम्पन्न	(adj) affluent, easy
सुविशद	(adj) distinct, clear
सुव्यवस्थित	(adj) well organized
सुव्यवस्थित रूप में	well organized
सुशोभित	(adj) well-adorned, graceful
सुसंस्कृति	(f) good culture
सुसज्जित	(adj) well decorated
सुसमृद्ध	(adj) very prosperous
सुस्थापित	(adj) well established
सूंघना	(trans) to smell
सूई	(f) neddle
सूक्ति	(f) wise saying; beautiful verse or saying
सूक्ष्म	(adj) subtle, intensive
सूक्ष्मता पूर्वक	subtly, minutely
सूखना	(intr) to dry
सूचक	(adj) indicator
सूचना	(f) information
सूचित	informed
सूची	(f) list
सूत	(m) thread
सूती	(adj) cotton-made
सूत्र	(m) aphoristic rule; thread, source
सूत्रग्रन्थ	(m) book of aphorisms
सूत्रधर, सूत्रधार	(m) stage-manager, initiator, chief actor
सूत्रपात	(m) beginning
सूत्रबद्ध	(adj) bound or composed of Sutras
सूत्रवाक्य	(m) sentence of aphoristic rule
सूद	(m) interest
सूदखोर	(m) usurer
सूरत	(m) face
सूरदास	(m) name of a saint poet
सूरसागर	(m) name of a book by Suradasa
सूरस्याम	(m) Lord Krishna
सूर्य	(m) sun
सूर्य किरण	(f) sun-ray
सूर्य ग्रहण	(m) sun-eclipse
सूर्या	(f) name of a Vedic god
सृजन	(m) creation
सृजन काल	(m) period of creation
सृष्टि	(f) creation
सृष्टि होना	to be created
सेंद्रिय	(adj) carbonic, organic
से	with, than, by, from
सेतु	(m) bridge
सेना	(f) to hatch an egg; army
सेनापति	(m) army chief, general
सेमा	(adj) a sub-division of Naga tribe
सेवक	(m) servant

सेवा	(f) service
सेवित	served
सैंधव	(m) rock-salt; horse; name of a musical mode
सैनिक	(m) soldier
सैनिक जवान	(m) soldier
सैन्य	(adj) military
सैर	(f) tourism, travel, trip, stroll
सों	by, through
सोचना	to think
सोद्देश्य	purposely, with a purpose
सोना	(m) gold; to sleep
सोनी महिवाल	(m) folk hero and heroine of Punjab folk literature
सोपान	(f) step of a ladder
सोम	(m) moon, Monday
सोरठ	(m) a musical mode; (f) a famous heroine
सोरठा	(m) name of a meter
सोलह	sixteen
सोलोमन	(m) Solomon
सोहर, सोहिल	(m) song sung at time of birth
सोहाग	(m) good luck
सौंदर्य	(m) beauty
सौंपना	to hand over
सौ	hundred
सौगंध	(f) vow, oath
सौगन्धिकाहरण	(m) name of a book
सौभाग्य	(m) good luck
सौभाग्य-सूचक	indicating good luck
सौराष्ट्र	(m) name of an area
सौवीर	(m) name of a people
स्कंध	(m) shoulder
स्कूल भवन	(m) school building
स्तंभ	(m) pillar
स्तन	(m) teat
स्तनपायी	(m) mammal
स्तर	(m) level
स्तर शृंखला	(f) level gradation
स्तरी करण	(m) stratification
स्तुति	(f) worship, prayer
स्त्री	(f) woman
स्त्री जाति	(f) female race
स्त्री शिक्षा	(adj) women's education
स्त्री शोक	sorrow for a wife
स्त्रीहीन	(adj) unmarried (man), without a woman
स्थल	(m) place
स्थाई	(adj) permanent
स्थान	(m) place
स्थाननिर्देश	(m) indicating locality
स्थानवाचक	(adj) place
स्थानांतरित	(adj) transfered
स्थानिक, स्थानीय	(adj) local
स्थानीय तौर पर	locally
स्थापना	(f) foundation

स्थापना करना to found

स्थापित (adj) established, founded

स्थापित करना to establish, to found

स्थायित्व (m) stability, permanence

स्थायी (adj) permanent

स्थाली (f) brass plate

स्थित (adj) situated

स्थिति (f) situation, locality

स्थिर (adj) strong, firm

स्थूलता (f) largeness, stupidity

स्नातक (m) graduate, one who finished education

स्नातकधर्म (m) tenet of a graduate

स्नान (m) bath

स्नान करना to bathe

स्नेहसिक्त (adj) very loving, soaked in love

स्पंदन (m) vibration, throbbing

स्पर्धा (f) rivalry, competition

स्पर्श (m) touch

स्पर्श करना to touch

स्पष्ट (adj) clear

स्पष्टतः, स्पष्ट रूप से clearly

स्फटिक (m) crystal

स्फुरण (m) sparkle, throbbing

स्फूर्ति (f) promptness, energy

स्फोट (m) bursting; sound, sound-meaning element bursting in mind

स्मरण (m) remembrance

स्मृति (f) memory

स्याम (m) Thailand; Krishna

स्यामा (f) black, beautiful

स्रवण (m) flow

स्रोत (m) source

स्व ego, self; own

स्वकुलोपघातिनी (f) murderer of one's family

स्वच्छंद (adj) free

स्वतंत्र (adj) free

स्वतन्त्रता (f) freedom

स्वतन्त्रता-आंदोलन (m) freedom-movement

स्वतन्त्रता-संग्राम (m) freedom-struggle

स्वतः by oneself, natural

स्वतः विकास (m) natural development

स्वत्व (m) right, ownership

स्वदेश (m) one's own country

स्वदेश-प्रेम (m) patriotism

स्वप्न (m) dream

स्वप्नद्रष्टा (m) dreamer

स्वभाव (m) nature

स्वभावसिद्ध (adj) natural, self-evident, innate

स्वयं oneself; personally, automatic, voluntary

स्वयंवर (m) self-choice, selection of a husband

स्वयंसंचालन (m) automation, self-management

स्वयंसेवक (m) volunteer

स्वर	(m) vowel, note, tone, voice
स्वर ग्राम	(m) vowel phoneme
स्वर ताल	(f) tune and rhythm
स्वर समृद्धि	(f) richness of vowels
स्वराघात	(m) stress, accent
स्वराज्य	(m) self-rule
स्वराट	(m) elected ruler of Svarājya type of government
स्वरित	(adj) acute
स्वरूप	(m) form
स्वर्ग	(m) heaven
स्वर्ग-प्राप्ति	(f) attainment of heaven
स्वर्गिय	(adj) dead, late-
स्वर्ण	(m) gold
स्वर्णाक्षर	(m) golden letter
स्व-व्यवस्था	(f) self-management
स्वल्प	(adj) little
स्वशासन	(m) self-government
स्वस्तिक	(adj) auspicious mark or object
स्वस्थ	(adj) healthy
स्वागत उक्ति	(f) welcoming speech
स्वाति नक्षत्र	(m) star Arcturus
स्वादिष्ट	(adj) tasty
स्वाधिकार	(m) one's own right
स्वाधीन	(adj) free
स्वाधीनता	(f) freedom
स्वान्तः सुखाय	for one's own pleasure
स्वाभाविक	(adj) natural
स्वाधिमान	(m) self-respect, pride
स्वामित्व	(m) ownership
स्वामिपरिवर्तन	(m) transfer of owner
स्वायत्त शासी	(adj) self-governing
स्वा राज्य	(m) self rule
स्वार्थ	(m) selfishness
स्वार्थपरता	(f) selfishness
स्वार्थ परायण	(adj) selfish
स्वावलंबन	(m) self-reliance
स्वाश्रय	(m) self-dependent
स्वास्थ्य	(m) health
स्वाहा	exclamation used in making an oblation
स्वीकार	(adj) accepted
स्वीकार करना	to accept
स्वीकृत	(adj) accepted
स्वेच्छा	(f) one's own will
स्वेच्छानुसार	willingly
स्वेच्छा पूर्वक	willingly
स्वैच्छिक	(adj) voluntary
ह	
हंसना	to laugh, to smile
हंसी	(f) laughter
हंसी उड़ाना	to laugh at
हज़म करना	to digest
हज़रत	(His) Excellency

हजार	thousand
हटना	to remove
हटाना	to get out of the way
हड़ताल	(f) strike
हड़ताल करना	to go on strike
हतोत्साह	(m) discouraged
हत्या	(f) murder
हथकड़ी	(f) handcuff
हथियार	(m) weapon
हनुमन्नाटक	(m) name of a play about Hanuman
हनुमान	(m) a monkey god
हम	we
हमपै	on us
हमला	(m) attack
हमला करना	to attack
हमारा	our
हमेशा	always
हर	every
हरणार्थ	for abduction
हरद दही	(f) turmeric and curd
हरा	(adj) green
हराभरा	(adj) prosperous
हरि	(m) Krishna, Rama, Vishnu
हरिजन	name of a Hindi weekly; untouchable
हरिण	(m) deer
हरिश्चन्द्र	(m) name of a king
हरी = हरि	
हरी खाद	(f) green plant fertilizer
हरेक	every one
हर्जाना	(m) compensation
हर्षचरित	(m) name of a book
हर्ष वर्धन	(m) name of a king
हर्ष - विषाद	joy and sorrow
हर्षातिरेक	(m) excess of joy
हल	(m) plough
हलचल	(f) tumult, excitement
हल्लीश	(m) a kind of drama
हल्लीसक	(m) a kind of musical instrument
हवा	(f) air, wind
हवाई	(adj) air- , windy; invalid, false
हवेली	(f) mansion
हस्त क्षेप	(f) interference, intervention
हस्तक्षेप करना	to interfere
हस्तगत	(adj) obtained
हस्तगत करना	to obtain, to possess, to procure
हस्तान्तरण	(m) transfer
हस्ति	(m) element
हां	yes, of course
हाट	(f) weekly market; shop
हाथ	(m) hand
हाथी	(m) elephant
हाथी सवार	(m) elephant rider

हाथों at the hands of, by
हानि (f) loss
हानिकारक (adj) harmful
हार (f) defeat
हारना to suffer defeat
हारीत (m) name of a writer
हाल (m) condition; present
हाल ही में recently
हालत (f) condition
हावभाव (m) blandishment
हास परिहास (m) joke and jest; laughter and fun
हासिल (adj) obtained
हासिल करना to obtain
हासिल होना to be received
हास्य (m) humor, mirth
हास्योत्तेजक (adj) humorous
हिंडोल, हिंडोला (m) swing; name of a musical mode
हिंद = हिन्द (m) India
हिंद महासागर (m) Indian Ocean
हिंदी (adj) Indian; (f) Hindi
हिंदुत्व (m) Hinduism
हिंदुस्तान (m) India
हिंदू धर्म (m) Hindu religion
हिंदू संस्कार (m) Hindu sacrament
हिंदू संस्कृति (f) Hindu culture
हिंदू समाज (m) Hindu society

हिंसक (adj) violent
हिंसा (f) violence
हिंसारहित (adj) non-violence
हिंसालु (adj) violent
हिचकिचाना to hesitate
हित (m) good
हितकर (adj) beneficial, good
हितचिंतन (m) good-will
हिन्द = हिंद (m) India
हिम (m) snow, ice
हिमपात (m) snow-fall
हिमवत् (adj) snow-like
हिमाच्छादन (m) snow covering
हिमाच्छादित (adj) snow-covered
हिमायत (f) favor
हिमायत करना to favor
हिमालय (m) Himalaya
हिम्मत (f) courage
हिम्मत हारना to lose courage
हियरा (m) heart
हिरन (m) deer
हिलना (intr) swing
हिलमिलकर together
हिले मिले buddy-buddy
हिसाब (m) account
हिसाब करना to settle an account

हिस्सा	(m) part
ही	only, very
हीन	without
हीन अंग वाला	amputee, physically handicapped
हीनता	(f) inferiority
हीनभाव	(m) inferiority complex
हीनार्थ व्यय	(m) deficit, expenditure
हीरा जवाहरात	(m) jewels and gems
हुक्म	(m) order
हुज़ूर	sir
हुता = था	was
हुसेनशिरकी	(m) name of a musician
हृदय	(m) heart
हृदयग्राही	(adj) charming, attractive
हृदयपरिवर्तन	(m) change of heart
हृदयस्पर्शिनी	(adj) heart-touching
हृदय स्पर्शी	(adj) heart-touching
हृद्तन्त्री	(f) heart-strings
हृष्टपुष्ट	(adj) stout, robust
हेमचन्द्र	(m) name of a grammarian
हेय	(adj) inferior
हेर फेर	(m) change
हैं	oh! , are
हैज़ा	(m) cholera
हैन्दव	(adj) Indian
हो न हो	it is almost certain
होना	(intr) to be, to become
होम	(m) oblation with fire
होरी, होली	(f) color festival, Holi
होरी / होली खेलना	to throw colored water on Holi festival
होश	(m) consciousness, sense
हौं	I
ह्रास	(m) decline
ह्वै	having become, having been